शंकर

अचानक एक दिन



लोकभारती प्रकाशन

१४-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग
इलाहाबाद-१ द्वारा प्रकाशित

•

अनुवाद : पुष्पा जैन

•

•

प्रथम संस्करण : १९८६

•

आवरण : पृथ्वीराज मुखर्जी

•

लोकभारती प्रेस
१८, महात्मा गांधी मार्ग
इलाहाबाद-१ द्वारा मुद्रित

तिल-तिल करके कालान्तर में गढ़ा हुआ अचानक एक दिन चूर्ण-विचूर्ण हो जाता है। दिन प्रतिदिन गहराता दुख भी अचानक एक दिन न जाने कहाँ अदृश्य हो जाता है। सुख अथवा दुख जो भी हमें अभिभूत करता है, वह कभी भी तिल-तिल करके नहीं आता, वह आता है सहसा जेठ की आँधी की तरह।

अस्त रवि की अंतिम आभा में शयनकक्ष की खिड़की के सामने बैठी इस कहानी की नायिका अपनी एक प्रिय सहेली का पत्र पढ़ रही थी। कालेज की इस सहपाठिनी ने गंभीर दुख से अभिभूत होकर लिखा था, "सागरिका, जीवन में घटने वाली घटनाएँ अचानक एक दिन घट जाती हैं, जबकि इस अचानक के लिये प्रस्तुत रहना हमें सिखाया नहीं जाता—न घर पर, न स्कूल में और न कालेज में। तुझे तो मालूम ही है कि कैसे अचानक एक दिन वह मुझे मिला था, और फिर किस तरह एक दिन घर से भाग कर मैंने उससे विवाह कर लिया था। लेकिन उसके बाद अचानक एक दिन""तुमसे मिलने का बड़ा मन करता है। परन्तु तू अब एक सुखी गृहिणी है, नये विवाह का खुमार बहुत दिनों तक छाया रहे तुम दोनों पर, इस समय चारुशीला जैसी किसी लड़की से तेरे लिये न मिलना ही अच्छा है।"

'अचानक एक दिन'—कितने पीड़ादायक शब्द हैं! पर किसी-किसी के जीवन में यही अचानक एक दिन भयंकर दैत्य की तरह आकर सब कुछ ग्रस लेता है। वासना, माधुरी, चारुशीला—कालेज की सहेलियों के बारे में सोचना अच्छा लगते हुए भी वह 'अचानक एक दिन' वाली बात जरा भी अच्छी नहीं लगती।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस घर में सागरिका के अलावा और लोग भी हैं। वह भी बहुत से विषयों पर सोचते हैं, विशेषकर परिवार के प्रमुख हरिसाधन चौधरी। इस समय वह घर की पहली मंजिल के बरांडे में एक बासी अखबार हाथ में लिये चुप बैठे थे।

सागरिका अपने कमरे में बैठी भले ही कुछ भी सोचती हो, पर वह अभी नहीं जानती कि उसके जीवन में भी अचानक एक दिन कुछ घटने वाला है। बल्कि जब तक वह इससे बेखबर रहे अच्छा ही है। उसे वहीं छोड़कर हम वहाँ

चलें जहाँ हरिसाधन रायचौधरी बैठे हैं। हरिसाधन के बिना इस कहानी का प्रारम्भ ही नहीं किया जा सकता।

इस समय शाम के साढ़े छः बजे हैं—रोज ठीक इस समय हलधर हालदार लेन की गली में एक कार का सुरीला हार्न बजता सुनाई देता है। आवाज सुनते ही अठारह नम्बर मकान के हेड आफ दि फेमिली हरिसाधन रायचौधरी समझ जाते हैं कि उनका लड़का अमिताभ, जिसका घर में पुकारने का नाम गौतम है, आफिस में ओवर टाइम न करके ठीक वक्त पर घर लौट रहा है।

हरिसाधन के मित्र पीताम्बर मजूमदार भी अब तब इस समय वहाँ उपस्थित होते हैं। चाय के साथ मूड़ी खाते-खाते मजाक करते हुए वह बोले, "श्याम की बंसी सुनने के लिये तुम अधीर रहते हो हरिसाधन!"

"हाँ, बंसी ही है पीताम्बर। यह यन्त्रणा, यह उद्वेग जिसने न भोगा हो उसे समझाना संभव नहीं है। लड़के-बच्चे काम के लिये घर से न निकलें तो भी मन दुखी होता है, और जाते हैं तो जब तक वापस नहीं लौटते माँ-बाप का दिल जोर-जोर से धड़कता रहता है।"

मुँह में एक फंकी मूड़ी डालकर पीताम्बर बोले—"इन सब हंगामों से मैं अच्छा बच गया। सर होगा तभी तो सर दर्द का रिस्क होगा! मेरा घर है, गृहस्थी भी है—पर न बीवी है और न बेटा। इसलिये मुझे किसी तरह के झमेले में नहीं पड़ना पड़ेगा, हरिसाधन।"

हरिसाधन जानते हैं कि यह पीताम्बर का मजाक है। मन में दूसरी बात होते हुए भी बातचीत का स्वर बदलकर वह आनन्द लेते हैं और दूसरे आदमी को उकसा देते हैं।

चाय का कप एक तिपाई पर रखकर रिटायर्ड पोस्टल क्लर्क हरिसाधन राय चौधरी बोले, "पीताम्बर, तुम्हारे मुँह पर ये सब बातें शोभा नहीं देतीं। जग जहान के लोगों की चिंता सताती रहती है तुम्हें। गौतम के ठीक वक्त पर न लौटने पर मुझसे अधिक परेशान होते हो।"

हरिसाधन को मालूम है कि पीताम्बर मजूमदार ने घर-गृहस्थी क्यों नहीं जमाई। पाँच साल छोटी बहन विवाह के डेढ़ साल बाद ही विधवा हो गई, पेट में बच्चा था। सद्य' विधवा पूर्ण गर्भवती बहन को जब जल्दी-जल्दी फिट पड़ रहे थे और बेहोशी में 'दादा, मेरा क्या होगा,' चिल्ला रही थी, तो बहन का हाथ पकड़कर पीताम्बर ने आश्वासन दिया था, 'तू फिकर मत कर मुको। जब तक मैं हूँ तुझे चिंता करने की जरूरत नहीं है।'

यह सब बहुत पहले की बातें हैं। तदुपरान्त भारत में जाने कितना कुछ घटित हो गया। सरकारी भवनों से यूनियन जैक उतर गया, अशोक चक्र चिन्हित नई पताका फहराने लगी, देश टुकड़े-टुकड़े हो गया, न जाने कितने घर जल गये, कितनी अभागिनी विधवा हो गईं, सदर बक्सी लेन के फ़जिल बाजार में वंदे मातरम् और अल्ला हो अकबर की गूंज ने हजारों नारियों का असहाय आर्तनाद दबा दिया। परन्तु हरिसाधन के मित्र पीताम्बर नहीं बदले। तेइस साल की उम्र में की गई प्रतिज्ञा आज उनसठ साल के होने पर भी निभाते आ रहे हैं।

"किस सोच में पड़ गये हरिसाधन ?" यह कह कर पीताम्बर ने कटोरी में से मुट्ठी भर मूढ़ी लेकर मुंह में डाल ली।

"सोच रहा हूँ, थर्टी सेवेन इयर्स में भी तुम्हें समझ नहीं सका। तुम्हारे मनोबल पर आश्चर्य होता है—सारा जीवन दूसरे के लिये सैक्रीफाइस कर दिया।"

"अब उसकी फसल काट रहा हूँ, हरिसाधन। संसार रूपी कारागार में बंद मुज़रिम तुम लोग जीवन भर परिश्रम करते हुए मरोगे और मैं दूर खड़ा मजा लूंगा।" यह कहकर हँसने लगे पीताम्बर।

फिर बोले, "अब हाथ कंगन को आरसी क्या ! हरिसाधन, तुम्हारी बात मानकर ही कहता हूँ, तीस साल तो बिना किसी झंझट के बीत गये। खूकी के जब लड़की हुई थी, बस उस समय इडेन अस्पताल में एक रात जग कर बिताई थी—उसके बाद तो आनन्द ही आनन्द रहा। खूकी की लड़की ने एम० ए० पास किया, बॉटनी में डी० फिल० किया और बहुत अच्छी जगह बियाह हो गया। जमाई भी प्रोफ़ेसर है। तीन बच्चे हैं उसके—हर बच्चा लिखने-पढ़ने में अच्छा है। आजकल खूकी जब भी लड़की के यहाँ जाती है, रुक जाती है—वह लोग किसी भी तरह छोड़ना ही नहीं चाहते। इंडियन आयल कम्पनी की कुकिंग गैस और दो हाकिन्स प्रेशर कुकर से मेरा काम भी बड़ी आसानी से चल जाता है। गैस खत्म भी हो जाये तो डाक्टर इन्दुमाधव मल्लिक का आविष्कृत इकमिक कुकर चमचमाता हुआ रखा है। इसके अलावा १८ नम्बर हलधर हालदार लेन में तुम्हारा अन्न-सत्र तो खुला हुआ है ही। हरिसाधन, कल तुम्हारे यहाँ की काटोया डंठल की चच्चड़ि बहुत अच्छी बनी थी—खाना खत्म करते ही खूकी को हाफ पेज वर्णन भेज दिया।"

"जानते हो हरिसाधन, अब जो भी मुझे देखेगा, मुझसे ईर्ष्या करेगा। मेरी अपनी कोई जिम्मेदारी नहीं है—खाता-पीता हूँ और मौज करता हूँ। पाकि-

स्तानियों को हटाने के बाद एक बार लोकसभा में इंदिरा गाँधी ने ढाका शहर के संबंध में कहा था : ढाका इज नाउ द फ्री कैपिटल आफ ए फ्री कन्ट्री (ढाका अब एक स्वतन्त्र देश की स्वतन्त्र राजधानी है) । इसी तरह यह पीताम्बर मजूमदार भी अब फ्री सिटिजन आफ ए फ्री कन्ट्री है । किसी के लिये भी अब मेरा सिर दर्द नहीं रहा ।"

"यह बस कहने की बात है पीताम्बर । तुम्हारी हालत रवि ठाकुर के दो बीघा जमीन के उपेन जैसी है—'इसीलिये दो बीघा जमीन के बदले सारा संसार लिख दिया' । दुनिया भर में गृहस्थ अपने दो बीघे के घर-संसार को सँभालने में लगे हैं और तुम सारे विश्व का बोझा ढोते फिर रहे हो ।"

हा-हा करके हँस उठे पीताम्बर मजूमदार । बोले, "तुम्हें हो क्या गया है हरिसाधन ? तुम तो रवि ठाकुर के कोटेशन कभी नहीं देते थे ! तुम ही तो कहते थे—संचयिता, गीतवितान यह सब बड़ी इन्फेक्शस हैं ।"

जरा लज्जित हो गये हरिसाधन । आँखों से चश्मा उतारकर धोती की खूँट से शीशे पोंछते हुए बोले, "इसके लिये अगर कोई जिम्मेदार है तो वह तुम्हीं हो । इस घर में रवि ठाकुर का इनफेक्शन नहीं था । रेडियो स्टेशन से ऑडीशन की चिट्ठी आने के बाद गौतम रवीन्द्र संगीत के तीन लांग प्लेयिंग रिकार्ड खरीद लाया । दोपहर में कोई काम-काज तो होता नहीं—बहू अपने कमरे में सुन रही थी । मैंने सोचा जब इलेक्ट्रिक के इसी खर्च में कानों में सुनाई दे रहा है तो सुन ही लूं ।"

"तुम्हारे दिमाग का भी जवाब नहीं हरिसाधन । इलेक्ट्रिक के उतने ही खर्च में एक से अधिक लोगों के सुनने वाली बात तुम्हारे ही दिमाग की उपज है । बहुत जगह गया हूँ मैं, परन्तु इलेक्ट्रिक पावर के सद्व्यवहार के लिये गाना सुनने की बात किसी ने नहीं सुझाई मुझे ।"

हरिसाधन दबे नहीं । खिलखिला कर बोले, "हमारे बचपन में बनगाँव कोर्ट के मुख्तार इसी तरह चिल्लाकर हाकिम की नजर दूसरी तरफ घुमाने की कोशिश करते थे । नहीं-नहीं, भूत के मुँह से रामनाम सुनने के लिये तुम्हीं उत्तरदायी हो । इस घर में यह मुसीबत तुम्हीं लाये हो पीताम्बर ।"

इस पर पीताम्बर कुछ कहने जा ही रहे थे कि उसी समय हल्के रंग की बॉम्बे प्रिन्ट की मिल की साड़ी पहने सर पर पल्ला लिये बहू आ गई ।

"आओ, बेटी, आओ" परमस्नेह से बोल उठे हरिसाधन । घर की इकलौती पुत्रवधू के साथ हरिसाधन बहुत ही स्नेह व कोमलता से बोलते थे ।

हरिसाधन ने देखा कि बहू न जाने कब नहा धोकर तैयार हो गई थी,

उन्हें बातों में पता ही नहीं चला था। दोपहर की गर्मी बदन पर जो चैलाक्त चिकनापन ला देती है, उसे बहू ने यत्नपूर्वक पति के लौटने से पहले ही विदा कर दिया था। कीमती पाउडर एवं सेन्ट की सौरभ से कमरा महक उठा था।

बी० ए० आनर्स पास बहू थी, लेकिन स्वभाव बहुत ही शांत था। जिन लोगों की धारणा थी कि बंगाली लड़कियों ने अपना शान्त स्वभाव व कमनीयता खो दी थी, उनसे हरिसाधन सहमत नहीं थे। बल्कि मध्यवित्त लड़कियों की श्री व सौम्यता बढ़ती ही जा रही थी। रूप, गुण, स्वास्थ्य, सौन्दर्यचर्चा व सुरुचि में आज की बंगाली लड़कियाँ बीस साल पहले की लड़कियों से बहुत आगे थीं—यह बात नितान्त निंदक व अहमक के अलावा कोई अस्वीकार नहीं करेगा, हरिसाधन ने बहू को देखकर सोचा।

पीताम्बर ने भी एक दिन कहा था, "आ''''हा''''हरिसाधन, आजकल की लड़कियों को देखकर जी जुड़ा जाता है। मेरी भानजी, तुम्हारी बहू, हमारी अजन्ता—जिधर भी देखो, हर घर में जोड़ा सन्देश दिखाई देता है।"

"यह जोड़ा सन्देश वाला मामला क्या है?"

"यह चीज हमारे बचपन में पंडित हलवाई की दुकान पर सर्दियों में मिलती थी कुछ दिनों के लिये। और अब मिलेगी प्रत्येक घर में लक्ष्मी एवं सरस्वती की जुड़ी हुई मूर्ति, यही है जोड़ा सन्देश; जो पहले इस देश में नहीं मिलती थी।"

तभी बहू की चूड़ियों की खनक सुनाई दी। आँखें बंद किये किये हरिसाधन बता सकते थे कि यह खनक चाँदी की चूड़ियों की थी। सोने की और चाँदी की चूड़ियों की आवाज में बहुत अन्तर था। बहुत दिन पहले पत्नी के हाथों की चूड़ियों की आवाज सुनते थे।

"पीताम्बर, यह जो सोने की चूड़ियों की जगह चाँदी की संस्कृति लौट रही है, इस संबंध में तुम्हारी क्या धारणा है?" हर विषय में मित्र के साथ परामर्श किये बिना हरिसाधन को चैन नहीं पड़ता था।

पीताम्बर ने कहा, "लक्ष्मी को पीतल, काँसा, रूपा कुछ भी पहना दो, वही सोना हो जाता है हरिसाधन। हमारा टेलीग्राफ क्लर्क विजय भूषण पैसे के अभाव में लड़की को ब्रांज की चूड़ियाँ देने के कारण बहुत दुखी था। लेकिन कुछ दिन पहले उसकी लड़की को जमाई के साथ हावड़ा स्टेशन पर देखा तो लगा जैसे माँ-लक्ष्मी के स्पर्श से सब सोना हो गया था। ब्रांज कहीं दिखाई ही नहीं दिया।"

एक दीर्घश्वास लेकर फिर कहना शुरू किया पीताम्बर ने, "लड़कियाँ तो

पारसमणि होती हैं। यही सोचकर अगर उनके साथ व्यवहार किया जाये तो सुख का अंत नहीं रहेगा ! मेरी बहन को ही लो, सैंतीस साल पहले वह विधवा हुई थी—पर मुँह से कभी एक शब्द नहीं निकाला। बारह दिन हो गये उसे लड़की के पास गये हुए—लेकिन अभी भी मेरे घर में चिवड़ा, पापड़, गुड़, चाय, चीनी, बतासे, चावल, दाल खत्म नहीं हुए। लक्ष्मी का मंत्र जाने बिना क्या यह संभव है ? और उपले—मेरी बहन अगर सैंतीस साल भी लड़की के यहाँ रहे तो भी खत्म नहीं होंगे। ऊपर के दो कमरों में फर्श से छत तक उपले-ही-उपले चिने हुए हैं।"

पीताम्बर की बात सुनकर बहू और हरिसाधन दोनों हँस पड़े !

दोनों को और खुश करने के लिये पीताम्बर बोले, "वह छोकरा लेखक नगेन गाँगुली मेरी भानजी के फ्लैट के पास ही रहता है। भानजी बता रही थी कि एकदम गृहस्थ आदमी है, पत्नी का अत्यन्त अनुगत है, लेकिन आजकल जब लिखता है, यही लिखता है कि सारी झगड़ों की जड़ औरतें ही हैं। आजकल की लड़कियों की जुबान में अमृत पर हृदय में विष भरा होता है ! जिसके हृदय में विष न हो ऐसी कोई लड़की हो ही नहीं सकती। सोचता हूँ एक बार मिल लूँ छोकरे से।"

"दिल में अमृत और जुबान पर विष वाली कुछ औरतों की कहानियाँ पहले तो पत्रिकाओं में पढ़ा करता था—पर आजकल दिखाई नहीं देतीं।" हरिसाधन ने अड्डेबाजी के मिजाज में कहा।

पीताम्बर ने लक्ष्य किया कि उसके मित्र ने बहुत देर से घड़ी की ओर नहीं देखा था। बड़े खुश हुए। प्रियजनों के सान्निध्य में बहुत बार व्यक्तिगत उद्वेग कम हो जाता है।

बहू शायद कुछ कहना चाहती थी। हरिसाधन को अन्दाजा हो गया था कि बात पीताम्बर के सम्बन्ध में थी। इतने दिनों में वह उस शर्मीली लड़की के हावभाव अच्छी तरह समझ गये थे।

"कुछ कहना है तो कह डालो बेटी", बहू कुमकुम को अभय देते हुए हरिसाधन ने कहा।

तब भी कुमकुम ने बात धीरे से, फुसफुसाकर ससुर के कान में ही कही। सुनकर बहुत खुश हुए हरिसाधन। मित्र की ओर देखकर कोमल परन्तु जरा ऊँचे स्वर में बोले, "पीताम्बर, बहुत प्रशंसा कर रहे थे, अब संभालो !"

"सर्वनाश ! गुणों की प्रशंसा करना तो सत्पुरुषों का धर्म है। इसके लिये तो कभी सजा नहीं दी जाती !"

गर्व से हरिसाधन ने कहा, "सुनो पीताम्बर, तुम्हारी वह काटोया डंठल की चच्चड़ी की प्रशंसा बहू ने सुन ली है। हम लोगों का ख्याल है कि अगर तुम्हारी बहन घर होती तो तुम चच्चड़ी रिपीट करने को जरूर कहते।"

"यह सब क्या कह रहे हो ? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा!"

"बहू इसी समय थोड़ी चच्चड़ी गरम करके खिलाना चाहती है तुम्हें। ले आओ बहू, जब किसी को खिलाने को जी चाहे तो दुविधा में नहीं पड़ना चाहिये। और पीताम्बर, तुम भी याद रखना, यह घर भी तुम्हारा अपना ही है—जब भी कोई चीज अच्छी लगे, बेहिचक माँग लेना।"

बड़े शर्मिन्दा हो गये पीताम्बर। बोले, "हरिसाधन, तुमने ही तो उस दिन शास्त्रवचन याद दिलाया था कि हजार वर्ष पहले आचार्य क्षेमेन्द्र ने सावधान किया था—गुणवान होते हुए भी मनुष्य जब तक देहि शब्द मुँह से नहीं निकालता तभी तक लोगों को प्रिय होता है।"

हरिसाधन के इशारे पर बहू खुश होकर अन्दर चली गई तो वह बोले, "कौन कहेगा कि मेरी यह बहू विवाह से पहले रसोई में घुसी भी नहीं थी! पीताम्बर, तुमने ठीक ही कहा था कि लड़कियों के लिये खाना बनाना मछली के तैरने जैसा है—सीखना नहीं पड़ता। काटोया डंठल की चच्चड़ी खाकर मैं भी तुम्हारी तरह ताज्जुब में पड़ गया था।"

डंठल की चच्चड़ी के नाम पर दो-चार चीजें और आ गईं, मिठाई भी थी। कुमकुम ने देखा कि जो ससुर हर वक्त गम्भीर बने बैठे रहते थे, वह भी मित्र के पल्ले पड़कर बिलकुल बच्चा बन गये थे। बोले, "बहू, एक ही यात्रा में दो जनों के अलग-अलग फल कैसे हो सकते हैं? मैं भी हिस्सा बँटा रहा हूँ, पीताम्बर को मॉरल सपोर्ट देने की जरूरत है।"

बहुत खुशी हो रही थी सागरिका को। उन दोनों वृद्धों का वह बचपना वह दिल से उपभोग करती थी। विवाह से पहले पारिवारिक आनन्द का यह रूप उसके लिये अभावनीय था।

चच्चड़ी देखते-देखते मिन्टों में खत्म हो गई। उन दोनों को वह सामान्य से डंठल आनन्द दे रहे थे या एक कम उम्र लड़की का संसार यात्रा में उत्साह बढ़ाने के लिये वह लोग अभिनय कर रहे थे, यह समझने का कोई उपाय नहीं था।

हरिसाधन बोले, "बहू, यह मत समझना कि मेरी और पीताम्बर की यह भूख बुढ़ापे का लोभ है। पोस्ट आफिस में वह मेरे से दो साल जूनियर था—शुरू के सत्रह साल हमने एक ही आफिस में साथ-साथ बिताये थे—सत्रह सालों

तक रोज टिफिन में हिस्सा बंटाते रहे थे। मेघमाला के हाथ के बने खाने का जवाब नहीं था—और फिर दिन-पर-दिन इम्प्रूव होता रहा।"

"मेरे बहनोई की तकदीर ही खोटी थी—जो ऐसे हाथों का खाना नहीं खा पाया!" सैंतीस साल पहले की व्यथा अभी तक गई नहीं थी, यह पीताम्बर के स्वर से स्पष्ट झलक रहा था।

गरम चाय लाने के लिये कुमकुम फिर रसोई में चली गई। पीताम्बर ने कहा, "आजकल तुम्हारे घर आना बहुत अच्छा लगता है। घर का रूप ही बदल गया है। गृहलक्ष्मी के बिना क्या घर अच्छा लगता है? और तुम थे कि दुविधा में पड़े हुए थे।"

मुहल्ले के अनगिनत कच्चे कोयलों की अंगीठियों से निकलते धुएँ के कारण बाहर का अंधेरा समय से पहले ही घना हो गया था। पहले साँझ का यह घिरता अंधेरा हरिसाधन को महसूस नहीं होता था। पोस्टआफिस से लौटते-लौटते ही रात हो जाती है। परन्तु अब कर्मविहीन दिवस का प्रत्येक मुहूर्त घर पर चुपचाप बैठकर बिताना भारी पड़ने लगा है।

चाय का बड़ा-सा घूँट भर कर वह बोले, "पीताम्बर, तुम भाग्यशाली हो जो अभी भी काम कर पा रहे हो।"

कृतज्ञता से पीताम्बर का स्वर भीग गया। दबे परन्तु कोमल स्वर में वह बोले, "इसके आधे के लिये मेरे जन्मदाता पिता और बाकी आधे के लिये मैं सदा तुम्हारा ऋणी रहूँगा।"

मोटे काँच के चश्मे के अन्दर से मित्र की ओर देखते हुए हरिसाधन ने सोचा, पीताम्बर को सारी बातें अभी तक याद हैं?

शान्त व स्निग्ध कंठ से पीताम्बर ने कहा, "पिताजी ने गल्ती से स्कूल के रजिस्टर में उम्र डेढ़ साल कम लिखा दी थी। इसीलिये आफिशियली अट्ठावन तक पहुँचने में डेढ़ साल अधिक मिल गया। हालांकि मन में पापबोध था कि अन्नदाता को ही ठग रहा था।"

"यह सब सोचने से कोई फायदा नहीं है, पीताम्बर। जो होना था वह बहुत पहले हो गया था।" अप्रिय विषय से मित्र को लौटाने का प्रयत्न किया हरिसाधन ने।

"नहीं रे हरिसाधन। यह विवेक का दंशन बंगाली मध्यवित्त की बहुत बड़ी विलासिता है। बाहर का कोई तुमसे कुछ नहीं कहेगा पर अन्दर ही अन्दर तुम्हारे दिल में एक काँटा गड़ा रहेगा। इसके लिये हमारी शिक्षा उत्तरदायी है। जाने कब रवीन्द्रनाथ का कोई गीत उल्टे-सीधे ढंग से तथा कथाओं की

कोई बात दिमाग में घुस जाती है और फिर अपने पर के प्रहरी बोधज्ञान को धोखा नहीं दिया जा सकता।"

हँसी आ गई हरिसायन को। हँसते-हँसते बोले, "तुमने एक बार गौतम को बड़ी मजेदार बात बताई थी—विवेक जूते के अन्दर निकल आई कील जैसा होता है। बाहर के किसी आदमी को पता नहीं चलेगा, पर वह अदृश्य कील तुम्हें सज़ा देती रहेगी।"

"हरिसायन, मैं कह रहा था कि सुख के डेढ़ साल तो पिता के प्रताप से मिले थे—लेकिन बाकी के दो साल तुम्हारे कारण मिले। मित्र का ऐसा उदाहरण इस युग में कहानी-उपन्यास में भी नहीं मिलता।"

"यह सब बेकार की बातें छोड़ो, पीताम्बर। हमारा गौतम बहुत कहानी-उपन्यास पढ़ता है। वह कहता है, आजकल के साहित्य में प्रत्येक मनुष्य एक पृथक् द्वीप है। इसलिये द्वीपपुंजों की कहानी लिखने में लेखक को मगजपच्ची नहीं करनी पड़ती। अब केवल इन्डिविज्युएल को 'पैम्पर' करना है यह। अब तो समाज की जो जितनी डोन्ट केयर करता है, वह उतना ही बड़ा दुस्साहसी माना जाता है। लेखकों का अगर वश चलता, तो हर मनुष्य को पृथक् रूप से निर्जन वन में सिंहासन पर बिठाकर चँवर डुलाते।"

"मनुष्य तो समूह में रहने वाला प्राणी है। दूसरे आदमी के बिना क्या रह सकता है वह ?" पीताम्बर ने जैसे स्वयं से पूछा।

"मालूम है पीताम्बर, गौतम नाना विषयों पर बड़े अच्छे ढंग से सोचता है। साइन्स में न आकर अगर वह साहित्य अथवा दर्शन पढ़ता तो शायद और बड़ा बन सकता था। तीन-चार दिन पहले वह बहू से कह रहा था और मैं वहीं बैठा सुन रहा था—मनुष्य सामाजिक होते हुए भी कहीं निर्जन और निःसंग भी है। कभी तो व्यक्ति-सत्ता और सामाजिक-सत्ता परम सुख से हर-पार्वती के समान साथ रहती हैं और कभी इन्डिविज्युएल तथा सोसाइटी में संघर्ष छिड़ जाता है; दोनों पक्षों के सेनापति भयंकर अस्त्र-शस्त्र लेकर रणक्षेत्र में उतर आते हैं। उस क्षण व्यक्ति की विजय होती है—वह बेकार के झमेले नहीं चाहता, असंख्य बंधनों के बीच मिली मुक्ति से उसे घृणा हो जाती है, कोई बन्धन न मानकर मन के निर्देशानुसार वह सुख की अभिज्ञता खोजता फिरता है।"

पीताम्बर इस बात से ज़रा भी असहमत नहीं हुए। बोले "अ सड़के कितना सोचते हैं! और हम लोग यह मान बैठे हैं कि आजकल अस्थिर मति हैं। तुम सचमुच भाग्यशाली हो हरिसायन, ज रत्न मिला तुम्हें।"

पुत्र के गर्व से हरिसाधन की छाती फूल गई। मित्र से बोले, "यह तुम गलत नहीं कह रहे पीताम्बर। अपना सौभाग्य क्यों छुपाऊं ? गौतम ने मुझे कभी कोई दुख नहीं पहुँचाया। उस दिन पढ़ रहा था, लेखक ने लिखा था—कलह प्रिय पत्नी, व्यसनी पुत्र और निर्धन को दी गई कन्या—यह तीनों मनुष्य को तप्त शलाखा की तरह असहनीय वेदना पहुँचाते हैं।"

मित्र की बात सुनकर मजा आ गया पीताम्बर को। बोले, "आजकल तुम्हारे मुँह से बड़ी मूल्यवान बातें सुनाई देती है! लिख कर रखोगे तो उक्तियों की मूल्यवान किताब बन जायेगी—हरिसाधन-वचनामृत!"

हरिसाधन को खुद को भी मजा आ रहा था। बोले, "आजकल लड़के नौकरी का नियोग पत्र हाथ में आने से पहले ही विवाह के लिये छटपटाने लगते हैं। पर गौतम को लेकर जो मुसीबत खड़ी हुई थी, उससे तुम अनभिज्ञ नहीं हो।"

पीताम्बर बोले, "आगे कुँआ पीछे खाई। बौद्धयुग से ही विवाह के लिये व्याकुल सन्तान की तरह विवाह-विमुख सन्तान की समस्या चली आ रही है।"

अचानक हरिसाधन उठकर कमरे में गये और टाइम पीस लाकर बरांडे में रखते हुए बोले, "गौतम तो अभी तक नहीं आया?"

"इतना परेशान होने की क्या बात है, हरिसाधन? इस शहर की सड़कों तथा ट्रामबस के बारे में कौन नहीं जानता।"

परन्तु हरिसाधन के चेहरे की परेशानी दूर नहीं हुई। बोले, "बुढ़ापे में यह एक बिना बात का हंगामा और जान को लग जाता है। अन्तहीन अवसर होने पर बच्चों के लौटने की चिंता सताने लगती है।"

"हरिसाधन, अब तुम हँसी मत दिखाओ मुझे। तुम्हारे यहाँ मैं कोई पहली बार नहीं आ रहा। डेढ़ साल पहले अगर गौतम बहुत देर से आता था तो तुम जरा भी चिन्तित नहीं होते थे। बल्कि मेरे साथ गप्पें लगाते रहते थे। हमें धाम सप्लाई करते-करते अजन्ता, एलोरा की जान पर बन आती थी।"

इसका हरिसाधन ने प्रतिवाद तो नहीं किया पर मुँह से स्वीकार भी नहीं किया। उनके मनोभावों का अनुमान लगाकर पीताम्बर ने कहा, "जहाँ तक मुझे याद है, पिछली बार गौतम ने तुमसे डाँट खाकर कहा था, बाबूजी, नौकरी के बाजार में आजकल बड़ा भारी कम्पीटीशन है। साढ़े नौ से साढ़े पाँच तक काम करके अच्छी पोजीशन पर नहीं पहुँचा जा सकता।"

"हाँ, हाँ! उस समय उसने एक और अमूल्य भविष्यवाणी भी की थी, वह यह कि साहबी आफिस में इंडियन जितने बढ़ेंगे, समय की समस्या उतनी ही

कहा नही, चुप बैठे रहे। बल्कि अपने ऊपर शर्मिन्दगी होने लगी। पीताम्बर के विरुद्ध मन में कोई बात लाना भी पाप था।

पीताम्बर समझ ही नही पाये कि इतने अभिन्न व पुराने मित्र हरिसाधन क्यों अकारण नाराज होकर एकदम नरम पड़ गये थे।

बोले, "क्या हो गया है तुम्हे हरिसाधन ? कभी-कभी तुम्हारे मन की थाह ही नही मिलती। लगता है अड़तीस सालों में भी तुम्हारा मन समझ ही नही पाया।"

"नही, मेरे अच्छे दोस्त, ऐसी बात मत कहो। अड़तीस सालों से सुख-दुख मे एकमात्र तुम्ही मेरे पास रहे हो, पीताम्बर। बाकी सब तो, यहाँ तक मेरी पत्नी ने भी किनारा कर लिया।"

"साँझ की इस बेला में यह क्या फालतू बातें सोच रहे हो, हरिसाधन ? तुम्हारी पत्नी—सुप्रभा—सचमुच भाग्यवती थी। मादा पक्षी जिस तरह अपने बच्चो को अपने पंखो में छुपाकर हर आपद-विपद से रक्षा करती है, उसी प्रकार वह भी तुम लोगों को अपने आँचल में छुपाये रही।"

"लेकिन मौका देख कर भाग गई न।" हरिसाधन के स्वर मे अभिमान झलक रहा था।

"नही हरिसाधन। उस रात मेडीकल कालेज के वेइंग बेड के पास ही था मैं। तुम सहन न कर पाने के कारण थोड़ी देर के लिये बाहर बरांडे में जाकर खड़े हो गये थे। सुप्रभा का चेहरा अभी तक मेरी आँखों के सामने है। उसकी जाने की जरा भी इच्छा नही थी—जाने के लिये तैयार भी नही थी वह। परन्तु जाना ही पड़ेगा, यह शायद उस पल ही पता चला था। सुप्रभा हमेशा मुझसे शर्माती थी, लेकिन उस रात उसकी शर्म न जाने कहाँ गायब हो गई थी। तुम्हें देखने के लिये इधर-उधर नजरें दौड़ाई थी। तुम्हे न देखकर भयभीत स्वर में कहा था, 'वह कहाँ हैं ?' नही, मैं नही जाऊँगी। इन्हें बुलाइये।"

फिर क्षणभर के लिये रुक गये पीताम्बर। हरिसाधन ने यह विवरण पहले भी कई बार सुना था। घूम-फिर कर थोड़े अन्तराल से बात उठ खड़ी होती थी—जैसे भी पुरानी नही होती थी।

"हरिसाधन, उतनी रात को जब तुम्हें लिफ्ट के पास से बुला कर लाया, तब तक सुप्रभा जा चुकी थी। चेहरे की हर रेखा प्रमाणित कर रही थी कि उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध जाना पड़ा था।"

"पीताम्बर, उस समय मेरी अवस्था कुछ भी देखने-समझने की नही थी। जो कुछ भी करना था, तुमने ही किया था। उसके बाद मुझे किसी झंझट में

नहीं पड़ना पड़ा। जन्म-जन्म की साधना करने पर तुम्हारा जैसा सखा मिलता है।" हरिसाधन अत्यन्त भावुक हो उठे थे।

"कितने दिन पहले की बात है, लेकिन कुछ भी विस्मृत नहीं हुआ। एक ही मानस पट पर एक के बाद एक तस्वीर उभर रही थी। अद्भुत होती है इस मन की फिल्म, कभी भी, किसी भी पुरानी तस्वीर को सामने ला सकता है।" मन के रहस्य को मापते हुए पीताम्बर स्वयं ही चकित हो गये।

फिर खड़े होकर बोले, "तुम बैठो—मैं गली के मोड़ तक जाकर गौतम को देखता हूँ।"

हरिसाधन ने आपत्ति नहीं की।

पीताम्बर को बड़े रास्ते के मोड़ पर खड़े कुछेक मिनिट हुए होंगे कि पीछे से चिर-परिचित आवाज सुनकर चौंक उठे। "काका बाबू।"

सागरिका है न? हाँ, न जाने कब चुपचुप पीछे से आकर पीछे खड़ी हो गई थी। हाथ में टॉर्च थी।

"ओह! तकदीर अच्छी थी कि आप यहीं मिल गये। और आगे चले गये होते तो मुश्किल हो जाती।" सागरिका को अकेले बाहर निकलने की आदत नहीं थी, यह पीताम्बर जानते थे।

"मैं तो खड़ा हो था यहाँ। फिर तुम क्यों बेकार में आई?" पीताम्बर के कंठ से स्नेह झर रहा था। जिसके हृदय में इतना असाधारण प्यार भरा हुआ था, उसका विवाह क्यों नहीं हुआ? मन ही मन चकित होकर सागरिका ने सोचा।

"बड़ी भारी गल्ती हो गई काकाबाबू। मैं स्वयं भागी आई हूँ, माफ कर दीजियेगा। पिताजी मुझसे शायद बहुत नाराज हैं। कुछ भी नहीं बोल रहे, एकदम चुप बैठे हैं।" सागरिका का स्वर उद्वेग से भरा था।

पीताम्बर की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। क्या गौतम आ गया था? पर वह गया कहाँ से? इस रास्ते के अलावा तो आने का कोई रास्ता था नहीं।

"असल में आपको टॉर्च देने के बाद एकदम से ख्याल आया कि उनको ढूँढने के लिये आपको भेज रहे हैं। जब कि मुझे तो वह देर से लौटेंगे।"

"चलो, जान में जान आई। यह तो मामूली सी होने की क्या बात है बेटी?" सहज रूप में बात की

लेकिन सारिका का डर तब भी कम नहीं हुआ। धर्मसंकट में पड़ कर बोली, "देर होने का चान्स होने पर वह अब तक पिताजी से ही कहकर जाते थे। इसीलिये शायद पिताजी क्षुब्ध हैं। पिताजी अगर मुझे डाँटते तो मुझे चिंता नहीं रहती। उन्हें आने में देर होगी, यह मेरे मुँह से सुनकर वह एकदम से जाने कैसे हो गये हैं। मेरे बताने पर एक शब्द भी मुँह से नहीं निकाला।"

"घर-गृहस्थी में ऐसे ही हजारों तरह की चिन्ताएँ लगी रहती हैं, बेकार चिंता बढ़ाने से कोई लाभ नहीं है, बेटी।" प्यारी कुमकुम को मीठी डाँट लगाई पीताम्बर ने। "हरिसाधन कोई नासमझ तो नहीं है—इसमें नाराज होने की क्या बात है?"

"पर तब भी मुझे डर लग रहा है, काका बाबू। आपके अलावा पिताजी के मन की बात कोई नहीं समझ सकता।"

स्नेह भरे स्वर में पीताम्बर बोले, "तुम लोग तो इस युग की पढ़ी-लिखी लड़कियाँ हो। समझ ही सकती हो कि उसके मन में कितना कष्ट, कितना दुःख जमा है। जब तुम्हारी सास का स्वर्गवास हुआ, गौतम चौदह साल का, अजन्ता दस की और एलोरा नौ की थी। इस असहाय अवस्था में भी हरिसाधन ने हार नहीं मानी। हर रोज खाना बनाकर पोस्टआफिस जाता था और शाम को जाकर बच्चों को पढ़ाता था।"

एक तो सारिका ऐसे ही कम बोलती थी और पीताम्बर के सामने तो और भी चुप हो जाती थी। उसको चुप देखकर पीताम्बर ने कहना शुरू किया, "हरिसाधन की मैं हमेशा से तारीफ करता आया हूँ। ऐसे परिवेश में साधारणतः बच्चे बिगड़ जाते हैं। परन्तु हमारे अमिताभ को देखो, एक के बाद एक परीक्षा में अच्छे नम्बरों से पास होता गया! और पोस्टआफिस के सामान्य वेतन में ही हरिसाधन ने गृहस्थी के लिये क्या नहीं किया। लड़के की शिक्षा की कैसी व्यवस्था की। मैं तो हरिसाधन से कहता था कि तुम्हारा नाम पी० सी० सरकार होना चाहिए था, द मैजिशियन।"

"गृहस्थी के लिये पिताजी ने जो किया है, यह वह अच्छी तरह जानते हैं। सुहागरात के दिन उन्होंने पता है क्या कहा था, काका बाबू?"

ऐसे एकान्त आलाप सुनने के अभ्यस्त नहीं थे पीताम्बर। उनका ख्याल था, नर-नारी के प्रथम मिलन पर दूसरी तरह की बातचीत होती है, उस समय उनके लिये बाहरी जगत् का कोई अस्तित्व नहीं रहता।

पर सारिका ने बताया, "वह बहुत देर तक रोते रहे थे। सुहागरात के दिन किसी के उस तरह रोने की बात न तो मैंने कभी सुनी थी और न पढ़ी

थी। उससे पहले हमारी क्लास की अट्ठावन लड़कियों की सुहागरात हो चुकी थी, काकाबाबू।"

सुहागरात से अनभिज्ञ अविवाहित पीताम्बर को बेचैनी सी होने लगी। पर सारिका कहती रही, "उन्होंने पिताजी व बहनों की बातें बताईं। कहने लगे कि वह दोनों पढ़ने में बहुत अच्छी नहीं थी, देखने में भी सुन्दर नहीं थीं, माँ न होने के कारण उनका विकास रुक गया था। फिर मेरे से वायदा लिया कि सारे जीवन की वंचना एवं यन्त्रणा के बाद अब पिताजी को सुख देंगे। दूसरे दस परिवारों में होने वाली घटनाएँ हमारे परिवार में नहीं दोहराई जायेंगी।"

"पिताजी का मैं अन्तःकरण से सम्मान करती हूँ, काकाबाबू। मुझे मालूम है कि उन्होंने किस कष्ट से मेरे पति को पालपोस कर बड़ा किया है।"

"वह एक-दो दिन का कष्ट नहीं था बेटी! सालों कष्टों व चिन्ताओं में गुजारे हैं उसने।" उस स्वल्पालोकित राजपथ के किनारे खड़े अपनी लाड़ली सारिका से बातें करने में बड़ा सुख मिल रहा था पीताम्बर को।

"मेरे बाबूजी कह गये थे कि पीताम्बर काका की बात हमेशा मानना। वह कहा करते थे, 'हरिसाधनबाबू जैसा इन्सान विरला ही होता है। हमारे ये पोस्टआफिस रत्नगर्भ समुद्र समान हैं—यहाँ कितने असाधारण व्यक्ति हैं, इसकी खबर कोई नहीं रखता'।"

"तुम्हारे बाबूजी ने एक बार मुझसे कहा था कि इस देश में पोस्टआफिस की नौकरी या स्केल, ग्रेड, डिविजन, डेजिगनेशन देखकर आदमी की परख नहीं होती। डाकघर के पीछे महामानव का आशीर्वाद है। इतना अधिक देकर इतनी कम स्वीकृति इस देश के किसी भी प्रतिष्ठान को नहीं मिली! लेकिन इसके लिये कोई अफसोस नहीं है, पोस्टआफिस के हिसाब के खाते में कुछ भी नहीं छूटा। जो निकाला नहीं गया, वह जमा रहा और सूद दर सूद बढ़ता रहा।"

पीताम्बर का ख्याल था कि गौतम आफिस के काम ही में फँस गया था। उन्हें खुशी ही हुई थी। हरिसाधन जिस प्रकृति के आदमी थे, उनसे लड़के की काम के प्रति लगन देखकर खुश होंगे।

पर कुमकुम बोली, "आफिस में भी थोड़ा काम था, फिर [illegible] तानपूरा लाना था। संगीत में उनकी जरा भी [illegible] नहीं है, इसलिये [illegible] सिखाने की सोच रही थी।"

सुनकर अच्छा लगा पीताम्बर को। प[illegible] का [illegible]

कर्त्तव्य-केन्द्रिक था। पति-पत्नी में सरसता का कोई सुयोग ही नहीं था। अब पत्नी रवीन्द्र संगीत गायेगी और पति साथ में तानपुरा बजायेगा, इसकी कल्पना बड़ी सुखकर है। ऐसा ही तो होना चाहिये।

साहस पाकर आगे कहा कुमकुम ने, "तानपुरा लेने के बाद मृत्युञ्जयदा को मेरे रेडियो प्रोग्राम की खबर देने को भी कह दिया था मैंने।"

"कब है तुम्हारा प्रोग्राम? मुझे तो बताया नहीं किसी ने।"

"कल ही तो चिट्ठी आई है। कल रिकार्डिंग कर आऊँ, फिर बताऊँगी सबको।"

"आजकल क्या रेडियो स्टेशन से गाने का सीधा प्रसारण नहीं होता? मेरा तो ख्याल था कि सबको वहाँ नियत समय पर उपस्थित होकर गाना पड़ता है।"

हँस दी कुमकुम। बोली, "ऐसा होता तो कितनी मुसीबत होती भला! दिन में तीन बार प्रोग्राम होता है—मेरे साथ तीन बार जाने को राजी होते ये? मैंने भी कह दिया है कि मैं किसी और के साथ नहीं जाऊँगी, तुम्हें ही ले जाना पड़ेगा।"

"जरूर! यह तो एकदम न्यायसंगत माँग है। न माने तो बताना, हरि-साधन से कहकर आर्डर दिलवा दूंगा उसे।" पीताम्बर की खुशी छलकी पड़ रही थी।

कुमकुम शर्मा गई। पिता के आर्डर देने की जरूरत नहीं पड़ेगी। पत्नी की बात न मानने का साहस नहीं दिखायेगा अमिताभ। अगले दिन गौतम आफिस से थोड़े समय के लिये गोता लगाने वाला था, सीधे आकाशवाणी भवन। वहाँ दो घंटे तो लगेंगे ही कम से कम।

घड़ी देखी कुमकुम ने, आठ बजकर दस मिनिट हो गये थे। अब तक तो लौट आना चाहिये था उसे। परेशान स्वर में बोली वह, समय के मामले में वह बहुत पंक्चुअल हैं, काकाबाबू। समय का ज्ञान भी आश्चर्यजनक है—कितनी देर गाया मैंने, यह बिना घड़ी देखे ही बता देते हैं। मेरी सहेली वासना—वासना मित्र का पति तो बहुत ही अनपंक्चुअल है। कालेज में सुना था कि कहीं पर छह बजे पहुँचने का टाइम हो तो आठ बजे पहुँचता है। एक बार तो वासना का रेडियो प्रोग्राम ही कैंसिल होने वाला था। किसी तरह ट्रैफिक जाम का बहाना बनाकर बच पाई थी वह। कलकत्ते में एक यही सुविधा है कि टेली-फोन, लोडशेडिंग, पोस्टल गड़बड़ी, ट्रैफिक जाम आदि की दुहाई देकर बहुत सी गलतियों पर परदा डाला जा सकता है।"

सवा आठ बज गये थे। अब मजा लिया जाये थोड़ा। पीताम्बर को लगा कि घर से अकेले बाहर आकर सागरिका जैसे एन्ज्वाय कर रही थी। सोचने लगे कि देर होती देखकर घर लौट जायेगी या गौतम को सड़क पर ही पकड़कर प्लेजेंट सरप्राइज देगी यह ?

पर सागरिका गई नहीं, वहीं खड़ी बातें करती रही। निर्धारित समय से दो मिनिट पहले ही एक हरी स्टैन्डर्ड हेराल्ड हेडलाइट जलाये उस ओर आते दिखाई दी। हाथ उठाकर पीताम्बर ने गाड़ी रोकी। पीताम्बर एवं सागरिका को वहाँ खड़ा देखकर अमिताभ आश्चर्यचकित रह गया।

बोला, "काकाबाबू ! आप लोग यहाँ ?"

"आठ बजने पर भी तुम घर नहीं आओगे तो हम घर पर चुपचाप कैसे बैठे रह सकते हैं ?" सागरिका ने बनावटी चिंता के स्वर में कहा। गाड़ी देखकर जैसे उसकी दुविधा व संकोच दूर हो गया था।

अमिताभ ने बाँयी ओर के आगे-पीछे के दोनों दरवाजे खोल दिये। पीताम्बर ने जबर्दस्ती सागरिका को आगे पति के पास बिठाया और स्वयं पीछे बैठ गये। उन्हें मालूम ही नहीं था कि इतनी छोटी गाड़ी में भी चार दरवाजे होते हैं।

"अरे वाह ! बड़ी बढ़िया गाड़ी रखती है, गौतम।" प्रशंसा की पीताम्बर ने।

"यह मेरी गाड़ी नहीं है काकाबाबू। कम्पनी की है—मुझे तो बस चलाने को दे रखी है। बहुत से लोग तो गाड़ी कम्पनी की गराज में ही छोड़ आते हैं, पर मैं जरा दूर रहता हूँ, इसलिये घर तक गाड़ी ले आने की अनुमति मिल गई है।"

"गाड़ी घर लाने के लिये इनके कुछ रुपये कटते हैं काकाबाबू। प्राइवेट माइलेज। पर पेट्रोल, मोबिलआयल, सर्विस, मरम्मत सब कम्पनी का ही है।" सागरिका ने बताया।

"नहीं तो जो वेतन देते हैं, उसमें गाड़ी कौन रख सकता है ? हमारी पोस्ट में गाड़ी की कल्पना भी नहीं की जा सकती।" गाड़ी स्टार्ट करके अमिताभ ने कहा।

"अरे, तुम्हारी अभी उम्र ही क्या है ? अभी तो शुरू ही किया है।" बड़े चैन से उत्साह दिलाया पीताम्बर ने। उन्हें तो जरा से लड़के को गाड़ी मिल जाने पर ही कम आश्चर्य नहीं था।

"सेल्स एंड सर्विसिंग की नौकरी है न—लम्बी-लम्बी ड्राइव पर जाना होता है। कभी-कभी तो एक दिन में पाँच सौ मील गाड़ी चलाई है इन्होंने। मेरे बाबूजी की गाड़ी चलाने वाला ड्राइवर तो दिन में तीस-चालीस मील गाड़ी चलाकर ही अगले दिन के लिये गोता लगा जाता था।"

बड़ी सड़क छोड़कर अमिताभ ने बड़ी निपुणता से गाड़ी हलधर हालदार लेन में मोड़ ली। पीताम्बर उद्विग्न हो उठे, बोले "जरा धीरे चलाओ—छोटे-छोटे बच्चे घूमते रहते हैं गली में।"

परन्तु कुमकुम को पति की ड्राइविंग पर अगाध विश्वास था। बोली, "आप बिल्कुल परेशान मत होइये, काकाबाबू। आपका भतीजा एकदम ड्राइविंग मास्टर जरूर है! स्टीयरिंग पर हाथ जाते ही दूसरे आदमी हो जाते हैं ये।"

"तुम्हें ड्राइविंग लाइसेन्स लिये कितने दिन हो गये, गौतम?" पीताम्बर को कौतूहल होने लगा।

"पार्ट आफ द सेल्स ट्रेनिंग, काकाबाबू। ड्राइविंग-लाइसेन्स मिले बिना ट्रेनिंग कम्पलीट नहीं होती।"

"इतना ही नहीं काकाबाबू, इन्होंने तो मीडियम वेहिकिल का भी ड्राइविंग लाइसेन्स ले लिया है", पति के गर्व से मुखरित हो उठी थी कुमकुम।

"इसका मतलब?" ड्राईविंग के बारे में इतना कुछ नहीं जानते थे पीताम्बर।

"मतलब यह है कि ये मुझे डर दिखाते हैं कि नौकरी में कुछ गड़बड़ होने पर मिनिबस, टेम्पो या ट्रैक्टर चलाकर जीवन निर्वाह करेंगे।"

अमिताभ बोला, "सेल्स इंजीनियर की नौकरी का अभाव हो सकता है लेकिन कुशल ड्राइवर की आजकल बहुत माँग है।"

"सेल्स और इंजीनियरिंग दोनों करनी पड़ती है तुम्हें?" पीताम्बर ने पूछा।

"दूसरा तो डेकोरेशन के लिये है काकाबाबू! असल में तो बेचने की नौकरी है और बेचते समय छटांक भर भी इंजीनियरिंग काम नहीं आती।"

गाड़ी से उतर कर घर में घुसते ही पीताम्बर ने वातावरण को हल्का कर दिया। हरिसाधन को गुस्सा दिखाने का मौका ही नहीं दिया उन्होंने। एकदम से बोले, "यह लो भाई हरिसाधन, यह रही तुम्हारे बेटे की गाड़ी, यह रहा तुम्हारा बेटा और यह रही तुम्हारे बेटे की बहू—सँभाल लो सब और सब कुछ सही मिल गया, यह लिखकर चालान पर दस्तखत कर दो।" फिर जरा गला

चढ़ाकर अन्दर की ओर देखकर बोले, "अवनी की माँ, जरा चाय का पानी चढ़ा दो। घर के मालिक का हुकुम बजा लाने में थक गये शरीर को चंगा करना पड़ेगा।"

चाय पीकर पीताम्बर बोले, "तो फिर अब चलूँ।"

लड़के को सही-सलामत देखकर हरिसाधन शांत हो गये थे। पीताम्बर ने कहा, "अच्छा, अब मैं चलूँ। अब लड़के को पास बुलाकर बातचीत करो, आफिस के हालचाल पूछो। लड़के को देखे बिना रेत की मछली की तरह तड़प रहे थे।"

"आँखों से देख लिया, जी को चैन पड़ गया, पीताम्बर। लेकिन अब एक और चिन्ता दिमाग में घुस गई है।"

"ओ" चिन्ताशील मनीषी व्यक्ति तो तुम्हीं हो, हरिसाधन!" जरा मजाक किया पीताम्बर ने।

"सोच-सोच कर ही तो इतने दिन तक गृहस्थी की गाड़ी को चलाये रखा। पर अब जो अवस्था है, उसमें शायद सोचने से भी कोई काम नहीं होगा।"

"अब तक तो अच्छे लगते थे। अब अचानक कौन-सा कीड़ा घुस गया दिमाग में?"

"घुसा हुआ तो बहुत दिनों से था, पर तुम्हें बताने की फुरसत नहीं मिल रही थी।" यह कहकर हरिसाधन ने सिर उठाया और पीताम्बर की जिज्ञासु दृष्टि अपने मुँह की ओर देखकर आगे कहा, "सुनो पीताम्बर, उससे पहले एक काम की बात हो जाये। अब इतनी रात को घर जाकर तुम्हें चूल्हा फूँकने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ जो भी बना है, खा लो—दो जली रोटी ही तो खाओगे।"

पीताम्बर तैयार नहीं हो रहे थे, लेकिन सब लोगों के एक साथ मिलकर दबाव डालने पर विवश होकर बोले, "मुहल्ले भर में बदनामी फैल जायेगी मेरी। अगर सरकार को खबर मिल गई कि मेरे घर महीने में भी दिन चूल्हा नहीं जलता तो शायद राशन कार्ड ही जब्त हो जायेगा ... ी तो बेचारी कोई बर्तन माँजने को न देखकर डर ही गई है ... काम के लिये नौकर तो रखोगे?' बेचारी को चिंता ... उसकी नौकरी न चली जाये।"

"चलो, हम लोग छत पर चलकर बैठें।" उठते हुए ... कौन कहेगा कि कुछ ही देर पहले यह आदमी लड़के के ि... उठा था।

"सेल्स एंड सर्विसिंग की नौकरी है न—लम्बी-लम्बी ड्राइव पर जाना होता है। कभी-कभी तो एक दिन में पाँच सौ मील गाड़ी चलाई है इन्होंने। मेरे बाबूजी की गाड़ी चलाने वाला ड्राइवर तो दिन में तीस-चालीस मील गाड़ी चलाकर ही अगले दिन के लिये गोता लगा जाता था।"

बड़ी सड़क छोड़कर अमिताभ ने बड़ी निपुणता से गाड़ी हलधर हालदार लेन में मोड़ ली। पीताम्बर उद्विग्न हो उठे, बोले "जरा धीरे चलाओ—छोटे-छोटे बच्चे घूमते रहते हैं गली में।"

परन्तु कुमकुम को पति की ड्राईविंग पर अगाध विश्वास था। बोली, "आप बिल्कुल परेशान मत होइये, काकाबाबू। आपका भतीजा एकदम ड्राइविंग मास्टर जनरल है! स्टीयरिंग पर हाथ जाते ही दूसरे आदमी हो जाते हैं ये।"

"तुम्हें ड्राइविंग लाइसेन्स लिये कितने दिन हो गये, गौतम?" पीताम्बर को कौतूहल होने लगा।

"पार्ट आफ द सेल्स ट्रेनिंग, काकाबाबू। ड्राईविंग-लाइसेन्स मिले बिना ट्रेनिंग कम्पलीट नहीं होती।"

"इतना ही नहीं काकाबाबू, इन्होंने तो मीडियम वेहिकिल का भी ड्राइविंग लाइसेन्स ले लिया है", पति के गर्व से मुखरित हो उठी थी कुमकुम।

"इसका मतलब?" ड्राईविंग के बारे में इतना कुछ नहीं जानते थे पीताम्बर।

"मतलब यह है कि ये मुझे डर दिखाते हैं कि नौकरी में कुछ गड़बड़ होने पर मिनिबस, टेम्पो या ट्रैक्टर चलाकर जीवन निर्वाह करेंगे।"

अमिताभ बोला, "सेल्स इंजीनियर की नौकरी का अभाव हो सकता है लेकिन कुशल ड्राइवर की आजकल बहुत माँग है।"

"सेल्स और इंजीनियरिंग दोनों करनी पड़ती है तुम्हें?" पीताम्बर ने पूछा।

"दूसरा तो डेकोरेशन के लिये है काकाबाबू! असल में तो बेचने की नौकरी है और बेचते समय छँटाक भर भी इंजीनियरिंग काम नहीं आती।"

गाड़ी से उतर कर घर में घुसते ही पीताम्बर ने वातावरण को हल्का कर दिया। हरिसाधन को गुस्सा दिखाने का मौका ही नहीं दिया उन्होंने। एकदम से बोले, "यह लो भाई हरिसाधन, यह रही तुम्हारे बेटे की गाड़ी, यह रहा तुम्हारा बेटा और यह रही तुम्हारे बेटे की बहू—सँभाल लो सब और सब कुछ सही मिल गया, यह लिखकर चालान पर दस्तखत कर दो।" फिर जरा गला

चढ़ाकर अन्दर की ओर देखकर बोले, "अवनी की माँ, जरा चाय का पानी चढ़ा दो। घर के मालिक का हुकुम बजा लाने में थक गये शरीर को चंगा करना पड़ेगा।"

चाय पीकर पीताम्बर बोले, "तो फिर अब चलूं।"

लड़के को सही-सलामत देखकर हरिसाधन शांत हो गये थे। पीताम्बर ने कहा, "अच्छा, अब मैं चलूं। अब लड़के को पास बुलाकर बातचीत करो, आफिस के हालचाल पूछो। लड़के को देखे बिना रेत की मछली की तरह तड़प रहे थे।"

"आँखों से देख लिया, जी को चैन पड़ गया, पीताम्बर। लेकिन अब एक और चिन्ता दिमाग में घुस गई है।"

"ओ··· चिन्ताशील मनीषी व्यक्ति तो तुम्हीं हो, हरिसाधन!" जरा मजाक किया पीताम्बर ने।

"सोच-सोच कर ही तो इतने दिन तक गृहस्थी की गाड़ी को चलाये रखा। पर अब जो अवस्था है, उसमें शायद सोचने से भी कोई काम नहीं होगा।"

"अब तक तो अच्छे खासे थे। अब अचानक कौन-सा कीड़ा घुस गया दिमाग में?"

"घुसा हुआ तो बहुत दिनों से था, पर तुम्हें बताने की फुरसत नहीं मिल रही थी।" यह कहकर हरिसाधन ने सिर उठाया और पीताम्बर की जिज्ञासु दृष्टि अपने मुँह की ओर देखकर आगे कहा, "सुनो पीताम्बर, उससे पहले एक काम की बात हो जाये। अब इतनी रात को घर जाकर तुम्हें चूल्हा फूँकने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ जो भी बना है, खा लो—दो जली रोटी ही तो खाओगे।"

पीताम्बर तैयार नहीं हो रहे थे, लेकिन सब लोगों के एक साथ मिलकर दबाव डालने पर विवश होकर बोले, "मुहल्ले भर में बदनामी फैल जायेगी मेरी। अगर सरकार को खबर मिल गई कि मेरे घर महीने में बीस दिन चूल्हा नहीं जलता तो शायद राशन कार्ड ही जब्त हो जायेगा। मोक्षदा की माँ तो बेचारी कोई बर्तन माँजने को न देखकर डर ही गई है। पूछ रही थी, 'तुम काम के लिये नौकर तो रखोगे?' बेचारी को चिंता लगी हुई थी कि कहीं उसकी नौकरी न चली जाये।"

"चलो, हम लोग छत पर चलकर बैठें।" उठते हुए हरिसाधन ने कहा। कौन कहेगा कि कुछ ही देर पहले यह आदमी लड़के के लिये इतना अधीर हो उठा था।

कुछ क्षणों के लिये अमिताभ कुमकुम को वक्ष से लगाये रहा ।

"अरे छोड़ो ना—कोई देख लेगा," बाँहों में आबद्ध, कसमसाती पत्नी की कातरोक्ति पर कान ही नहीं दे रहा था वह ।

हालाँकि अमिताभ को ख्याल रहना चाहिये कि घर में सास नहीं है तो क्या, दो छोटी जवान कुँआरी बहनें तो हर वक्त घूमती रहती हैं । पर ऐसे क्षणों में कोई भी बात नहीं सुनता वह ।

कभी-कभी कुमकुम चकित होकर सोचती है कि इसी आदमी को विवाह करने में घोर आपत्ति थी ! विवाह के लिये अमिताभ कैसे भी तैयार नहीं हो रहा था । काका बापू से उसने कहा था, "विवाह करने का समय अभी नहीं आया ।"

"क्यों ? छब्बीस साल की उम्र ही तो लड़कों के लिये विवाह करने की सबसे अच्छी उम्र होती है । समय का फल न बहुत पहले मिलता है और न बहुत पीछे," पीताम्बर ने अमिताभ को समझाया था और बातचीत का विवरण कुमकुम के पिता को यथा समय दे दिया था ।

कुमकुम के पिता सदाशिव मित्र मजूमदार ने बहुत चिन्तित होकर कहा था, "पिता को तो डर व आपत्ति हो सकती है—लेकिन लड़के के ऐसा कहने का क्या कारण हो सकता है ?"

"सर, आप यह सोच रहे हैं शायद कि लड़का कहीं विवाह के बाद ही वैरागी न हो जाये ! इस चिन्ता में मत पड़िये । अपनी जिम्मेदारी को भली-भाँति समझने वाला लड़का है—मैं तो बचपन से ही उन बच्चों को हर परि-स्थिति में देखता आ रहा हूँ ।"

पर इस पर भी मित्र मजूमदार की चिन्ता दूर नहीं हुई थी । गंभीर स्वर में बोले थे, "वैरागी भले ही न हो—लेकिन आजकल न जाने क्या-क्या सुनने में आता है ! इंजीनियरिंग, मेडीकल एवं साइन्स कालेज में हर लड़के की गर्ल फ्रेंड होती है । यह लोग डिग्री मिलने का इन्तजार करते हैं बस । फिर तो अभि-भावकों का कोई कन्ट्रोल नहीं रहता उन पर ।"

हँसी आ गई थी पीताम्बर को इस बात पर । आश्वासन देते हुए बोले थे—"यह लड़का वैसा नहीं है । गर्ल फ्रेंड हुए बिना भी शादी न करने के मध्य-वित्त परिवार में बहुत से कारण हो सकते हैं । आप जरा भी चिन्ता मत करिये ।"

लेकिन अब कुमकुम को यह देखकर बड़ा अचम्भा होता है कि जो व्यक्ति किसी भी तरह विवाह-मंडप में जाने को तैयार नहीं था—वही अब विवाह

के बाद दो मिनिट भी बीवी से अलग होने पर अधीर हो उठता है। कई बार वह सोचती थी कि अमिताभ से पूछे कि विवाह किये बिना वह इतने दिन रहा कैसे ?

आखिर एक दिन उसका मूड अच्छा देखकर पूछ ही लिया था। प्रश्न सुन कर जबर्दस्ती खींचकर कुमकुम को गोद में लिटाकर बोला था, "सील लगा रहा हूँ, इसके बाद मुंह मत खोलना।" और उसके ओठों पर दीर्घ, उष्ण चुम्बन अंकित कर दिया था उसने।

फिर कुमकुम की पुतलियों को तेजी से इधर-उधर अपने मुँह की तरफ घूमते देखकर ख्याल आया था कि आँखों पर तो मोहर लगाई ही नहीं गई।

ओठों से ओठ हटाकर बोला था, "तुमने सही बात उठाई कुमकुम। पुरुष शायद कोकाकोला की बोतल की तरह होता है—जब तक कैप लगी रहती है, दूसरी तरह का रहता है, परन्तु जैसे ही कैप खुलती है, अन्दर का सारा आवेग बड़ी प्ररलता से बाहर निकल आता है, फिर उसे बंद रखना असंभव होता है।"

पति की गोद में लेटी कुमकुम के नेत्र चंचल हो उठे थे। बोली थी, "ओ.... समझ गई। इसीलिये तुम्हें सील तोड़ने के पहले इतनी दुश्चिता थी। वासना, चारुशीला एवं कालेज की दूसरी सारी सहेलियों से कह दूंगी कि अब से वह पतियों को कोकाकोला, थम्स अप, लिम्का आदि नामों से पुकारा करें।"

इसके बाद लड़कियों के स्वभाव की बात आई थी। लड़कियों में कार्बन डाइ-आक्साइड का उच्छ्वास नहीं होता। कैप खोलते ही उनका सब कुछ कुछ क्षणों में नहीं निकल आता। इस पर कुमकुम के साग्रह अनुरोध करने पर अमिताभ ने कहा था, "लड़कियाँ शायद टूथपेस्ट के ट्यूब जैसी होती हैं। सावधानी से पेंच खोलकर एकदम नीचे हल्का सा दबाव डालने पर ऊपर से इमोशन बाहर आता है।"

आँखें नचाकर कुमकुम ने कहा था, "ठहरो! कालेज के रियूनियन में अपनी सारी सहेलियों को बता दूंगी कि पुरुष हमें टूथपेस्ट की ट्यूब समझते है। दबा-दबाकर सारी सम्पदा खाली करने के बाद ट्यूब का कोई मूल्य ही नहीं रहता।"

इस पर कुमकुम के माथे का चुम्बन लेकर अमिताभ ने कहा था, "मैंने ऐसा कतई नहीं कहा! मेरा मतलब था, "मुहर तोड़ने के बाद थोड़ा-थोड़ा दबाने से टूथपेस्ट बहुत दिन चल सकता है, अगर जितना निकलता है इसका उचित उपयोग किया जाये। लेकिन पुरुष कोल्डड्रिंक्स जैसे होते हैं—जब तक कैप नहीं

खुलती ठीक है, परन्तु जैसे ही ओपेनर लगाया कि सारा बाहर निकल आयेगा और उसी समय पूरा इस्तेमाल करना पड़ेगा।"

"समझी नहीं! सहेलियों के साथ समालोचना करके देखूंगी। कोकोकोला के साथ कॉलगेट की, फेंटा के साथ फॉरहेन्स की और थम्सअप के साथ नीम टूथपेस्ट की राशि कैसी मिलती है, इसके बारे में वासना, चारुशीला, काजल तथा और बहुतों से बात करनी पड़ेगी।" सागरिका ने बनावटी गम्भीरता ओढ़ कर कहा था।

पर आज ऐसी कोई बात नहीं हुई। छोटे से घर में पिता के अलावा एक बाहरी व्यक्ति की उपस्थिति ने उन्हें सचेत कर रखा था।

अमिताभ का आलिंगन शिथिल होने पर कुमकुम बोली, "मेरी एक सहेली सुदक्षिणा मिली थी। उसकी शादी को तीन महीने हुए हैं। मेरे सब बताने पर वह बोली, "तेरा पति गलत कहता है—पुरुष की तुलना कोकोकोला से हो ही नहीं सकती—कोकोकोला तो बर्फ-सा ठंडा अच्छा लगता है, पर पति पाइपिंग हॉट न हो तो बेस्वाद लगता है।' "

"आजकल की लड़कियाँ बहुत मुंहजोर हो गई हैं", आत्मरक्षा का प्रयत्न किया अमिताभ ने।

"लड़कियाँ तो हमेशा से ही मुंहजोर थी, तुम नहीं जानते थे?"

अचानक कुमकुम को अगले दिन के रेडियो प्रोग्राम और तानपुरे की याद आ गई।

बाँहों से मुक्त करके अमिताभ बोला, "आज माफी देनी पड़ेगी। चित्पुर जाने का वक्त ही नहीं मिला—वह अभागा डिएनबियेम आ गया और आज का सारा प्रोग्राम मटियामेट कर दिया।"

कुमकुम ने जब पहली बार 'डिएनबियेम' शब्द सुना था तो सोचा था कोई फ्रेंच आदमी होगा। लेकिन बाद को पति ने बताया था कि शुद्ध बंगाली था वह डिएनबियेम।

बताने पर उसने कहा था, "आफिस के लोगों का दिमाग इन सब बातों में खूब चलता है।"

इस पर अमिताभ ने सफाई दी थी, "माँ-बाप ने बड़ा सोच समझकर दीननाथ बसुमल्लिक नाम रखता था। परन्तु आफिस के चक्र की प्रथम स्टेज में डी. एन. बी. एम. हुआ और बाद को नाखुश होकर पीठ-पीछे वितनाम युद्ध की स्मृति में डिएनबियेमफूः कहने लगे! जितना भी मजा था, उस 'फूः' में था। मार्केटिंग के लोगों को उसे फूः करके उड़ा देने में ही मजा आता है।

लेकिन प्राइवेट कम्पनी है, इसलिये उसके हँड़िया जैसे मुंह पर कोई बोल नही पाता। सारे अत्याचार सहने पड़ते हैं।"

कुमकुम के पिता भी आफिसर थे। पोस्टल विभाग में प्रसिद्धि भी थी, परन्तु किसी ने उनसे इस तरह डरने या उनको नापसन्द करने की बात उसने कभी नही सुनी थी।

वह जानती थी कि उसका पति भी अफसर था—हाँ, आजकल अवश्य यह शब्द कोई इस्तेमाल नही करता। अब तो मैनेजमेन्ट स्टाफ कहा जाता है। अमिताभ ने पत्नी को समझाया था, "हम लोग जितना ही समाजतान्त्रिक लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं उतना ही हमारा श्रेणीभेद बढ़ता जा रहा है। जातिभेद और श्रेणीभेद दोनों इस देश के रक्त में दूध-पानी की तरह मिल गये हैं।"

आगे और स्पष्ट किया था, "स्वाधीनता से पहले बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों में दो तरह के अफसर होते थे—काले साहब और गोरे साहब। उनका आफिशियल नाम था—इंडियन असिस्टेंट तथा यूरोपियन कोवेनेन्टेड। सबने सोचा था खुदीराम, बाघायतीन, महात्मागांधी, सुभाष बोस के प्रयत्नों से पराधीनता खत्म होने पर गोरे साहब चले जायेंगे और रातोंरात सारे दुःख कष्ट मिट जायेंगे। पर हुआ उल्टा। काले अफसरों ने तीन मूर्तियाँ धारण कर लीं—जूनियर आफिसर, सीनियर आफिसर और जनरल मैनेजर। पर हर पाँच साल में चूँकि अवस्था अपरिहार्य होती है, इसलिये त्रिमूर्ति खंडित होते-होते अठारह मूर्तियों में परिणत हो गई और उनके शिखर पर चीफ जनरल मैनेजर तथा वेदी के मूल में मैनेजमेंट ट्रेनी बैठ गया।

पता है कुमकुम, जैसा जमाना आ गया है उसमें शीघ्र ही चीफ जनरल मैनेजर के ऊपर कोई पोस्ट नही बनाई गई तो मुँह बचाना मुश्किल हो जायेगा। अब सवाल है उसका डेजिगेशन क्या हो?"

अंगरेजी की छात्रा कुमकुम गाल पर हाथ रखकर बोली, "इसे तुम लोग *'फील्ड मार्शल मैनेजर'* कह सकते हो।"

"यह सीरियस मैटर है, मजाक की बात नही है", बनावटी डाँट पिलाई अमिताभ ने। "आफिस मैनेजमेन्ट में ह्यूमर का कोई स्कोप नही है। जाँच-पड़ताल करके दो-एक राय बनाई गई हैं: सीनियर चीफ जनरल मैनेजर एवं वेरी सीनियर चीफ जनरल मैनेजर।"

"फिर तो बीस श्रेणियाँ हो गईं! और बाद की भी समस्या खत्म हो गई—आवश्यकतानुसार एक-एक 'वेरी' बढ़ाते जाओ, जिससे कुछ ही सालों में तुम्हारे आफिस में एक वेरी वेरी वेरी वेरी सीनियर चीफ जनरल मैनेजर मिल जाये।"

कहकर पहले तो हँस दी थी कुमकुम, फिर एकदम से कानों को हाथ लगाकर बोली थी, "ना बाबा, अब इस तरह मजाक नहीं करूँगी—क्या पता मेरे पतिदेव ही तब तक उस पोस्ट पर आ जायें ? कितना खराब लगेगा कहना कि मेरे पति बी-एस-सी-जी-एम हैं !"

फिर पति के एकदम निकट आकर कहा था कुमकुम ने, "तुम कोशिश करके बीस साल बाद ऐसे ही बुद्ध बन जाओ। हम लोगों को बहुत अच्छा लगेगा।"

उसके मुँह पर आइसक्रीम सा ठंडा चुम्बन अंकित करके अमिताभ बोला था, "यह हम लोग कहाँ से हो गई ? गर्व व गौरव से बहुवचन पर आ गई ?"

"हाय राम ! तब भी क्या 'मैं' ही रहूँगी ? यह सब 'परिवार नियोजन वियोजन' बस दो ढाई साल तक चलेगा—उसके बाद एक नहीं सुनूँगी।" मौका पाकर कुमकुम ने पति को सावधान किया।

इसके बाद बातचीत समाप्त हो गई थी। तब कुमकुम ने पति की पीठ पर एक हल्की-सी चिकोटी काट कर कहा था, "क्या हुआ ? अभी तो दो घण्टा की देर है, अभी तो तुम्हें नर्सिंगहोम नहीं दौड़ना पड़ रहा है, फिर अभी बोलती क्यों बंद हो गई ?"

गम्भीरता की चादर उसी तरह ओढ़े हुए अमिताभ ने कहा, "नहीं, मैं तुम्हारे दूसरे मज़ाक की बात सोच रहा हूँ। बी-एस-सी-जी-एम तो दूर की बात है, अब तो विकेट बचाना ही दिन-प्रतिदिन कठिन होता जा रहा है। मेरी तो समझ में नहीं आता कि आदमी कैसे अट्ठारह वर्ष तक प्राइवेट कम्पनी के 'चूल्हे' में इस तरह जलता रहता है।"

"यह सब क्या अंट-संट सोच रहे हो ?" कुमकुम ने डाँट लगाई थी। "तुम तो कह-सुन सकते हो, हैंडसम हो, परिश्रम करने से डरते नहीं, तुम्हारा चमत्कृत करने वाला एकेडेमिक रिकार्ड है—फिर तुम क्यों फिक्र कर रहे हो ?"

"व्यवसाय की दुनिया में पढ़ाई-लिखाई के रिकार्ड का कोई मूल्य नहीं है। असल में तो हमारे शिक्षा प्रतिष्ठानों को कल-कारखानों की बात ध्यान में रखकर आदमी तैयार करना चाहिये। जब सारा जीवन मोदी की दुकान में ही काटना है तो शुरू के कुछ साल व्यर्थ में ओम्-मोम् पढ़ाने से क्या लाभ ? इससे आदमी की प्रत्याशा बदल जाती है। छात्र समझ नहीं पाते कि साइंस कालेज में एम० एस-सी० अथवा खड़गपुर का एम टेक करके अंत में किसी डिएन विएम के अन्दर दिन-प्रति-दिन, वर्ष-प्रति-वर्ष क्या करना पड़ेगा।"

दीनानाथ वसुमल्लिक का नाम आते ही वातावरण में एक बेचैनी-सी छा

जाती थी। अमिताभ को उस आदमी से एलर्जी सी होती जा रही थी और यह अच्छी बात नहीं है, यह समझने की क्षमता कुमकुम में थी।

उसने पिता से सुना था कि नौकरी की दुनिया में इमिडियेट मालिक ही सब कुछ होता है। जो आदमी इमिडियेट सुपीरियर का मन खुश नहीं कर पाता, उसकी तकदीर में बहुत कष्ट लिखे होते हैं। और फिर इससे धीरे-धीरे उसकी मानसिकता भी बदल जाती है। एक दिन मालिक बदल भी जाता है पर तब तक स्वभाव बिगड़ जाता है। आहत बाघ ही आदमखोर लगता है—जंगल एवं कर्म क्षेत्र में प्रकृति का एक ही नियम है।

अब अमिताभ ने काम की बात पर लौटना चाहा। पत्नी तो मुँह खोलकर कुछ कहेगी नहीं, इसलिये कोई बातचीत होने की संभावना नहीं थी, पर तब भी अपनी सफाई पेश करने को परेशान हो उठा वह।

बोला, "वह डिएनबिएम—जाने क्या सोचते हैं! उनका शायद ख्याल है कि उनके अधीन काम करने वाले अफसरों के घर-परिवार कुछ नहीं है। बस डिएन-बियेम और कम्पनी की सेवा करने के लिये ही उन लोगों ने जन्म लिया है।"

अमिताभ की इस मानसिकता से कुमकुम परिचित है, इसलिये पति का मनोबल तोड़ने वाली बात नहीं कहेगी वह। शान्त भाव से बस इतना पूछा, "तुम्हारे मिस्टर बसुमल्लिक सब पर स्टीम रोलर चलाते हैं?"

"ऐसा होता तो भी समझ में आता कि असली शेर का बच्चा है। पर यूनियन के कर्मचारियों के साथ ऐसा व्यवहार करता है कि पूछो मत, झुककर दुहरा हो जाता है। हर वक्त उनकी पीठ पर हाथ रहता है उसका। जितना रोब है, वह सब लड़के अफसरों पर है। अब देखो आज ढाई बजे मुझसे कह गये कि मैं जरा मार्केट की भीतरी खबर लेने को निकल रहा हूँ! जब तक मैं न आऊँ तब तक डोन्ट लीव।"

पति का गुस्सा कम करने के लिये कुमकुम ने जान-बूझकर पूछा, "तुम लोगों का मार्केट कहाँ है?"

हँसी आ गई अमिताभ को। बोला, "यह क्या तुम्हारा कोले मार्केट या गड़िया मार्केट है! हमारा मार्केट ग्राहकों के मानस लोक में फैला हुआ है। सारा भारत ही हमारा मार्केट है। उसमें वेस्ट बंगाल का चतुर्थांश इस अमिताभ राय चौधरी के हाथ में है। ऐसे ही आठ-दस अमिताभ राय चौधरियों पर राज करते हैं दीननाथ बसुमल्लिक। सिनसिनाटि विश्वविद्यालय या न

जाने कहाँ से आपरेशनल रिसर्च का एम० एस-सी० पास करके कम उम्र में हम लोगों के सर पर सवार हो गये हैं। भगवान् जाने किस तरह कम्पनी के ऊपर वालों का मन जीता है।"

अचानक कुमकुम पति की सारी बातें ध्यान से सुनकर मन में रखने की कोशिश करती है। वह जब रात को बैठकर सेल्स कान्ट्रैक्ट रिपोर्ट तैयार करता है तो पास बैठकर ध्यान से देखती है।

कभी-कभी तो उसे गाड़ी लेकर बहुत दूर जाना पड़ता है और रात बाहर ही बिता कर अगले दिन शाम को लौटता है वह। और नहाते ही बैग से रिपोर्ट के फार्म निकालकर लिखने बैठ जाता है।

फार्म की जानकारी हो गई है कुमकुम को। इसलिये पति का काम हल्का करने के लिये कहती है, "तुम बोलो, मैं लिखती जाती हूँ।" ऐसा नहीं कि अमिताभ का उससे लिखाने का मन नहीं करता। पर तब भी मन मारकर कहता है, "रहने दो। तुम्हारी अंगरेजी और लिखाई दोनों इतनी अच्छी हैं कि डर लगता है। उस दीननाथ बसुमल्लिक का कोई विश्वास नहीं, लड़की के हाथ की लिखाई देखकर न जाने कौन-सा छिछोरपने का मन्तव्य लिख दें। पिछली बार हमारे महापात्र को लिख दिया था, कम्पनी ने कब तुम्हें महिला सेक्रेटरी उपहार में दी ?"

फिर ओंठ सिकोड़कर बोला, "इस दीननाथ बसुमल्लिक ने सबके सामने महापात्र से कहा था, कम्पनी के सीक्रेट्स सावधानी से रखने के लिये तुम्हारा कम्पनी के साथ करार है—कोई व्यतिक्रम होने पर कम्पनी तुम्हारे खिलाफ एक्शन ले सकती है। लेकिन वाइफ्स के साथ तो इस तरह का कोई करार नहीं है—उनके सीक्रेट्स आउट करने पर कुछ नहीं किया जा सकेगा, महापात्र।"

"खाक सीक्रेट है। वर्धमान छत्तीस पैकेट मार गया है कि उन्नीस–मार्केट शेयरों का सत्ताइस परसेंट हमारे हाथ में है या इकतीस परसेंट। इसी को सीक्रेट कहा जाता है। सीक्रेट का मतलब लोग समझते हैं कि एटम बम कहाँ फटेगा, कब फटेगा और कैसे फटेगा !" भन्ना कर अमिताभ कहता।

कुमकुम बोली, "तो आज डिएन-बिएम मार्केट की गोपनीय खबर लेने कहाँ गये थे ? तुममें से किसे साथ ले गये थे ?"

मुँह बिचका कर अमिताभ ने कहा, "तुम भी बस एक ही हो। मार्केट की अन्दरूनी खबर लेने का मतलब मेरे ख्याल से टालीगंज क्लब है। भरी दोपहरी में पेड़ के नीचे शरीर को निढाल छोड़कर ड्रिंक्स के साथ नट्स भक्षण। साथ

में आफिस का कोई नहीं होगा। एक दिन शायद एक महिला साथ थी, पर आँखों से नहीं देखा उन्हें।"

"टालीगंज क्लब में पेड़ के नीचे मार्केट की खबर?" कुमकुम ने जरा आश्चर्य से पूछा।

"कोई मुँह नहीं खोल सकता। हम लोगों के मामले में तो कहाँ गये थे, कितने बजे गये थे, किससे मिले थे, क्या बात हुई आदि सारी रिपोर्ट हलफ़नामा करनी पड़ती है। परन्तु उच्चस्तर पर सब कुछ मौखिक और गोपनीय होता है। कोई गलती नहीं पकड़ सकता, क्योंकि हमारी दोनों प्रतिद्वंद्वी कम्पनियों के फौजदार भी वहाँ के मेम्बर हैं। लड़ाई तो बस वर्धमान के बाजार में है, वहाँ तो तीनों कम्पनियों के रिप्रेजेन्टेटिव्स में हाथापाई तक की नौबत आ जाती है। परन्तु टालीगंज में तीनों एक दूसरे से गले मिलते हैं, गिलास से गिलास टकराते हैं, तीनों बिल पेमेन्ट की प्रतियोगिता में आगे झपटते हैं।"

फिर पत्नी की जिज्ञासु दृष्टि अपने चेहरे पर गड़ी देखकर आगे बोला, "तुम सोच रही होगी कि मुझे यह सब कैसे पता चला? लेकिन पूरी रिपोर्ट मिल जाती है। हमारी विरोधी कम्पनी के फौजदार मिस्टर नागराजन इज ए नाइस मैन, वह दो-चार बार अपने जूनियर को वहाँ ले गये थे। उसी से खबर मिली।"

टालीगंज क्लब! सचमुच बड़ी अच्छी जगह है। न जरा भी गंदगी है और न भीड़-भाड़—घनी आबादी वाले कलकत्ते के बीचों-बीच जैसे कल्पनाओं का शांतिनिकेतन हो। अमिताभ जानता है कि यह जगह देखने की कुमकुम की बड़ी इच्छा है। होटल होता तो वह एक बार तो कुमकुम को ले ही जाता, भले ही कितना भी खर्च होता। पर टालीगंज क्लब में तो मेम्बर्स और उनके गेस्ट के अलावा किसी को भी प्रवेश करने का अधिकार नहीं है।

जाने कुमकुम की कैसे धारणा बन गई थी कि विश्वासपूर्वक बोली, "एक दिन तुम्हीं मिस्टर वसुमल्लिक की पोस्ट पर बैठोगे, तब हम भी टालीगंज जायेंगे। मैं एक के बाद एक कोल्डड्रिंक पीती जाऊँगी और तुम बिल साइन करते जाना।"

"तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर! जब खयाली पुलाव पक ही रहा है तो कैम्पाकोला क्यों? चिल्ड बियर या ड्राई जिन, या शेरी, नहीं तो परपूप और फिर एक बड़ी मेरी विथ फ्रायड चिकेन चिली।"

"चिकेन चिली चेख—अगर बिना हड्डी की हो तो और भी मजा आयेगा। पर दूसरी चीजें नहीं—वह सब तो शराब हैं। घर की बहू तो टाली-

गंज जाकर शराब पीकर घर नहीं लौट सकती ! अजंता, एलोरा से कुछ भी छुपा नहीं रहेगा।"

"अच्छी बात है बाबा। एक लार्ज फ्रेशलाइम विद क्लब सोडा उर्फ इन टैकर्ड में तो कोई आपत्ति नहीं है ?" स्वप्न भंग नहीं करना चाहता था अमिताभ। बोला, "दूर से देखने पर लगेगा बड़े मग में बीयर का सेवन किया जा रहा है—पर असल में होगा नीबू और कलब में बना सोडा। साथ में चीनी या नमक जो चाहो ले सकती हो।"

अमिताभ के दिल पर छाये आक्रोश के बादल छँट जाने का अन्दाजा लगा कर कुमकुम बोली, "उसके बाद मिस्टर वसुमल्लिक ने आज क्या किया ?"

बादल फिर से घनीभूत हो गये। अमिताभ बोला, "और क्या हो सकता था। मैं उनकी प्रतीक्षा में बैठा मक्खियाँ मार रहा था और वह शायद टालीगंज में बैठे मार्केट पर रिसर्च कर रहे थे ! उन्हें ख्याल ही नहीं रहा था कि एक अभागा बैठा-बैठा सूख रहा होगा। पाँच बज गये, छः बज गये, पर कोई पता ही नहीं। और वह चूँकि वेट करने को कह गये थे इसलिये उठ भी नहीं सकता था। मैं समझ गया था कि साजों की दुकान बंद हो जायेगी और रिकार्डिंग के लिये तुम्हें तानपुरे की सख्त जरूरत है। पर क्या करता, जैसे नौकर से ब्याह किया है, दुख भोगो जीवन भर !"

"क्या उल्टी-सीधी बक रहे हो ! जितनी बड़ी पोस्ट होती है उतनी ही जिम्मेदारी बढ़ जाती है। तानपुरे के न आने से मेरी रिकार्डिंग नहीं रुकी जा रही।"

अमिताभ बोला, "मैंने तो सोचा था कि डिएनवियेम शायद आफिस की बात भूल गये थे ! तकदीर अच्छी थी कि वह सीधे घर नहीं चले गये। आफिस का चक्कर लगा गये।"

"पाँच मिनिट में बुलावा आया। मेरे पहुँचने पर बोले, 'रायचौधरी', हाउ आर थिंग्स ?"

"अरे बाबा, शाम को पौने सात बजे थिंग्स भला कैसी हो सकती हैं ? मैंने पूछा, आप मार्केट की बात पूछ रहे हैं या घर की ?"

छूटते ही बोले "घर की बात मेरे किस काम आयेगी ? मैं मार्केट के बारे में जानना चाहता हूँ रायचौधरी। हमें हमेशा याद रखना चाहिये कि मार्केट ठीक नहीं होगा तो अल्टीमेटली घर भी ठीक नहीं रहेगा। यू अंडरस्टैंड ?"

"अंडरस्टैंड किये बिना कोई चारा है ! सामने आते ही अंडरस्टैंड कराने के लिये कमर कस कर खड़े हो गये हो। हर वक्त तो कहते रहते हो कि मार्केट

न बेच पाने पर नौकरी चली जायेगी और बीवी बच्चों को लेकर सड़क पर बैठना पड़ेगा।"

"जो भी हो, सात बज गये थे और वसुमल्लिक से पल्ला छुड़ाकर घर जाना जरूरी हो गया था, इसलिये बोला, बाजार खराब करने की बहुत कोशिशें चल रही हैं। कम्पीटीटर्स चोरी छुपे दुकानदारों को उधार दे रहे हैं—कह रहे हैं—'माल अभी ले लो, पैसे बाद में देना।"

"वन मिनिट।"रेड सिग्नल दिया डिएलनियेम ने। "इस महीने काम करने का वेतन अगर तुम्हें तीन महीने बाद दिया जाये तो तुम्हें कैसा लगेगा?"

"कैसा लगने का प्रश्न ही नही उठता—गृहस्थी नहीं चलेगी मिस्टर वसुमल्लिक।"

"नाउ यू कम टु द पॉइंट। हमारी कम्पनी नगद के बिना माल नहीं देगी। हमारे माल की कीमत भी दूसरों की अपेक्षा अधिक होगी—क्योंकि तुम्हें और मुझे बाजार की तुलना में अधिक वेतन मिलता है। इसलिये""समझ रहे हो न?"

"गर्दन हिला दी—मतलब, अच्छी तरह समझ रहा हूँ मन ही मन कहा। पर दया करके अब तो छोड़ दीजिये। तानपुरे की दुकान शायद अभी भी खुली मिल जाये। पर मुँह से कहने का साहस कहाँ से लाता। साथ-साथ प्रश्न आया, 'क्या समझे'?"

"दाम अधिक होते हुए भी मार्केट में अपना नेतृत्व अक्षुण्ण रखना पड़ेगा—ध्यान रखना पड़ेगा कि हमारी कम्पनी के माल की बिक्री दिन पर दिन बढ़ती ही जाये और हमारे प्रतियोगियों का पसीना छूट जाये।"

"राइट!" इतनी देर बाद डियेनवियेम खुश हुए थे जाकर। बोले, "तुमने प्रोफेसर बर्गेसन की लेटेस्ट थ्योरी की स्टडी की है?"

"साला बर्गेसन है कौन, यही नही जानता। अवश्य कोई स्वीटिन होगा जिसने पैसे को लालच में अमेरिका की नागरिकता ले ली होगी, नहीं तो इसका नाम भला इंडिया के टालीगंज क्लब में कैसे पहुँचता?"

"उनका लेटेस्ट मॉड्युल वंडरफुल है। उसका कहना है कि जैसे भी हो बेस्टसेलर जोन में अपना माल डाल दो—और फिर अगर तुम्हें रास्ता ब्लाक रखते हुए ड्राइव करना आता है तो निश्चित होकर बैठ जाओ, कुछ दिनों में ही तुम अपने मोमेन्टम से बेस्ट सेलर बन जाओगे।"

"आगे बोले, रायचौधरी, अपने एरिया की मार्केटिंग में दिमाग लड़ाओ—असीम सुयोग है।"

"भगवान् ही जानता है, साला असीम सुयोग कहाँ देख रहा है। तब भी मैंने कहा, आपकी गाइडेन्स के अनुसार मेरी कोशिश बराबर होती रहेगी।"

"वह बोले, 'अपने एरिया की सारी दुकानें अपनी कम्पनी के माल से फ्लड कर दो, सो टु इट कि किसी दुकानदार के हाथ में ज्यादा कैश न हो, जिससे दूसरी कम्पनी का माल ले सके वह। विरोधी कम्पनियों को उधार माल सप्लाई करने दो। उनके उधार देते ही सेल खत्म हो जायेगा—रुपये की अदायगी कभी होगी ही नहीं और उसका मतलब होगा हम और आगे बढ़ जायेंगे'''कैन यू फॉलो?' और फिर साले ने ऐसे ताका जैसे भगवान् बुद्ध की वाणी का प्रचार कर रहा हो।"

बिना कोई राय दिये कुमकुम ने पति की ओर टर्किश टावेल बढ़ा कर कहा, "लो, मुँह एकदम सूख गया है, धो आओ। पानी बचाने की मत सोचना—प्लास्टिक के ड्रम में बहुत पानी है। कल सुबह ही पानी आ जायेगा।"

तौलिया हाथ में लेकर अमिताभ बोला, "ड्राइवर के आते ही प्रभु दीनानाथ ने लास्ट दाँव फेंका। बोले, 'कल जरा जल्दी आ जाना रायचौधरी। मार्केट का रणकौशल जरा ठीक करना पड़ेगा—कम्पीटीटर चोपड़ा के पेट से एक नई खबर निकलवाई है।"

"तुमने तो कल की छुट्टी ले रखी है!" कुमकुम ने याद दिलाया।

"दरखास्त पर उन्होंने स्वयं ही दस्तखत किये थे, पर यह याद कौन दिलाये उन्हें? 'वेरी अर्जेन्ट—मार्केट में युद्ध शुरू हो गया है' यह कहते-कहते महाशय निकल गये। जिसका मतलब'''" इतना कहकर ही रह गया अमिताभ।

आगे कहने की आवश्यकता नहीं थी। मतलब समझ लिया था कुमकुम ने। अगले दिन उसे अकेले ही रेडियो स्टेशन जाना पड़ेगा। जीवन की प्रथम रिकार्डिंग के समय पति पास नहीं रहेगा। वासना के पति ने तो पत्नी के रेडियो प्रोग्राम के लिये तीन दिन की छुट्टी ली थी और कलकत्ते में रहने वाले पैंतीस रिश्तेदारों के यहाँ स्वयं खबर देने गया था, जिससे कोई प्रोग्राम मिस न करे। कुमकुम उस समय कालेज में पढ़ती थी।

"मैं सोच रहा हूँ, कल आफिस नहीं जाऊँगा", गम्भीरता से अमिताभ ने कहा।

"बचपना छोड़ो। सोचने को बहुत वक्त पड़ा है। अभी तो जाकर नहा लो," यह कहकर कुमकुम ने जबर्दस्ती बेचैन अमिताभ को गुसलखाने भेजा।

• •

छत पर चटाई बिछाकर बैठे हरिसाधन और पीताम्बर की बातचीत अच्छी खासी जम गई थी।

हरिसाधन कह रहे थे, "मेरी तकदीर अच्छी थी कि ठीक वक्त पर गौतम को सरकारी नौकरी से हटाकर प्रसिद्ध कम्पनी में घुसा दिया।"

पीताम्बर ने तारीफ की, "सचमुच तुम्हारी तुलना नहीं है। दुनिया भर की खबरें रखते हो तुम। किस जगह किस नौकरी में कितनी उन्नति होती है यह तुम्हारी उँगलियों पर है।"

गर्व से हरिसाधन बोले, "गौतम को स्वयं तो कोई फिक्र थी नहीं। आई. आई. टी. से निकल कर सोचा कि उबर गया। उसकी इच्छा तो एक परीक्षा और पास करके कहीं पढ़ाने की थी।"

"मैंने उससे कहा कि एकमात्र मास्टर ही परीक्षा पास करने के लिये परीक्षा पास करते हैं। लेकिन दुनिया बदल रही है, केवल परीक्षा पास करने से कोई फायदा नहीं है। सबसे बड़ी बात तो है कि परीक्षा पास करके कौन किस पोस्ट पर है और कितना वेतन मिल रहा है।"

अंतर तक भीगकर पीताम्बर ने फिर कहा, "सचमुच तुम्हारी तुलना नहीं है हरिसाधन। लड़के को पूरे स्कूल में सेकेंड पोजीशन दिलाई, उसके साथ ताल मिलाये रखने के लिये स्वयं फिर से एलजेब्रा, ज्योमेट्री व केमिस्ट्री पढ़ी। फिर उसे कालेज भेजा। पत्नी के जेवर बेचकर प्राइवेट ट्यूटर लगाते तुम्हें ही देखा बस। लेकिन तुम्हारा इतनी बड़ी जोखिम उठाना व्यर्थ नहीं गया। गौतम का रिजल्ट आशातीत था। एक क्षण तुमने बेकार नहीं गँवाया। पोस्टआफिस का अंतिम कैश-सर्टिफिकेट भुनाकर तुमने लड़के को स्पोकेन इंगलिश की क्लास में दाखिला दिलाया। जब सुना कि तुम उसे जर्मन की क्लास में भी भेज रहे हो तो ताज्जुब में पड़ गया था मैं। तुमने कहा था, 'जर्मनी कई बार स्कालरशिप देता है, लेकिन भाषा जाने बिना उस देश में नहीं जा सकता कोई।' "

"मैं तो निमित्त मात्र हूँ, पीताम्बर। लड़के से जैसा कहता गया, मुँह बन्द किये पालन करता गया वह। यही मेरा सौभाग्य है। गौतम कह सकता था कि 'तुम तो हावड़ा पोस्टआफिस में स्टूल पर बैठकर सेविंग एकाउन्ट की पासबुक लिखते हो—उच्चशिक्षा के बारे में तुम क्या जानो?"

"ऐसी बात क्या वह लड़का कभी कह सकता है? बचपन से अपनी आँखों से सब कुछ देखता आ रहा है। ऐसे बाप कितने होते हैं? सन्तान के लिये इतना कष्ट कौन उठाता है?" अपने मित्र के जीवन की ओर पीताम्बर भी देखते तो सचमुच विस्मय से ठगे रह जाते हैं।

गर्व से हरिसाधन ने कहा, "शुरू में तो गौतम के सिर पर मास्टरी का भूत सवार था। इस देश के सारे बुद्धिमान लड़कों पर कम से कम एक बार तो यह सनक सवार होती ही है। पर मैंने उससे साफ-साफ कह दिया कि तुम्हें मास्टर बनाने के लिये मैंने तुम्हारी माँ के जेवर नहीं बेचे। याद रखो, मेरी दो कुंआरी लड़कियाँ हैं। तब उसने बात मानी और सरकारी कम्पनी की नौकरी के लिये एप्लीकेशन भेजी और नौकरी मिल भी गई।"

फिर जरा रुककर बोले, "सब कुछ अच्छा है गौतम में, पर टेम्परामेंट नहीं है यार। उसका पिता होकर मैं उत्तेजना और उत्साह से उबल रहा हूँ और असली आदमी की केटली का पानी जरा भी गरम नहीं होता।"

"बहुत अच्छा कहा, हरिसाधन। तुम्हारे मुँह से तो मणि मुक्ताओं की तरह अमूल्य बातें निकलती हैं।"

हरिसाधन बोले, "एक साल सरकारी नौकरी करने के बाद इस कम्पनी का विज्ञापन दिखाई पड़ा। मैंने ही शौक से विज्ञापन काटा, एप्लीकेशन लिखी, मैंने ही सार्टीफिकेट का फोटोस्टेट कराया फिर मैंने ही उसके साथ बहस करके उसके दिमाग में घुसाया कि अब सरकारी नौकरी में कोई चार्म नहीं रहा, सरकारी नौकरी का जमाना लद गया।"

"गौतम उस नौकरी में रम गया था। कहता था, 'आदमी अच्छे हैं। बहुत से लोग तो बहुत गुणवान हैं।' "

"लेकिन मैंने डाँट लगाई उसे। कहा, आफिस साधू-संगत की जगह नहीं है। आफिस में लोग कमाई करने आते हैं। इसके अलावा आफिस का कोई मूल्य नहीं है, यह सार-सत्य जानने में मेरे हावड़ा पोस्टआफिस में अट्ठाईस साल निकल गये। अब तुम तो इस तथ्य को समझने में फिर से अट्ठाईस साल मत गँवाओ।

"तब जाकर वह इस कम्पनी में एप्लीकेशन देने को राजी हुआ। अब तुम खुद अपनी आँखों से सब कुछ देख रहे हो। सरकारी आफिस में ग्यारह साल बाद जितना वेतन मिलता उसे, यहाँ अभी उतना मिल रहा है। वहाँ रहता तो अभी भी बस-ट्राम में धक्का-मुक्की करनी पड़ती, यहाँ गाड़ी तो जुट गई, भले ही कम्पनी की हो। लेकिन लोग तो यही देखते हैं कि हरिसाधन रायचौधरी का लड़का कार चला कर १८ नम्बर हलधर हालदार लेन में घुस रहा है। क्यों, तुम्हारी क्या राय है, पीताम्बर ?"

"बिल्कुल ठीक कह रहे हो। बाप होकर तुम भला गलत क्यों कहोगे ?"

"तुम नहीं जानते पीताम्बर, आजकल हर मामला जहाँ तक हो क्लियर

रहना चाहिये। लड़कों की किसी पत्रिका में बुद्धदेव के समय का पिताओं के विरुद्ध किसी मुनि का वक्तव्य छपा है।"

"एँ! कह क्या रहे हो हरिसाधन?" इतना पढ़ने का मौका पीताम्बर को नहीं मिलता।

"हाँ तो, लिखा है—रूप, वय, सौभाग्य, प्रभाव व विद्या के मामले में संघर्ष उपस्थित होने पर लोग अपनी सन्तान का उत्कर्ष भी सहन नहीं कर पाते।"

"लड़के इसे सच मान लेंगे?" पीताम्बर को एक बेचैनी सी होने लगी।

"बाप होकर मैं क्या कहूँ, पीताम्बर? बुद्ध के समय सारे ऋषि मुनि विद्वान् व बुद्धिमान् थे, यह आँखें मूँद कर कैसे मान लूँ?" जरा संकुचित होकर हरिसाधन ने कहा।

पीताम्बर बोले, "तुम्हारी एक बात पर मुझे हमेशा बड़ा आश्चर्य होता था—वह यह कि तुम स्कूल से कालेज तक बराबर गौतम के दोस्तों के बीच उठते बैठते रहते थे।"

"ऐसा किये बिना यह कैसे पता लगाता कि लड़का किस ओर जा रहा है? लड़का पालना आजकल दिन पर दिन मुश्किल होता जा रहा है। लड़के के दोस्तों के साथ मिलते जुलते रहने से बहुत सी खबरें समय पर मिल जाती हैं।"

"लड़के कैसे बड़े करने चाहिये, इसके लिये एक ट्रेनिंग कालेज की आवश्यकता है। हरिसाधन, तुम्ही इस कालेज के सर्वप्रथम प्रिंसिपल बनोगे!"

"और शर्मिन्दा मत करो। मजबूरी में सब करना पड़ा, पर करने पर पाया कि लड़के के दोस्तों का सान्निध्य बुरा नही था। जो भी कहो, आजकल के युवक तो चरित्रहीन होते जा रहे हैं, बच्चों में जो पवित्रता होती है, वह दुनिया में कहीं नही मिलेगी।"

"हरिसाधन, आइ.आइ.टी. से निकलने के बाद गौतम के दोस्तों के नौकरी मे चले जाने पर भी तुम उनसे खुल कर मिलते हो?"

"कौन कहाँ एप्लीकेशन दे रहा है, किसे कितना वेतन मिल रहा है—यह सब जानना नही चाहिये? गौतम अपने आप तो यह सब खबरें रखेगा नहीं। जब मैंने पाया कि अपने समवयसी मित्रों में गौतम को हाइएस्ट वेतन नही मिल रहा, तभी तय कर लिया था कि सरकारी नौकरी नही चलेगी।"

"तुम तो जैसा सोचते व कहते हो, वैसा ही करते हो।"

"भाग्य से इस कम्पनी में नौकरी मिल गई। पहली नौकरी मे एक और बात मुझे अच्छी नही लगी थी। गौतम के रिसर्च डिपार्टमेन्ट में मिस वासुदेवन बहुत बड़ी पोस्ट पर थी और गौतम के साथ ही श्रीमन्त चटर्जी भी लगा था।

अचानक पता चला कि श्रीमन्त अपनी डिपार्टमेन्ट की हेड से ही विवाह कर रहा था। लड़की ने करीब चार साल पहले बम्बई से पास किया था।"

"ऐसे दो-चार केस तो हो ही जाते हैं", अधिक विचलित न होकर पीताम्बर ने कहा।

"तो क्या वयोज्येष्ठा महिला अपने सब-आर्डिनेट यंग मैन से ही विवाह कर लेगी? उनके आफिस में वातावरण काफी उत्तेजक हो गया था। आफिस में पत्नी बॉस थी और घर पहुँचते ही पति बॉस बन जाता था।"

"कोई मरे कोई मलार गाये", हँस दिये पीताम्बर। "वह केस न हुआ होता तो गौतम के विवाह की बात कैसे भी आगे नहीं बढ़ती। तुम मेरे प्रस्ताव पर जरा भी कान नहीं देते।"

"तुम्हारी बात पर कान न देकर कहाँ जाऊँगा, पीताम्बर? तुम्हारे जैसा मित्र कितनों को नसीब होता है? तुम न होते तो आज लोका की न जाने क्या पोजीशन होती। उसे हायर एजुकेशन में भेजते समय मेरे हाथ में एक पैसा नहीं था। प्राविडेन्ट फंड से भी उधार लिया हुआ था—उससे पहले अजन्ता की बीमारी में काफी खर्च हो गया था। तुम्हारा हाथ भी उस समय एकदम खाली था। पर पता चलने पर तुम अपने प्राविडेन्ट फंड से तीन हजार रुपया लोन लेकर मुझे दे गये थे।"

"उफ! फिर गड़े मुर्दे उखाड़ने लगे तुम", पीताम्बर को यह सब जरा भी नहीं भाता था।

पर हरिसाधन ने जैसे सुना ही नहीं। बोले, "इन बातों पर क्या कोई विश्वास करेगा? मित्र के लड़के की पढ़ाई के लिये क्या कोई अपने पी० एफ० से उधार लेता है? मैंने तुम्हें बहुत रोका था, पर तब भी तुमने गौतम की प्राइवेट ट्यूशन के लिये हर महीने १७५ रुपये जुटाये थे।"

"ओह, जैसे मैंने खैरात की थी। तुमने पाई-पाई के हिसाब से सारा चुका तो दिया है।"

"रुपये वापस देने से ही क्या आदमी ऋणमुक्त हो जाता है, पीताम्बर? मैंने तो गौतम को बता दिया था सब और अब बहू को भी सुना दिया है कि आज तुम्हारा पति जो कुछ भी है, उसके पीछे पीताम्बर काकू की कृपा है।"

पीताम्बर बोले, "विवाह की बात पर तुम दुविधा में पड़ गये थे। तुम्हारा ख्याल था कि इतनी जल्दी विवाह आवश्यक नहीं था। पहले दो लड़कियों की चिंता करनी चाहिये—मूलधन के नाम पर तो जो कुछ था, वह लड़का ही था। और फिर तुम भी रिटायर हो गये थे।"

हरिसाधन ने एक सिगरेट जला ली थी। पीताम्बर कहते जा रहे थे, "कुमकुम के पिता मुझ पर बुरी तरह जोर डाल रहे थे। पोस्टल के इतने बड़े अफसर सदाशिव मित्र मजूमदार जब इस सामान्य क्लर्क की टेबिल पर आकर बैठ गये थे तो मैं मुँह फाड़े देखता रह गया था।

"पूछा था, क्या बात है सर?"

"उन्होंने कहा था, मैंने सुना है, आपमें बहुत क्षमता है, मेरा एक उपकार करना होगा आपको।"

"फिर अपनी गाड़ी में बिठाकर ही वह अपने घर ले गये थे। आफिस में तो उत्तेजना फैल गई थी। घर जाकर सागरिका को देखा। बहुत ही भोला-भाला सौम्य, खूबसूरत चेहरा था। कहाँ मैं और कहाँ सरकारी सीनियर, क्लास वन अफसर मिस्टर मित्र मजूमदार!"

"पर मैंने देखा कि मित्र मजूमदार सब कुछ जानते थे। बोले थे, क्लास वन, क्लास टू, क्लास थ्री नहीं जानता मैं। लड़की के बाप के नाते जहाँ भी कोहिनूर मिलेगा वहीं जाना पड़ेगा मुझे।"

गर्व से सीना फूल गया था उस समय पीताम्बर का। याद आ गया था कि एक दिन हरिसाधन ने भी उस सदाशिव मित्र मजूमदार के अंडर काम किया था। उस समय बड़े साहब के कमरे से बुलावा आते ही पसीना छूटने लगता था। मित्र मजूमदार साहब के मुँह की ओर देख कर लगता था क्लास वन आफीसर जैसे अन्य ग्रह के मनुष्य थे। दूरी बनाये रहते थे मित्र मजूमदार। बात भी कम करते थे।

एक बार कर्मचारियों के वार्षिक मिलन पर स्टार थियेटर में हरिसाधन ने मित्र मजूमदार को देखा था। लड़की के साथ सामने की पंक्ति में बैठे थे और हरिसाधन गौतम के साथ छब्बीसवीं पंक्ति में थे। गौतम उस समय नासमझ था। बोला था, "आगे तो जगह है, चलो न हम लोग भी सामने वाली लाइन में चलें।" उसकी समझ में यह किसी भी तरह नहीं आया था कि पहली वाली लाइन क्लर्कों के लिये नहीं थी।

लड़के को उत्साहित करते हुए हरिसाधन ने कहा था, "अच्छी तरह लिखो-पढ़ो, टॉप आफीसर बनो—तब तुम भी आफिस के फंक्शन में आगे बैठोगे, गले में माला पड़ेगी, वालिन्टियर तुम्हारे बीवी-बच्चों के हाथ में कोको-कोला की ठंडी बोतलें थमा देंगे—यही तो संसार का नियम है।"

जिस दिन पीताम्बर के परामर्शानुसार सदाशिव मित्र

की नीली ऐम्बेसेडर में बैठ कर हलधर हालदार लेन में आये थे, वह एक स्मरणीय दिन था। हरिसाधन तो सोच भी नहीं सकते थे। जैसे इतिहास की धारा बदल गई थी। पोस्टल सर्किल के कर्त्ता-धर्त्ता के मालिक मिस्टर मिन मजूमदार स्वयं हाथ जोड़े हावड़ा पोस्ट आफिस के एक अवसर-प्राप्त क्लर्क हरिसाधन राय चौधरी के घर उपस्थित हुए थे।

दो क्षण के लिये तो हरिसाधन किंकर्तव्यविमूढ़ से हो गये थे। फिर स्वयं सन्देश की प्लेट हाथ में लिये ड्राइवर फटिक हाजरा से मिलने आगे थे। फटिक पहले हावड़ा पोस्ट आफिस में ही पियोन था। बोले थे, 'अरे, फटिक कैसे हो?'

फटिक अवाक् होकर हरिसाधन की ओर देखता रह गया था—मानों रातों-रात कोई भीषण कांड हो गया था।

जाने क्या सोच कर उसने सौभाग्यशाली हरिसाधन के पैर छू लिये थे। और पहले आफिस में पानी माँगने पर आधे घंटे में लाकर गिलास ऐसे पटकता था जैसे अहसान कर रहा हो।

फटिक समझ गया था कि हरिसाधन बाबू अब पहले वाले हरिसाधन नहीं रहे थे। किसी मंत्रबल से रातों-रात वह साहब के लेवेल पर पहुँच गये थे। जब स्वयं बड़े साहब ही हरिसाधन के उस हलधर हालदार लेन में आ पाने के कारण स्वयं को कृतार्थ समझ रहे थे तो वह तो किस खेत की मूली था।

"आप तो बड़े आदमी हैं—प्लेट लेकर आप स्वयं क्यों सड़क पर आ गये? सचमुच आप महान् हैं सर।" अचानक फटिक ने हरिसाधन को सर कह दिया था।

"तुम पुराने सहकर्मी हो—कितने दिन बाद घर आये हो," आनन्द प्रकट किया था हरिसाधन ने।

"कितने लोग याद रखते हैं सर?" फटिक विनय से विगलित हुआ जा रहा था।

"इतनी जल्दी भुला पाता है क्या कोई?" मुस्कुराकर हरिसाधन ने कहा था।

फटिक ने पूछा था, "भैया जी को देखा है मैंने भी—स्कूल से लौटते समय आपके पास आकर बैठे रहते थे। भैया जी क्या अब बहुत बड़े आदमी हो गये हैं?"

जी जुड़ा गया था हरिसाधन का। बोले थे, "बड़े और क्या? बड़े आफिस में बड़ी नौकरी करता है, बस। गाड़ी भी मिली हुई है।"

"सुना है कि गवर्नमेन्ट के क्लास वन आफीसर से भी ज्यादा वेतन मिलता

है। हम लोगों को बहुत खुशी हुई। भगवान् लम्बी उमर दें उन्हें।" हृदय से आशीर्वाद दिया था फटिक ने।

"खाओ—अच्छी तरह खाओ," हरिसाधन ने अनुरोध किया था।

"पानी तो ठंडा आलमारी का लगता है," रेफ्रीजीरेटर के लिये आसान शब्द का प्रयोग किया था फटिक चाँद ने।

"कमरे में ठंडी मशीन लगने पर गर्मी के मौसम में भी आप स्वेटर पहनियेगा," पहले से ही आगाह किया था उसने।

"तुम फिक्र मत करो, अभी एयरकूलर नहीं लगा।" यह कहकर हरिसाधन अन्दर चले गये थे, वहाँ मित्र मजूमदार सिकुड़े-सिमटे बैठे पीताम्बर से धीरे-धीरे बात कर रहे थे। उस दिन उल्टे पुराण के अभिनय में जैसे हरिसाधन अफसर और मित्र मजूमदार पोस्ट आफिस के तृतीय श्रेणी के क्लर्क थे।

हरिसाधन को देखते ही मित्र मजूमदार सीधे होकर बैठ गये थे। हरिसाधन ने समयोचित गम्भीरता ओढ़ ली थी।

कृपा-प्रार्थी सदाशिव ने विनय से विगलित होकर कहा था, "पीताम्बर बाबू के कहने पर आपके पास हिम्मत करके आया हूँ। मेरी छोटी लड़की को अपने घर में स्थान देने की कृपा करनी ही पड़ेगी आपको।"

"आहा! यह क्या कह रहे हैं आप! कृपा क्यों? आपकी कन्या तो बड़ी योग्य है।"

"आपके सुयोग्य पुत्र की तुलना में मेरी लड़की कुछ भी नहीं है—यद्यपि देखने-भालने में खूबसूरत है, बी० ए० में अच्छे नम्बरों से पास हुई है, रवीन्द्र संगीत जानती है, थोड़े-बहुत पुरस्कार भी मिले हैं। और घर-गृहस्थी के कामों का जहाँ तक सवाल है, आप समझ ही सकते हैं—घाट के घर लड़कियों की उतनी जिम्मेदारी नहीं होती।"

परन्तु हरिसाधन का डर जैसे दूर नहीं हो रहा था। आफीसर की लड़की थी। हरिसाधन के मन की बात का अनुमान लगाकर पीताम्बर ने सदाशिव को हल्की-सी कोहनी मारी थी।

साथ ही सामयिक जड़ता काटकर सदाशिव मित्र मजूमदार ने कहा था, "आफिस पहुँचकर वहाँ से निकलने तक हम लोग अफसर रहते हैं। पर वैसे तो हम लोग पूर्णतया मध्यवित्त बंगाली ही होते हैं। दाल-भात व पोस्त चच्चड़ी ही हमारे प्रिय होते हैं—कोफ्ते-कबाब से कोई वास्ता नहीं होता।

"सागरिका आपकी गृहस्थी में स्थान पाने योग्य लड़की है। आफिस के अनुष्ठानों में काम-काज करना पड़ा तो वह भी अच्छी

लेगी। प्राइवेट कम्पनी के अफसरों की पत्नियों में जो गुण होने चाहिये, वह सब हैं उसमें।"

मित्र मजूमदार उसी तरह हाथ जोड़े बैठे थे, जिस प्रकार जीवन भर हरिसाधन एक के बाद एक अफसर के कमरे में जाकर आर्डर की प्रतीक्षा करते रहते थे। अंतर इतना ही था कि उस समय अफसर स्वयं टी पाट से कप में चाय डालकर अकेले पीते थे, हरिसाधन को ऑफर नहीं करते थे और अब हरिसाधन उनकी अवज्ञा करके अकेले चाय नहीं पी सकते थे।

हरिसाधन ने चाय और मिठाई की प्लेट सदाशिव व पीताम्बर की ओर बढ़ा दी थी। लेकिन मुख पर गाम्भीर्य क्लास वन आफीसर जैसा ही रखा था उन्होंने। तात्पर्य था कि आपका प्रस्ताव मान्य होगा या नहीं, अभी नहीं कह सकता—पर आप चाय तो पीजिये। बहुत से हाई आफीसर आजकल यही करते हैं—जब किसी प्रस्ताव को अस्वीकार करना होता है, तब उतनी ही मीठी बातें करते हैं।

फिर हरिसाधन ने कहा था, "मेरी परिस्थिति जरा दूसरी तरह की है। घर है पर घरवाली नहीं है, दो कुँआरी लड़कियाँ हैं ⋯"

"मैं सब जानता हूँ। बच्चे, परिस्थिति, परिचय, सब कुछ पता लगाकर ही आपके पास दौड़ा आया हूँ, मिस्टर राय चौधरी।" हरिसाधन ने लक्ष्य किया था कि मित्र मजूमदार ने उन्हें नाम से न पुकारकर मिस्टर कहा था।

"फिर भी घर की हालत तो आपको जान लेनी चाहिये।"

"घर पर पारसमणि होने पर क्या कोई यह जानना चाहता है कि उस घर में कितना सोना है?" झट से जवाब दिया था मित्र मजूमदार ने।

पारसमणि कौन है, इसको लेकर किसी तरह का संशय उठने से पहले ही पीताम्बर बोल पड़े थे, "पहली पारसमणि तो हरिसाधन स्वयं है। उसने जिस चीज को भी हाथ लगाया, वही सोना बन गई। और दूसरी पारसमणि अमिताभ है। नौकरी में इस तरह जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ चढ़ रहा है कि जल्दी ही अंतिम सीढ़ी पर पहुँच जायेगा।"

गर्व से फूलकर हरिसाधन ने बताया था, "मैंने जितने वेतन पर खत्म किया, मेरे लड़के ने उससे ड्योढ़े वेतन पर शुरू किया है।"

मित्र मजूमदार ने जेब से लड़की की जन्मपत्री निकालकर टेबिल पर रख दी थी और हरिसाधन के दोनों हाथ पकड़कर अनुरोध करते हुए कहा था, "जन्मपत्री देखिएगा—राजरानी बनने के योग हैं। और रही आपकी लड़कियों के विवाह की बात? तो देखियेगा, देर नहीं लगेगी। अपना-अपना पति लिखा

कर ही लड़कियाँ जन्म लेती हैं। समय आने पर आपके न चाहते हुए भी विवाह हो जायेगा। आप मेरी लड़की को अपने चरणों में आश्रय दे दीजिये।"

और फिर विदा ले ली थी मित्र मजूमदार ने।

बाद को हरिसाधन ने पीताम्बर से कहा था, "मैं दोनों लड़कियों के बारे मे सोच रहा हूँ। हाथ में रुपया भी तो नही है, विवाह कैसे करूँगा ?"

"मान लिया। पर लड़के का विवाह हुए बिना भी तुम्हारी कैपीटल की समस्या वैसी ही रहेगी।" पीताम्बर ने समझाने की कोशिश की थी।

विवाह न होने तक लड़के दूसरी तरह के रहते हैं—हरिसाधन शायद यही बात कहना चाहते थे, पर मुंह से कहने में शर्म आ रही थी। बात को घुमाकर कहा था, "जितने रुपये मैंने लड़के पर खर्च किये हैं, इतने में अजन्ता का विवाह अच्छी तरह हो सकता था।"

"अच्छा ही किया! प्राइवेट कोचिंग मे रुपया खर्च किये बिना गौतम फाइनल परीक्षा में इतना अच्छा रिजल्ट कभी नही ला सकता था। आज परीक्षा की पोजीशन पर ही जीवन भर की पोजीशन निर्भर होती है।"

हरिसाधन तब भी चुप बैठे रहे थे। पीताम्बर ने कहा था, "नौकरी करने वाले लड़के को कुँआरा छोड़ना भी तो निरापद नही है हरिसाधन। आजकल लड़के फाँसने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। फिर तुमने वह गौतम के पहले आफिस वाला केस बताया था न, कि कैसे बड़ी उम्र की लेडी अफसर ने अपने से उम्र और पद दोनों में छोटे लड़के से शादी कर ली थी!"

मित्र के मुँह की ओर देखकर असहाय भाव से हरिसाधन ने पूछा था, "फिर तुम क्या कहना चाहते हो, पीताम्बर ?"

"मैं कहना चाहता हूँ कि बिल्कुल अनजान बहू से यह जानी-पहचानी तो है। कम-से-कम…बचपन से लड़की को देखते आ रहे हैं…।"

आगे की बात पीताम्बर ने स्वयं नहीं कही थी, लेकिन हरिसाधन के कानों में पहुँच गई थी।

यह विवाह हो जाने पर पीताम्बर का काम हो जायेगा। सदाशिव मित्र मजूमदार अगर चाहें तो पीताम्बर को नौकरी में दो साल का एक्सटेंशन दे सकते थे और पीताम्बर को इस एक्सटेंशन की सख्त जरूरत थी। जाने क्या करता है पीताम्बर! रुपये पैसे का ठीक से हिसाब रखता नही। बैंक में कुछ नहीं है। जबकि हरिसाधन ने बार-बार मित्र से कहा था, "पीताम्बर, मेरे तो एक ही लड़का है, इसी इन्वेस्टमेन्ट से जीवन चल जायेगा। लेकिन तुम्हारा क्या होगा ? मकान तक किराये का है। कौन देखभाल करेगा तुम्हारी ?"

पीताम्बर हंस दिये थे। कहा था, "हरिसाधन, यह सब तो पैंतीस साल पहले कहना चाहिये था! प्रतिमा विसर्जन के बाद ढोल बजाने वाले को बुलाने का परामर्श देने से क्या फायदा?"

जो हो, मित्र की नौकरी के एक्सटेंशन की बात सुनकर उत्साहित हो उठे थे हरिसाधन। पीताम्बर को साथ लेकर ही वह लड़की देखने गये थे और फिर गौतम को भी मित्र मजूमदार के घर भेजा था।

पीताम्बर ने कहा था, "मैं तो निमित्त मात्र हूँ हरिसाधन। घर-बार, लड़की सब अच्छी तरह ठोक-बजाकर देख लो। अट्ठतीस सालों में जिसके दुख दूर नहीं हुए, दो साल के एक्सटेंशन में वह कोई लाट साहब नहीं बन जायेगा।"

"तुम बक-बक मत करो, पीताम्बर।" हरिसाधन ने धमकाया था।

फिर करीब-करीब सब करके ही हरिसाधन मित्र मजूमदार के यहाँ भागे गये थे। उन्होंने बता दिया था कि पीताम्बर की नौकरी के एक्सटेंशन का आर्डर वह विवाह से पहले चाहते थे। कोई दिक्कत नहीं हुई थी। पीताम्बर दो साल के लिये और जी गये थे।

मित्र की नीरव उदारता से कृतज्ञ होकर पीताम्बर ने उसके दोनों हाथ हाथों में लेकर कहा था, "हरिसाधन, तुमने बहुत ज्यादा कर दिया—इतना कोई नहीं करता।"

हरिसाधन के नेत्र सजल हो गये थे। भर्राये स्वर में उन्होंने कहा था, "पीताम्बर, इतने सालों से तुम बराबर सब कुछ देखते आ रहे हो, तुमसे कुछ भी नहीं छुपा है। बंधु-बांधवहीन इस दुनिया में तुम ही एकमात्र ऐसे सखा हो, जो बराबर मुझे देते ही रहे हो। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरी मदद के बिना भी तुम्हारी नौकरी की मियाद बढ़ जाती। पर मुझे कम-से-कम मन को तसल्ली देने का यह मौका तो दो कि कम-से-कम एक बार तो मैं तुम्हारे लिये कुछ कर पाया।"

पीताम्बर की आँखें भी भर आई थीं। बोले थे, "घर में लक्ष्मी ले आओ हरिसाधन। ब्याह अच्छी तरह निपट जाये, बस। और अजन्ता, एलोरा के लिये इतना मत सोचो—कुछ न कुछ होगा ही, कभी तो भगवान् नजरें उठाकर देखेंगे ही!"

और विवाह हो जाने के बाद तो समय का स्रोत जैसे रुका ही नहीं।

१८ नम्बर हालदार लेन का घर कुछ ही दिनों में बिल्कुल बदल गया। दूसरा फ्रिज आ गया, छत पर टेलीवीजन का एन्टीना अपने वहाँ होने का प्रमाण देने लगा, ड्राइंगरूम में जूट के कार्पेट के ऊपर नया सोफासेट लग गया। अलग-

अलग रंग की दो गोदरेज की आलमारियाँ आ गईं, हल्के मक्खन रंग के पर्दे लग गये और किचेन में तरह-तरह के गैजेट आ गये।

पीताम्बर अब जब भी आते हैं तो उन्हें आड़े-तिरछे-मोटे, सेकेन्ड क्वालिटी के कप में चाय नही मिलती, अब तो ग्वालियर पॉटरी के हल्के नीले रंग के प्यालों में चाय आती है।

कभी-कभी उद्विग्न होकर पीताम्बर कहते, "यह सारे कल-पुर्जे देखकर मुझे डर लगता है, हरिसाधन। आजकल आदमी को कितनी चीजों की आवश्यकता पड़ती है।"

हरिसाधन कहते, "अभी तो जो कुछ सामने आये, इसका उपभोग कर लो। बाद को कौन जाने तकदीर में क्या हो। कवि लांगफैलो ने बहुत पहले ही सावधान करते हुए कहा था, भविष्य का कभी विश्वास मत करो। मेरी तकदीर में भी यह सब नही था। लड़का अच्छी डिवीजन मे पास हो गया और अच्छी नौकरी मिल गई, इसीलिये·····।"



गीला टावेल कंधे पर डाले अमिताभ बाथरूम से निकल आया। ऐसा लग रहा था वह, मानों किसी चलचित्र के रंगीन विज्ञापन का सुदर्शन नायक हो।

कुमकुम को कई बार बड़े सिनेमा की अपेक्षा एक दो मिनिट के ऐसे विज्ञापन चित्र ही ज्यादा अच्छे लगते हैं। इन विज्ञापन-चित्रों में न कोई दुविधा होती है और न कोई द्वन्द्व, धुंधली निष्क्रियता में कुछ भी खत्म नही हो जाता। मैसेज चाहे जितना छोटा हो, विज्ञापन-चित्रों मे आशा का संदेश होता है।

अब जैसे विवाह के बाद के जीवन के चलचित्र की पूरी दीर्घता का आनन्द नही लिया जा सकता। परन्तु उसके छोटे-छोटे अंश बहुत अच्छे लगते हैं।

जैसे आज का यह क्षण। दीर्घ समय की प्रतीक्षा के बाद पति घर लौटा है—वही पति, जिसके गले में वरमाला डालने के लिये कितनी प्रतियोगिता थी। पिता ने बड़ी कोशिशों के बाद अनेक बाधाएं लांघकर अपनी लाड़ली कुमकुम को मनपसन्द पति ढूंढकर दिया। एक साल कुछ महीने बीत गये। कुमकुम अच्छी गृहिणी बन गई है। वही महामूल्यवान पति स्नान के बाद शयन-मन्दिर में लौट रहा था—उस शरीर पर मधुर गंध वाला पाउडर छिड़क देगी वह। इस छोटी-सी बात की अगर तस्वीर बनाई जाये, तो लगेगा टैलकम पाउडर का विज्ञापन है। पर उस छोटी-सी घटना के साथ सम्पूर्ण जीवन के

स्वप्न जुड़े हुए हैं—कुमकुम का स्वप्न, उसके पिता का स्वप्न, अमिताभ की साधना, उसके पिता की साधना। अगर अमिताभ पढ़ने में अच्छा न होता, अगर यह लोभनीय नौकरी उसे न मिलती, तो भी वह शायद महाऊर इसी तरह वाथरूम से बाहर आता, परन्तु कुमकुम के स्वप्न में तब उसका कोई स्थान न होता, इस प्रकार उसे उसके लोमश शरीर पर टिनाग पाउडर छिड़कने का मौका नहीं मिलता।

अमिताभ एकदम शांत बैठा था। उसके अगांग पर मधुर-गंध सफेद पाउडर छिड़का हुआ था। उसकी ओर देखकर कुमकुम ने पूछा, "क्या सोच रहे हो?"

"उसी अभागे यमुमल्लिक के बारे में सोच रहा हूँ।"

"उन लोगों के बारे में ज्यादा नहीं सोचना चाहिये। पिताजी कहा करते थे, आफिस को घर में और घर को आफिस में ज्यादा सोचने से दुख बढ़ता है।"

"मनुष्य को क्रीतदास बनाने के लिये ही तो बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ जान-बूझ कर आफिस का थोड़ा-बहुत स्टाफ के घर में घुसा देती हैं।"

कुमकुम जान गई है कि नौकरी से अमिताभ खुश नहीं है, जबकि उसी नौकरी के कारण ही वह घर-बाहर व रिश्तेदारों की प्रशंसा व ईर्ष्या का पात्र है। कुमकुम समझती है कि पहले वाली सरकारी कारखाने की रिसर्च की नौकरी ही अमिताभ के लिये अच्छी थी, भले ही उसमें वेतन कम था। परन्तु नौकरी विवाह के पहले ही बदल गई थी, विवाह के बाद होती तो वह अवश्य आपत्ति उठाती। वह समझा देती कि दुनिया में हर व्यक्ति हर परिवेश के अनुकूल नहीं होता।

अमिताभ बोला, "ग्लैमर का जाल फेंककर, थोड़ी-सी अधिक सुख-सुविधाओं का लोभ दिखाकर प्राइवेट बिजनेस इस देश के बहुत से लोगों का सम्पूर्ण जीवन नष्ट कर रहा है। आइ०आइ०टी० में क्या सीखा मैंने, किसको डिग्री ली—और इस कम्पनी के सेल्स एंड सर्विस में आकर सारा दिन कर क्या रहा हूँ? परन्तु मेरी डिग्री को सर्वोच्च दर पर यही लोग खरीदने को तैयार हैं। बिजनेस की परिधि बहुत छोटी है, लेकिन पैसे का लोभ दिखाकर सबसे अधिक पढ़े-लिखे बुद्धिमान लोगों को खरीदने की प्रवृत्ति इंडियन बिजनेस में ही दिखाई देती है। परन्तु खरीदते ही वह लोग आदमी की आँखें फोड़ देना चाहते हैं। इनको तो ऐसे आदमी चाहिये जो ज्यादा दूर का न देख सकते हों।"

ओठों पर मुस्कान लाकर मधुर स्वर में कुमकुम ने पूछा, "शिक्षा का सद्व्यवहार कहाँ होता है गौतम ?"

पति को कभी-कभी वह नाम लेकर पुकारती है। यह स्टाइल उसने अपनी सहेली वासना से सीखा था। कालेज में पढ़ते समय सहेलियों में वासना दास-गुप्त का विवाह ही सबसे पहले हुआ था। वह भी एक एक्साइटिंग घटना थी। विवाह के दस दिन बाद ही वासना दासगुप्त वासना सेनगुप्त बनकर कालेज में पढ़ने लौट आई थी। माँग में लाल रेखा लीलायित भंगिमा में लरज रही थी।

वासना ने कहा था, "तापस को तुम सबके बारे में बताया था। वह तुम लोगों से मिलना चाहता है। जल्दी ही एक दिन गेट टुगेदर होगा।"

पति का बड़ी सहजता से नाम लेकर वासना का बात करना कुछ अजीब सा लगा था कुमकुम को। उसने पूछा था, "पति को तू 'वह' कह कर नहीं पुकारती ? नाम लेने में डर नहीं लगता ?"

"क्यों ? डर क्यों लगेगा ? अपने पति को नाम लेकर बुलाने में कौन सा पहाड़ टूट रहा है बाबा ?" वासना ने जरा जोर डाल कर कहा था।

वह बात अभी तक तरोताजा थी। घर में सबके सामने तो कुमकुम पति का नाम नहीं ले सकती, पर सबके पीछे अवसर मिलने पर वह गौतम को नाम लेकर ही बुलाती है।

पति के मुँह की ओर देख कर फिर से गौतम कह कर बुलाने में बड़ा मजा आया कुमकुम को।

फिर शान्त भाव से बोली, "एम० एस-सी० फिजिक्स में फर्स्ट क्लास होकर मेरी दीदी घर बनी दिन-रात गृहस्थी की चक्की पीस रही है—फिजिक्स कहाँ काम में ला रही है वह ? पिता जी कहा करते थे, फिलासफी में फर्स्ट क्लास पास होकर वह पोस्ट आफिस में लगे थे। जीवन भर इन्लैंड लेटर, अनरजिस्टर्ड पार्सल, पोस्टल लाइफ इन्श्योरेंस एवं सेविंग अकाउन्ट की फाइलें निपटाते रहे—दर्शन का 'द' भी कभी काम में नहीं आया।"

बिना रुके आगे बोलती गई कुमकुम, "मेरी सहेली चारुशीला के बहनोई मृत्युञ्जयदा ने अपने छात्र-जीवन में बड़ी एकाग्रता से रवीन्द्रनाथ पढ़ा था। अब नौकरी में दिन भर टैक्सी वालों, ठेले वालों एवं रिक्शे वालों को भगाते फिरते हैं। ट्रैफिक पुलिस की किसी पोस्ट पर हैं वह। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि विरले ही ऐसे भाग्यवान होते हैं, जिन्हें छात्र-जीवन में पढ़ी अपनी विद्या का सदुपयोग करने का मौका मिलता है।"

सर झुका कर अमिताभ बोला, "डाक्टरी, वकालत आदि वास्तविक प्रोफे-

शन मे लोग अपनी शिक्षा का सदुपयोग कर पाते हैं और शायद अध्यापक भी उसी श्रेणी मे आते हैं।"

"बाकी लाखों लोगो की एक सी हालत है। शिक्षा के साथ काम की कोई संगति नही है।"

अमिताभ मुग्ध-नयन पत्नी की ओर देख रहा था। बुद्धिमती पत्नी थी—शयनकक्ष मे इस तरह का वार्तालाप कितनों को नसीब होता था?

वह बोला, "मेरी समझ में नही आ रहा कि तुमसे किस तरह माफी मांगूं।"

"हाय राम! माफी मांगने वाली कौन-सी बात हो गई? मैंने तो अपनी किसी सहेली के मुंह से पति के माफी मांगने वाली बात सुनी नही, हां, शराब पीकर होश-हवास खो देने के बाद की बात अलग है। और अच्छी बात यह है, कि एक वासना को छोड़ कर मेरी बहुत सी सहेलियों के पति शराब छूते भी नही। पता है....।"

यह कह कर वासना की बात शुरू कर दी कुमकुम ने। बोली, "शादी के बाद जब पहली बार उसे देखा तो हम लोगो के एक्साइटमेंट का ठिकाना नही था। कुछ ही दिन पहले लड़की कितनी अल्हड़ और खुशमिजाज थी। और शादी होते ही अचानक बदल गई। विवाह की केमिस्ट्री ने उसे रातोंरात गृहिणी बना दिया। जिम्मेदार देश की एक जिम्मेदार महिला नागरिक।"

"उसी ने तो हमें बताया था कि कभी अकेले टैक्सी में मत जाना। हम लोग तो हमेशा टैक्सी मे जाते आते थे, कभी परवाह नही की थी। वह खुद कई बार हमारे साथ टैक्सी मे गई थी। पर अब उसकी पॉलिसी एकदम बदल गई थी—उसके पति ने मना कर दिया था कि अल्पवयसी लड़कियों को टैक्सी में अकेले नही जाना चाहिये।"

"जानते हो, उस समय पहली बार इस बात की अनुभूति हुई कि विवाह से पहले मां-बाप का कहना न मानने मे लड़कियो को बड़ा मजा आता है। आदेश तोड़ने मे एक दबी सी बहादुरी होती है, लेकिन विवाह होते ही बात बदल जाती है। लड़कियां जहां तक हो सके पति की बात मानना चाहती हैं।"

"हम सब में सबसे पहले वासना ने ही शराब पी थी और यह बात उसने कालेज मे सहेलियों से छुपाई नही थी। उस शनिवार को वह कालेज नही आई। सोमवार को फिर दिखाई दी। उन दिनो वह रोज नई साड़ी पहन कर आती थी। विवाह में इतना मिला था कि साल भर तक एक साड़ी को दूसरी बार पहनने का नम्बर नही आ सकता था।"

पूछने पर वासना ने कहा था, "उसका फाइव डे वीक है न—इसलिये शनीवार को कालेज आना बड़ी मुसीबत है।"

इस पर हम लोगों ने कहा, "विवाह के मंडप का 'बी-ए' तो पास कर ही लिया है, अब कालेज न आये तो भी कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा।"

वासना ने कोई जवाब नही दिया था तो सहेलियाँ बोली थीं, "वासना, तुझे हो क्या गया है ? दिन पर दिन तेरा रूप निखरता ही जा रहा है। इतने दिन बाप के घर के दूध, मक्खन, अंडो से तो शरीर पर रत्तीभर मांस नही चढ़ा और अब कुछ ही दिनों में हाथ-मुँह-बदन भर गया है।"

उसकी दृष्टि में लज्जा व दुष्टता का सम्मिश्रण था। आँखें नचाकर बोली थी, "बेडरूम का कोई रहस्य नही खोलूँगी मैं। तुम लोगों का मन चंचल हो जायेगा और पढ़ाई का नुकसान होगा।"

"पढ़ाई का तो ऐसे ही नुकसान हो रहा है—और मन को तो तूने पहले ही चंचल कर दिया है", चारुशीला ने कहा था।

"नही, तुम लोग मन लगाकर पढ़ाई करो। वक्त पर सब जान जाओगी। बस, इतना याद रखना कि लड़कियों के विवाह से पहले और विवाह के बाद के जीवन में आकाश-पाताल का अन्तर होता है। विवाह से पहले सिंगल बेड पर हाथ पाँव फैला कर अकेले सोती रही और एक दिन अचानक पाओगी कि डबल-बेड पर एक और आदमी बगल में सोया है, फिर तुम्हारे लिये अकेला होना बिल्कुल संभव नहीं होगा।"

किसी सहेली ने पूछा था, "तुम लोगों के दो सिंगल बेड हैं, या एक डबल-बेड ?"

वासना ने कहा था, "आजकल तो बस नाम के लिये अलग-अलग बेड होते हैं—पर फार ऑल प्रैक्टिकल परपज डबलबेड होता है। उसमें बस माँ-बाप के पैसे ज्यादा खर्च होते हैं, और कोई लाभ नहीं है।"

"तो इसका मतलब है, कि पति का विच्छेद सहन न कर पाने के कारण तू शनिवार को कालेज नही आई। अब से हर वीक-एंड पर हम तुझे मिस करेंगे।"

'नहीं भाई, नही। फिर तो मुझे परीक्षा देने की जरूरत ही नही पड़ेगी। पिछले शनिवार को स्पेशल मामला था। शुक्रवार को उन लोगों की पार्टी थी। मेरे पति के दिमाग में आ गया कि मुझे भी शराब पिलायी जाये।"

"हाय राम ! यह तो बड़ा भयंकर मामला था ! और तू मान गई ?"

वासना ने जवाब दिया था, "मेरे नाना ने तो साफ-साफ कहा था, वासना

अगर तू जीवन में सुखी रहना चाहती है तो जैसा पति कहे, वैसा ही करना। पति अगर नंगी होकर नाचने को भी कहे तो वैसा ही करना।"

तब तक लड़कियों ने थोड़े कौतूहल और थोड़े डर से वासना को घेर लिया था। वासना दबे स्वर में कह रही थी, कि "तीन ग्लास तो पी चुकी थी मैं। रात के बारह बज चुके थे, पर पार्टी चल रही थी, समय जैसे पंख लगाकर उड़ रहा था।"

"फिर ? तेरी साँस व मुँह से शराब का भभूका निकलने लगा होगा तब तो ?" एक ने पूछा था।

"चल परे।" गर्व से छाती फुलाकर वासना ने उनकी गलतफ़हमी दूर करते हुए कहा था, "अच्छी शराब में जरा भी दुर्गन्ध नहीं होती। बस, बीयर लड़कियों को रात में नहीं पीनी चाहिये, उसमें थोड़ी गंध अवश्य होती है।"

"उल्टी ?" एक ने पूछा था। उल्टी से लड़कियाँ बहुत डरती हैं, जबकि भगवान् ने शायद उल्टियाँ औरतों के लिये ही स्पेशल बनाई हैं। बस में सफर करते समय उल्टी, परीक्षा के समय उल्टी, प्रैग्नैन्सी के वक्त उल्टी।

"ड्रिंकिंग के साथ उल्टियों का कोई संपर्क नहीं है।" वासना मानो हर निषिद्ध विषय पर ऑथोरिटी हो गई थी।

"तो फिर चाय पीने और शराब पीने में क्या फर्क हुआ ?" अधीर होकर चारुशीला सिद्धान्त ने पूछा था।

वासना ने कहा था, "भगवान् जाने उस समय मुझे क्या हो गया था। मन जैसे हल्का होकर उड़ा जा रहा था। तापस कह रहा था कि मैंने वहाँ उसके मित्रों से कहा था कि अगर तुम लोग अच्छे लड़के बने रहो और बिहेव लाइक गुड ब्वायज़ तो तुम लोगों का विवाह अपनी सुन्दर-सुन्दर सहेलियों से करा दूँगी।"

"हाय राम। तुमसे यह सब बुजुर्गपना करने को किसने कहा ?" जरा भय व कौतूहल-मिश्रित स्वर में सबने एक साथ कहा।

"मुझे क्या उस समय होश था कि पता होता क्या कह रही हूँ ? मुझे तो बस ऐसा लग रहा था कि जगी तो हुई हूँ, पर अपने ऊपर कोई कन्ट्रोल नहीं है। मन की बोतल की कार्क जैसे किसी ने खोल दी थी और अन्दर दबी हुई इच्छाएँ बलबलाकर निकली आ रही थीं।"

बड़ी-बूढ़ी की तरह चारुशीला ने कहा था, "समझ गई—कोई खाना उलटता है और कोई चिन्ताएँ व इच्छाएँ।"

वासना ने जवाब दिया था, "मालूम नहीं भाई, पर बड़ी बुरी हालत थी।

इसीलिये बहुत अन्तरंग मित्रों के बीच बैठकर ही ड्रिंक करना चाहिये, हर एक के साथ करना उचित नहीं है। मुझे धुंधली-सी याद है कि मैंने तापस से कहा था, मुझे बहुत अच्छा लग रहा है, थोड़ी और पियूं ?"

"फिर कब तापस घर लाया, कुछ पता नहीं। तकदीर से सास-ससुर यहां नहीं रहते। जब नींद खुली तो देखा सुबह के ग्यारह बजे थे, अर्थात् फर्स्ट पीरियड शुरू हो गया था। सर दर्द से फटा जा रहा था। तापस तब भी खर्राटे भर रहा था—माइनस सरदर्द।"

वासना उस दिन बहुतों की दृष्टि में हीरोइन बन गई थी। जो वासना कुछ ही महीने पहले माँ-बाप की परमीशन लिये बिना सहेलियों के साथ मैटिनी शो में भी जाने को तैयार नहीं होती थी, वही वासना विवाह के बाद कैसे छाती फुलाकर शराब पीकर सुबह देर से उठकर कालेज की नागा कर रही थी पर उसके लिये न तो दुखी थी और न लज्जित। सब सुनकर चारुशीला ने बस इतना कहा था कि "मुझे यह सब अच्छा नहीं लग रहा।"

कुमकुम ने बाद को इस बात पर काफी सोचा-विचारा था। कई बार पति से भी विचार-विमर्श किया। वह समझ गई है कि इस युग में नारियों में एक साथ दो विपरीत कामनाएँ काम कर रही हैं। स्वाधीनता काम्य है, लेकिन साथ-साथ सुरक्षा अर्थात् प्रोटेक्शन की कामना भी बलवती है। सुरक्षा और स्वाधीनता दोनों एक साथ बाहर से नहीं मिलतीं। स्वाधीन होने का मतलब ही है दूसरे के द्वारा सुरक्षा का अधिकार खो देना। वासना लड़कियों में ईर्ष्या का उद्रेक तो करेगी ही—क्योंकि वह सुरक्षा की छत्रछाया में ही बंधन-मुक्ति का आनन्द उपभोग कर रही थी। लड़कियां भगवान् से यही सुरक्षा देने की प्रार्थना करती थीं एक दिन। इस युग में एकमात्र पति ही उन्हें बंधनमय मुक्ति की मादकता का उपहार दे सकते हैं।

कुमकुम को ख्याल आया कि मुश्किल वहां होती है जहां पत्नी चाहती है कि पति शराब न छुए। यही हालत माधुरी की हुई थी, जिसका विवाह वासना के बाद कालेज में पढ़ते-पढ़ते ही हो गया था। माधुरी के विवाह में वासना के विवाह की वह नाटकीयता किसी ने उपभोग नहीं की थी। विवाह के [illegible] दिन बाद ही माधुरी हनीमून निपटाकर कालेज की पढ़ाई पूरी करने [illegible] आई थी।

सहेलियों ने भी उत्सुकता नहीं दिखाई थी, केवल इतना पूछा था [illegible] असल में है क्या ?

माधुरी ने समझाया था, "हनीमून और कुछ नहीं, बस [illegible]

साथ कहीं घूमने-फिरने जाना है, जहाँ न तो नाते-रिश्तेदारों का बेकार का झमेला होता है और न लौकिकता का दबाव—बस, एक दूसरे का संग होता है। बाकी सब तो होटल वालों की कारसाजी होती है, ऐसे विज्ञापन देते हैं जैसे गोआ या श्रीनगर जाकर फलाँ होटल में मधुयामिनी न बिताने पर जीवन ही व्यर्थ है। असल में तो हनीमून कहीं भी हो सकता है, कलकत्ते से निकलकर कोलाघाट अथवा डायमन्ड हार्बर में हनीमून मनाना भी उतना ही सुखकर है, प्रोवाइडेड परस्पर एक का दूसरे से क्लिक हो गया हो।"

यह क्लिक शब्द नया था। शर्मिष्ठा ने पूछा था, "यह क्लिक क्या चीज है री? विवाह तो चाँद-सूरज निकलने के समान ही अवश्यम्भावी घटना है—वहाँ क्लिक का क्या मतलब?"

ओठों पर ईषत् मुस्कान लाकर माधुरी ने कहा था, "कैमरे में फिल्म भरी हुई थी, डिस्टेन्स भी ठीक था, बटन भी दबा हुआ था पर तब भी क्लिक नहीं हुआ। बहुत छोटा-सा शब्द है, लेकिन उसके हुए बिना सारा आयोजन होते हुए भी उद्देश्य सफल नहीं होता—क्लिक नहीं करता।"

विवाह में भी कैमरे की तरह क्लिक बहुत जरूरी है। क्लिक होते ही सारी दुनिया समझ जाती है—नहीं तो सब कुछ व्यर्थ हो जाता है।"

"इसका मतलब है तुम लोग इस आवाज में पास हो गये? 'खट' एक धीमी-सी आवाज, एक छोटा-सा शब्द?" चारुशीला ने मजाक किया था। वह उन दिनों छुप-छुपकर प्रेम कर रही थी।

"अगर क्लिक नहीं हुआ तो सारा मजाक निकल जायेगा," मधुर भर्त्सना की थी माधुरी ने।

फिर अचानक एक दिन घर वालों की मर्जी के खिलाफ चारुशीला का ब्याह हो गया। उसने सहेलियों से कहा था, "सबकी इच्छा के विरुद्ध विवाह किया है, क्लिक कराना ही पड़ेगा।"

उन दिनों माधुरी ने कालेज आना बन्द कर दिया था। कमजोरी के साथ हर वक्त जी मिचलाता रहता था; दो-चार रुटीन पैथॉलॉजिकल टेस्ट होने के बाद घर वालों ने कालेज जाने को मना कर दिया, ऐसे समय ट्राम के धक्के अच्छे नहीं होते।

वन का उन्मुक्त पंछी पिंजड़े में बंद हो गया था। विवाह के बाद प्रैग्नैन्सी स्वाभाविक ही है, परन्तु प्रथम मातृत्व के समय बड़ी शर्म आती है। जो एकान्त में गोपनीयता से संघटित होता है उसका अकाट्य प्रमाण जैसे सबके सामने प्रकट हो जाता है।

माधुरी कालेज भले ही नहीं आती थी, पर उसका मन सहेलियों में ही पड़ा रहता था। लम्बी-लम्बी चिट्ठियाँ लिखते हुए वह कहती, "तुम लोग इन दिनों अवश्य मेरा मजाक उड़ाती होगी, पर याद रखना, एक दिन तुम सभी को इस परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। इन दिनों अगर मेरा मुँह देखना चाहो तो बीच-बीच में कालेज से लौटते समय मेरे यहाँ होकर जाया करो।"

कुमकुम स्वयं भी दो-चार बार माधुरी के घर गई थी। माधुरी ने एक बार कहा था, "बड़ी जल्दी हो गया। तुम लोग हनीमून के समय मेरी तरह लापरवाह मत होना।"

चारुशीला की बात भी उठी थी। परन्तु उस समय माधुरी को किसी पर कोई आक्रोश नहीं था। वह तो बस यही प्रार्थना करती थी कि उसकी परिचित सारी लड़कियाँ सुखी हों। संसार में टोटल सुख की कोई सीमा नहीं बाँधी गई—तो फिर अनगिनत लोग सुखी क्यों न हों? मनुष्य अकेला सुखी नहीं हो सकता, सृष्टि का यही नियम सृष्टिकर्त्ता ने बनाया है। सृष्टि का कोई भी काम अकेले नहीं होता—हमेशा दो की आवश्यकता होती है। पृथक् होते हुए भी द्वैत सत्ता को एकीभूत करने की चेष्टा का नाम ही संसार है।

पर चारुशीला? वह कहती फिर रही थी कि "बहुत सुखी हूँ मैं। कह सकती हो क्लिक-क्लिक-क्लिक, हालांकि मेरा पति जब-तब शराब पीता है और होश-हवास खो बैठता है। होश आने पर पत्नी से क्षमा माँगने में जरा भी नहीं हिचकता।"

उन दिनों चारुशीला ने दुगने उत्साह से पढ़ाई-लिखाई शुरू कर दी थी। अध्ययन के माध्यम से ही उसे मुक्ति का पथ ढूँढ़ना पड़ेगा। उसने कहा था, "नागरिका, कैमरा क्लिक न करे तो दुकान से ठीक कराया जा सकता है। लेकिन विवाह का क्लिक ठीक नहीं कराया जा सकता, सब कुछ लाटरी है।"

"क्लिक शब्द सुना है?" कुमकुम ने अमिताभ से पूछा।

"कालेज होस्टल में खूब सुना है। लेकिन इसका एक अश्लील अर्थ था शायद—क्लिक कहने से संगम-वंगम समझा जाता था।" अमिताभ ने कहा।

कुमकुम ने सोचा, अस्थिर पुरुषों की नजर सर्वप्रथम दाम्पत्य के बहिरंग की ओर ही पड़ती है। लेकिन नारियाँ बिल्कुल उल्टी होती हैं, वह लोग हमेशा भयभीत-सी भीतर से देखना शुरू करती हैं।

"हम दोनों क्लिक हुए कि नहीं?" कहकर अमिताभ ने पत्नी को निकट खींच लिया।

"क्लिक का भी एक नियम है। बहुत जोर से आवाज होना भी आदर्श क्लिक का लक्षण नहीं होता।" मुस्कुरा कर कुमकुम ने कहा।

अमिताभ बोला, "सुनो, वह साला डियेन-बियेम—जब-तब हर मामले में उपदेश देता रहता है। कहता है, अपनी बीबी को भी अपना प्रोडेक्शन सेल करना, नहीं तो हर कदम पर बाधा उत्पन्न करेगी। और अगर तुम स्वयं को बीबी को ही नहीं बेच पाते तो कैसे सेल्समैन हो तुम ?"

अब उस आदमी पर कुमकुम का गुस्सा बढ़ने लगा था। मन हो रहा था कि उसकी टाई पकड़ कर मुंडी हिला दे और कहे, "हर मामले में उस्तादी मत दिखाओ। आफिस में क्या करना है, इसका आदेश बड़े शौक से अपने मातहत कर्मचारियों को दो, परन्तु घर में उसका राज्य है—वहां आपके हुक्म का कोई मूल्य नहीं है।"

गौतम बोला, "आइ ऐम वेरी सारी कुमकुम। कल तुम्हें रेडियो स्टेशन नहीं ले जा पाऊँगा। उस दीनानाथ के आदेशानुसार घूमना पड़ेगा, हालांकि उसने खुद ही छुट्टी सैक्शन की थी।"

"तुम फिक्र मत करो। बीबी के रेडियो प्रोग्राम की अपेक्षा अपनी नौकरी कहीं अधिक इम्पॉर्टेन्ट है।" कुमकुम ने मुस्कुराकर शान्त स्वभाव से कहा।

फिर सीढ़ियों पर पीताम्बर व हरिसाधन के नीचे उतरने की आवाज सुन कर बोली, "चलूँ, जाकर उन दोनों के खाने का इन्तजाम करूँ।"

अमिताभ बोला, "पीताम्बर काकू को पकड़ता हूँ; अगर वह तुम्हें रेडियो स्टेशन ले जा सकें तो। तुम कौन-सा गाना गाओगी कुमकुम ?"

"महाशय की पसन्द का गाना ही गाया जायेगा !"

अमिताभ ने चुटकी लेते हुए कहा, "दुर्भाग्य से हम लोग हनीमून नहीं मना पाये। हनीमून में पत्नी जो गाने गाकर सुनाती है, वही गाने सुनने को मन छटपटा रहा है।"

"सुनो, पीताम्बर काकू से कुछ मत कहना। उनको आफिस भी तो जाना होगा, मेरे लिये बेकार नागा क्यों करें ?"

"नागा क्यों करेंगे ? सुबह तुम्हें छोड़ते हुए आफिस चले जायेंगे। तुम रिकार्डिंग खत्म होने के बाद मेरा इन्तजार करना। डियेन-बियेम के हाथ से फिसलकर तुम्हारा उद्धार करके ले आऊँगा।"

● ◐

आज सुबह कुमकुम का मन बहुत प्रसन्न था। आफिस जाने से पहले अमिताभ ने कई बार उसका चुम्बन लिया था।

आजकल आफिस की बात दिमाग से निकल जाने पर वह बहुत रसिक हो उठता है। सुबह उसने पूछा था, "भूमिकम्प नापने के यन्त्र को जाने क्या कहते हैं?"

"सीसमोग्राफ।" कुमकुम ने सरल स्वभाव उत्तर दिया था। वह जरा भी नहीं समझ पाई थी कि पति के दिमाग में तो कुछ और ही घूम रहा था।

गम्भीर स्वर में अमिताभ ने कहा था, "अगर बड़े-बड़े शहरों में चुम्बन मापने के लिये किसमोग्राफ लगा दिये जायें तो देखोगी कि सुबह आठ से सवा आठ बजे तक उसकी सुई सीसमोग्राफ की तरह लगातार हिल रही है। इन पन्द्रह मिनिटों में हायेस्ट नम्बर आफ किसिंग आयेगा। आफिस जाने के पहले चुम्बन माडर्न सभ्यता का आवश्यक अंग हो गया है।"

"बहुत बक-बक करने लगे हो", मधुर, बनावटी डाँट लगाई थी कुमकुम ने। लेकिन अमिताभ ने जैसे उसकी बात सुनी ही नहीं थी।

उसे पास खींचकर वह बोला था, "अब जब अभी तक कलकत्ते में किसमोग्राफ नहीं लगाया गया है तो पकड़े जाने का कोई डर नहीं है।"

आफिस जाने के लिये तैयार पति को मुग्ध दृष्टि से देख रही थी कुमकुम। बिल्कुल विज्ञापन के चलचित्र के नायक-सा लग रहा था वह। पाँच फुट सात इंच का सुगठित शरीर—खेलों में हिस्सा न लेने के बावजूद अंग-प्रत्यंग पर ऐथलीट की छाप थी। आँखों पर लगे चश्मे ने उसके व्यक्तित्व को और भी बढ़ा दिया था। टिनोपाल लगी दूध-सी सफेद शर्ट पर 'नौ-नील' टाई। यही उनकी कम्पनी का कलर था। हर कम्पनी का एक अपना प्रिय कलर होता है। बहुत सोच-विचार कर कुमकुम ने ही नेवी ब्लू का बंगला शब्द नौ-नील ढूँढ़ा था। तब अमिताभ ने कहा था, "बहुत सुन्दर शब्द ढूँढ़ा है तुमने—नौ-नील। हजार रुपये तुम्हें नहीं देंगे तब तक कम्पनी के प्रचार-सचिव को यह शब्द नहीं बताऊँगा।"

गौतम की रिस्टवाच सोने की थी—कुमकुम के पिता की ही दी हुई थी। घड़ी में चाबी नहीं भरनी पड़ती थी—इससे बहुत आराम था! गौतम ने कहा था, "घड़ी का व्यवहार करूँगा पर चाबी नहीं भरनी पड़ेगी, इसकी कल्पना ही कितनी सुखकर है।"

उसकी जेब में से एक कीमती पार्कर पेन भी बाहर निकलने को सिर उठा रहा था। यह भी कुमकुम के पिता ने ही दिया था। उन्होंने कुमकुम से हँसकर

कहा था, "पढ़ने-लिखने में होशियार लड़कों को केवल घड़ी देना अच्छा नहीं लगता, अच्छा कलम जेब में न हो तो उनका व्यक्तित्व ही नहीं उभरता।"

नायलोन के स्पेशल मोजे विदेश से आये थे—बड़ी बहन ने दिये थे। एक बहुत बड़ा पैकेट लाई थी वह। तरह-तरह की कॉस्मेटिक और कुमकुम व अमिताभ के अंडर गार्मेन्ट्स। प्रवासिनी दीदी ने दुख प्रगट करते हुए कहा था, "इंडिया अन्डरगार्मेन्ट के मामले में क्रमशः पिछड़ता जा रहा है। यहाँ कितने सुन्दर मिलते हैं, देखकर मन खुश हो जाता है।"

बहनोई प्रोफेसर होते हुए भी रसिक आदमी हैं। उन्होंने कहा था, "दीपान्विका, हो सकता है इसी दुख से यह देश टापलेस हो जाये!"

कुमकुम ने बात बदलते हुए कहा था, "जीजाजी, इस बार आपने थोड़ा वेट गेन कर लिया है।"

वक्रदृष्टि से साली की ओर देखकर जीजाजी ने कहा था, "मोटा नहीं होऊँगा? मन कितना खुश है कि हमारी सागरिका बालिग हो गई है।"

गौतम के नायलोन के मोजों पर जो जूते थे, वह भारतवर्ष में ही बने थे। इस देश में पाँच सौ रुपये के भी जूते मिलते हैं, यह कुमकुम के पिता को मालूम ही नहीं था। पर जब खरीदे तो सबसे मँहगे वाले ही पसन्द किये। मजाक करते हुए बोले थे, "जब गाड़ी नहीं दे सका तो कम से कम पैदल चलने के लिये एक जोड़ा बढ़िया जूता तो देना ही पड़ेगा।"

फिर हँसकर कहा था, "जानती है कुमकुम, जिस कीमत में आज जूता खरीदा है, कभी उतने में एक अच्छी सेकेंडहैंड मोटर मिल जाती थी। पहले जितने में एक कमरा बनता था, उतने में अब एक मसहरी बनती है। इसका नाम है इन्फ्लेशन—अखबार वाले मुद्रास्फीति या जाने क्या कहते हैं? पर असल में यह दिन दहाड़े डाका है। जो भविष्य की सोच कर जोड़ते हैं, वह बेचारे मारे जाते हैं और जो लोग बैंक में जोड़े हुए रुपयों से, इन्श्योरेंस से, पी० एफ० से उधार लेकर आतिशबाजी उड़ाते हैं वह बड़े आदमी कहलाते हैं।"

लेकिन अमिताभ दूसरी ही बात कहता है। कहता है, "दीनानाथ वसु-मल्लिक के सामने कभी भी किसी को इन्फ्लेशन की निन्दा नहीं करनी चाहिये। वह कहते हैं, 'बिजनेस के मामले में इन्फ्लेशन बहुत अच्छी चीज है। मनी की सप्लाई नहीं बढ़ेगी तो मार्केट कैसे बढ़ेगा?' उफ्! आदमी जाने क्या-क्या कहता रहता है। साला जैसे मार्केट-प्लेस में ही पैदा हुआ था—हर वक्त बस मार्केट ही करता रहता है। और यही करते-करते हमारे डिमेन-विथेम मैरिज के मार्केट में अपना मार्केट नहीं बना पाये।"

अमिताभ के जूते झाड़ने की आवश्यकता समझ कर कुमकुम ब्रश ले आई, लेकिन अमिताभ किसी भी तरह नहीं माना, ब्रश छीन कर स्वयं जूते चमका लिये उसने।

कुमकुम नजरें भरकर निहार रही थी। वह सुसज्जित, सुदर्शन, सुपुरुष युवक सम्पूर्ण रूप से उसका था। कितनी मुश्किल से उसके पिता ने उसे उसकी निजी सम्पदा बनाया था।

अभी वह सुदर्शन युवक ब्रीफ केस उठाकर गाड़ी की ओर चला जायेगा। मधुर मुस्कान ओठों पर लिये जब वह गाड़ी की स्टीयरिंग पकड़ेगा तो न जाने कितने लोगों की छाती पर सांप लोट जायेगा। सोचेंगे, कितने पुण्यों से ऐसी नौकरी मिलती है। लेकिन उन्हें अन्दर की बात नहीं मालूम। वह नहीं जानते कि वह सुशिक्षित युवक आफिस का परिवेश नहीं सह पा रहा। पत्नी के साथ आकाशवाणी के आफिस जाने की उसकी कितनी इच्छा थी, परन्तु उतनी भी स्वाधीनता नहीं थी उसे।

कुमकुम का दिल बेचैन हो रहा था, बड़ा दुख हो रहा था उसे। रात-दिन एक करके बड़ी-बड़ी डिग्रियां लेने पर भी कर्मक्षेत्र में इस देश के लड़कों के साथ कोल्हू के बैल जैसा व्यवहार होता है। बहुत काल तक पराधीन रहने के कारण इस देश के सारे लोगों में अब हुजूर बनने की प्रबल इच्छा जाग्रत हो गई है। मौका मिलते ही डियेन-वियेम जैसे लोग अधीनस्थ लोगों को गुलाम बनाना चाहते हैं।

पति को विदा करके कमरे में आकर कुमकुम ने भगवान् की तस्वीर के सामने घुटने टेककर जमीन से सिर लगाया और कहा, "भगवान्, तुमने बहुत कुछ दिया है हमें। उनको आफिस की अशान्ति का दुख है बस। इस दुख पर विजय पाने की शक्ति दो मेरे पति को। नौकरी में उनके मन से काम करने की बहुत जरूरत है! अभी उनकी बहुत-सी जिम्मेदारियाँ हैं। वह तो कहते हैं कि दोनों बहनों का विवाह हो जाने तक बच्चा नहीं होगा।"

"भगवान् से इतनी देर से क्या माँग रही हो, भाभी? सर जो झुकाया तो उठाने का नाम ही नहीं ले रही!" न जाने कब ननद अजन्ता कमरे में आकर खड़ी हो गई थी। भैया के घर में रहते हुए वह लोग इस कमरे की तरफ नहीं आती।

खड़ी होकर जवाब में कुमकुम मुस्कुरा भर दी।

अजन्ता बोली, "ओहो! आज तो तुम्हा- रिकार्डिंग है—लंबी प्रार्थना

करने का तो दिन है ही। कब से कोशिश कर रही थी, अब जाकर चिट्ठी आई है रेडियो स्टेशन से। एक दिन तुम शायद इतनी बड़ी गायिका बन जाओगी कि भैया को आफिस की नौकरी करने की जरूरत नहीं रहेगी।"

अगर ऐसा हो जाता तो बुरा नहीं होता, कुमकुम ने मन ही मन सोचा। कम से कम इस घर की दो कुँआरी लड़कियों की शादी तो जल्दी हो जाती।

"पिता जी कहाँ हैं? चाय पी ली?" कुमकुम ने पूछा।

"पी ली! और फिर जो उनका काम है—चेयर पर बैठे-बैठे सोच रहे हैं।" अजन्ता के स्वर से श्रद्धा की जगह व्यंग्य फूट रहा था।

कुमकुम ने अजन्ता की ओर देखा। दीर्घकालीन उद्वेगमय प्रतीक्षा के फल-स्वरूप उसके अविवाहित शरीर का लावण्य धीरे-धीरे कम होता जा रहा था। परन्तु मुँह से उसने एक शब्द नहीं कहा।

ससुर के पास जाकर सागरिका ने कहा, "पिताजी, आपकी चाय तो ठंडी हो गई है—दूसरा कप बना दूँ?"

मुँह उठाकर देखा हरिसाधन ने। इस घर के तीन मिजाज हैं। जब गौतम घर रहता है, जब गौतम घर से चला जाता है और जब गौतम के लौटने का वक्त होता है।

"और कितनी चाय पियूँगा बेटी?" हरिसाधन ने मधुर स्वर में कहा। "इस चाय को लेकर तुम्हारी सास बहुत हल्ला मचाती थी। जाने किसने उसके दिमाग में भर दिया था कि चाय पीने से स्वास्थ्य खराब होता है। उसके चले जाने के बाद कोई कहने वाला नहीं रहा था। आफिस में बहुत चाय पीता था। लेकिन हम लोगों को पैसे देने पड़ते थे। पता है बहू, गौतम के आफिस में चाय के पैसे नहीं लगते! यह एलीमेन्टरी बिजनेस कर्टसी कहलाती है—सामान्य-सी व्यावसायिक भद्रता। सुप्रीमकोर्ट ने कह दिया है कि अतिथि को चाय पिलाना अतिथि-सत्कार में नहीं आता। देख रही हो आजकल कैसे-कैसे झमेले खड़े हो गये हैं! बड़ी-बड़ी कम्पनियों की कैसी मुसीबत है—चाय पिलाने के लिये भी सुप्रीमकोर्ट के जजमेन्ट की जरूरत पड़ती है।"

दीर्घकाल के कठोर परिश्रम एवं दुखों की छाप हरिसाधन के चेहरे पर झलक रही थी। वह जैसे स्वयं से कह रहे थे,-"पहले वाले सरकारी आफिस में गौतम को चाय खरीदकर पीनी पड़ती थी। सुनने में तो थोड़े से पैसे लगते हैं। पर साल में तीन सौ रुपये खर्च होते हैं, इसका मतलब है चालीस साल की वर्किंग लाइफ में बारह हजार रुपये हुए, उस पर सूद अलग। हमारे पोस्ट

आफिस में सूद का एक चार्ट है। रेडी रेकनेर होता तो अभी हिसाब लगाकर बता देता। कम अमाउन्ट नहीं होगा — गृहस्थ घर में उतने में लड़की का ब्याह निपट जाता है।"

ब्याह ! ब्याह की बात आते ही इस घर का वातावरण और भी भारी हो उठता है। इस हालत में कुमकुम स्वयं भी जरा विपत्ति में पड़ जाती है। उसे लगने लगता है कि ननदों की शादी से पहले इस घर के लड़के के शयनमन्दिर में उसका प्रवेश जैसे उचित नहीं हुआ। यद्यपि कोई भी उससे मुँह खोलकर यह बात नहीं कहता, परन्तु तब भी जैसे कानों को सुनाई दे जाती है।

हरिसाधन बोले, "जानती हो बहू, कभी-कभी लगता है कि मैं बहुत ही कृतकार्य हूँ, बहुत सुखी हूँ। पोस्टआफिस का सामान्य कर्मचारी होते हुए भी लड़के को बी. टेक. कराकर नम्बर वन फर्म का सेल्स इंजीनियर बना दिया।"

"यह तो घात-प्रतिघात सही है पिताजी। कितने लोग ऐसा दावा कर सकते हैं?"

"तुम्हारे पिताजी भी यही कहते थे मुझसे। आफिस के पुराने सहकर्मी भी यह बात मानते हैं। कहते हैं—हरिसाधन बाबू, आपसे तो ईर्ष्या होती है। पर—"

लेकिन इस पर के आगे बात नहीं बढ़ती। प्रयत्न करके भी हरिसाधन जैसे आगे बढ़ने का रास्ता नहीं ढूँढ़ पाते हैं। बोले, "पर लाइफ शतरंज के खेल जैसी है—एक चाल ठीक चलने को सोचो तो दूसरी गोट पिट जाती है।"

दो पल रुककर आगे बोले, "जितना भी रुपया था, सारा गौतम पर ही खर्च करना पड़ा—होस्टल का खर्च, प्राइवेट कोचिंग, कालेज से भारत-दर्शन का टूर, सैकड़ों हंगामे थे। और खर्च करना भी अत्यावश्यक था। फर्स्ट टेन में नाम नहीं आने से अच्छी नौकरी नहीं मिलती। उसके लिये प्राइवेट कोचिंग की जरूरत थी।"

कुमकुम चुपचाप सुनती जा रही थी। सुनना ही अच्छा था।

अपनी बात जारी रखते हुए हरिसाधन बोले, "मेरे पास रुपया नहीं है, पर दो लड़कियाँ हैं। इस देश में पच्चीस के बाद ही लड़की के लिये लड़का ढूँढ़ना दादी अम्मा के लिये लड़का ढूँढ़ना जैसा हो जाता है।"

"नहीं पिताजी, आजकल तो लड़कियों की अट्ठाइस-उनतीस की उम्र तो बड़ी आम बात है।" कुमकुम ने दिलासा दी।

"लेकिन वह तो गलत बता कर, जन्मपत्री बदलकर अट्ठाइस की उम्र पच्चीस बनाकर। जीवन का सबसे पवित्र सम्बन्ध मिथ्याचार से कैसे शुरू हो सकता है, बहू ? बंगालियों की कोई बात मेरी समझ में नहीं आती। पहले

भी करप्शन था, पर बाजार में, आफिस में, अदालत में, रेलवे स्टेशन पर। घर मन्दिर-सा निष्कलंक था। लेकिन अब—रिश्ते में भी मिलावट आ गई है, वह भी झूठ की नीव पर पर टिकने लगा है। यह बंगाली जात बड़ी ही डेलीकेट है—हम लोग क्या यह सब हेर-फेर सहन कर पायेंगे ?"

हाथ का अखबार नीचे रख दिया हरिसाधन ने। कुमकुम ने देखा कि हरिसाधन ने दैनिक संवादपत्र के मार्जिन पर लम्बे-लम्बे गणित के प्रश्न कर रखे थे। कौन जाने अखबार में उन्होंने क्या देखा था। उसके पिताजी तो वर्णविन्यास गलत देखते ही लाल कलम से काट देते थे और मार्जिन पर सही शब्द लिख देते थे।

"यह सब क्या लिखा है पिताजी ?" कुमकुम ने ससुर से पूछा।

"अक्षम का हिसाब बेटी ! पोस्टआफिस में सेविंग अकाउन्ट की अनगिनत पासबुक देखता-लिखता रहा ! कितने लोगों के पास कितने रुपये थे ? पासबुक के मालिक की शक्ल देखकर यह अनुमान नहीं होता था कि अकाउन्ट में कितने रुपये थे। घुटनों से ऊपर धोती, मैला, फटा कुर्ता—और अकाउन्ट में होते थे पचास हजार रुपये। और उसके अलावा एन. एस. सी.। चालीस सालों में उसके कितनी बार नाम बदले—कभी डिफेन्स सेविंग सर्टिफिकेट, कभी नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट, कभी कैश सर्टिफिकेट और कभी प्लान सर्टिफिकेट। लाखों रुपये होते थे—उनका सूद तो मिनटों में निकाल लेता था। किसको कितना मिलेगा, अब कितना है, पाँच साल बाद कितना हो जायेगा ? हजारों हिसाब दिमाग में रखने और लोगों को समझाने पड़े हैं।"

बोलना बन्द करके अखबार के कोने पर लिखे हिसाब देखने लगे हरिसाधन। फिर बोले, "अब हम लोगों के पास पूँजी नहीं है। इसीलिये जब-तब भविष्य का हिसाब जोड़ने लगता हूँ। पेन्शन के ढाई सौ रुपयों में से एक पैसा खर्च नहीं होता—रेवेन्यू स्टैम्प के बीस पैसे भी गौतम दे देता है। उसके वेतन से घर का पूरा खर्च चलाने के बाद पहले हर महीने सौ रुपये बचते थे। नई नौकरी में जितना भी बढ़ा है सारा बैंक में जमा हो जाता है—उसमें से सर्दियों के केवल एक सूट पर सात सौ रुपया खर्च हो गया। इसका मतलब हुआ प्रतिमास एवरेज अट्ठावन रुपये तेंतीस पैसे। तब भी दो सौ इक्कीस रुपये सड़सठ पैसे बच जाते हैं। इसका मतलब ढाई सौ प्लस अर्थात् चार सौ इकहत्तर रुपये सड़सठ पैसे यानी साल में पाँच हजार छह सौ साठ रुपये चार पैसे। इस पर साढ़े पाँच परसेंट वार्षिक सूद लगा लो। टाइम डिपोजिट रखने पर थोड़ा

ज्यादा मिलता है, पर अगर अचानक जरूरत पड़ जाये तो हजार सिर पटकने पर भी अपना रुपया वापस नहीं मिलेगा।"

फिर एक क्षण रुक कर हरिनारायन ने पूछा, "समझ में आ रहा है न बेटी? मेरे लिखे हिसाब के स्टेप देखकर छोटे बच्चे को भी समझने में असुविधा नहीं होगी।"

रुपये-पैसे का हिसाब कुमकुम के दिमाग में कभी भी नहीं घुसा था पर तब भी वह बोल उठी, "पिताजी, सत्तावन सौ रुपये हुए।"

"क्यों?" अपने हिसाब पर अगाध विश्वास था हरिनारायन को। कोई ऑडिटर भी कभी उनकी गल्ती नहीं पकड़ पाया था।

"मेरे चालीस रुपये—जो रेडियो-स्टेशन से आयेंगे। इसके लिये भी बीस पैसे के रेवेन्यू स्टैम्प की जरूरत पड़ेगी, वह उनसे माँग लूँगी।"

"वह कहाँ से देगा बेटी? बीड़ी-सिगरेट वह नहीं पीता, चाय पर वह खर्च नहीं करता, खाना भी घर से जाता है। पहले थियेटर देखने का नशा था, वह भी कम हो गया है। उससे बीस पैसे भी माँगना उचित नहीं है। बल्कि मेरे इस ड्राअर में बहुत दिन से कुछ पैसे पड़े हैं। इसमें से लेना।"

फिर ड्राअर से पैसे निकाल कर गिने हरिनारायन ने और बोले, "बार बार गाने के लिये तुम्हें लोगों के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा। अस्सी पैसे हैं।"

"आप सँभालकर रख दीजिये पिताजी," बच्चे की तरह कुमकुम बोली।

"जीवन भर सब कुछ सँभालता ही तो रहा हूँ, बेटी। अपने हाथ से तो कभी काँच का एक ग्लास भी नहीं तोड़ा। तब भी तो हिसाब नहीं मिला। पाँच हजार रुपये हर साल जमा करने से अलका की शादी लायक रुपये कितने साल में इकट्ठे होंगे, यह सोचकर सिर चकराने लगता है। इसीलिये, देखो न हिसाब बीच में ही छोड़ दिया है। तब तक उसकी उम्र कोई छत्तीस साल की हो जायेगी। हिसाब का रिजल्ट खराब होने से मिजाज खराब हो जाता है। मैंने चीफ़ मिनिस्टर की स्पीच तक नहीं पढ़ी। प्रधानमंत्री ने शांतिनिकेतन में रवि ठाकुर की प्रशंसा में जो कुछ कहा वह भी बेस्वाद लगा। ये सारी बेकार की खबरें छोड़कर अगर अखबार में यह दें कि आमदनी किस तरह बढ़ाई जा सकती है, कहाँ सस्ता लड़का मिल सकता है, छह-सात हजार में विवाह करके लड़की सुखी रह सकती है—तो हमारे जैसे लोगों का कितना उपकार होता? क्रिकेट, फुटबाल की रिपोर्ट, राजधानी के राजनैतिक प्रतिवेदन, आसन्न मंत्रि-मंडल में फेरबदल की खबरों से गृहस्थों का क्या भला होगा, तुम्हीं बताओ?"

तभी हवा का एक झोंका आया और अखबार के पन्ने उड़कर फर्श पर जा

पड़े। हरिसाधन बोले, "अखबार नहीं होता तो महीने में अट्ठारह रुपये अर्थात् वर्ष में करीब दो सौ सोलह रुपये बचते। लेकिन सारे पात्रों की खबरें इस मरे अखबार में ही निकलती हैं। 'पात्री ही एकमात्र विवेच्य', कभी तो ऐसा एक विज्ञापन दिखाई देगा, इसी आशा से रोज इतने पैसे फूंक कर सारी दुनिया की राजनैतिक, खेलकूद की, सिनेमा थियेटर की खबरें गले से उतारनी पड़ती हैं।"

फिर जरा साँस लेकर हरिसाधन ने कहा, "दे दो बेटी। अगर तुम्हें परेशानी न हो तो एक कप चाय ही पी ली जाये।"

कुमकुम ने देखा ससुर ने अखबार फिर से उठाकर गोद में रख लिया था। अंतिम पृष्ठ पर शेषांश का मार्जिन तब भी खाली था, वहीं पर उन्होंने फिर से दत्तचित्त हिसाब लिखना शुरू कर दिया था।

● ●

रेडियो स्टेशन पर रिकार्डिंग करवा रही थी कुमकुम। जल्दी ही मामला निपट गया था।

स्वयं को पूर्णतया समर्पित करते हुए प्रेमगीत गाया था उसने। हम लोगों की मुक्ति तो रवीन्द्रनाथ के गीतों में ही है। काल के उस पार प्रति-ध्वनित होते वेद-उपनिषद् के शब्द तो किसी सुदूर प्रांत की वाणी है जो संस्कृत के अंधकार-प्राय अरण्य में पकड़ में नहीं आती थी। उसके प्रति अनुरक्त होने से पहले आगम पर विश्वास करना पड़ता है। परन्तु रवीन्द्रनाथ! दुखी बंगाली के छोटे-से घर के कोने में अमृतपुत्र हो तुम, विधाता की कौन सी इच्छा पूरी करने को आविर्भूत हुए हो तुम? तुम्हारे गीतों में ही हमारा आनन्द है, मुक्ति है और निश्चियपन है। तुम हमारे प्रेम में, विरह में, मिलन में, विच्छेद में, आनन्द में, वेदना में, अपमान में, अवहेलना में, सबमें हमेशा हमारे संगी हो। रवीन्द्र संगीत को सागरिका इसी रूप में देखती थी।

रवीन्द्रनाथ को पा सकने की योग्यता अवश्य ही हममें नहीं है। लेकिन बंगालियों जितना दुखी दुनिया में और कोई न होने के कारण ही ज्योतिर्मय ईश्वर ने यह स्वर्गीय उपहार भेजा था। महामानव का ढोल न पीटकर सखा व प्रिय के रूप में रवीन्द्रनाथ को हमारे मध्य विराजित किया है। यह बात एक बार अमिताभ ने ही कही थी। कुमकुम ने लक्ष्य किया है कि साइन्स एवं टेक्नालॉजी के लड़के-लड़कियाँ ही रवीन्द्रनाथ को पूरी तरह पाना चाहते हैं।

गाने के समय कुमकुम ने गुरुजनों को ही याद किया था। जीवन की प्रथम रिकार्डिंग के वक्त पति के पास न होने का दुख तो था ही।

परन्तु तब भी उसने एक अद्भुत काम किया था। रिकार्डिंग शुरू होने से पहले कुछ क्षण वह आँखें बन्द किये रही थी—मन के पर्दे से अन्य समस्त तस्वीरें निर्ममता से पोंछ डाली थी उसने और फिर मन के इस काले पर्दे पर धीरे-धीरे गौतम का चेहरा स्पष्ट हो उठा था। बड़ा लुभावना चेहरा था। बहुत प्रयत्न करके उसने पति की वह तस्वीर सारे परिवेश से काट ली थी। वहाँ आफिस की परेशानी, अविवाहित बहन की दुश्चिन्ता, साढ़े पाँच पर्सेन्ट ब्याज पर सत्तावन सौ रुपये बढ़ने का उद्वेग—कुछ भी नहीं था। केवल सागरिका और अमिताभ थे। तुम ही मेरे जीवन-मरण हरिया, हे नाथ—अनादिकाल के मन्दिर में देह दीपाधार में आरती शुरू हो गई थी। फिर अचानक एक विचित्र-सी सिहरन शरीर में दौड़ गई थी और सागरिका जैसे राजरानी बन गई थी। मैं क्षुद्र नहीं हूँ, मैं तो उसी महत् का अंश हूँ; सुदूर आकाश का ध्रुवतारा मेरे उद्देश्य से ही निःशब्द प्रकाश का संकेत भेजता है—मेरे कंठ में गीत है·····

कुमकुम के मानस चक्षुओं को इस अल्प आलोकित कमरे के बाहर प्रतीक्षारत अमिताभ बैठा दिखाई दे रहा था।

पूजा के समय यह कृत्रिम दूरत्व प्रयोजनीय होता है, स्पर्श का उत्ताप वहाँ निषिद्ध है।

गाना शेष हो गया था। कुमकुम को लगा अमिताभ जैसे कमरे के बन्द दरवाजे पर अपेक्षा कर रहा था। उसकी वाणी अदृश्य शब्द-तरंगों में पति को निविड़ आलिंगन में आबद्ध कर रही थी, अब केवल देह का परिचय था।

परन्तु साक्षात् नहीं हुआ। स्टूडियो के बाहर अमिताभ नहीं था। वह उस समय किसी अनजान पथ पर प्रतियोगियों की श्येन दृष्टि से बचता हुआ कम्पनी के किसी प्रोजेक्ट का मार्केट ढूँढ़ता फिर रहा था। दुनिया के लोगों, तुम लोग इतने निर्दय क्यों हो? तुम लोग मेरे पति की कम्पनी का माल खरीदकर उसकी आशंका व उद्वेग कम कर सकते हो। उस दीनानाथ वसुमल्लिक ने कहा था, सारी पृथ्वी मार्केट प्लेस है। बिल्कुल गलत बात है—दीनानाथ जैसे मछुआरे मन्दिर में जाकर भी मछली की गंध ढूँढ़ते फिरते हैं।

"आपने बहुत अच्छा गाया—गीत में दर्द हुए बिना गाना अच्छा नहीं लगता। गाना मेकानिक्स नहीं है, केमिस्ट्री है।" रिकार्डिंग का तरुण युवक कह बैठा।

मुँह उठाकर मुस्कुराकर बोली, "पूजा।"

"आप शायद मुझे पहचान नहीं पायेंगी। मैं प्रणवेश हूँ—मेरी बहन को आप जानती थी। वासना।"

"वासना! हाय राम, तुम वासना के भाई हो—तब तो तुम्हें जरूर देखा होगा। तुम्हारे घर गई हूँ।"

"दीदी की शादी में परोसते समय आपकी साड़ी पर मैंने पानी गिरा दिया था!" प्रणवेश अभी भी शर्मिन्दा हो रहा था।

"हाय राम! तुम्हें अभी भी याद है?" आँचल सँभालते हुए कुमकुम ने कहा।

"आपके विवाह का अनाउन्समेंट भी स्टेट्समैन में देखा था! जीजा जी का नाम अमिताभ है न?"

"ओह, हर ओर नजर रखी थी तुमने।" आँखें फैलाकर कुमकुम ने कहा।

"दीदी की सहेलियों की जानकारी रखने का मन होता है सागरिकादि। सारी सहेलियाँ हो-हुल्लड मचाती हुई हमारे घर आया करती थीं, फिर दीदी के विवाह में भी देखा था। मेरी बैडलक थी, तीन जनों के कपड़ों पर पानी गिरा दिया था और वह लोग शादी से पहले ही घर चली गई थी!"

"हम लोगों में वासना की शादी ही सबसे पहले हुई थी, इसलिये तुम्हारी दीदी की सारी सहेलियाँ गई थी।"

शादी का वह दिन कुमकुम की आँखों के सामने स्पष्ट हो उठा।

"पिताजी ने भी कहा था कि तू अपनी सारी सहेलियों को बुला ले। शादी कोई दो बार तो होगी नहीं। अगर जरूरत पड़ी तो अपने आफिस के सारे लोगों को नहीं बुलाऊँगा।"

फिर प्रणवेश ने बात घुमाते हुए कहा, "तृप्तिदी का भी तो ब्याह हो गया। छह महीने पहले अखबार में खबर निकली थी।"

"अच्छा? मैं तो भाई, स्टेट्समैन नहीं पढ़ती, मेरी ससुराल में वह अखबार नहीं आता। ननद के विवाह की वजह से बँगला अखबार आता है।"

प्रणवेश बोला, "मालूम है। दीदी के विवाह से पहले हमारी भी यही हालत थी! अब फिर स्टेट्समैन आने लगा है। आप तो समझ सकती हैं कि दीदी के लिये नौकरी के विज्ञापन बहुत इम्पॉर्टेन्ट हो गये हैं।"

"क्यों? वासना को क्या अचानक नौकरी का शौक चर्रा रहा है?" सरल भाव से कुमकुम ने पूछा।

प्रणवेश के मुँह पर एकदम से जैसे कालिमा छा गई। बोला, "क्यों, दीदी के बारे में आपने नहीं सुना?"

क्या खबर थी, यह पूछने का साहस नहीं जुटा पा रही थी कुमकुम ! और तभी नेक्स्ट रिकार्डिंग की पुकार आ गई।

प्रणवेश बोला, "दीदी के बेलतला रोड वाले घर हो आ आइये ना। वह बहुत खुश होगी। इन्फैक्ट उसका बहुत उपकार होगा।"

स्टूडियो के अन्दर जाते-जाते प्रणवेश ने कहा, "दीदी आपकी आज की रिकार्डिंग के बारे मे जानती हैं। आपका फिर मिलना होगा मुझसे।"

● ●

प्रणवेश रिकार्डिंग रूम के अन्दर अदृश्य हो गया और कुमकुम ने चालीस रुपये का चेक बैग में डाल लिया।

वासना के बारे मे जाने कैसा डर-सा लग रहा था उसे। समय बहुत था हाथ में। गौतम नहीं आयेगा। ड्यूटी रूम में चेक लेते समय ही कुमकुम को उसका टेलीफोन मेसेज मिल गया था। जरूर उसे दीनानाथ वसुमल्लिक ने मार्केट भेज दिया होगा। यह रेडियो स्टेशन और हलधर हालदार लेन का घर भी अगर बड़े-बड़े मार्केट होते तो बुरा नहीं होता।

वासना के घर ही चला जाये। राजभवन के सामने से ही बेलतला की बस मिल जायेगी। परन्तु ! वासना के साथ इतनी घनिष्ठता थी, इतना मिलना-जुलना था, तब भी बहुत दिनों से उसकी कोई खबर ही नहीं थी। शादी के समय उसके पिता के पते पर कुमकुम ने कार्ड डाला था, लेकिन उसने न तो जवाब दिया था और न आई थी।

कर्जन-पार्क के सामने उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम की बसें आ रही थीं, लेकिन चढ़ना संभव नहीं था। कुमकुम सोच रही थी कि भर दुपहरी में भी इतने लोग कलकत्ते में किसलिये बसों में जा-आ रहे थे? हर आदमी को अवश्य ही रेडियो स्टेशन से रिकार्डिंग की चिट्ठी नहीं मिली होगी !

वह सोच ही रही थी कि कैसे बस में चढ़े कि तभी गाड़ी के जोर से ब्रेक लग कर रुकने की किच"""आवाज सुनाई दी। करीब-करीब नई छोटी फियेट कार ठीक उसके सामने आकर रुक गई थी। बॉबकट बालों वाली एक स्मार्ट लड़की ड्राईविंग सीट पर बैठी थी।

"सागरिका ! आ बैठ। हरी अप !"

किसी अनजान आदमी की गाड़ी में कोई एकदम से नहीं बैठता ! पर नहीं —लड़की अपरिचित नहीं थी ।

"बैठ, बैठ—मैं चारुशीला हूँ।"

ड्राइवर की बगल की सीट पर ही बैठ गई कुमकुम । "उफ, गाड़ी की आवाज सुन कर तूने तो ऐसा भाव दर्शाया जैसे कोई तुझे अलोप करने आया हो !"

"मैं कैसे जानती कि तू चारुशीला है ?"

"चल, यह भी ठीक है । मैंने तो सोचा कि चिट्ठी पाकर भी तू चारुशीला को पहचानना नहीं चाहती । भगवान् अभी भी हैं, तेरे साथ साक्षात् हो गया।"

"तूने गाड़ी चलानी कब सीखी ?" अपना संकोच छुपाने के लिये सागरिका ने पूछा ।

"जिन्दा रहने के लिये एक दिन अचानक सीखने की जरूरत पड़ गई।" चारुशीला ने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया ।

"माने ?"

"माने, जब सुगत से डाइवोर्स हो गया।" सपाट उत्तर था । "मैं अब अपने मेडेन नाम पर लौट आई हूँ—मिस चारुशीला सिद्धान्त । कानून के नाते में डिवोर्स्ड वाइफ आफ सुगत बनर्जी । चार सौ पचहत्तर रुपये ऐली मनी मिलता है । ऐली मनी का मतलब समझती है न ? भरण-पोषण का खर्च—अर्थात् मंडप के नीचे चक्कर लगाने की पेंशन, जो एकमात्र लड़कियों को ही मिल सकती है । काम करती हूँ । बॉम्बे की एक फैशन मैगजीन की कलकत्ता रिप्रेजेन्टेटिव हूँ । किसी सुखी परिवार की खबर-बबर हो तो दे सकती है—कलर पिक्चर समेत छपवा दूँगी । अभी बालीगंज के पास बंडेल रोड एच० टी० के आफिस जा रही हूँ ।"

"यह क्या है ?"

"सागरिका, तू तो पति के साथ आसंग प्रेम में लिप्त रह, बस । क्योंकि हमारे विज्ञापन की लाइन में तुझे नौकरी नहीं मिल सकती, तुझे एच० टी० का नाम नहीं मालूम ? बंगला में रवीन्द्रनाथ और अंगरेजी में शेक्सपियर का नाम न जानने के समान ही विज्ञापन लाइन में एच० टी० का नाम न जानना भी अपराध है । इस समय मैं लेटेस्ट ब्यूटी लोशन का विज्ञापन लेने जा रही हूँ—जो लोशन सारे दिन वर्किंग गर्ल्स को प्रोटेक्ट करता है । हा—हा ।"

"हँस क्यों रही है चारुशीला ?" बेवकूफ की तरह कुमकुम ने पूछा ।

"कभी-कभी मुझे ध्यान आता है कि भगवान् ने इस देश की लड़कियों के प्रोटेक्शन के लिये ये सब लोचन-बोचन के अलावा और कुछ नहीं बनाया।"

तदुपरान्त एक सिगरेट निकालकर चारुशीला ने कहा, "सारिका, जरा सिगरेट जला देगी तू? बहुत दिनों से किसी ने बाड़ी में मेरी खुशामद नहीं की। सुगत के चले पढ़ने के बाद सिगरेट पीनी शुरू की थी। मैंने कहा था, 'ठीक है, तुम्हारी खातिर मैं शराब भी शुरू कर दूंगी'। परन्तु जब देखा कि उसने लड़कियां शुरू कर दी हैं—तब मेरे पास कोई उपाय नहीं रहा। नौकरी मिल गई है, अच्छी ही गुजर रही है।"

"हम लोगों का कालेज का जीवन?" निश्वास छोड़कर बड़े दुखी मन से कुमकुम ने कहा।

"हमारी कालेज लाइफ किसी दूसरे ग्रह का जीवन थी। बंगाली लड़कियों को जिस परिवेश में जीवन बिताना पड़ता है, इसके साथ उसका कोई सामंजस्य नहीं है। तुमसे पूछा ही नहीं, सिगरेट पियेगी?"

"मैं सिगरेट पियूंगी, तूने ऐसा सोचा कैसे?"

"आजकल लड़कियों के संबंध में हर तरह से सोचने के लिये हमें तैयार रहना चाहिये। रेडियो पर सुनती नहीं? बीच-बीच में कहता है, 'कृपया एक महत्वपूर्ण घोषणा के लिये अपेक्षा करिये।' प्लीज स्टैंड बाई फार ऐन इम्पॉर्टेन्ट अनाउन्समेन्ट।"

बेलतला लेन का पता बताकर आगे कुमकुम ने कहा, "रेडियो पर रिकार्डिंग की है आज। परसों दोपहर को बारह बज कर चालीस मिनिट पर, शाम को छः बजकर छत्तीस मिनिट पर और रात को नौ बज कर बावन मिनिट पर प्रसारित होगा। सुनना। रवीन्द्र संगीत है।"

"रवीन्द्रनाथ पर बेकार खर्च करोगे लायक हाउस विज्ञापन रिप्रेजेन्टेटिवों के पास नहीं होता भाई। तुमसे फिर भी कह रही हूं। भद्रव्यक्ति पर लोगों को ठगने का केस किया जा सकता है—जिसे कहते हैं फोर ट्वेन्टी। जो नहीं है, वही उसने बंगालियों को समझाया है, जैसे—अच्छा होगा, ध्रुवतारा है, पतवार मांझी के हाथ में है, पार हो जायेगा। मूर्ख बंगालियों ने बेवकूफ की तरह उस पर विश्वास भी कर लिया और ठगे गये। रवीन्द्रनाथ को तो कम से कम दस सालों के लिये देश निकाला दे देना चाहिये। नहीं तो बंगाली लड़कियां नहीं बचेंगी। वह जो अभी भी कालेज से लड़कियों के झुंड निकल रहे हैं, उनका भी सर्वनाश हो जायेगा। उनके पति विवाह के बाद भी लड़कियां एन्जाय करेंगे और वह सोचती रहेंगी, निविड़ अंधकार में जल रहा है ध्रुवतारा।"

दोनों में आपस में क्या सम्पर्क था, समझ में नहीं आया कुमकुम के। परन्तु बात बढ़ाने से फायदा नहीं था।

स्टीयरिंग घुमाकर सड़क की बाईं ओर गाड़ी करके चारुशीला बोली, "प्रकृति के राज्य में कोई ध्रुव-ध्रुव नहीं है। हरिणी का मांस ही उसका शत्रु होता है। लड़कियों को हमेशा खुद को स्वयं संभालना पड़ेगा। 'सारा रास्ता गन्दे कुत्तों से भरा है—स्वयं को संभालो'। इस युग में लड़कियों के लिये विधाता का यही एकमात्र मेसेज है। हृदय संभालो, मन को संभालो और घर भी संभालो—इस ट्वेन्टियेथ सेन्चुरी में आकाश के तारे कलकत्ते की लड़कियों के लिये यही वाणी भेज रहे हैं।"

बेलतला—वासना। "ओह वासना!" चारुशीला की गाड़ी की गति धीमी हो गई।

स्पीड फिर से बढ़ाकर चारुशीला बोली, "वासना! तुझे उसकी याद है, जब अचानक वासना के विवाह की खबर मिली थी? हमारी क्लास की लड़कियों में कैसी उत्तेजना थी! जैसे लड़कियों की असली परीक्षा में वही फर्स्ट हो गई थी! सबके पेट में पित्त उछलने लगा था! ऐसा कार्तिकेय जैसा पति। जाने किसने कहा था, बंगाल की बेस्ट लड़कियों का विवाह बी० ए० में पढ़ते-पढ़ते ही हो जाता है।"

"विवाह के बाद वासना जिस दिन कालेज आई थी, तुझे याद है वह दिन?" चारुशीला ने फिर पूछा।

"क्यों नहीं होता? उसके वैनिटी बैग में एक रंगीन फोटो थी—दोनों की। मैंने पहली बार किसी परिचित का कलर प्रिंट देखा था।" सागरिका ने अकपट भाव से स्वीकार करते हुए कहा।

चारुशीला बोली, "मैंने कैसी बेवकूफी की थी, एक दिन के लिये घर ले जाने को फोटो माँग ली थी। पर वह भी ऐसी लड़की है कि जिद पर अड़ गई थी, किसी भी तरह देने को राजी नहीं हुई थी। मैं भी ऐसी ही थी। इतनी-सी बात पर उसने बोलना बंद कर दिया था। दो दिन बाद बात समझकर वासना ने कहा था, 'शादी हो जाने दे, फिर समझेगी। तस्वीर एक पल को अपने से जुदा नहीं की जा सकती। उसने टूर पर जाने से पहले किस करके दो है। उसे टूर से वापस आ जाने दो, फिर दे दूँगी।' मैंने कहा था, तुम्हारा वह तुम्हारे पास ही रहे, मुझे नहीं चाहिये। दो सप्ताह पहले जिसे पहचानती भी नहीं थी, कैसा आकर्षण है उसके प्रति!"

कुमकुम को पता नहीं था कि शान्त सुशील चारुशीला पिछले कुछ सालों में इतनी वाक्‌पटु हो गई थी।

बोली, "चारुशीला, तू बिना बात गुस्सा कर रही है। याद है, एक दिन वासना के पति कालेज आये थे और हम सबको कॉफी कार्नर ले गये थे। कितनी मजेदार बातें हुई थीं। मानो वासना का नया बासर घर हो। वासना के मुँह पर कैसी टेरिफिक सुखानुभूति झलक रही थी। सारे शरीर से आनन्द व सन्तुष्टि फटी पड़ रही थी।"

"वासना की निष्पत्ति देखी थी, इसलिये कह रही है?" चारुशीला ने प्रश्न किया।

"निष्पत्ति नहीं—परिपूर्णता। कामना वासना की परितृप्ति भी होती है—सुख के अंत में सब कुछ केवल क्लांति व अवसादमय अवश्य नहीं होता।"

चारुशीला अपनी धुन में गाड़ी चलाती जा रही थी। बोली, "उस समय वासना को देखकर हमें बहुत ईर्ष्या हुई थी। क्यों, हुई थी ना? वासना देखने में अच्छी थी, लेकिन क्लास की लड़कियों में सबसे सुन्दर नहीं थी। पर अचानक एक दिन उसका रिश्ता पक्का हो गया। लड़का भी अच्छा-खासा था और जहाँ तक पता चला, वासना एक ही सिटिंग में सेलेक्शन टेस्ट में पास हो गई थी। अन्य लड़कियों को जब अनचीन्हे-अनजान लोगों के सामने न जाने कितनी सिटिंग देनी पड़ती हों, तब अगर किसी को एक चांस में लाटरी मिल जाये तो ईर्ष्या होना स्वाभाविक ही है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि किसी ने वासना की क्षति-कामना की थी। हाँ, यह अवश्य मन में आया कि जैसे एकदम अचानक वासना को पति मिल गया, मुझे क्यों नहीं मिला?"

"उफ! विवाह के चंद सप्ताहों में ही वासना कितनी अच्छी लगने लगी थी। और कितनी तरह की साड़ियाँ व कपड़े थे उसके पास। एक दिन तो कालेज में वह जीन्स पहनकर आई थी। माँग में सिंदूर था और पहने थी एविस की जीन्स, कितनी अच्छी लग रही थी। उसने बताया था कि इस मामले में उसके पति ने उसे पूर्ण स्वाधीनता दे दी थी। कहा था, जो जी चाहे पहने।"

उसके बाद उसने चुपके से कुमकुम से कहा था, "सच तो यह है भाई कि यह वह स्वयं ही बम्बई से खरीदकर लाया है। वह तो बड़ा डर रहा था कि हिप साइज ठीक होगा कि नहीं, लेकिन भगवान् की दया से एकदम फिट है, देख तो रही है तू।"

विवाह के बाद भी वासना ने अच्छी पढ़ाई की थी। स्वयं

प्रेम को ताक पर रखकर उसे अंगरेजी और इकानामिक्स पढ़ाया था। वासना ने कहा था, "बहुत अच्छा पढ़ाता है। हर बात अच्छी तरह समझाता है, गलती होने पर भी डाँटता नहीं। मैंने तो पिताजी से कह दिया है कि तुम्हारा तो बहुत फायदा हो गया। प्राइवेट ट्यूटर के पैसे भेज दो उसे।"

पास भी वह अच्छे नम्बरों से हुई थी। यही ईर्ष्या हुई थी उससे सबको —हर मामले में वह सौभाग्यशालिनी रही थी, सबसे आगे रही थी।

"वासना !" नाम लेते-लेते चारुशीला के मुँह पर वेदना उभर आई। बोली, "यही तो कहती हूँ मैं, जो किसी के मगज में नहीं घुसता। कालेज का वह बेपरवाह जीवन, वह उल्लास, वह हो-हुल्लड़—यह सब कितने दिनों का है ? उन जीवन से भरपूर, खिलखिलाती लड़कियों को देखकर कौन कह सकता है कि डेढ़ दो साल में वे एक दूसरी ही परिस्थिति में पड़ जायेंगी। हर लड़की के लिये तो रूपकथा के सुख की समाप्ति नहीं होती। घर-गृहस्थी में आजकल सुख नहीं है। लेकिन उसके लिये उसे तैयार नहीं किया जाता—बस शेक्सपियर, शैली, कीट्स और रवीन्द्रनाथ रटने से क्या लाभ ?"

अचानक कुमकुम बोली, "जो सुखी होती हैं वह पुरानी सहेलियों को याद नहीं रखना चाहती। वासना मेरे विवाह में नहीं आई। तू भी नहीं आई। हालाँकि मेरे विवाह को एक साल हो गया, पर अब तक कोई एकबार भी मिलने नहीं आया।" सागरिका के स्वर में आक्रोश स्पष्ट था।

ओंठ बिचकाकर चारुशीला ने कहा, "मैंने तय कर लिया है कि अब से मैं सहेलियों की सिल्वर वेडिंग के अलावा किसी फंक्शन में नहीं जाऊँगी। विवाह में जाना निरर्थक है—कम से कम पच्चीस वर्षों की परीक्षा के बिना किसी को भी दाम्पत्य-सुख से सुखी नहीं कहा जा सकता।"

"तब तक तो हम लोग बुढ़िया हो जायेंगी, चारुशीला। इसके अलावा उस उम्र में लड़कियाँ गृहस्थी में इतना लिप्त हो चुकी होती हैं कि सहेलियों के नाम तक भूल जाती हैं।"

चारुशीला बोली, "तेरे अभियोग का पहला उत्तर तो यह है कि श्रावन की सप्तमी को जिस दिन तेरा विवाह था, मेरे बदन में भयंकर पीड़ा थी। उससे पहले दिन ही डाइवोर्स के फाइनल पेपर मिले थे, तेरे यहाँ शुभकार्य में अपना मनहूस चेहरा दिखाने की इच्छा नहीं हुई।"

"तुमसे मुझे कोई शिकायत नहीं। सारा गुस्सा उस वासना पर है।"

सिगरेट का टुकड़ा मुँह से निकालकर गाड़ी की खिड़की से बाहर फेंकते

हुए चारुशीला ने कहा, "वासना पर भी गुस्सा नहीं रहेगा तुझे। उस समय उसका पति अस्पताल में था, वासना चौबीसों घंटे वहाँ बैठी रहती थी। विवाह के बाद लड़की का दायित्व रातों रात बढ़ जाता है, सागरिका। पति को कुछ होने पर पत्नी को इसी तरह असहाय भाव से अस्पताल की सीढ़ियों पर बैठे रहना पड़ता है।"

"वासना का पति अस्पताल में! इस उम्र में?" आश्चर्य-मिश्रित स्वर में कुमकुम ने पूछा।

"अस्पताल क्या केवल बुड्ढों और बच्चेवालियों के लिये है? कितने लोग जाते हैं वहाँ तो—कितने ही यंग मैन। वह मुझे अस्पताल में ही मिली थी। उसके मुँह में बस एक ही बात थी, 'तापस जल्दी ठीक हो जायेगा ना?'' इन सब प्रश्नों का एक बँधा-बँधाया जवाब होता है, जो यह जानते हुए भी कि झूठ है, सबको रिपीट करना पड़ता है—'फिकर मत कर, सब ठीक हो जायेगा।' जब कि मुझे पहले ही पता चल गया था कि उसके पति को कैंसर होने का संदेह है।"

"हैं।" कैंसर सुनकर कुमकुम घबरा गई।

चारुशीला का स्वर एकदम धीमा हो गया। बोली, "सुन, वासना का पति तीनेक महीने बाद ही चल बसा। खबर पाते ही श्मशान घाट भागी गई थी मैं। सहेलियाँ एक दूसरे के विवाह में जाती हैं, बासर घर में भी रतजगा करती हैं, परन्तु श्मशानघाट नहीं जाती। मैं ठहरी डाइवोर्स्ड वोमन—न कुमारी, न विधवा और न सधवा—मिडिल क्लास महिला की तीन श्रेणियों में से किसी में नहीं आती। अतः इस समय स्वयं को पुरुष समझने के अलावा और कोई चारा नहीं। इसलिये केवड़ातला जा पहुँची। वहाँ माथे पर पाव भर सिंदूर मले जमीन पर लेटी हुई थी हम लोगों की ईर्ष्या की पात्री सुन्दरी वासना। निकट ही इलेक्ट्रिक भट्ठी के सामने उसके पति का शव प्रतीक्षा कर रहा था—रोग के निर्लज्ज दंशन से शरीर सूखकर काँटा हो गया था।"

चारुशीला जिस तरह वर्णन कर रही थी, सुनकर कुमकुम के शरीर में सिहरन दौड़ गई। मुँह से कुछ भी नहीं कह पा रही थी वह। बस, बीच-बीच में नजरें उठाकर चारुशीला के मुँह की ओर देख लेती थी।

चारुशीला निर्विकार भाव से कहती जा रही थी, "तुझे तो मालूम ही है कि वासना कैसी तुनुकमिजाज थी। साड़ी पर जरा-सी धूल लगने की संभावना पर वह परेशान हो उठती थी। वही वासना केवड़ातला के सीमेन्ट के पक्के धूल भरे फर्श पर पड़ी थी। मैं निकट गई। उसकी आँख लग गई थी। यह नींद भी

कितनी बेशर्म होती है। डाइवोर्स की रात भी मुझे नींद आ गई थी और वासना केवड़ातला की सैकड़ों लोगों की उस भीड़ में भी कुछ देर के लिये सो गई थी, लोगबागों के बुलाने पर भी बोल नहीं रही थी।

"आँख खुलते ही वासना ने मुझे देखा। मैं भी डाइक्लीन साड़ी पहने वहीं जमीन पर उसके पास बैठ गई। कुछ पल मेरी ओर एकटक निहारती रही वह। फिर न जाने क्या सोचकर बोली—"वह आज कुछ भी खाकर नहीं गया।"

फिर जरा गुस्से से चारुशीला बोली, "कालेज में लड़कियों को केवल सिनेमा ले जाया जाता है, बोटैनिक्स व बनारस ले जाया जाता है, परन्तु जहाँ ले जाना चाहिये जैसे—डाइवोर्स कोर्ट, अस्पताल, इलेक्ट्रिक क्रिमेटोरियम—उन सबके बारे में एकदम अनभिज्ञ रखला जाता है उन्हें। लड़कियों को जो एजूकेशन दी जाती है वह बिल्कुल अर्थहीन है, यह मेरी समझ में अलीपुर कोर्ट जाने के बाद आया।

"वासना! क्या बताऊँ? जब तक मैं वहाँ रही, जरा भी शोक प्रकट नहीं किया उसने। बस, एक ही बात कहती रही, 'वह कुछ खाकर नहीं गया।"

"फिर?"

"मालूम नहीं भाई। मेरा तो बहुत हो गया। मेरा आदमी तो अभी भी खा रहा है—खा-पीकर ही घर से निकलता है। लेकिन उससे मेरा क्या आता-जाता है?"

फिर कलाई पर बँधी एच-एम-टी घड़ी की ओर देखकर बोली, "हिन्दुस्तान टामसन में किसी भी तरह देर से नहीं पहुँचा जा सकता—औरतों के प्रोटेक्टिव लोशन का डबलपेज विज्ञापन हाथ से निकल जायेगा।"

कुमकुम को वासना के घर के पास ही उतार दिया चारुशीला ने। उतारने से पहले एक अखबार उसकी ओर बढ़ाकर बोली, "इसमें एक खबर लाल कलम से मार्क की हुई है। पढ़कर देखना। बहुत अच्छी लगी।"



वासना स्नानघर में थी। कोई आया है यह सुनकर जल्दी से निकल आई।

"सागरिका!" सहेली को आलिंगन में ले लिया वासना ने।

कुमकुम को तीक्ष्ण दृष्टि से देख रही थी वह। भाग्य से सागरिका उस दिन एक हल्के रंग की साधारण साड़ी पहनकर निकली थी। कहीं भी रंग का प्राचुर्य

नहीं था। बांधवी की सीमन्त रेखा की ओर निहारा वासना ने। वहाँ सिंदूर की रेखा भी शीर्ण थी। कुमकुम केवल एकादशी के दिन ही गहरी माँग भरती थी।

"तू और भी सुन्दर हो गई है सागरिका।" वासना ने शुरू किया।

सागरिका ने देखा, वासना के ऊपर से गुजरे तूफान ने उसके शरीर की क्षति तो की थी, परन्तु पूरी तरह विध्वस्त नहीं किया था। शरीर पर मन का पूरा अधिकार नहीं था, यह ऐसे शरीर को देखकर ही पता चल जाता है।

वासना बोली, "तेरे शरीर में ज्वार आ गया है सागरिका।"

"ज्वार का मतलब ही है कि भाटा आने में देर नहीं है।"

"ज्वार के प्रति लापरवाही मत बरतना भाई। भाटा के बाद फिर ज्वार नहीं आता।" वासना के स्वर में जैसे तूफान से पहले की शांति थी।

सागरिका को उसके सामने शर्म-सी आ रही थी। पति की, नई गृहस्थी की, कोई बात करने की इच्छा नहीं हो रही थी। वासना को सान्त्वना देने के अतिरिक्त और कोई अधिकार नहीं रह गया था उसे।

सागरिका ने शुरू किया, "मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम था। आज तेरे भाई से पता मिला तेरा।"

वासना बोली, "वहाँ बहुत बड़ा फ्लैट था। छोड़कर यहाँ चली आई। मकान-मालिक ने ही मदद की—उनका भी फायदा हो गया, बड़ा फ्लैट वापस मिल गया।"

"चारुशीला ने ही सब बताया मुझे।" समयोचित बात ढूँढ़ रही थी सागरिका।

"बड़ी अद्भुत लड़की है।" चारुशीला का नाम सुनते ही वासना बोली। खबर मिलते ही श्मशान भागी आई थी। लेकिन फिर कभी नहीं आई। बस, एक चिट्ठी लिखी थी—तुम्हारा तो न रहने के कारण नहीं है, और मेरा होते हुए भी नहीं है। तुम अन्ततः होते हुए भी न होने की दुःसह यन्त्रणा से बच गई हो।"

फिर कुछ क्षण चुप रहकर बोली, "सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था—फिर अचानक एक दिन…"

क्या कहे सागरिका ? सुख की बातें दिल में ही रख कर कहा, "औरतों के दुःखों का अन्त थोड़े ही है भाई ? अब मुझे ही लो, ससुर बूढ़े हैं, सास नहीं है, दो ननदों का ब्याह ओवरड्यू है, पर उन लोगों के पास पैसा नहीं है। आफिस के काम से भी वह खुश नहीं हैं। विवाह होने के बाद ही बाबूजी स्वर्ग सिधार

गये—उन्हें शायद अपनी मृत्यु के बारे में पता चल गया था, इसीलिये मेरे विवाह के लिये इतने परेशान हो उठे थे।" दुखों की तालिका बढ़ाकर जैसे शान्ति मिल रही थी सागरिका को।

सहेली के मुँह की ओर देख रही थी वासना। बोली, "छोटे-मोटे दुख मुझे भी थे, पर वह सारे तो जाने कहाँ चले गये। अब तो मैं जिसको भी देखती हूँ, कहने का मन होता है—जीवित तो है? है तो ठीक है। सबसे बड़ी बात है खाने के समय खाता है कि नहीं! खाना-पीना बड़ा प्रिय था उसे—खाने के प्रति क्या आसक्ति थी—परन्तु बिना खाये ही चला गया वह।"

गौतम भी तो रोज खाता है। परन्तु बिना खाये चले जाने का दुख अचानक किसी के लिये इतना बड़ा व महत्वपूर्ण हो उठता है, यह सागरिका के मन में कभी आया ही न था।

बहुत-सी बातें हुईं वासना के साथ। कैसे भी नहीं उठने दिया उसने कुमकुम को। बोली, "बैठ, एक कटोरी चच्चड़ी बना लाती हूँ। दोनों जनें खायेंगे।"

जब खाने बैठी तो वासना कहने लगी—"सब निरामिष सब्जियाँ हैं। तेरे लिये एक अंडा बनाये देती हूँ। आज मंगल है बहुत-सी सधवा औरतें इस दिन कुछ न कुछ आमिष अवश्य खाती हैं।"

"मंगल है तो क्या हुआ? छोड़ यह सब बातें।"

"नहीं, तू एक आमलेट खा सागरिका—उसको अंडा बहुत अच्छा लगता था।"

कुमकुम के गले से कौर नहीं उतर रहा था।

वासना बोली, "लड़कियों को हर परिस्थिति का सामना करने के लिये तैयार रहना चाहिये। जैसे यह निरामिष खाकर जीना!"

"आजकल यह सब फिजूल की बातें नहीं मानी जातीं," झिड़की दी सागरिका ने।

"मुँह से तो बहुतों ने यही कहा था, किंतु मैं निरामिष ही खा रही हूँ। हाँ, कपड़ों के कारण जरूर मुश्किल में पड़ गई हूँ। जब उसका बोल बंद हो गया था तो एक दिन उसने एक पर्चा मुझे पकड़ाया था, जिस पर लिखा था—सफेद कपड़ा मुझे फूटी आँख नहीं भाता। तुम्हारे रंगीन कपड़े पहनने से मेरी आत्मा को शांति मिलेगी।"

"लाल रंग उसे बहुत प्रिय था।" सागरिका ने देखा; वास्तव में घर में

लाल रंग का आधिक्य था—बिस्तर की चादर, पर्दे, सीटिंग कुशन सब लाल थे।

वासना अविराम बोलती चली जा रही थी और सागरिका भी यथासंभव संसार की अनित्यता का प्रसंग छेड़ देती थी—मौत को कौन रोक पाया है—आकाश का प्रत्येक तारा जीवन को पुकार रहा है""जो आता है उसे जाना ही पड़ता है, आदि-आदि""।

· उसके एक बार नारी की सीमित शक्ति की बात उठाने पर चारुशीला ने कहा था, कॉलिज गोइंग बंगाली लड़कियों की ट्रेनिंग अदालत, अस्पताल एवं क्रिमेटोरियम में होनी चाहिये, परन्तु इसकी शिक्षा की नौबत ही नहीं आती। भगवान् अचानक एक दिन जिसके सिर पर बिजली गिराता है, उसे वह दुख सहन करने की शक्ति भी दे देता है।

वासना बोली, "पता है, सारे लोगों का मेरे साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार रहा है। सद्य विधवा के प्रति दुनिया बड़ी सदय होती है।"

"ऐसा ही तो होना चाहिये। जिसमें भी हृदय नाम की चीज होगी, वह ऐसा ही तो होगा," सागरिका बोल पड़ी।

एक तिर्यक् मुस्कान से वासना के ओठ फैल गये। बोली, "लोगों के ऐसे सदय व्यवहार से बड़ी बेचैनी होती है, सागरिका। सब इतने अच्छे न होते तो शायद अच्छा होता। हर एक कहता है, चिन्ता मत करो, जिसने पैदा किया है वही सब कुछ सँभालेगा। लेकिन""।"

फिर जरा देर बाद जैसे स्वयं से बोली, "इससे आदत खराब हो जाती है। जैसे हनीमून—बहुतों का कहना है कि विवाह के तुरंत बाद ही मधुयामिनी ठीक नहीं है, कम से कम एक साल बाद होनी चाहिये यह। क्योंकि हनीमून इज टू नाइस टु लास्ट। पति के उस चमत्कृत स्वभाव की अभ्यस्त होने पर गृहस्थी शुरू करने पर बाद को निराश होने की सम्भावना बहुत अधिक होती है।"

फिर तो अच्छा ही हुआ जो सागरिका का अभी तक हनीमून नहीं हुआ। असली हनीमून का स्वाद वही दोनों लेंगे!

संसार की अनित्यता; दुःख, शोक, यन्त्रणा—सबके बीच से गुजरना चाहती है सागरिका।

अचानक वासना बोली, "शोक का भी हनीमून है सागरिका। इसी हनीमून का पीरियड स्वप्न जैसा होता है—जो लोग कभी देखकर जलते थे, लड़ते-झगड़ते थे, तर्क करते थे, वही लोग रातों रात एकदम स्नेहमय व दयालु हो

उठते हैं। सच विधवा का कोई अपराध दिखाई नहीं देता उन्हें। जो औरत इस प्रश्रय को सच मान बैठती है, उसे बाद को बड़ा दुख भोगना पड़ता है।"

फिर कुछ सोच कर बोली, "जानती है सागरिका, उस समय अपने कह-लाने वाले लोग कितनी जल्दी-जल्दी आया करते थे? समय जैसे पंख लगाकर उड़ जाता था। मुझे कोई भी किसी भी बात के बारे सोचने नहीं देता था। जाने कैसे सारा काम हो जाता था, जरा भी कोशिश नहीं करनी पड़ती थी।"

"फिर ?"

"फिर ? फिर एक दिन तो हनीमून खत्म होता ही है! सारा जीवन उसी प्रकार बीत जायेगा, यह सोचनेवाला नितांत बेवकूफ होता है।"

वैधव्य का हनीमून खत्म होने के बाद की तस्वीर सागरिका के सामने क्रमशः स्पष्ट हो उठी—धीरे-धीरे लोगों का आना कम होने लगा। जो आता भी, मात्र कर्त्तव्य निभाने—वासना के सान्निध्य से खुशी नहीं होती। झूठी, बच्चों को भुलाने वाली जैसी बातें कहकर न आ पाने का बहाना बनाते। आफिस का काम—बच्चों की बीमारी, मेहमान—सैकड़ों बहाने। कोई सच नहीं कहता। यह वासना भी जानती थी कि दुनियाँ की सारी खुशियाँ उसकी खातिर बंद नहीं हो जायेंगी। परन्तु दुख इस बात का था कि लोग मुंह से सच नहीं कहना चाहते—बच कर निकल जाना चाहते हैं और फिर धीरे-धीरे एक दिन अदृश्य हो जाते हैं।

सागरिका सोचने लगी, इन्सान इससे ज्यादा कर भी क्या सकता है। सर पर आ पड़ने वाले पहाड़ से दुःख के बाद किसी की इतनी कृपादृष्टि मिलना ही क्या कम है? दूसरे देशों में जो हालत है उसको देखकर तो मन शंकित हो उठता है कि वह कृपादृष्टि हमेशा मिलेगी भी या नहीं?

घूम-फिर कर गुस्सा फिर लड़कियों के कालेज पर ही उतरा। वहाँ लड़कियों को सोशल व आउटिंग न सिखाकर अकेले रहने की शिक्षा देनी चाहिये। विवाह से पहले दस दिन अगर किसी का भी मुख न देखकर बिल्कुल अकेले रहने का अभ्यास करा दिया जाये तो वह अभिज्ञता वैक्सीन का काम करेगी।

वासना के मन से दुख, अभिमान व निराशा का बोझा पूरी तरह उतार फेंकना चाहा कुमकुम ने। बोली—

"गोली मारो! औरत होने से क्या हम लोग अक्षम हैं? जानती है वासना, स्वयं रवीन्द्रनाथ ने दुर्बल बन कर भाग्य के चरणों में असहाय भाव से सर पटककर भिक्षा माँगने को मना किया है। लेकिन इसके बाद की लाइन, 'नहीं भय जरा भी, मैं जानूं तुम हो मैं हूँ' कुमकुम जानबूझ कर टाल गई।

वासना की निःसंग अवस्था का अन्दाजा लगाकर आगे आश्वासन देती हुई बोली, "तू जब भी चाहे हमारे यहाँ चली आया कर।"

वासना के ओठों पर एक तिर्यक् मुस्कान आ गई। जाने कितने लोगों ने कही थी यह बात। परन्तु गृहस्थ के भरे-पूरे सुखी घर में मिस्टर व मिसेस अतिथि न हों तो बड़ा अटपटा लगता है। विधवा और वह भी युवती विधवा वहाँ हमेशा वेलकम नहीं हो सकती। सबको ही काम रहता है, सैकड़ों चिन्ताएँ रहती हैं—हँसी-खुशी का वक्त क्रमशः सीमाबद्ध होता जाता है—वहाँ जबर्दस्ती स्वयं को लादने से लोगों को तकलीफ होती है।

"तुझे फिर से प्रफुल्ल-चित्त होकर आगे बढ़ना होगा, वासना। लड़कियाँ भी ऐसे दुःख से उबरकर फिर से जीवन का आनन्द ले सकती हैं, यह प्रमाणित करना होगा तुझे।" कुमकुम ने जोर देते हुए कहा, हालांकि वह स्वयं ठीक से समझ नहीं पा रही थी कि उसकी बात का अर्थ क्या हो सकता था।

वासना चुपचाप सुनती जा रही थी। बेचारी पहले से बहुत दुर्बल हो गई थी। पहले कितना बातें करती थी वह, कितनी हँसती थी।

कुमकुम के सामने प्लेट में आमलेट ज्यों का त्यों पड़ा था। अचानक आधा वासना की प्लेट की ओर बढ़ाती हुई बोली, "मैं कोई बात नहीं सुनना चाहती।

"आज से तुझे मेरे सर की कसम है, तू सब कुछ खायेगी। शादी से पहले जो-जो खाती थी, उसमें से कुछ भी खाना नहीं छोड़ेगी।"

"यह क्या किया तूने ? मांस-मछली का छुआ मैं नहीं खाती।" वासना ने उसकी ओर आँखें फैलाकर देखते हुए कहा।

वासना ने उठकर हाथ धोये और एक दूसरी प्लेट में थोड़े से दाल-चावल ले लिये। आमलेट वाली प्लेट वैसी ही पड़ी रही।

"मैं सोचूंगी कुमकुम। आजकल मुझे हर काम में थोडी देर लगती है—मुझे थोड़ा समय दे।" परन्तु सागरिका एक न सुनकर फिर से खाने की जिद पर पड़ गई।

और वह देखकर चकित रह गई कि वासना ने आमलेट का टुकड़ा तोड़कर मुँह मे डाल लिया। उसे याद आया कि वासना को फिशफाई बहुत अच्छी लगती थी। कालेज मे जब-तब वह सहेलियों के लिये फिशफाई लाया करती थी। वासना को आमलेट खाते देखकर एक ओर उसे खुशी हुई परन्तु साथ-साथ मन का एक कोना अप्रसन्नता से भर उठा।

लेकिन तब भी वह बोली, "मैं कोई बात नहीं सुनना चाहती। तू जो भी

खाती थी—सायेगी; घर से बाहर निकलेगी। लोगों से मिलेगी। तुम लोग तो कितना घूमते-फिरते थे। कार से कलकत्ते के आस-पास की जगहों में जाते थे।"

वासना ने अपने अन्तर की बात न छुपाकर कहा, "कई बार तो घर काटने को दौड़ता है, हाँफ उठती हूँ मैं। जिन जगहों में वीक एंड बिताये हैं, वह सब जगहें अपनी ओर खींचती हैं। पर अब कौन लेकर जायेगा मुझे? और क्यों ले जायेगा?"

कुमकुम को याद आया कि घूमने निकलने पर वासना खुली सड़क पर ड्राइव करती थी। तापस हर बात में उसे एन्करेज किया करता था। वह बोली, "तू भी चारुशीला की तरह बेपरवाह बन जा। पहले जो करती थी, अब भी कर।"

मुस्कुरा दी वासना। बोली, "एक और आदमी भी तेरी जैसी बात करता है।"

कौन है वह आदमी, सागरिका उत्सुक हो उठी।

फिर से मुस्कुरा कर वासना ने कहा, "मैं को-एजुकेशन स्कूल में पढ़ी थी। एक लड़का मुझसे कई साल सीनियर था। बीच में जाने कहाँ गायब हो गया था। खबर मिलने पर एक दिन शोक प्रकट करने आया था।

"मैं जब श्मशान में फर्श पर अचेत पड़ी थी, उस समय वह भी किसी और के साथ वहाँ आया था। मुझे वहीं देखा था उसने। उसके बाद कई बार खोज-खबर लेने आया। एक दिन जिद करके अपने साथ चारों ओर हरियाली से घिरे बलम भी ले गया था, परन्तु उस बार मैं बस रोती ही रही थी, पेड़-पौधे, हरियाली, किसी ओर नजर ही नहीं पड़ी।"

जरा देर चुप रहकर फिर कहना शुरू किया वासना ने "यह शोक की सामाजिकता है। वैधव्य के हनीमून के बाद भी एक-दो चक्कर लगा गया है। औरत की बहुत अधिक खोज-खबर लेना भी अच्छा नहीं है, सागरिका। मैं नहीं चाहती कि कोई मेरी खोज-खबर ले। मैं एक तरह से कोल्ड हो गई हूँ।"

वासना उठकर बाथरूम गई तो सागरिका ने चारुशीला के दिये अखबार पर नजर दौड़ाई। एक खबर के चारों ओर लाल पेन्सिल से मोटी लाइन खींची हुई थी। खबर पढ़कर सोच में डूब गई सागरिका।

बाथरूम से निकलकर वासना ने पूछा, "इतनी तन्मय होकर क्या पढ़ रही है?"

"अखबार पढ़ रही थी, और सोचने लगी अपने बारे में। दो साल पहले

ही तो हमलोग गर्ल्स कालेज में कितना ही-हुल्लड़ मचाया करते थे। उन्मुक्त होकर घूमते फिरते थे, मनोनीत अपनी खुशियों का संसार बसाते थे। दो साल कुल हुए हैं हमलोगों को अलग हुए, पर हम सब कितना बदलते जा रहे हैं। मैं दिन-रात अपनी दो ननदों के विवाह की चिंता में घुलती जा रही हूँ, जबकि दो साल पहले उन्हें जानती तक नहीं थी। चारुशीला का पति जीवित होते हुए भी नहीं है। तेरी यह हालत हो गई है। कुल दो साल पहले हम लोग विक्टोरिया मेमोरियल के सामने जी खोलकर हँसते-गाते थे, नाचते थे, कालेज की चार्टर्ड बस में शान्ति निकेतन जाकर हुड़दंगा मचाया है; मुझे नृत्य में प्राइज मिला था, चारुशीला ने डिबेटिंग में मेडिकल कालेज के लड़के को पछाड़ दिया था, रवीन्द्रसदन के सामने उस असभ्य जवान लड़के को सबने पकड़कर कितना मारा था, तूने कालेज की बेंच तोड़ दी थी। लेकिन कुल दो सालों में······"

"सागरिका, मैं सोच रही हूँ कि एक दिन अचानक सुख प्राप्त होता है और फिर अचानक कैसे सब खत्म हो जाता है?"

"लड़कियाँ अपने को कांच के बर्तन जैसा नाजुक समझती हैं, वासना। कमजोर समझने से ही कमजोर हैं। स्टेनलेस, अनब्रेकेबल समझें तो अनब्रेकेबल हैं। यह देख, चारुशीला ने जिस खबर को अंडरलाइन किया है, वह है—कहीं एक सैनिक को विवाह के अगले दिन ही दूर रणक्षेत्र में जाना पड़ा और कुछ महीनों बाद वहीं मारा गया। अंतिम चिट्ठी में उसने पत्नी को जो लिखा था, वही अखबार में लिखा है। सैनिक भी दार्शनिक हो सकते हैं। उसने लिखा था, 'अगर कोई दुर्घटना हो जाये तो फिर से जीवन शुरू करना। हैव ए गुड लाइफ।'"

"अर्थात् संसार के लोगों को सैनिक का उपदेश है कि अनहोनी को होनी करने वाले भगवान् जो भी करें उसे तुम मानना मत। तुम फिर शुरू करो—स्टार्ट ए न्यू, हैव ए गुड लाइफ।"

क्या सोचने लगी वासना? "क्यों? तू बोलेगी नहीं? हां, ना, कुछ तो कह।"

सिर उठाया वासना ने और कहा, "तुमसे कहा था न, आजकल कुछ कहने करने के पहले बहुत सोचना पड़ता है। सोचने-समझने में मुझे बड़ी देर लग जाती है री।"

वासना को बिस्तर पर लिटाकर सागरिका घर से निकल आई। घड़ी की

ओर नजर गई तो ख्याल आया गृहस्थी के ढेरों काम उसकी प्रतीक्षा में पड़े होंगे।

एक मिनी बस में बैठ गई वह। बैठते ही वासना की चिन्ता में डूब गई।

वासना के मामले में अभी भी विश्वास नहीं होता। सब कुछ मटियामेट हो गया उसका, यह कैसे मान लिया जाये ? कोई भी तो नहीं है उसका—एक बच्चा भी नहीं। वासना ने ही बताया था कि होने ही नहीं दिया। असावधानी हो जाने के कारण एक बार कई सप्ताह बड़ी दुश्चिंता में रहे दोनों। फिर पता चला था कि चिन्ता व्यर्थ थी। अब लगता है कि उस समय अगर वास्तव में भूल हो जाती तो अच्छा था।

फिर कुमकुम वासना के साथ स्कूल में पढ़ने वाले आदमी के बारे में सोचने लगी। बेचारे को बेकार ही भगा दिया वासना ने। यह ठीक नहीं हुआ। माना कि उसके बारे में कुछ भी पता नहीं था पर तब भी केवल डर कर एक आदमी को परे हटा देना चाहिये ? वासना बड़े कमज़ोर मन की है। पति की मृत्यु के एक साल बाद भी घूम फिर कर बस एक ही बात—वह कुछ खाकर नहीं गया।

ठीक है, पति को जो अच्छा लगता था तुम खुद वही करो। तुम ज्यादा आमलेट खाओ, बिना खाये घर से मत निकलो। वह वासना से कह आई थी कि "बारदोला के उस सैनिक की बात यूँ ही उड़ा देने वाली नहीं है।"

"बारदोला का सैनिक नहीं—विदेश का एक बेनाम सैनिक। हो सकता है जिस देश मे लड़ाई पर गया हो वहाँ बहुत से आदमियों को मारा हो," वासना ने मृदु प्रतिवाद किया था।

"चाहे जो भी किया हो। पर मरने से पहले तो पत्नी को चरम सत्य लिख दिया। वासना, मौका मिलते ही तू एक बार निकल पड़। मेरे पति की अपनी गाड़ी नहीं है—होती तो किसी शनिवार को तुझे लेकर बहुत दूर कहीं भी चली जाती।"

वासना ने बताया था कि उस आदमी के पास गाड़ी है। सागरिका को तो नहीं लगता कि वह बुरे ख्याल से आता है। सारे आदमियों पर बुरा सन्देह करने से मनुष्यता का कोई मूल्य नहीं रह जाता।

हावड़ा की मिनीबस एसप्लेनेड के क्रासिंग पर खड़ी हो गई। अपार भीड़ थी—सामने गाड़ियों की लाइन लगी हुई थी। अचानक खिड़की से बाहर सिर

निकाला तो उत्फुल्ल हो गई सागरिका। गौतम है न ? लगता है उसकी हरी स्टैंडर्ड गाड़ी भी अटक गई है !

जल्दी-जल्दी बस से उतर कर गाड़ी की ओर भागी वह। कहीं ट्रैफिक खुल न जाये। गाड़ी के दोनों शीशे चढ़ा रक्खे थे गौतम ने। अधीर आवेग से काँच पर ठक-ठक करने लगी सागरिका। चौंक कर देखा गौतम ने और पत्नी पर नजर पड़ते ही झट से दरवाजा खोल दिया। तभी पुलिस के ग्रीन सिगनल से ट्रैफिक सचल हो उठा।

"क्या हुआ ? इतना हाँफ क्यों रही हो ?" गौतम ने पूछा। इस तरह अचानक पत्नी को पाकर वह भी बेहद खुश था।

"क्यों हाँफ रही हूँ ? जाने क्यों मन में डर लगा कि तुम मुझे छोड़कर कहीं चले जाओगे। अगर एक सेकेंड की देर हो जाती, मुझे तो यही तो होता।"

हँस दिया गौतम। बोला, "कभी भी इतना मत डरना।"

"क्यों ? मैं पीछे छूट जाऊँ तो तुम्हें अफसोस नहीं होगा ?"

"क्या कहा !" रसिक गौतम ने आँखें बड़ी-बड़ी करके कहा। "घर जाकर जब पता चलता तो लगता कि वर्धमान के मार्केट में साढ़े तीन लाख का आर्डर मिस कर दिया।"

"ओ…! हर चीज रुपये से तौलते हो तुम ?" बनावटी डाँट लगाई कुमकुम ने।

"वही अमाउन्ट हर वक्त दिमाग में घूमता रहा है न। वर्धमान के उसी आर्डर के लिये दिन भर घूमता रहा हूँ। एक बार तो डियेनबियेम ने कहा, चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ, फिर न जाने क्या सोचकर रुक गये।"

"क्यों ?"

"भगवान् जाने। पहले समझ न पाकर गुस्सा आता था। उससे बदहजमी होती थी। अब सोचता हूँ, जो भी जो कुछ करता है उसका अवश्य कोई कारण होता होगा। चेन रिएक्शन से ही दुनिया चलती है। दीननाथ वसुमल्लिक बैचेलर आदमी है—हमेशा चंचल होने की स्वाधीनता तो चिरकुमारों को ही होती है। कुमकुम, तुम अभी भी हाँफ रही हो। जो चाहा था वह तो मिल ही गया", गाड़ी चलाते-चलाते गौतम ने मजाक किया।

पति की पीठ पर हाथ रखकर कुमकुम ने कहा, "मैं अभी भी सोच नहीं पा रही कि अगर तुम मुझे छोड़कर चले जाते तो क्या होता। तुम इस समय

कहीं ले चलो मुझे, जहाँ थोड़ी देर आमने-सामने बैठ सकें। किसी निर्जन जगह–जहाँ कोई हमें देखकर बिना बात उत्सुक न हो उठे।"

"गुड आइडिया। पच्चीस मिनिट का छोटा-सा हनीमून।" कहकर गौतम ने पश्चिम की तरफ मुड़कर फिर दक्षिण की सड़क पकड़ ली।

गंगा के किनारे पहुँच गई गाड़ी। नदी का वह रेस्टोराँ बहुत सस्ता नहीं था। परन्तु आज खर्च को लेकर मगज खपाने की इच्छा नहीं हो रही थी कुमकुम की।

ऊपर की मंजिल पर काँच के पारदर्शक कमरे में बैठकर गौतम बोला, "तुम्हें एक बार यहाँ लाने की बड़ी इच्छा थी।"

"पता है, मन की इच्छा को कभी टालना नहीं चाहिये। कौन जाने कब हाथ से मौका निकल जाये।"

"क्या आर्डर दिया जाये?" गौतम ने पूछा।

"किसी को बुलाओ, मैं आर्डर दूँगी।" कुमकुम ने प्रेयसी के भाव से कहा।

बैरे के आते ही कुमकुम बोली, "चार टोस्ट और दो स्पेशल आमलेट।"

"अपराह्न की इस बेला में कलकत्ते के असली साहब आमलेट का आर्डर नहीं देते! डियेनबियेम होते तो आर्डर देते टी एंड पेस्ट्री।"

"आज तुम्हारे साथ बैठकर आमलेट और टोस्ट खाने को जी छटपटा रहा है मेरा," कुमकुम ने करुण स्वर में विनती की।

पति के चेहरे पर नजरें टिकाकर बोली, "पता है, हमारी सहेली वासना है न, वह सोते-सोते स्वप्न देखती है कि पति को आमलेट खिला रही है।"

"यह कैसा प्रेम है? स्वप्न में चुम्बन नहीं, आलिंगन नहीं,—बस, आमलेट।" गौतम ने मजाक किया।

"मजाक मत करो—उसके पति को कैंसर हो गया था, खाने का बड़ा मन करता था उसका—परन्तु जाने के दिन बिना कुछ भी खाये चला गया।"

"आइ ऐम वेरी सॉरी कुमकुम। पति मर गया है यह मालूम होता तो *रसिकता थोड़े ही करता मैं! कैंसर तो आजकल जिस-तिस को हो जाता है*—उम्र-वुम्र कुछ भी मायने नहीं रखता। डियेनबियेम की किसी परिचित लड़की के साथ भी वैसा ही हुआ है—पति चला गया। एक ही ट्रेजेडी की कितनी जगह पुनरावृत्ति हो रही है, हम लोग ख्याल भी नहीं करते, डियेनबियेन आज सुबह ही गाड़ी में बता रहे थे।"

"इसका मतलब है कि भद्र व्यक्ति मार्केट के अलावा और बातों के बारे में भी सोचते हैं! तो फिर उनसे अपनी पत्नी के प्रोग्राम के बारे में कह देना।"

"सुबह बारह बजकर चालीस मिनिट पर! उस समय डियेनबियेम गाना सुनेंगे? ऐसी तकदीर लेकर आया हूँ मैं?"

"रात को नौ बजकर बावन मिनिट पर, उस समय तो तुम्हारा मार्केट खुला नहीं रहता।" कुमकुम ने करुण स्वर में आवेदन किया।

"मार्केट खुला रहता है वसुमल्लिक के मन के अन्दर। दुनिया के सारे बाजार जब बन्द हो जाते हैं उस वक्त भी वह बुरा सपना देखते हैं कि कोई दूसरा हमारी कम्पनी का मार्केट शेयर छीन रहा है।" गौतम ने जरा हताश स्वर में कहा। फिर एक निःश्वास छोड़कर बोला, "दुनिया का नियम है स्वयं भी जीवित रहो और दूसरों को भी रहने दो, लिव एंड लेट लिव। परन्तु इस आधुनिक मार्केटिंग युद्ध में दीननाथ वसुमल्लिकों का प्रण है कि सबको अचानक एक गहन अरण्य में छोड़ दिया जाये, ताकि एक जंगल के राजा के अलावा कोई जीवित न रहे।"

कुमकुम ने आमलेट की प्लेट पति की ओर बढ़ा दी और फिर बच्चों की तरह पति के टोस्टों के छोटे-छोटे टुकड़े करके मक्खन की मोटी तह लगाकर पति की प्लेट में रखने लगी।

"तुम मुझे बिल्कुल निकम्मा बनाये दे रही हो कुमकुम। डियेनबियेम को पता चल गया तो बहुत नाराज होंगे। वह चाहते हैं क्षुधित मुस्तैद चीते जैसी ऐग्रेसिव सेल्स फोर्स, जो लोग पलक झपकते प्रतियोगियों का झपटकर टेंटुआ दबा लें। पत्नी के हाथ से इस तरह टोस्ट के टुकड़े करवाकर खाने से उनका बेपरवाह हिंस्रभाव खत्म हो जायेगा!"

"अपने साहब से दूसरों के घरेलू मामले में नाक घुसेड़ने को मना कर दो। घर मार्केट प्लेस नहीं है।" कुमकुम ने बिना गम्भीर हुए कहा। वह भला क्यों डियेनबियेम से डरती?

आमलेट के टुकड़े वह अपने हाथ से गौतम को खिलाने लगी, और प्रसन्नता से ओत-प्रोत होने लगी। आँखों के सामने वासना का चेहरा उभर आया, उसके पति को आमलेट और टोस्ट बहुत अच्छा लगता था, परन्तु जाते समय कुछ भी नहीं खा पाये।

"उफ, आज तो जैसे राक्षसों जैसी भूख लगी है मुझे। इतने बड़े डबल आमलेट के साथ दो जम्बो टोस्ट मिनिटों में साफ कर गया।"

"अच्छा तो है। काम करते-करते इतना घूमते हो तो भूख नहीं लगेगी?"

कहकर कुमकुम ने अपनी प्लेट में से आधा आमलेट गौतम की प्लेट में डाल दिया।

हैं-हैं कर उठा गौतम। और बोला, "तुम भी तो सुबह की घर से निकली हो?"

"औरतें शारीरिक परिश्रम नहीं करतीं, उनको इतनी भूख नहीं लगती।" कहकर कुमकुम सोचने लगी कि वह कितनी सौभाग्यवती है। कितनी औरतें पति को सामने बिठाकर खिलाना चाहती हैं, लेकिन सुयोग नहीं मिलता। वासना तो हर वक्त बस यही कहती रहती है, 'वह कुछ खाकर नहीं गया।'

आज वासना के घर से आने के बाद कुमकुम के लिये पति का सान्निध्य बहुत मूल्यवान हो गया था। अपराह्न के उस सुनहरे प्रकाश में समुद्रगामिनी भागीरथी के पूर्वी तट पर बैठी कुमकुम विवाहित जीवन के सम्पूर्ण सुख का अनुभव कर रही थी। बोली, "तुम्हें फिर से आफिस जाना है?"

थोड़ा-सा काम बाकी था गौतम का। कलकत्ता मार्केट की एक रिपोर्ट तैयार करनी थी, उसके अलावा आसनसोल मार्केट के बारे में एक फोन करना था।

बोला, "नेपाल का बहुत सा फॉरेन माल जाने कैसे चोरी से धनबाद पहुँच रहा है। और धनबाद से वह माल बिहार के बार्डर पार निकल कर आसनसोल पहुँचकर हमारा बिजनेस ठप्प कर रहा है। कितनी नर्सिंग करके, दूध पिला-पिलाकर डियेनबियेम ने मार्केट तैयार किया है, वहाँ यह सब छल-कपट, ठगी नहीं चलेगी।"

इसका मतलब है वह सब जानकारी गौतम आज ही मिलने की आशा कर रहा है। थोड़ी निराश हो गई कुमकुम। वासना के घर से आने के बाद, अकेले रहने की हिम्मत नहीं हो रही थी। मन ही मन बोली, 'हे भगवान, तुम मुझे चारुशीला जैसा मनोबल दो। हे भैरव, इस जनारण्य में अकेले घूमने की स्पर्धा दो।'

गौतम समझ गया कि उसकी पत्नी इस अल्पकाल के सान्निध्य का हर क्षण पूर्ण रूप से ग्रहण कर रही है। बीस मिनिट का हनीमून इसी तरह का हो सकता है। सर्वस्व अर्पण करके हल्की हो जाना चाहती थी कुमकुम—गौतम स्वयं ग्रहण करने के लिये उतावला हो गया था।

हनीमून के वक्त तरुण युवक हिसाबी नहीं होते। वह मधुयामिनी विचार-बुद्धि के प्रदर्शन का वक्त नहीं होती। मधुयामिनी के उस तीर्थ में तो आदान-प्रदान करने के लिये उच्छ्वसित, व्याकुल मन ही उपस्थित होते हैं। संसार के

सदासतर्क हिसाब के बहिर्भूत आदान-प्रदान के लिये ही तो गोपनीयता के लिये प्रार्थना करते हैं लोग।

कुमकुम सोच रही थी कि बस चन्द मिनिट और थे! फिर तो गौतम को छोड़ना ही पड़ेगा। गौतम पत्नी की हर क्षण साथ रहने वाली सम्पदा नहीं था—इसका बहुत सा भाग किसी और ने बाँट लिया था।

चाय जल्दी लाने को कहने जा रही थी कि कुमकुम गौतम ने रोकते हुए कहा, "देर करने दो। इस तरह जितना समय निकल जाये अच्छा है। और थोड़ी देर तुम्हारा मुँह निहारता रहूँगा।"

"तुम्हारा आफिस? और मिस्टर वसुमल्लिक?" सागरिका की बात में जरा धृष्टता थी।

"भाड़ में जाये डियेनबियेम। मैं गुड लाइफ का उपभोग करना चाहता हूँ।"

सीधी होकर बैठ गई कुमकुम और पति के चेहरे पर नजर टिकाकर बोली, "वह गुड लाइफ क्या है?"

"क्वान्टिटी ऑफ लाइफ को लेकर ही इस अभागे देश के लोग सिर खपाते रहे। उनके लिये सबसे बड़ी बात थी, कितने दिन जीवित रहे, कितने साल विवाहित जीवन रहा। जीवन का परिमाण ही सब कुछ था। अब बुद्धिमान व्यक्ति जीवन के उत्कर्ष के सम्बन्ध में सजग-सचेतन हो गये हैं। जितने दिन बीते, वह कैसे बीते? शतायु होने का आशीर्वाद अब पुराना-बेमानी हो गया है—आज तो सब इस आशीर्वाद की कामना करते हैं कि जितने दिन रहो, सुखी रहो।"

मिर्च के पात्र से खेलते हुए गौतम बोला, "हम जीवन को जीवन की तरह भोगने के लिये जीवित रहना चाहते हैं। जगत् के आनन्द यज्ञ में हम भी निमन्त्रित हैं।"

"माने, हम कौन-सा आनन्द चाहते हैं, गौतम?" कुमकुम ने जानना चाहा।

"मैं पूरी तरह समझ नहीं पा रहा, कुमकुम। हर व्यक्ति के अन्तरपट पर गुड लाइफ का एक रंगीन चित्र अंकित रहता है। उसका अन्तर ही उससे कहता है कि हैव ए गुड लाइफ।"

पत्नी के चेहरे पर टकटकी लगाये था गौतम। उसके हाथ का स्पर्श भी मिला था कुमकुम को। यही तो हनीमून का रोमांच था। उसने सोचा हर हफ्ते इसी तरह थोड़ा-थोड़ा हनीमून मनायेगी वह।

अचानक गौतम बोला, "गोली मारो। आज मैं मार्केट के लिये मगजपच्ची

नहीं करूँगा। यहीं तुम्हारे साथ बैठा रहूँगा। एक साथ कार में बैठेंगे और एक साथ घर लौटेंगे।"

"और वो डियेनबियेम ? उन्हें अगर पता लग गया कि आफिस टाइम में इस तरह…।"

आगे गौतम ने पूरा किया, "बीवी के साथ प्रेम कर रहा हूँ। ठीक कर रहा हूँ। पत्नी को प्यार करने का अधिकार संविधान स्वीकृत है। इसके अलावा डिएनबियेम खुद भी आज गोल हो गये। बालीगंज मार्केट से लौटते हुए चित्त-रंजन अस्पताल के पास गाड़ी से उतर गये। कहा तो यही कि मार्केट जा रहा हूँ—पर लगा कि अब आफिस नहीं आयेंगे।"

चाय आ गई। गौतम बोला, "बड़ा मजा आ रहा है, कुमकुम। विवाहित पति-पत्नी का चोरी-छिपे प्रेम का खेल खेलना बहुत अच्छा लग रहा है।"

कुमकुम प्याले में चाय डाल रही थी और उसके हाथ की चूड़ियां बज रही थी। "छोटी उम्र की सहेली का दुख देखकर मैं अपने सारे दुख भूल गई, गौतम।"

गौतम बोला, "मैं तुम्हारे लिये बहुत फील करता हूँ कुमकुम। तुम छोटी-सी उम्र में हमारी गृहस्थी के दुखों में फँस गई।"

पति के कप में दूध डालते हुए कुमकुम ने कहा, "कहाँ है दुख ? लुक-छिप कर मजा करना कम कहाँ हो रहा है ?"

"मैं सब जानता हूँ, कुमकुम। कितने ही दुःख तुमने हँसते हुए झेल लिये हैं।"

"पर तुम यह तो नहीं जानते कि इतना सा पाने के लिये कितनी लड़कियाँ जी-जान लगाती हैं। मेरी एक सहेली केवल एक बार अपने पति को इस प्रकार नदी के किनारे बैठकर टोस्ट और आमलेट खिलाकर धन्य हो जायेगी। सारा जीवन और कुछ नहीं मांगेगी।"

"वहाँ क्वान्टिटी आफ लाइफ का गोलमाल हो गया। इसी डर से, इस देश के वयोज्येष्ठ हमेशा यही आशीर्वाद देते हैं कि जीते रहो। सौ साल जियो।"

यह कहकर पत्नी के कप में चाय डालने के लिये गौतम ने कुमकुम के हाथ से टी-पॉट छीन लिया। फिर चाय डालते-डालते बोला, "शायद सबसे बड़े मालिक की यही इच्छा थी कि संसार धर्म के साथ मेरा सम्पर्क न रहे। नहीं तो अमिताभ और गौतम नाम क्यों होता मेरा ? दोनों ही तो भगवान् बुद्ध के नाम हैं जिनका यश पत्नी व पुत्र के प्रति न्याय करने के कारण नहीं फैला।"

अतः पर दोनों के बीच कुछ क्षण के लिये नीरवता छा गई। फिर गौतम

बोला, "बाबूजी तुम्हारे ऊपर निर्भर हैं। तुम्हारे प्रति कृतज्ञ हूँ मैं, कुमकुम। बाबूजी पर हम लोग बहुत दिनों तक निर्लज्जता से निर्भर रहे हैं। उनके इस प्रकार मेरे लिये सब कुछ स्वाहा किये बिना तुम्हें भी नही पाता मैं। बी० टेक० की वह डिग्री नही होती तो कौन देखता मुझे ?"

"तुमने फूलशय्या की रात पिताजी की बात मानकर चलने को कहा था, तो मैंने तो तुम्हारी बात गाँठ बाँध ली। तुम्हारी बहनों को अपनी बहनें मान लिया।"

गौतम बोला, "गृहस्थी के बहुत से कठिन सवालों का हल निकल आया है। लेकिन दोनों बहनों के विवाह का मामला कैसे निपटेगा ?"

"इसी चिंता में तो तुम्हारे बाबूजी दिन पर दिन सूखते जा रहे हैं। अखबार के मार्जिन पर रोज बस एक ही सवाल हल करते हैं और मुझे दिखाते हैं।"

"लगता है कि अब तो लाटरी निकले बिना गति नही है।" ओठ उलट कर गौतम बोला। "बाबूजी को चिन्तित देखकर मैं स्वयं को बड़ा छोटा समझने लगता हूँ। बस एक ही बात दिमाग में घूमती रहती है कि लड़का होकर भी मैंने क्या किया और क्या कर रहा हूँ।"

"मेरे बाबूजी कहा करते थे कि हिम्मत मत हारो, कोशिश करना मत छोड़ो, कोई न कोई रास्ता निकल ही आयेगा।"

गौतम बोला, "एक लड़के की खबर मिली थी, पर आज पता चला कि लड़के का किसी के साथ चक्कर चल रहा है।"

"आजकल एक यही मुश्किल है—लड़का पीठ पीछे क्या कर रहा है, माँ-बाप को पता भी नहीं चलता।"

"सुना था लड़का बड़ा उदार है—खर्च-वर्च की चिन्ता नही थी", गौतम ने दुःख प्रकट किया।

"जिसका भाई बी० टेक० इंजीनियर हो, अच्छी कम्पनी में काम करता हो, गाड़ी में घूमता हो, वह खर्च नहीं कर सकता, इस बात पर कौन विश्वास करेगा ?" कुमकुम ने पति को कटु सत्य याद दिलाया।

माथे पर आये बालों को हटाते हुए गौतम बोला, "ज्यादा रुपयों के लिये ही तो नौकरी बदली मैंने। सुख का संसार बसाया पर आग में····।"

'जल गया' बात पूरी नही करने दी कुमकुम ने। बोली, "आज यह सब अमंगल, अशुभ बातें नहीं, प्लीज। आफिस की थोड़ी-बहुत परेशानी व असुवि-

घाएँ दूर हो जायेंगी। डिएनबिएन जिन्दगी भर तुम्हारे ऊपर राज नही करते रहेंगे।"

नदी के उस पार पश्चिमी आकाश के अंतिम छोर पर थाली जैसा विराट् सूर्य रक्ताभ हो उठा था।

गौतम बोला, "दोनों बहनों की शादी करने लायक रुपया कहाँ से आयेगा, यह मेरे दिमाग में कैसे भी नहीं घुस रहा, कुमकुम।"

उसके हाथ पर अपना हाथ रखकर हौले से दबाते हुए कुमकुम बोली, "इतना मत सोचो। देखो, देखो—विदा लेने से पहले सूरज किस तरह मोह बढ़ा रहा है।"

गौतम समझ गया कि आज कुमकुम जरा और ही तरह हो गई थी। डर कर उसने उसका हाथ कसकर पकड़ रखा था। बोला, "क्या हुआ कुमकुम? इतना डर क्यों रही हो?"

कुमकुम पति से कुछ भी नहीं छुपाती। बोली, "रेडियो आफिस से निकल-कर जाने क्यों चारुशीला और वासना से मिलना हुआ। वासना को देखकर तुम्हारी आँखों में भी पानी आ जायेगा। भगवान्, फिर कभी उससे मिलना न हो!"

मृदु तिरस्कार भरे स्वर में गौतम बोला, "छिः, वह तुम्हारी सहेली है। बी काइंड टु हर। तुम लोग ही अगर उसे हिम्मत नहीं बँधाओगी, तो कौन बँधायेगा? बीच-बीच में उसके पास चली जाना और उसे घुमा-फिरा लाना।"

"पता है, आज उसने एक बड़ी अजीब बात कही। बोली शोक का भी एक हनीमून पर्व होता है, फिर सब कुछ बदल जाता है।"

"जरूर होगा नही तो वह कहती ही क्यों?"

"मेरे विचार से तो उसे फिर से विवाह कर लेना चाहिये। इसमें तुम्हें क्या बुराई या गलत दिखता है?" कुमकुम ने पति से पूछा।

"कोई बुराई नहीं है। अखबार में एक बार एक खबर छपी थी कि एक सोल्जर ने रणक्षेत्र में अपनी सद्यःविवाहिता पत्नी को लिखा था—अगर मुझे कुछ हो जाये तो फिर से जीवन शुरू करना। औरतों का जीवन कप प्लेट जैसा नाजुक नहीं वरन् टेनिस बॉल जैसा मजबूत होना चाहिये।"



अगले दिन आकाशवाणी से सागरिका राय चौधरी का संगीत प्रसारित होना

था। पिछले दो दिनों से हरिसाधन और पीताम्बर इसके कारण बहुत ही आनन्दित व उत्तेजित थे।

शाम के वक्त पीताम्बर मित्र के घर आ पहुँचे और सागरिका से बोले, "बेटा, मैंने कैजुअल लीव ले ली है। तुम्हारे ससुर के साथ बैठकर गाना नहीं सुना तो जमेगा नहीं।"

हरिसाधन बोले, "जो सबसे अधिक आनन्दित होते, वही मित्र मजूमदार साहब नहीं हैं।"

बाबूजी की बात सुनकर कुमकुम की आँखें भर आईं।

बात बदलते हुए पीताम्बर ने कहा, "हरिसाधन, तुमने भी कमाल कर दिया! बहू के प्रोग्राम की खबर देने हावड़ा पोस्टआफिस आ पहुँचे।"

"ठीक ही किया। खबर पाकर हमारे घरणी हालदार घर से छोटा ट्रांजिस्टर ले आयेंगे आफिस। तभी तो दोपहर को बारह चालीस पर संगीत सुन पायेंगे।"

पीताम्बर बोले, "मैंने भी अपने रेडियो की बैटरी आज ही बदली है। बैटरी में जान नहीं होगी तो बहू का गला साफ नहीं सुनाई देगा।"

हरिसाधन ने कहा, "अच्छा किया पीताम्बर। अपना रेडियो यहीं ले आना। यहाँ क्या ठिकाना कब लोड शेडिंग हो जाये।"

"क्यों तुम्हारे ट्रांजिस्टर को क्या हुआ? विवाह में तो अच्छी चीजें ही दी थीं उन लोगों ने।"

"क्या बताऊँ? गौतम उसे अपने साथ ले जायेगा।"

"एँ। मैंने तक तो छुट्टी की अर्जी दे दी, और जिसकी बहू गा रही है वही गायब रहेगा!"

हरिसाधन ने दुःख प्रकट करते हुए कहा, "बेचारे को एक दिन की भी छुट्टी नहीं मिलती, मैंने तो सोचा था कि कल तो कम से कम घर पर रहेगा।"

कुमकुम बोली, "ठीक तो यही था। पर आज शाम उनके आफिस से लौटने से पहले ही उनके आफीसर दीननाथ वसुमल्लिक ने चिट्ठी भेज दी कि कल सुबह-सुबह गाड़ी लेकर जाना है। बहुत दूर जाना है, इसलिये पेट्रोल टैंक पूरा भरा रहे।"

हरिसाधन ने कहा, "इसका मतलब है कि मिस्टर वसुमल्लिक भी शायद किसी जरूरी काम से साथ जायेंगे। गौतम तो लौटते ही पेट्रोल लेने गया।"

"बड़ा अरसिक अफसर है। ऐसा कौन-सा अर्जेन्ट काम है, जो एक दिन बाद नहीं किया जा सकता? यह कोई पुलिस या अस्पताल की एमर्जेन्सी तो

नहीं।" इतना कहकर भी पीताम्बर सन्तुष्ट नहीं हुए; आगे बोले, "लांइफ का पहला रेडियो प्रोग्राम है, कोई ऐसी-वैसी बात नहीं।"।

"बड़ा रोबदार आफिसर है रे।" हरिसाधन ने बताया। उमर ज्यादा नहीं है—खोकन से शायद कुछ ही साल सीनियर होंगे। पर बड़े उच्चाकांक्षी हैं, हमेशा उन्नति के लिये तत्पर रहते हैं।"

"भाड़ में गई ऐसी तत्परता! अपनी बीबी का प्रोग्राम होता तो देखता कि कैसे टूर पर जाते।"

ससुर के सामने पति के ऊपर वाले पर गुस्सा दिखाने की हिम्मत नहीं की कुमकुम ने। पर तब भी बोली, "अब देखिये न, आज शाम तक आफिस में कुछ नहीं कहा, घर आये तो चिट्ठी मिली।"

"जरूर दोपहर को तय हुआ होगा, सब कुछ पहले से तो तय नहीं किया जाता, हमने अपने यहाँ पोस्टआफिस में भी हमेशा यही देखा है।"

"अब ये सब बेकार की बातें मत करो। यह सब साहबों की चालाकी है।" पीताम्बर ने मित्र की हाँ में हाँ न मिलाते हुए कहा।

"कोई उपाय भी तो नहीं है।" हरिसाधन ने कहा। वह नहीं चाहते थे कि उनकी पुत्रवधू पति के ऊपरवालों के बारे में कोई गलत धारणा बनाये। आगे बोले, "आफिस डिसिप्लिन में ऊपरवालों की बात मानना सबसे पहली व प्रमुख बात है।"

पीताम्बर ने मन की बात उजागर करते हुए कहा, "असल में तो यह कहो कि दास्यवृत्ति है।"

तभी गौतम लौट आया।

"हवा-पानी सब चेक कर लिया है न?" हरिसाधन ने पूछा।

"हवा चेक कर ली, पानी डाल लिया, इंजिन आयल टॉप पर कर लिया, पेट्रोल की टंकी भी फुल कर ली। इसके अलावा पीछे के बूट में भी दस लिटर दो डब्बों में रखवा लिया। एक फैन बेल्ट भी खरीद ली। कल सुबह की लांग जर्नी के लिये कार बिल्कुल तैयार है।" गौतम ने पिता को आश्वस्त किया।

पीताम्बर ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "मेरी तो समझ में नहीं आता कि तुम लोग इतनी लांग जर्नी कैसे करते हो? मेरा तो बेलूर तक गाड़ी में जाने में ही सिर दुखने लगता है।"

"आदत की बात है काकाबाबू। इसके अलावा सारी सिरदर्दी बस बेलूर तक की ही है। शहर से निकल कर नेशनल हाईवे पर पहुँचते ही सिरदर्द खतम, फिर चिन्ता की कोई बात नहीं रहती।"

पीताम्बर बोले, "यह सब तुम लोग ही ज्यादा अच्छी तरह समझते हो। मेरी तो कल्पना से बाहर की बात है कि एक आदमी सर्र से गाड़ी चलाकर आसनसोल गया और काम निपटा कर गाड़ी का मुंह घुमाकर वापस घर चला आया—जैसे दूसरे मुहल्ले का बाजार घूमकर आया हो।"

"यह कौन-सी बड़ी बात है काकाबाबू ! आप अगर हमारे मैनेजर मिस्टर बसुमल्लिक की बात सुनेंगे तो चक्कर में पड़ जायेंगे ! विदेश में तो प्रति घंटे सौ मील की रफ्तार से ड्राइव करके लोग तीन सौ मील दूर चाय पीने जाते हैं और डिनर खाने तो शायद चार सौ मील जाते हैं।"

"जमाना बड़ी तेजी से बदलता जा रहा है पीताम्बर। बॉम्बे, दिल्ली, बंगलौर के लोग भी स्पीडी होते जा रहे हैं। फिर कलकत्ता क्यों पीछे रहेगा ?" यह कहकर हरिसाधन ने लड़के की बात का समर्थन किया।

• •

आज रेडियो पर सागरिका गायेगी। परन्तु गौतम को अलस सुबह निकलना पड़ा। उसके नायलोन के हैंडबैग में एक टावेल और बनियान रखते हुए कुमकुम बोली, "ड्राइव करते-करते ज्यादा पसीना आ जाये तो बनियान बदल लेना।"

"थोड़ा ऑडिकोलन रख दूं ?" कुमकुम ने पूछा।

"तुम क्या मुझे बराती बनाकर भेज रही हो कुमकुम ? मैं मार्केट जा रहा हूं और साथ में डिएनबिएम होंगे। पाउडर, सेंट ऑडिकोलन का स्कोप कहां है ?"

कुमकुम ने उसकी बात जैसे सुनी ही नहीं। बोली, "ऑडिकोलन से सिर में ठंडक रहती है—ड्राइविंग की थकान का पता नहीं चलेगा। और साथ-साथ दो जनों के लायक सैंडविच, केले व सन्देश हैं। जितनी जल्दी हो ब्रेकफास्ट कर लेना।"

हैंडबैग में दूसरी चीजें भी चेक कर लीं गौतम ने—"एक कंघा और दो बोतल पानी की। और...." जाने क्या भूल रहा था गौतम। एकदम से याद आ गया, बोला, "ओहो, याद आ गया। ड्राइविंग लाइसेंस ! बंगाल से निकलकर अगर बिहार जाना हो तो लाइसेंस साथ रहना जरूरी है। आसनसोल में बाया बिहार नेपाल का माल स्मगल हो रहा है तो हो सकता है डिएनबिएम अकस्मात बिहार में चरण रज देने की इच्छा प्रकट कर दें।"

"तुम कपड़े की टोपी ले लो। क्या ठिकाना कहाँ धूप सामने से पड़ने लगे। और यह लो", कह कर सारिका ने भगवान् पर चढ़ाये फूल की छोटी सी पुड़िया गौतम की ऊपर की जेब में रख दी। फिर पति के माथे से दो रुपये का नोट छुआकर अपने सर से लगाया और आँचल की खूँट में बाँध लिया। गौतम जानता था कि यह नोट सिद्धेश्वरी के काली मंदिर में चढ़ाया जायेगा। जब भी वह कलकत्ते से बाहर जाता है, कुमकुम दो रुपये मानता मानती है, परन्तु चढ़ाया जाता है पति के सकुशल घर वापस लौट आने के बाद।

"गाड़ी चलाने की तकलीफ तो मैं उठाता हूँ, और प्राफिट होता है सिद्धेश्वरी को," गौतम ने मजाक किया।

"फिर!" भगवान् के मामले में मजाक पसन्द नहीं करती कुमकुम।

टोस्ट और आमलेट मुँह में डालते हुए गौतम ने घड़ी की ओर देखा। "छह बजने में अभी पाँच मिनिट बाकी हैं। कौन जाने मालिक के मन में क्या है! श्री अंग में धूप लगेगी शायद इसीलिये सूरज सर पर पहुँचने से पहले ही रण-स्थल पहुँच जाना चाहते हैं।"

फिर घड़ी पर नजर डाल कर बोला, "तुम चिन्ता मत करो। मार्केट की अवस्था देखने पर ही आगे का तय होगा। अगर जरूरत पड़ी तो रात को वहीं रुक जाऊँगा।"

"तो स्लीपिंग सूट और एक कमीज दे दूँ।" कुमकुम फिर से सामान निकालने लगी। "रात को सोने के लिये और किस चीज की जरूरत पड़ सकती है?" कुमकुम सर खुजाते हुए सोचने लगी।

गौतम ने यह मौका हाथ से नहीं जाने दिया। जब आसपास कोई नहीं था तो बोलने में क्या बाधा होती। बोला, "रात को सोने के लिये, जो साथ होने से अच्छा होता, वह ले जाना तो संभव नहीं है!" यह कह कर झट से पत्नी का चुम्बन लेने का प्रयत्न किया। खाने के कमरे में प्रकट चुम्बन! सोचा भी नहीं जा सकता! चकित रह गई कुमकुम और पलक झपकते सरक गई। "तुम जरूर सच में किसी दिन मुसीबत में डालोगे।" पुलकित स्वर में कहा उसने।

"एक दिन केवल तुम्हें साथ लेकर आसनसोल जाऊँगा। पर सोच लो रास्ते भर मुसीबत में डालता जाऊँगा। एक नहीं सुनूँगा।" गौतम ने गुप्त अभिसन्धि की अग्रिम नोटिस देते हुए कहा।

पति जो चाहता था, वह न दे पाने में दुख था; इसलिये कुमकुम उसे बेड-रूम में ले आई और पर्दा खींच कर स्वयं ही आगे बढ़ कर पति के ओठों पर छोटा सा चुंबन अंकित कर दिया।

पर्दे के पीछे उनकी युगल अविस्थिति जरा लंबी हो गई। फिर हैंडबैग उठा-कर कमरे से निकलते-निकलते गौतम बोला, "आज सारे दिन हर क्षण तुम मेरे साथ-साथ रहोगी। बारह चालीस, छः बजकर छत्तीस और नौ बावन पर जहाँ भी रहूँगा तुम करीब रहोगी।"

"तुम तो शायद मुझे करीब पा लोगे, लेकिन मैं तो तुम्हें अपने निकट नहीं पाऊँगी।" अभिमान भरे स्वर में कुमकुम ने कहा।

"पाओगी। अगर मन से उस समय चाहोगी तो अवश्य मुझे अपने पास पाओगी," यह कह कर पत्नी के ओठों पर एक और चुंबन अंकित करके सेल्स इंजीनियर अमिताभ राय चौधरी कम्पनी प्रदत्त आलिव ग्रीन गाड़ी में जा बैठा। कुछ ही क्षणों में इंजिन हल्के से गरजा और देखते-देखते गाड़ी आँखों से ओझल हो गई।



बहुत से लोग रेडियो पर गाते हैं। इन सभी ने अवश्य, प्रथम प्रोग्राम प्रचा-रित होते समय ऐसी ही उत्तेजना का अनुभव किया होगा।

प्रथम प्रेम, विवाह की प्रथम रात, प्रथम मातृत्व—संसार में हर जगह प्रथम की जय-जयकार की बात बेखबर होकर सोचे जा रही थी कुमकुम। पति को विदा करके गाने की बात याद आते ही कुमकुम एक दबी उत्तेजना का अनुभव कर रही थी। दो-चार आत्मीयों को उसने दूसरी मंजिल के घर का फोन नंबर दे दिया था। गाना सुनते ही अपना मत अविलंब बताने को बहुत से लोग अधीर हो उठे थे।

मकान मालिक की पुत्रवधू मनोरमा ने कह दिया था, "चाहे जितने फोन आयें, तुम फिक्र मत करना सागरिका। आर्टिस्ट के फोन रिसीव करके हम ही धन्य होंगे।"

कुमकुम ने जरा संकोच से कहा था, "बाहर के फोन आने का मतलब है परेशानी।"

दाम्पत्य सम्पर्क के संबंध में जरा गोपनीय भाव विनिमय इस घर में बस ऊपर वाली इस अल्पवयसी मनोरमा के ही साथ होता था। अतः मनोरमा ने मजाक किया, "हो सकता है स्वयं तुम्हारे वो रास्ते में कहीं गाना सुनकर फोन किये बिना न रह सकें।"

कुमकुम बोली, "काम के समय मेरे वो बिल्कुल दूसरे आदमी हो जाते हैं, हृदय का सारा रस सूख जाता है।"

प्रेम की आड़ी तिरछी गली की विचित्रता का ज्ञान कुमकुम को देते हुए मनोरमा बोली, "तुम भी तो बस एक ही हो। अगर मैं तुम्हारी जैसा गुणवान होती तो नाक में दम कर देती पति का। मेरा अगर रेडियो प्रोग्राम होता तो उन्हें लेकर कहीं दूर एकान्त में चली जाती।"अपने मन की बात कहने में जरा भी शर्म नहीं आई मनोरमा को।

कुमकुम को याद आया, वासना को इस तरह निकल पड़ना बहुत अच्छा लगता था। गाड़ी में सामान रखकर अपने पति वापस के साथ वह इसी तरह अनजान लक्ष्य की ओर चल पड़ती थी। ऐसी जर्नी बहुत एन्जॉय करती थी वासना। हर अभियान में वह लोग परस्पर एक दूसरे को नये रूप में आविष्कार करते थे।

मनोरमा की ओर देखकर कुमकुम ने पूछा, "दूर····निर्जन जगह! हाय राम, वहां क्या करोगी?"

आँखें नचाकर मनोरमा ने जवाब दिया, "दूध पीती बच्ची हो! चौदह महीने विवाह को हो गये, दूर निर्जन जगह पति के साथ क्या किया जाता है, यह नहीं जानती।"

शर्मा गई कुमकुम। मनोरमा बोली, "सुनो, रात का बिस्तर और निर्जन स्थान एक चीज नहीं हैं। निर्जन प्रांतर में प्रकाश होता है, बयार होती है, लेटे रहने या घूमने की स्वाधीनता होती है, लेकिन साथ ही किसी की नजरों में पड़कर हया शरम खोने का डर नहीं होता। तुम 'प्रेमोत्पल' छद्म नाम से लिखे निर्मल गांगुली के उपन्यास पढ़ कर देखो तो उनकी 'त्रिमूर्ति' देख पाओगी—एकदम बेपरवाह और ब्राइट, कालेज गर्ल्स और ब्वायज के लिये उद्दीप्त उपन्यास। विवाहित महिलाओं के लिये प्रेमोत्पल सिरीज—बहुत ही कंजर्वेटिव पर दैहिक उत्ताप से परिपूर्ण है। और वयोवृद्धों के लिये 'दूरदर्शी' छद्म नाम से लिखी नई किताब 'वेदान्त के पारस्वर्ती कोने में' ने कोलाहल मचा दिया है।"

प्रेमोत्पल की कोई किताब नहीं पढ़ी थी, कुमकुम ने, हालांकि गांगुली नाम से वह अपरिचित नहीं थी। मनोरमा बोली, "प्रेमोत्पल की लेटेस्ट किताब 'हृदय पर्वत' पढ़ते ही बहुत से आइडिया मिल जाते हैं। किताब शुरू करते वक्त तुम्हें सन्देह होगा कि औरतों के दिल के पहाड़ के नाम से कोई खराब इशारा कर रहा है लेखक। परन्तु बाद को समझ जाओगी कि वह एक अद्भुत प्रतीक है। नारी-शरीर का यह पर्वत पार करके प्यार के स्वर्ण शिखर पर, पहुँचते ही

दुःसाहसी पति स्खलित हो जाते हैं, जिसकी प्रेमोत्पल ने 'सफल व्यर्थता' नई संज्ञा दी है।"

मुस्कुरा पड़ी कुमकुम। अँगरेजी क्लास में प्रेमवेम के संबंध में बहुत से नोट्स लिखे थे उसने, किन्तु उस प्रेम के साथ इस देश की महिलाओं का कोई सम्पर्क नहीं था। उस प्रेम के प्रति फैसला करने के लिये स्वयं शेक्सपीयर को डुबकियाँ खानी पड़तीं। बोली; "तो तुम निर्जन प्रान्तर में क्या करती यही बताओ ना ?"

"ताड़ के पेड़ों के पीछे दूर गाड़ी खड़ी रहती और हम एक विराट् पत्थर की आड़ में चले आते, जिससे परिचित गाड़ी भी हमें लज्जित न करती। बीच-बीच झरने के पानी में पैर ठंडे कर लेती, फिर घड़ी की ओर देखकर पति की गोद में सिर रखकर लेट जाती और बस लेटी रहती। समझ लो उस समय बारह बजकर चालीस मिनिट होने में बस तीस सेकेंड बाकी होते। उस समय छोटा ट्रांजिस्टर वक्ष के बीचोंबीच रखती और उनके मुँह की ओर देखकर ऑन कर देती।"

हँसने लगी कुमकुम। पर उस हँसी से मनोरमा को सन्तुष्ट नहीं किया जा सका। उसने पूछा, "तुम्हारा गीत कौन-सा है ?"

शर्म आ जाने पर भी उत्तर देना पड़ा कुमकुम को—"एबार आमाय लहो-लहो नाथ लहो है।"

आँखें विस्फारित हो गईं मनोरमा की। बोली, "उफ, बुड्ढे की नस-नस में कितना रस था! पर सफेद दाढ़ी और चोगे में ऋषि की स्टाइल से बैठा रहता था। प्रणाम है तुम्हें कवि। और बालिका-वधू तुम्हारी भी बलिहारी है, क्या गीत चुना है ढूँढ़ कर!"

मनोरमा ने मन और शरीर का उत्ताप बहुत बढ़ा दिया था इसलिये मौका मिलते ही कुमकुम नीचे उतर आई। ट्रांजिस्टर हाथ में झुलाते पीताम्बर काकू आ पहुँचे थे और हरिसाधन के पास बैठकर रेडियो के संबंध में बातों में तल्लीन हो गये।

बोले, "पता है हरिसाधन बेतार शिल्पियों की आजकल बहुत कदर है। रेडियो आर्टिस्ट है, यह सुनते ही लड़कियों का विवाह हो जाता है, एक पैसा नहीं देना पड़ता दहेज में।"

"अच्छा ? पहले क्यों नहीं बताया पीताम्बर ? अजन्ता और एलोरा को भी संगीत सिखा देता।"

"बहू, बहू" दोनों मित्रों ने एक साथ कुमकुम को पुकारा। इन दोनों के

ही प्रति एक विचित्र आकर्षण का अनुभव करती थी कुमकुम। न तो इन्हें दुनिया मे किसी से कोई प्रत्याशा थी और न ही आत्मसुख को लेकर एक क्षण को भी परेशान होते थे। केवल दूसरे की बात सोचते थे दोनों। इस तरह के लोग जब दुनिया से चले जायेंगे तो जीवन बहुत ऐश्वर्यहीन हो जायेगा।

"क्या है पिताजी? आप लोगों के लिये चाय बना दूं?" कुमकुम ने पूछा।

"इस समय तुम कोई काम नहीं करोगी। आज तुम आर्टिस्ट हो।" पीताम्बर काकू बोल पड़े। पिता हरिसाधन ने भी सिर हिलाकर इसका समर्थन किया।

हरिसाधन ने पूछा, "पीताम्बर जानना चाहता है कि बारह चालीस तुम्हारा पहला गीत कौन-सा है?"

मनोरमा के साथ हुई सच आलोचना के परिप्रेक्ष्य में कुमकुम के दोनों कान लज्जा से लाल हो उठे। परन्तु यह सब गोपनीय तो नहीं था। बारह चालीस पर सभी तो उसके अन्तर की बात जान जायेंगे। थोड़ी कोशिश करके लज्जा का पर्वत लाँघ कर बता दिया कुमकुम ने।

"आहा!" कहकर गंभीर अनुभूति से दोनो वृद्धों ने आँखें बन्द कर लीं।

"एक बार और कहो तो बेटा, एबार आमाय लहो-लहो नाथ लहो हे।" लगा जैसे हरिसाधन की आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी थी।

"रवि ठाकुर बड़ी गहराई में जाते थे, हरिसाधन। वेद, उपनिषद, गीता कुछ भी पढ़ने की जरूरत नहीं है। गया गंगा काशी काञ्ची सब वृथा है, तुम तो घर पर बैठे-बैठे केवल बहू से रवीन्द्र संगीत सुना करो।"

बहुत बची कुमकुम। हरिसाधन ने जवाब दिया, "पीताम्बर, लोग कहते हैं कि अल्पवयसी लड़के लड़कियाँ चूल्हे मे जा रहे हैं। पर मुझे तो बिल्कुल ही उल्टा दिखाई दे रहा है। इस छोटी सी उम्र में आवेग से परिपूर्ण स्वर में ईश्वर को सुनाकर गा रही है—एबार आमाय लहो-लहो नाथ लहो हे। हमारे जमाने में यह सब कहाँ था।

घर मे आज बारह बजे तक सारा काम-काज निपटा देने की व्यवस्था हो गई थी। केवल खाना-पीना ही नही, बल्कि कपड़े चौका-बर्तन सब। पीताम्बर काकू ने कहा था, "गाना सुनते समय कँच-कँच, खँक-खँक, झनझन, टनटन कोई आवाज नही होगी।" ऐसा पीताम्बर काकू ही कह सकते थे—दूसरे के मामलों में अपने को इतनी घनिष्ठता से जोड़ लेना बहुत कठिन काम है।

जल्दी से काम निपटाकर कुमकुम अपने पलंग पर आकर बैठ गई और

अलस भाव से दोनों पैर दीवाल की ओर फैला दिये। पैरों में सुर्ख लाल आलता लगाया हुआ था। गौतम को आलता बहुत ही पसन्द था। 'नारी पाद पद्म युगल का अनीमिया उसे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था', एक बार मजाक-मजाक में उसने कह दिया था।

गौतम ने भी पिछली रात पूछा था, "रेडियो पर कौन-सा गीत गा रही हो ?" कुमकुम ने जानबूझ कर नहीं बताया था। गौतम ने मजाक किया था, "सोच रही हो, बताने लायक पात्र नहीं है।"

"कोएश्चेन पेपर की तरह बहुत-सी बातें पहले से नहीं आउट की जातीं!" पति के वक्ष के करीब खिसकते हुए कुमकुम ने कहा था।

फिर पति को सुनाते हुए कहा था, "जानते हो, इस रेडियो प्रोग्राम की वजह से क्या-क्या हो जाता है। हमारी चारुशीला ने तो प्रेम किया था न। एक दिन उसके प्रिय ने प्रेमनिवेदन करते हुए कहा था—चारुशीला को पाकर धन्य हो जायेगा जीवन। उस समय चारुशीला ने कोई जवाब नहीं दिया था। उसी दिन उसकी रेडियो रिकार्डिंग थी। उसके बंधु····"

बीच में ही नाक घुसेड़ते हुए गौतम बोला था, "प्रेमी कहो ना!"

"इसमें जाने कैसी असभ्यता झलकती है। बंधु ही ठीक है। बंधु से चारुशीला ने कहा था, कल नौ बजे रेडियो पर मेरा जवाब मिल जायेगा। चारुशीला का प्रथम गीत था—'मैं तुम्हारी हूँ, तुम्हारी, बस, तुम्हारी'।"

गौतम शायद समझ गया था। बोला था, "बारह चालीस तक प्रतीक्षा करूँगा मैं—प्रश्नपत्र उसी समय आउट होगा। मैं समझूँगा, भीड़ में भी तुम एकान्त में मुझसे कह रही हो। डियेनबियेम साथ होंगे, उनके हाथ में उस समय मार्केट सर्वे की एक रिपोर्ट पकड़ा दूँगा। उनका जन्म शायद मार्केट में ही हुआ था। आदमी के जीवन में प्रेम-प्यार किसी का भी स्थान नहीं है।"

आँखें बन्द कर लीं कुमकुम ने। मानसचक्षुओं से वह दूर दिगन्त में द्रुत-गति से दौड़ती चार दरवाजों वाली सब्ज स्टैन्डर्ड गाड़ी देख रही थी। इस गाड़ी में मानों एक रेसिंग कार अज्ञातवास कर रही थी। एक बार कुमकुम ने यह बात पति से कही भी थी, लेकिन गौतम उससे सहमत नहीं हुआ था। बोला था, "कम्पनी की ऐसी जाने कितनी गाड़ियाँ हैं—उनमें जो टूटी-फूटी होती है, वह सेल्स इंजिनियरों के हिस्से आ जाती है। ऐम्बेसेडर मिले तो स्टैन्डर्ड हेराल्ड में कौन बैठना चाहेगा ?"

"तुम लोग इंजिनियर हो, तुम लोग ही तो गाड़ी के बारे में ज्यादा समझोगे।" कुमकुम ने आपत्ति प्रकट की थी।

"नाम के ही इंजिनियर हैं बस। असल में तो फेरीवाले हैं। ओह, कुमकुम, जब कभी स्वप्न में देखता हूँ कि मैं वर्धमान के मार्केट में कोई माल नहीं बेच पाया, हमारी कम्पनी का मार्केट शेयर शून्य पर आ पहुँचा है—तो हृदय में कैसी उथल-पुथल होने लगती है, तुम्हें बता नहीं सकता।"

हँस कर कुमकुम ने कहा था, "तुम और क्या-क्या देखते हो स्वप्न में ?"

"उस समय मैं देखता हूँ, सारी दुकानें दूसरी कम्पनी के माल से भरी पड़ी हैं—सैकड़ों सैटिस्फायड ग्राहक उस माल का एक-एक पैकेट हाथ में लिये हँसते हुए दुकानों से निकल रहे हैं। मैं चीख-चीख कर कह रहा हूँ, वह माल मत लीजिये, पर मेरी आवाज किसी को सुनाई नहीं देती। तभी दिखाई देता है एक सांड सींग घुमाते हुए मेरी ओर दौड़ता हुआ आ रहा है। मैं भागने की कोशिश करता हूँ, पर एक इंच भी नहीं हिल पाता। धीरे-धीरे सांड बदल जाता है। मैं समझ जाता हूँ वह सांड नहीं है—स्वयं दीननाथ वसुमल्लिक मेरी ओर आ रहे हैं।"

"जरूर कल डिएनविएम से कुछ बात हुई होगी तुम्हारी।"

"हाँ, हुई थी कुमकुम। हर हफ्ते एक नई फ़ैज के प्रेम में पड़ जाते हैं हमारे मिस्टर वसुमल्लिक। पिछले हफ्ते वह फ़ैज थी एक्सेस फैट। बढ़ी हुई चर्बी—मनुष्य की तरह कम्पनी के शरीर पर भी ज्यादा चर्बी चढ़ जाती है। चर्बी माने कर्मचारी। बढ़ी हुई चर्बी हटाने की आवश्यकता पर भद्रव्यक्ति ने हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू से जाने कितने कोटेशन दे डाले।"

बात अभी खत्म नहीं हुई थी। गौतम बोला, "इस हफ्ते नो चर्बी! अब विषय है डेडवुड। कम्पनी एक वृक्ष है। सूखी डालियाँ समयानुसार तोड़कर फेंकनी पड़ती हैं—नहीं तो डेडवुड हरे-भरे पेड़ को बहुत नुकसान पहुँचाने लगती हैं।"

"किसी समय तो वह डालियाँ भी हरी थीं", कुमकुम कह उठी।

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। कौन कब जीवित था, इसकी डाइरेक्टरी किसी कम्पनी में सँभालकर नहीं रखी जाती। वहाँ तो एक ही बात देखी जाती है कि आज कौन-कौन-सी डाल हरी है और उससे लाभ हो रहा है कि नहीं—नहीं तो कुल्हाड़ी का प्रकोप होगा ही। बड़ी खराब जगह है यह मर्चेन्ट आफिस। डेडवुड जब जलती है उस समय हरी डालियाँ हँसती हैं। सोचती हैं वह चिरकाल हरी रहेंगी। और डिएनविएम तो हँसते-हँसते दुहरे हो जाते हैं।"

"भगवान्, इस डिएनविएम की कोई गति करो", नीरव प्रार्थना की कुम-

कुम ने। 'नहीं, मैं उनका कोई नुकसान नहीं चाहती। उनका इंडिया के बाहर कहीं ट्रान्सफर कर दो। उनके अंदर में इंडिया के शत्रु जल-जल कर मरें।'

सब्ज हेराल्ड गाड़ी इस वक्त निश्चित रूप से क्षिप्रगति से सड़क पर भागी जा रही थी। ड्राइवर की सीट पर अभिराम अवश्य खूब स्मार्ट लग रहा होगा। प्राचीन युग के अश्वपृष्ठ पर बैठे राजकुमार इससे ज्यादा सुन्दर थोड़े ही होंगे? कुमकुम ने मन ही मन सोचा।

गाड़ी के अन्दर की भी कल्पना करने का प्रयत्न किया कुमकुम ने। गौतम की बगल में दीननाथ वसुमल्लिक होंगे। बाहर जाते समय वह आमतौर पर नीले रंग की इम्पोर्टेड शर्ट पहनते हैं, आज भी वही पहने होंगे। आँखों पर अवश्य काला चश्मा होगा—जिसके बारे में गौतम के मुँह से जाने कितना सुना था कुमकुम ने; इसी चश्मे के पीछे छुपे रहकर दीननाथ कठोर हस्त अपने अधीन कर्मचारियों पर शासन करते हैं।

गौतम इस समय जरूर-जरूर बार-बार बाँयें मणिबन्ध की ओर देख रहा होगा। गाना शुरू होने पर दीननाथ का क्या रिएक्शन होगा? गौतम क्या केवल स्वयं सुनेगा या कहेगा, 'मेरी पत्नी आज रेडियो पर गा रही है, मिस्टर वसुमल्लिक।'' कुमकुम का ख्याल था कि गौतम कुछ भी नहीं कहेगा—जो आदमी इतना खराब है, उससे घर की बात क्यों कहेगा?

अगर मन के टेलीविजन पर कुमकुम उसी क्षण गाड़ी देख सकती तो कितना अच्छा होता। भले ही कुछ क्षणों के लिये ही सही। पति के हाथों में स्टीयरिंग, डैशबोर्ड के एक ओर रखा ट्रांजिस्टर और सामने दिग्दिगन्त विस्तृत आकाश एवं सीमाहीन पथ।

पथ का प्रश्न कुमकुम ने सही नहीं निकाला, नहीं तो समझ जाती कि सब्ज गाड़ी उस समय नेशनल हाईवे पर नहीं थी। हाईवे से उतरकर आड़ी-तिरछी सड़कों से होकर किसी मार्केट में प्रविष्ट हो गये थे वह लोग। उससे पहले वर्धमान में उन लोगों ने खाना-पीना निपटा लिया होगा। डियेनबियेम का मूड ठीक रहा होगा तो गौतम ने शक्तिगढ़ से गुलाब जामुन जरूर खरीदे होंगे। सुबह ही खरीदने पड़ते हैं, शाम को आमतौर पर खत्म हो जाते थे।

गौतम यदा-कदा दुख प्रकट करते हुए कहता है, "गुलाबजामुन इज लकी। मार्केट शेयर में कोई हेरफेर नहीं होता, शाम को स्टाक क्लीयर। नो एक्साइज ड्यूटी, नो सेल्स टैक्स, नो आक्ट्राई, नो डिस्काउंट, नो क्रेडिट एंड नो कम्पीटीटर। एकमेवाद्वितीयम् का जो अर्थ होता है वही हैं ये शक्तिगढ़ के गुलाब-

जामुन। दीननाथ वसुमल्लिक अगर गुलाबजामुन के मार्केटिंग मैनेजर होते तो बहुत सुख पाते !"

● ●

"यह आकाशवाणी कलकत्ता है, अब सागरिका राय चौधरी से रवीन्द्र संगीत सुनिये।" बिजली ने अभी भी विश्वासघात नहीं किया था—अपने कमरे में बैठे-बैठे ही सागरिका अपना गाना सुन सकेगी।

उधर एक तख्त पर बैठे हरिसाधन और पीताम्बर ने ट्रांजिस्टर चला दिया था।

उसी कमरे में सागरिका ने रेडियो भी खोल दिया था। दूर से आती तरंग माला में पहले पहल अपना कण्ठ-स्वर सुनकर सचमुच रोमांच हो आता है। अपनी सत्ता से अपने को अलग करके एक दूसरी सागरिका अपना निरीक्षण कर रही थी जैसे। सचमुच सम्पूर्ण हृदय का मंथन करके अंतर की अतल गहराइयों से गा पाई थी वह—एबार आमाय लहो सहो नाथ लहो हे।

इधर पीताम्बर काकू ने आँखें बन्द कर ली थीं। हरिसाधन के मुख पर भी शांति की आभा फूट उठी थी।

"आहा !" सर हिलाकर परम तृप्ति से सदा स्नेहमय पीताम्बर बोल उठे।

और उधर अपने कमरे में बिस्तर पर शरीर को निढाल छोड़कर सागरिका कल्पना के आकाश में उड़ रही थी। सोच रही थी कि उस समय उसे हर घर में प्रथम प्रवेश की दुर्लभ स्वाधीनता मिल गई थी। सौभाग्यवती ही तो ऐसे शुभ-लग्न में गृह प्रवेश करती है। जिन परिचितों को खबर भेजी गई थी उनके चेहरे भी एक के बाद देख पा रही थी वह।

•

उस समय सब्ज खूबसूरत गाड़ी ने हाइवे से उतरकर एक मध्यम आकार की सड़क पकड़ ली थी। वह रास्ता भी नया ही था—लेकिन पानी इकट्ठा हो जाने से बीच-बीच में छोटे-मोटे गड्ढे बन गये थे। उन गड्ढों को बचाती हुई गाड़ी क्षिप्रगति से सामने की ओर बढ़ रही थी। बंगाल का वक्ष चीरकर वह सड़क बिहार में कहीं अदृश्य हो गई थी।

सड़क के किनारे ही एक छोटी सी दुकान थी और इस दुकान का मालिक और ग्राहक जानते थे कि कभी-कभी वहाँ सरकारी अफसरों को लेकर

सरकारी जीप आती थी। पास ही छोटी-सी लेक के किनारे वही विख्यात बंगला था, जिसका नाम भारत में विख्यात न होते हुए भी भ्रमण के शौकीनों को बहुत प्रिय था। सरकारी जीपें सारे दिन का काम खत्म करके शाम के समय रात को विश्राम करने के लिये आती थीं और बीच-बीच में जो ऐम्बेसेडर, फियाट या स्टैन्डर्ड हेराल्ड गाड़ियाँ नजर आती थी, उनका कोई वक्त नहीं था।

आज उस दुपहरी में आलिवग्रीन गाड़ी दिखाई दी। सुन्दर होते हुए भी गाड़ी पर धूल की मोटी परत चढ़ गई थी—कांच पर लाल मिट्टी का स्प्रे हो जाने के कारण अन्दर का सब कुछ अस्पष्ट हो गया था। तभी अन्दर शायद कोई रेडियो बजाने की कोशिश कर रहा था। परन्तु कुछ समझ में आने से पहले ही गाड़ी मुड़कर आगे निकल गई।

रेलवे स्टेशन ज्यादा दूर न होने के कारण वहाँ के लोग गाड़ियों की ओर विशेष ध्यान नही देते थे। रेल के साथ सभ्यता का योगसूत्र होने से कुछ रिक्शे चलने शुरू हो गये थे। ट्रेन के समय करीब आने पर वह लोग कहाँ से चले आते थे, पता नहीं चलता था।

गाड़ी में रेडियो बजने पर भी कोई चकित नही होता था। वहाँ जो भी गाड़ी आती थी उसमें हिन्दी अथवा अंगरेजी साज सुनाई देते थे। सच बात तो यह है कि रेडियो के बिना भी कोई गाड़ी हो सकती है, यह जैसे वहाँ के लोग भूल ही गये थे।

गाड़ी वहाँ से आगे बढ़ गई। आधा मील दूर सड़क के किनारे ही एक ट्यूब वेल था। वहाँ एक बुढ़िया घड़े मे पानी भर रही थी। वही जाकर गाड़ी रुक गई थी। हाथ के नल वहाँ नये-नये लगने शुरू हुए थे। बुढ़िया के मन में डर बैठ गया था—उसने सुना था कि हाथ का नल और पैरों वाली सिलाई मशीन चलाने से औरतों को नाड़ी दोष हो जाता था। इसलिये वह बहुत धीरे-धीरे हाथ के नल का हत्था चला रही थी।

गाड़ी से एक तरुण यात्री के निकल कर सामने आकर खड़े होते ही बुढ़िया ने हड़बड़ा कर हत्था छोड़ दिया और एक ओर खड़ी हो गई थी। लेकिन तरुण बहुत ही भला था। उसने एक नहीं सुनी, पहले बुढ़िया की दोनों कलसी भरीं फिर कुछ डब्बे भरकर गाड़ी को पानी पिलाया और अंत में गाड़ी से बोतलें निकाल कर ठंडे पानी से भर ली। गाड़ी से उस समय भी मधुर गाने की आवाज आ रही थी।

आजकल के शहर के लड़के कितने खूबसूरत हो गये थे। जितना अच्छा उनका व्यवहार होता है, उतनी ही मधुर उनकी मुस्कान। हीरे की कणी की

७

उपमा दी जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। तरुण ने बुढ़िया से पूछा, "कलसी कमर पर रख दूं?' लेकिन बुढ़िया कैसे भी राजी नहीं हुई।

"कहाँ से आ रहे हो, बेटा?" बुढ़िया ने पूछा।

"कलकत्ते से काम से आया हूँ, माँ। काम निपटाकर आज ही लौट जाऊँगा।" लड़के की बात सुनकर दिल ठंडा हो गया बुढ़िया का।

बुढ़िया बोली, "यही करना, बेटा।" वह जानती थी कि बहुत से लोग मन में पाप लेकर वहाँ रात बिताने आते थे। आगे बोली, "तुम काम-काजी लड़के हो। काम निपटते ही घर लौट जाना। सौ साल जियो बेटा।" बुढ़िया का आशीर्वाद गौतम को बहुत अच्छा लगा।

बुढ़िया की आँखों के सामने ही गाड़ी आगे बढ़ गई थी।

उस समय आकाश पर धुँधलका सा छा गया था। आस-पास एक बौछार पड़ने के चिन्ह नजर आ रहे थे। सामने की सड़क कुछ दूर तक एकदम निर्जन थी। दोनों ओर जंगल था। जो लोग कहते हैं कि पश्चिम बंगाल में तिल रखने की जगह नहीं है उनको एक बार यह अंचल अवश्य देख जाना चाहिये।

गाड़ी की गति क्रमशः बढ़ रही थी। अन्दर बीयर का उत्सव शुरू हो गया था।

दीननाथ कह रहे थे, "अब बेबीफूड की उम्र नहीं रही अमिताभ—अब कम से कम बीयर तो शुरू कर दो।"

बात टालने के लिये अमिताभ बोला, "उसकी कड़ुआहट खराब लगती है।"

हाँ-हाँ····करके अट्टहास किया दीननाथ वसुमल्लिक ने। बोले, "पियो रायचौधरी, पियो। थोड़ा ड्रिंक करते ही वह कड़ुआहट मिट जायेगी। फिर केवल निरवच्छिन्न निर्मल आनन्द रह जायेगा। असंख्य बंधनों के बीच ऐसी अद्भुत मुक्ति और किसी भी जरिये से नहीं मिलेगी।"

इस पर अमिताभ ने कहा, "मुझे अभी बहुत से काम करने हैं। मार्केट जाना है।"

बीयर के नशे में दीननाथ वसुमल्लिक के हृदय में बसन्ती बयार बहने लगी थी। बोले, "आज मेरा मन बिजनेस में नहीं जम रहा, अमिताभ। तुम मुझे फॉरेस्ट हाउस ड्राप करके अपना काम निपटा आओ। अलेक्जेंडर ने जिस तरह हिन्दुस्तान पर विजय प्राप्त की थी, उसी प्रकार तुम मार्केट कांकर करके लौट आओ। मैं गुड न्यूज के लिये अधीरता से प्रतीक्षा करूँगा। फिर विजयरथ पर सवार होकर हम लोग मैसिडोनिया लौट जायेंगे।"

दृश्य तो इसके आगे भी हैं, पर इस समय सहज बोध्य कारण से गाड़ी का पूरा वर्णन करना संभव नहीं हो पा रहा। इसके अलावा आफिस में नौकरी शुरू करने से पहले गोपनीयता की शपथ लेनी पड़ती है, लिख कर देना पड़ता है। जो देखा जाता है उसका पूर्ण विवरण मुंह से नहीं दिया जाता—नहीं तो कम्पनी में 'गोपनीयता' नाम की कोई चीज नहीं रह जाती और 'गोपनीयता' विहीन कम्पनी का मतलब है माल से भरी नाव में अनगिनत छेद—ऐसी नौका कैसे भी लक्ष्यस्थल तक नहीं पहुँच सकती।

आलिवग्रीन गाड़ी की गति और बढ़ने लगी। रास्ते में कोई रुकावट नहीं थी, नियमों का निषेध नहीं था। स्पीड लिमिट का तकाजा करने वाला कोई नहीं था।

दीननाथ वसुमल्लिक ने बहुत अच्छी बात कही—"जंगल के जानवरों की तरह मोटरें भी 'बॉर्न फ्री' होती हैं—उनका जन्म प्रति घंटे चालीस किलोमीटर की रफ्तार से दौड़ने के लिये नहीं हुआ। उसका प्रमाण है स्पीडोमीटर में एक सौ तीस किलोमीटर तक के अंक होना।"

अमिताभ चुप ही बैठा था। दीननाथ बोले, "पता है राय चौधरी, बीयर पेट में पड़ने के बाद समझा जा सकता है कि आदमी भी इस गाड़ी के समान है। यह एक घंटे में एक सौ तीस किलोमीटर भागने की क्षमता लेकर जन्मा है, पर चालीस पर गवर्नर बंधा हुआ है। तुम तेज भागो, यह कोई नहीं चाहता—संसार में सर्वत्र स्पीड लिमिट की चालाकी है।"

थोड़ा आनन्द लेने के लिये अमिताभ ने ट्रांजिस्टर रेडियो कम रिकार्ड प्लेयर का बटन दबा दिया। प्रभु दीननाथ वसुमल्लिक से तो इस मूड में सहजता से बात नहीं की जा सकती थी। दीननाथ मुख निःसृत मणिमुक्ताओं का संचयन कर-करके शायद 'कम्पनी कथामृत' अवश्य प्रकाशित किया जा सकेगा।

मेघाच्छन्न उस दोपहर को कम्पनी की आलिवग्रीन गाड़ी बिना किसी की परवाह किये अपने लक्ष्यस्थल की ओर तेजी से बढ़ती जा रही थी।

दीननाथ वसुमल्लिक कह रहे थे, "मार्केट प्लेसेस् में भी कम्पनियों को सावधान करने के लिये स्पीड लिमिट की निषेधाज्ञा टंगी हुई है। लेकिन यह सब उपदेश मान कर गुडि-गुडि बनकर चलने से बाजार कभी भी तुम्हारे अधिकार में नहीं आयेगा। इतिहास के अलेक्जेन्डर, महमूद शाह, बाबर, क्लाइव किसी ने भी कभी ट्रैफिक रूल मानकर राज्य नहीं जीते।"

और कम्पनी की सब्ज गाड़ी क्लांतिहीन दुरन्त छन्द की लय पर अनजान पथ का वक्ष चीरती हुई चली जा रही थी।



कलकत्ता जिस समय खबर आई उस समय रेडियो पर छह पैंतीस वाला कुमकुम का गीत खत्म हो चुका था। हाथ-पाँव फैलाकर बिस्तर पर पड़े-पड़े उसने अपना गाना सुना था।

जरा देर बाद ही मकान मालिक के ऊपर वाले फ्लैट का टेलीफोन बज उठा था। सुबह भी कुमकुम के लिये शुभकामना का एक फोन आया था। मनोरमा उसे बुला ले गई थी। "हैलो, मैं चारुशीला बोल रही हूँ। कुमकुम, तेरे हृदय में इतना प्रेम भरा पड़ा है, यह पता ही नहीं था! ऐसा लग रहा था जैसे प्रेम की गुठली चूस रही हो तू!"

"बता, गाना कैसा लगा?"

"बहुत अच्छा, नहीं तो एजेन्सी के आफिस से क्यों फोन करती तुझे", चारुशीला ने मधुर डाँट लगाई। "पर—"

"पर क्या?" कलाकार के नाते फोन आने से कुमकुम बहुत खुश थी।

"लगा, ससुराल में दस जनों की भीड़ में पति से जो बातें कहने का तुझे मौका नहीं मिलता, वह सब महीनों अंतर में दबाये रखकर ही तू रेडियो आफिस गई थी और रेडियो के माध्यम से तू केवल अपने पति से बातें कर रही है।"

"ठहर, ठहर! अभी हुआ ही क्या है? पहले छ बजकर छत्तीस मिनिट वाला प्रोग्राम सुन ले," कुमकुम बोल उठी।

परन्तु चारुशीला कहती ही जा रही थी, "तूने क्या उस समय गीत में ही पति को बाँध रखा था? पर उस दिन रिकार्डिंग के समय तो पति सामने नहीं था।"

कुमकुम को मजा आ रहा था। बोली, "पहले तू सुन तो ले, फिर आलोचना करना।"

मनोरमा जानती थी कि छह छत्तीस की सिटिंग के बाद भी एक दो फोन आयेंगे। पहले चारुशीला का ही फोन आया—

"हैलो, कुमकुम। तेरे गीत बहुत सेन्सुअस हैं! डाइवोर्स्ड चारुशीलाओं का सुनना उचित नहीं है। कभी मेरे भी दिन थे! आँखें बन्द करके याद करते ही रग-रग में सिहरन दौड़ जाती है।"

"चारुशीला, कविगुरु ने यह सब ईश्वर को ही निवेदित करते हुए कहा है।"

"बेकार की बात मत कर," डाँट लगाई चारुशीला ने। "यह सब कवि को कानून से बचने की चालाकी है। तुम्हारा मेरा मिलन होगा, यह सोचकर आधी रात तक जगती रही—यह प्रियमिलन नहीं ईश्वरमिलन है, इन बातों से चारुशीला सिद्धान्त को नही ठगा जा सकता। भले ही आज डाईवोर्स्ड हूँ, लेकिन कभी तो मैं भी पति के वक्ष से चिपटकर सोती थी और उन दिनों भी इस कलकत्ते में आधी रात होती थी।"

"चारुशीला, यह जो तूने इतनी तकलीफ उठाकर मुझे दो बार फोन किया, यह बहुत अच्छा लगा। गौतम लौटेगा तो उससे भी तेरे फोन की बात कहूँगी।"

"पति आज भी बाहर है ? साथ में रेडियो तो रख दिया ना ?"

"ले गया है—"

"तो फिर आज रात को जरा भी समय नहीं मिलेगा, इसकी मैं गारंटी दे सकती हूँ। दिन भर गाना सुनकर रात को वापस लौटने पर वह तुझे इधर-उधर की बेकार बात करने का मौका ही नहीं देगा।"

"बेकार की बात मत कर ! तेरी बात आज ही होगी।"

"ठीक है। कल ही पता कर लूंगी।"

"अच्छा बाबा, अच्छा। प्रतिज्ञा करती हूँ कि आज रात को उसके साथ जो भी बातें होंगी, उसकी पूरी रिपोर्ट कल तुझे दे दूँगी।" यह कहकर झुमझुम ने चारुशीला को शांत किया।

"ना, बाबा ना, सारी रिपोर्ट नहीं चाहिये। वह तो तेरी अपनी सम्पत्ति है। बस, इतना बता देना कि तेरे गीत सुनकर उसका क्या रिएक्शन हुआ। कितनी ईश्वर-टीश्वर की बात मन में आई और कितनी तेरी।"

चारुशीला का फोन खत्म होते ही फिर से घंटी बजने लगी। "हैलो, हैलो, वैरी सॉरी, आपको डिस्टर्ब किया। आपके नीचे के फ्लैट के मिस्टर अमिताभ राय चौधरी के यहाँ से किसी को बुला दीजियेगा जरा ?"

मनोरमा बोली, "उनकी पत्नी तो यहीं बैठी हैं। अभी देती हूँ।"

"हैलो, हैलो, प्लीज उनको मत दीजिये ! उनसे बात नहीं हो पायेगी। किसी और को, माने किसी सख्त आदमी को।"

"हैलो, आप कहना क्या चाहते हैं ?" थोड़ा डर लगने लगा मनोरमा को।

"आप कौन हैं, यह बताने की कृपा करेंगी ?"

"हम लोग उनके मकान मालिक हैं, पर साथ ही मित्र भी हैं। मिसेस राय चौधरी मेरी फ्रेंड हैं।

"हैलो, तो फिर आपको ही बताता हूँ। हैलो, एक बुरी खबर आई है। हैलो, आलिवग्रीन रंग की एक गाड़ी का....एक्सीडेंट....माने सीरियस दुर्घटना हो गई है। उस गाड़ी में मिस्टर रायचौधरी के अलावा हमारे मैनेजर मिस्टर वसुमल्लिक भी थे। एक जना....वन आफ द हू" याने एक को कुछ हो गया है। हैलो, मैं आपको फिर से फोन करता हूँ।"

काँपती हुई मनोरमा ने फोन का रिसीवर रख दिया।

पहले तो मनोरमा ने तय किया था कि कुमकुम को अभी कुछ नहीं बतायेगी। लेकिन जब वह उस पर आहत बाघिनी सी झपटी तो जो कुछ सुना था, बता दिया।

बदन पर जैसे बिजली का नंगा तार आ पड़ा हो। कुमकुम का शरीर क्रमशः अवश होता जा रहा था, लेकिन चेतना लुप्त नहीं हो रही थी।

उन्मादिनी सी दौड़ती हुई वह नीचे उतर आई। मनोरमा भी क्या करे, यह न समझ पाकर उसके पीछे-पीछे चली आई।

तदुपरान्त खबर ने जैसे घर के प्रत्येक व्यक्ति पर विद्युत् के चाबुक की तरह सपासप आघात करने शुरू कर दिये। हरिसाधन ओठों ही ओठों में बुदबुदा कर जाने क्या कहने लगे। शायद पीताम्बर का नाम लेकर कुछ कहा उन्होंने।

केवल पीताम्बर काकू ने ही अपने को जरा कठोर बनाये रक्खा। गिरते हुए मकान के मजबूती से खड़े स्तंभवत् पीताम्बर बोले, "ओ हो, बुरी बात ही क्यों सोच रहे हो तुम लोग? बहू, तुम परेशान मत होओ। खबर अवश्य आयेगी। ठहरो, अभी सारी बात पता लगाता हूँ।"

यह कहकर वह ऊपर चले गये। टेलीफोन उठाकर सबसे पहले संवाद सरबराह के आफिस फोन किया। वहाँ के जीवनलाल बाबू के साथ उनका परिचय था। फोन रखकर जीवनलाल ने उस दिन की खबरों की फाइल उठाकर अच्छी तरह देखी और बोले, "नहीं, बद्रीनाथ के पास हुई एक बस दुर्घटना को छोड़कर कोई मेजर इन्सिडेन्ट नहीं है।"

"ऐसी खबर आपके पास तो आयेगी ही?" पीताम्बर ने पूछा। उनकी बात से कुमकुम को थोड़ी तसल्ली हुई।

जीवनलाल बोले, अनलेस किसी मिनिस्टर-विनिस्टर की हो दो-चार इधर-उधर दुर्घटना में हुई केस की खबर नहीं भी आ पातीं। आप समझ ही

सकते हैं कि सैकड़ों लोग जगह-जगह मरते हैं, उन सब की पूरी रिपोर्ट देने लगें तो अखबार में और किसी खबर के लिये जगह ही नही रहेगी।"

रिसीवर रखकर पीताम्बर जाने क्या सोचने लगे। शायद सोच रहे थे कि कहाँ से कैसे पता लगायें।

इतने में अनन्ता ऊपर भागी आई। "भाभी, बाबूजी को जाने क्या हो गया है। वह लेट गये हैं।"

"बहू, तुम जाकर देखो तो जरा। मैं अभी आता हूँ, एक फोन और कर लूँ।" परिस्थिति संभालने का प्रयत्न करते हुए पीताम्बर बोले।

फिर उन्होंने पुलिस हेडक्वार्टर्स में किसी को फोन किया। वहाँ भी आर्डिनरी सड़क दुर्घटना को लेकर कोई परेशान नहीं था। यह सब तो रुटीन मैटर हैं। इस देश में प्रतिवर्ष बीस हजार लोग सड़को पर मारे जाते हैं।

परन्तु पीताम्बर निराश नही हुए। किसी परिचित को फिर फोन किया। वहाँ से भी जब पता नही लगा तो वायरलेस में खोज-खबर लेनी शुरू की।

टेलीफोन पर झुके बैठे थे पीताम्बर। नौ बजकर बावन मिनिट हो गये थे। मनोरमा ने उठकर हल्का करके रेडियो खोल दिया। "आकाशवाणी, कलकत्ता। अब रवीन्द्र संगीत सुना रही हैं सागरिका रायचौधरी।"

सागरिका के इलेक्ट्रानिक कंठ से इस बार अभिसार रजनी की मादकता वातावरण में गूंज उठी। वह मिलन का गीत गा रही थी, संगोपन में स्वयं को निःशेष में समर्पित करने का गीत।

टेलीफोन की घंटी बजते ही सागरिका ने कातर भाव से कहा, "आह, बन्द करो, बन्द करो।" बेतारवाणी बन्द हो गई—हालांकि दूर किसी घर में बजते रेडियो से गाने की लाइनें सुनाई दे रही थीं।

"खबर आई है। हैं, क्या कहा ?" पीताम्बर काकू का स्वर भी अब भर्रा गया था।

"अबाउट बारह पचास""क्या कहा ?" प्राणपण से चीख रहे थे पीताम्बर। "नही मुझे, ठीक से सुनाई नहीं दे रहा। जरा लीजिये तो।" कहकर रिसीवर मनोरमा की ओर बढ़ा दिया।

कुछ क्षण तक रिसीवर कान से लगाये रहकर मनोरमा बोली, "हैं""क्या कहा ? एक मर गया। एक सांघातिक रूप से आहत हुआ है।"

यह सुनते ही पीताम्बर ने झपटकर रिसीवर की ओर हाथ बढ़ाया, "दो-

दो, मैं बात करता हूँ। हैलो....क्या कहा ?....कौन आहत है ? कौन निहत ?....
प्लीज, फिर से वायरलेस से खबर लीजिये।"

सिर कटे बकरे की तरह तड़पने लगे कुछ प्राणी। जरा देर बाद फिर फोन किया पीताम्बर ने। "हैलो, क्या कहा ? अच्छी खबर है। घायल व्यक्ति की हालत उतनी खराब नहीं है। वह बच जायेगा। लेकिन दूसरा मर गया !"

"हैलो, हैलो, बताओ न भाई, उस आलिवग्रीन गाड़ी का कौन सा आदमी जीवित है ?" कातर स्वर में विनती की पीताम्बर ने।

वायरलेस का आदमी शायद फिर से कागज-पत्र देखने लगा था। और कुमकुम को लग रहा था जैसे उसे अभियुक्त की विद्युत् चेयर पर बिठा दिया गया था। अभी तय किया जायेगा कि उसका क्या किया जायेगा।

"हैलो, हैलो, जो जीवित हैं उनका नाम....।"

"हे ईश्वर, रक्षा करो", आकुल प्रार्थना की कुमकुम ने।

"उनका नाम वसुमल्लिक है। गाड़ी का ड्राइवर, वन राय चौधरी ब्रॉट डेड टु हेल्थ सेन्टर।" कुमकुम समझ गई थी एक मोटा भीगा हुआ काला पर्दा उसकी आँखों के सामने गिर रहा था। गिरे, पूरा गिर जाये—अन्धेरा नहीं छाया तो कुमकुम के शरीर की दुःसह यन्त्रणा कम नहीं होगी।



कहाँ कब क्या हुआ था, कुछ भी याद नहीं था कुमकुम को। बस, इतना याद था कि वह कई बार कुछ क्षणों के लिये जागी थी। जैसे कुछ भी नहीं हुआ था। केवल एक बुरा सपना देखा था उसने। सब ठीक-ठाक था, गौतम काम निपटाकर वापस लौट रहा था।

पर अभी संध्या ही उतरी थी। बाहर अभी भी उजाला था। गौतम के तो रात को लौटने की बात थी।

गौतम लौटा था। एक टन वाले ट्रक में सफेद कपड़े में लिपटी अवस्था में बंगाल-बिहार बार्डर से लौट आया था वह। बड़ी भागदौड़ व कोशिश करनी पड़ी थी उसे लाने के लिये। नहीं तो मोर्ग में शरीर की निर्दयता से चीर-फाड़ होती। पीताम्बर काकू ही किसी प्रकार गौतम को उस १८ हलधर हालदार लेन में वापस लाये थे। अब वह सफेद कपड़े में लिपटा शान्तभाव से बिस्तर पर लेटा था।

फिर और इन्तजार नहीं किया गया। बार कैबिनेट की आपत्कालीन बैठक

फुसफुसाहट में हुई। दोपहर को मृत्यु हुई थी, बहुत वक्त निकल गया—अब और देर नहीं। जो देह इतनी प्रिय थी उसी देह की दुर्गन्ध प्रियजनों की सहा-सीमा के बाहर चली जायेगी।

फिर एक काँच की गाड़ी आई थी। बहुत सारे फूल थे गाड़ी में। कम्पनी की तरफ से भिजवाये गये थे। फिर तय किया गया था कि बाँसतला के मरघट पर नहीं वरन् केवड़ातला की विद्युत्भट्ठी में ही सुशोभित होगा गौतम। कैसे सारा आयोजन हुआ था, यह पता नहीं है कुमकुम को।

जाने किसने कहा था, मिसेस रायचौधरी को ले जाने की जरूरत नहीं है। धुंधला-सा याद आ रहा था कि पीताम्बर काकू ने कहा था, "नहीं, वह जायेगी। पति की अंतिम यात्रा में मेरे साथ ही जायेगी।" इसके बाद भी एक दो आफिसरों ने आपत्ति जताई थी, लेकिन पीताम्बर काकू ने किसी की नहीं सुनी थी।

उसके बाद फिर अंधेरा था। कुछ भी याद नहीं आ रहा था कुमकुम को। बस, धुंधला-सा याद आ रहा है कि कैलकटा आफिस के नंबर वन आफीसर जब उसके निकट आये थे तो कुमकुम ने उन पर पागल की तरह प्रहार किया था। वह भी अजीब दृश्य था। भद्रव्यक्ति क्या करें, समझ नहीं पा रहे थे और कुमकुम घूंसे-थप्पड़ मारते-मारते कह रही थी, "मेरे पति को क्यों भेजा तुम लोगों ने ? वह तो जाना नहीं चाहता था।"

इसके बाद फिर से कुमकुम की आँखों के सामने काला पर्दा उतर आया था। पीताम्बर काकू ही श्मशान की धरती पर पड़ी कुमकुम को उठाकर सफेद कपड़े में लिपटी देह के पास ले गये थे—"एक बार देख लो बहू। तुम नहीं देखोगी तो कौन देखेगा ?"

मुँह पर से कपड़ा हटाते ही लगा था जैसे फिर से चंदोवेवाले की शुभ दृष्टि हुई थी और "वह तो सो रहा है। क्यों तुम लोग उसे अग्निघर में ठेले दे रहे हो" कह कर क्रन्दन कर उठी थी।

उसके सर पर हाथ फेरते हुए पीताम्बर काकू ने कहा था, "देख ले, अच्छी तरह देख ले बेटी।"

छोटी बच्ची की तरह बहुत देर तक जाने क्या देखती रही थी कुमकुम। अंतर पर चित्र अंकित करती रही थी शायद। अब तक उसकी नजर गौतम के दाहिनी ओर ही टिकी हुई थी। फिर जब नजर बाँयी ओर पड़ी तो सारा शरीर क्षत-विक्षत देखकर तुरत समझ गई थी और, कह उठी थी, "यह तो मर गया है। क्यों जाने दिया इसे ? वह तो जाना नहीं चाहता था।"

अपने को नितान्त असहाय बोध कर रहे थे पीताम्बर काकू। क्या करें, क्या कहें, कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था जैसे।

तभी चारुशीला भागी आई थी। खबर मिलते ही वह विज्ञापन का सारा काम छोड़ कर चली आई थी।

सखी को वक्ष से चिपटाकर पत्थर के बुत-सी बैठ गई थी चारुशीला। कुमकुम बस एक ही बात बुड़बुड़ाये जा रही थी, "क्यों जाने दिया उसे? वह तो जाना नहीं चाहता था।"

चारुशीला एक अन्य असह्य यन्त्रणा से छुटकारा पा गई थी। कुमकुम के सर पर किसी ने आधा सेर सिंदूर नहीं पोता था।

इसके बाद मूर्छा आ गई थी। कुछ लोग परेशान हो उठे थे। चारुशीला ने सोचा था, जितनी देर चैतन्य खोकर पड़ी रहे, अच्छा है।

उधर इलेक्ट्रिक भट्टी में अमिताभ रायचौधरी का नश्वर शरीर जल रहा था। अकस्मात् क्षण भर के लिये कुमकुम की चेतना लौट आई थी। बोली थी, "मेरी छाती फटी जा रही है। तुम लोग उसकी बायीं ओर थोड़ा मलहम तो लगा दो।"

अमिताभ की बायी ओर का शरीर वास्तव में बड़ा बीभत्स हो गया था। चारुशीला ने उस ओर देखा ही नहीं था। चारुशीला के हाथ में चिकोटी काट कर कुमकुम ने फिर कहा था, "चुपचाप क्यों बैठी है? उसके उस तरफ दवा लगा आ न!"

सखी के नखों का आघात सहन करके चारुशीला सखी की पीठ पर हाथ फेरने लगी थी। वह तो सारी औषधियों से दूर ऊपर चला गया था, मन ही मन बोली, "तुम्हारे हृदय की ज्वाला मिटाने की केवल एक औषधि है, उसका नाम समय है। हे समय, हे सर्वतापहर, मेरी सखी के हृदय की ज्वाला कम कर दो!"



समय का थोता वास्तव में रुकता नहीं। काल के कुटिल षड्यन्त्र में संसार फिर से उसी तरह चलने लगता है। वयःप्राप्त लड़कियों के पिता पहले की ही तरह उद्भ्रान्त होकर पात्र ढूंढने लगते हैं, विवाह की शहनाइयाँ बजती हैं, मधु-यामिनी के महोत्सव में कहीं भी बिन्दुमात्र दुविधा नहीं होती, किसी के मन में केवड़ातला के श्मशान के लिये कोई प्रस्तुति नहीं होती।

लेकिन कुमकुम के हृदय की ज्वाला अभी भी कम नहीं हुई थी। इस अठारह नम्बर हलधर हालदार लेन में बस एक विचित्र निस्तब्धता उतर आई थी।

कुमकुम अभी भी स्वप्न देखती थी, दुर्घटना एक सामयिक दुःस्वप्न के सिवा और कुछ नहीं होती। वह जैसे एक बड़े स्वप्न में एक छोटा स्वप्न हो। कुछ नहीं हुआ अमिताभ को। वह अपनी आलिवग्रीन गाड़ी लेकर लौट आया है। इस बीच कुमकुम ने बेकार ही स्वयं को इतना कष्ट दिया। तभी नींद खुल गई और हृदय की वही पुरानी ज्वाला भी फिर से भड़क उठी—बड़ी तकलीफ हो रही है। 'हे ईश्वर, तुम मुझे कोई स्निग्ध प्रलेप दे दो, मेरी ज्वाला शांत कर दो भगवान्।'

अवश्य ईश्वर का मलहम का स्टाक खत्म हो गया है। नहीं तो इस लड़की के हृदय की ज्वाला कम क्यों नहीं कर देते? पीताम्बर काकू जब-तब सोचते रहते हैं पर मुंह से कुछ नहीं कहते।

इस घर की दिल दहला देने वाली निस्तब्धता के बीच कभी-कभी पीताम्बर काकू ही सरब हो उठते हैं। कहते हैं, "बहू, आज सुबह से एक कप चाय भी नहीं मिली। पिलाओगी बेटी, एक कप चाय?"

पीताम्बर अपनी तृष्णा मिटाने के लिये यह सब नहीं कहते। इस आशा से कहते हैं कि लड़की पलंग से उठेगी और कुछ देर के लिये काम में उस दिन की बात भूल जायेगी।

यौवन-काल से लेकर अब तक न जाने कितनी मृत्यु देखी थीं पीताम्बर ने। माँ की मृत्यु, पिता की मृत्यु, बहनोई की मृत्यु, हरिसाधन की पत्नी की मृत्यु। लेकिन इस मृत्यु की तरह किसी भी विच्छेद ने ऐसा प्रचंड तूफान लाकर सब कुछ तहस-नहस नहीं किया था।



पीताम्बर डर गये थे कि हलधर हालदार लेन का जो प्रकाश अचानक दप से बुझ गया था, वह फिर नहीं जलेगा।

पर जीवन की भी कैसी असीम स्पर्धा है। मृत्यु से पद-पद पर पराजित होकर भी उसके प्रति जरा भी क्षोभ नहीं।

हरिसाधन का बारीकी से निरीक्षण करके पीताम्बर सोचते

अच्छी थी कि हरिसाधन एकदम टूटे नहीं। नहीं तो दो अनूढ़ा कन्याओं और एक सद्यविधवा की इस गृहस्थी का क्या होता?

शुरू-शुरू में तो हरिसाधन गुमसुम बरान्डे में बैठे रहते थे, एक शब्द नहीं बोलते थे। कई दिन बाद धीरे से पीताम्बर से पूछा था, "बताओ तो, नगेन ज्योतिषी ने कैसी कुंडली मिलाई थी? उसने तो कहा था दोनों का राजयोग है।"

क्या जवाब देते पीताम्बर? बोले, "लड़कियों के विवाह के वक्त उनके पास ही मत जाना। हरिसाधन, अब तुम उठकर खड़े हो जाओ। पतवार सँभालो।"

"कितने पाप किये हैं मैंने, पीताम्बर, नहीं तो भला किसी को लड़के के श्राद्ध की फ़र्द पढ़नी पड़ती है?" रुलाई फूट पड़ी थी हरिसाधन की।

"पीताम्बर, मेरी सजी-सजाई गृहस्थी जलकर भस्म हो गई।" और एक दिन यह कहकर हरिसाधन ने रोना शुरू कर दिया था।

पीताम्बर ने समझाया था, "यह क्या आँसू बहाने का समय है हरि-साधन? एक बार देखो तो तुम्हारे मुँह की ओर कौन-कौन देख रहा है।"

समय की संजीवनी हवा ने धीरे-धीरे बहना शुरू कर दिया था। इस समय पीताम्बर ने सामर्थ्यानुसार आना-जाना बढ़ा दिया था।

"तुम रोज इतनी तकलीफ क्यों उठाते हो?" भग्न स्वर में विषण्ण हरि-साधन ने मित्र से कहा था।

"मेरी हालत तो तीन में न तेरह में, ढोल बजाऊँ डेरे में वालों है। मुझे और क्या काम है, बताओ? तुम लोगों के यहाँ न आकर कहाँ जाऊँगा?" पीताम्बर ने कहा था।

आकाश की ओर टकटकी लगाये चुप बैठे रहे थे हरिसाधन। आँखों से आँसू बहने लगे थे।

पीताम्बर बोले थे, "हरिसाधन, ऐसे मुँह बन्द करके मत बैठे रहो। कुछ तो बोलो, इससे तुम्हारा दिल हल्का होगा। तुम्हें हिलते-डुलते देखकर इस घर की लड़कियों को बल मिलेगा।"

जाने क्या सोचकर हरिसाधन ने कहा था, "मैं मनुष्य के बारे में सोच रहा हूँ। आजकल आदमी बहुत अच्छा हो गया है, यह उस दिन की घटना के बाद से बराबर देख रहा हूँ।"

कोई मन्तव्य प्रकट न करके पीताम्बर हरिसाधन के मुँह की ओर देखने

लगे थे। दूसरे के दुख से शायद मनुष्य का हृदय मोमबत्ती की तरह गलता रहता है।

"पीताम्बर, सारे लोग जैसे रातों-रात बहुत अच्छे हो गये हैं। सड़क के मोड़ का सब्जी वाला तक अब मुझे वजन में कम तोलकर नहीं देता। पहले तो कितना ठगता था। इस मुहल्ले का दीनू रिक्शावाला, मुझे पोस्ट आफिस ले गया और वापस लाया और कुल डेढ़ रुपये लिये। बोला, और नहीं देने हैं।"

"और पोस्टआफिस की बात क्या बताऊँ तुम्हें। पहुँचते ही वह लोग मुझे अंदर ले गये, चाय मँगाई और गौतम के पोस्टल इंश्योरेंस के सारे कागज आनन-फ़ानन निपटा दिये। जिस काम को करने में दो-ढाई साल लगते हैं, वह दो दिन में हो गया। पोस्टआफिस का नया लड़का घर आकर मेरे और बहू के दस्तखत ले गया।"

पीताम्बर को याद आया, दूरदर्शी हरिसाधन ने यथासमय अमिताभ का इन्श्योरेंस करवा दिया था। एक्सीडेण्ट होने पर डबल रुपया मिलने के लिये थोड़ा अधिक प्रीमियम भी दिया था।

"बहू ने कुछ भी नहीं देखा, सारे कागजों पर बिना देखे, बिना पूछे दस्तखत कर दिये।" दुःख प्रकट करते हुए कहा हरिसाधन ने।

"जब तक तुम हो, उसे देखने की क्या जरूरत है?" बात सँभालने का प्रयत्न किया पीताम्बर ने।

"मुझे क्या जिन्दगी भर यह सब करना पड़ेगा? लड़के का डेथ सर्टिफिकेट जेब में रखकर आफिसों के चक्कर काटने पड़ेंगे?" फिर से रुलाई फूट पड़ी थी हरिसाधन की।

"बहू आ रही है, आँसू पोंछो हरिसाधन," दबे स्वर में कहा पीताम्बर ने। फिर कुमकुम की ओर देखकर प्रकट में बोले, "आओ बेटी, आओ, तुम्हारे हाथ की चाय पिये बिना मन ही नहीं भरता मेरा," यह कहकर कप पकड़ लिया पीताम्बर ने।

पहले का समय होता तो बहू थोड़ी देर खड़ी रहती, कुछ बातचीत करती, पर वह चुपचाप वापस चली जाती है। इस घर का सभी कुछ स्लो मोशन पिक्चर की तरह चलने लगा था।

हरिसाधन बोले, "यहाँ की हालत देखकर उन लोगों ने छह महीने के लिये एक नौकरी दे दी है मुझे। कल्पना कर सकते हो तुम, आज

बैठे नौकरी मिलने की ? मैंने सोचा, शायद दया करके""लेकिन उन लोगों ने कहा, यह बात नहीं है, उन्हें वास्तव में मेरी ज़रूरत है।"

पीताम्बर ने मुंह नहीं खोला, क्योंकि इस नौकरी का जुगाड़ होने के पीछे उनका भी थोड़ा बहुत प्रयत्न था। एक दिन की आकस्मिक घटना ने अठारह नं० हलधर हालदार लेन पर क्या कहर ढा दिया था, यह जानकर ही उन्होंने नौकरी दी थी।

"जब स्वास्थ्य अच्छा है तो मन लगाकर काम करो। जो मिल जाये वही अच्छा है।" इसके अलावा और कहते भी क्या पीताम्बर।

"जानते हो पीताम्बर, आजकल लगता है कि भगवान् क्रमशः जितना निर्दय व क्रूर होता जा रहा है, मनुष्य उतना ही भला होता जा रहा है। मनुष्य पहले कभी तो इतना सहृदय नहीं था। एक सज्जन तो स्वयं आकर अजन्ता को देख भी गये। ऊपर वाली बहू मनोरमा ने ही दिखाने का सारा इंतजाम किया। और अजन्ता उन्हें पसन्द भी आ गई है।"

"यह तो बड़ी अच्छी खबर है, हरिसाधन।"

"मात्र एक बुरी खबर के अलावा सारी ही अच्छी खबरें हैं। अपकर्म करके मृत्यु मेरा मुंह बन्द करने के लिये घूस भिजवा रही है क्या ? मैं कुछ भी नहीं समझ पा रहा, पीताम्बर।"

"समझने को है ही क्या ? बुरा वक्त निकल गया है। सुख-दुख सभी कुछ तो चक्रवत् परिवर्तित होता रहता है हरिसाधन।"

अजन्ता के विवाह के लिये दबाव डाला पीताम्बर ने। चाहे जितना दुख हो पर सुयोग मिलने पर छोड़ना नहीं चाहिये। मुंह से तो भले ही पीताम्बर यह कह रहे थे, पर मन में सोच रहे थे कि कैसा आश्चर्य है! कई बार मृत्यु मिलन का पथ भी प्रशस्त कर देती है!

यही हरिसाधन लड़के के आफिस चले जाने पर लड़कियों के विवाह के लिये खर्च होने वाले रुपयों के सम्बन्ध में आकाश-पाताल सोचते थे। शीघ्र ही अर्थ-संग्रह का कोई रास्ता नहीं ढूंढ़ पाते थे।

और निष्ठुर मृत्यु ने कितनी आसानी से अर्थ की चिंता दूर कर दी। मृत्यु अगर अवश्यम्भावी है तो दुर्घटना में हुई मृत्यु ही अच्छी है—उसमें जीवन-बीमा का रुपया दुगना हो जाता है, आफिस से भी नाना आर्थिक सुविधाएँ मिल जाती हैं। भवितव्य को ठेंगा दिखाने के लिये ही तो मनुष्य ने इन्श्योर का आविष्कार किया था।

● ●

अजन्ता का विवाह आशातीत कम समय में ही हो गया। मनोरमा ने बहुत मदद की थी।

पहले तो मनोरमा बड़ी अकड़ कर बोला करती थी, पर उस दिन के बाद बिल्कुल बदल गई थी! विवाह की संभावना सुनते ही पोस्ट आफिस वालों ने जी-जान लगा कर इनश्योरेंस का पेमेन्ट दिला दिया था। और बहू ने तो मुँह खोला ही नहीं था, हरिसाधन ने जहाँ-जहाँ जब भी दस्तखत करने को कहा था, करती गई थी।

पीताम्बर और हरिसाधन दोनों ने ही कहा था, "सोच-समझ कर, अच्छी तरह देख-भाल कर दस्तखत करना बेटी।" लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ था। देख-भाल कर जब जीवन ही नहीं चल पाया, तो सामान्य दस्तखतों को लेकर सर खपाने से क्या लाभ था?

कभी-कभी लोग-बाग देखने के लिये जिद कर ही बैठते थे। जैसे इस बार आफिस का कोई आदमी आलिवग्रीन गाड़ी के अन्दर के सामान का पैकेट बनाकर दे गया था। गौतम का तौलिया, काला चश्मा, पानी का फ्लास्क, चमड़े का बैग—और भी बहुत कुछ था। दो बीयर की बोतलें भी जाने कहाँ से उड़कर आ गई थीं।

अंधे की तरह दस्तखत कर दिये थे सार्थिका ने—क्योंकि वाइफ के हस्ताक्षरों के बिना आफिस के कागज पूरे नहीं होते।

पीताम्बर काकू ने कहा था, "देख लो बेटी। अच्छा, मैं पढ़े देता हूँ। सुन लो, फिर दस्तखत करना।"

वह बीयर की बोतलों का नाम आते ही कुमकुम जाने कैसी हो गई थी। बीयर की बोतलें तो भर से नहीं गई थीं। गौतम तो बीयर नहीं पीता था। "उसकी नहीं हैं—उसकी नहीं हैं"—जोर से चीखी थी कुमकुम। "यह बोतलें उन लोगों से ले जाने को कह दीजिये, काकू बाबू। वह लोग मेरे पति की झूठी बदनामी कर रहे हैं।" शोक और क्रोध से कुमकुम के नथुने फूल उठे थे।

पीताम्बर ने वह आलिवग्रीन गाड़ी देखी थी। दबकर चपटी हो गई गाड़ी दुर्घटनास्थल से ब्रेकवान के पीछे बाँध कर लाई गई थी। आँखें बंद कर ली थीं पीताम्बर ने। ऐसी सुन्दर गाड़ी, जिसे वह प्रायः रोज ही देखते थे, उसका ऐसा वीभत्स रूप भी हो सकता था, यह उन्होंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। तकदीर अच्छी थी कि कुमकुम को उन सारे कागजों पर साइन नहीं करने पड़े, क्योंकि गाड़ी गौतम की नहीं, कम्पनी की थी।

नहीं, यह सब नहीं सोचेंगे वह। अजन्ता का विवाह इतनी जल्दी और

इतनी आसानी से हो गया, यही आश्चर्य की बात थी। वह तो जानते हैं कि हरिसाधन को इस बात की कितनी चिंता थी, कोई रास्ता नजर नहीं आता था उन्हें।

एक बार गौतम से भी उन्होंने आफिस से लोन मिल सकता है क्या, यह पता करने को कहा था। पता लगाकर मुंह लटकाये गौतम ने आकर बताया था कि जिनकी नौकरी नई-नई होती है, उनको आफिस से लोन मिलने की कोई संभावना नहीं है।

तब हरिसाधन ने मित्र से पूछा था, "क्या होगा पीताम्बर ? एक नहीं दो-दो लड़कियाँ ताड़ सी लम्बी हो गई हैं। गौतम से लाटरी के टिकिट भी खरीदने को कहा है। लाटरी के अलावा अब और कोई गति नहीं है, समझे पीताम्बर।"

शायद वही लाटरी निकल आई थी, पर दूसरी तरह से। इनश्योरेंस के रुपये दुगने हो गये थे, हरिसाधन को घर बैठे नौकरी मिल गई थी। गौतम के आफिस से भी कुछ रुपया मिल गया था और कह गये थे कि और मिलने की व्यवस्था हो रही है। शायद आफिस से भी कर्मचारियों के नाम से गुप्त बीमा किया जाता है। समझदार कम्पनियाँ जानती हैं कि अगर आर्थिक सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं होगी तो कर्मचारी निर्भय होकर बाहर कैसे निकलेंगे ? घर से निकल कर सड़क पर निकलने का मतलब ही है विपत्ति का सम्मुखीन होना।

इसके अलावा गौतम के आफिस के और भी कुछ नियम थे, जिनकी खबर पहले किसी को नहीं थी।

हरिसाधन ने मित्र को बताते हुए कहा था, "वह लोग आये थे। दाह, श्राद्ध-शान्ति में कितना और कैसे-कैसे खर्च हुआ, उसका हिसाब माँग रहे थे। कह रहे थे कि सारा खर्च कम्पनी देगी। बड़े भले लोग हैं, कह रहे थे कि इस हालत में आने-पैसे का हिसाब देने की जरूरत नहीं है, अन्दाज से बता दीजिये। खर्च ही क्या किया है, हम लोगों ने ? छह-सात सौ। उन लोगों ने खुद ही कहा कि पाँच हजार लिख दीजिये।"

"वहाँ भी बहू को दस्तखत करने पड़े क्या ?" पीताम्बर ने पूछा।

"वहाँ उन लोगों ने दया कर दी। वह लोग समझते हैं कि सद्य विधवा से दाह-श्राद्ध के खर्च के बारे में कोई नहीं पूछ सकता ! पर मेरे से पूछ सकते हैं....." यह कह कर फिर फूट-फूट कर रोने लगे हरिसाधन। "अपने लड़के के श्राद्ध का हिसाब देना पड़ रहा है मुझे, पीताम्बर। ईश्वर ने मेरे लिये यह सजा भी रख छोड़ी थी।"

एक और दिन की बात है। पीताम्बर हरिसाधन के पास आये। बहू तब भी कमरे में चुपचाप बैठी रहती थी। पीताम्बर के आने पर भी बाहर नहीं आती थी।

हरिसाधन ने कहा, "एक लड़की का ब्याह ऐसे हो जायेगा, इसकी तो कल्पना भी नहीं की थी मैंने। लेकिन बहू ने ननद के विवाह पर होने वाले खर्चे के बारे में कभी एक शब्द नहीं कहा। हजार हो, कानून की नजरों में तो सम्पत्ति के हिस्से-बँटवारे में माँ-बाप और नाबालिग भाई-बहन का कोई अस्तित्व नहीं होता।"

"पर वह इनश्योरेंस के रुपये ? वहाँ तो तुम्हीं नामिनी थे।" पीताम्बर ने याद दिलाया।

"वह तो विवाह से पहले बनाया गया था। इस मामले में कानून एकदम सीधा है। विवाहोपरान्त पहले के नामिनेशन का कोई मूल्य नहीं रहता। पत्नी की एक चिट्ठी मिलते ही सारा पेमेन्ट रोक लिया जाता है। इस मामले में उन लोगों ने कोई कानूनी झगड़ा खड़ा नहीं किया। बस, इतना कहा कि बहू से एक साइन और करा लाओ, जिससे बाद को कोई बात न उठे।"

कैसी आश्चर्यजनक है यह दुनिया! मन ही मन सोचा पीताम्बर ने। अर्थ ऐसी चीज है कि पुत्रशोकाच्छन्न पिता को भी एक-एक पैसे का हिसाब देखना पड़ता है। बहुत बच गये पीताम्बर—जब वह दुनिया से चले जायेंगे तो यह सब लेकर किसी को मगजपच्ची नहीं करनी पड़ेगी। थोड़ा बहुत रुपया है, वह भारत सेवासंघ को दे जायेंगे वह। जब पिंड देने गया गये थे वह, तो उनके आश्रम ने बहुत उपकार किया था उन पर।

हरिसाधन जरा बेलगाव से बैठे थे। कुछ देर बाद धीमे स्वर में बोले, "अच्छा हुआ, तुम आ गये। गौतम के आफिस को मैं दोष नहीं दे सकता। वह लोग अभी भी प्रतिमास पूरी तनख्वाह भेज रहे हैं। एक्सीडेंट के केस में यही उनका नियम है। अचानक जो घटित होता है, उससे परिवार के लोग धीरे-धीरे सहन करके सँभल जायें, इसी के लिये यह दया है।"

फिर जरा रुक कर बोले, "डेविस को भी उसका प्राप्य देना पड़ता है! देखो, मेरे लड़के ने उनकी गाड़ी ड्राइव करते हुए सड़क से छिटक कर किनारे के पेड़ से टकरा दी। गाड़ी की रक्षा का दायित्व उसी का था—जब चाहे किसी भी गैरेज में जाकर काम करा लेने की स्वाधीनता थी। भवितव्य को छोड़ कर जो भी दायित्व था, मेरी सन्तान का ही था। तब भी कम्पनी मुआ-

बजा देने को तैयार है। ट्रेनिंग के बाद जिसने मात्र अठारह महीने काम किया हो, उसके कम्पेन्सेशन के कितने रुपये होंगे, तुम्हीं बताओ ?"

एक दीर्घश्वास लेकर आगे कहने लगे हरिसाधन, "समझे पीताम्बर, गौतम की पूरी तनख्वाह साल भर तक आयेगी। उसका वह अफसर जो साथ था—वही दीननाथ बसुमल्लिक, उसने बम्बई के बड़े साहब को बहुत जोर देकर गौतम के बारे में लिखा था, नहीं तो बड़े साहब इतनी दया क्यों दिखाते ?"

"जानते हो पीताम्बर, जो भी सुनेगा चकित रह जायेगा। उनके आफिस ने अनुरोध किया है कि कितना रुपया मिल रहा है, कैसे मिल रहा है, यह सब गोपनीय रहे। इसका भी कारण है, समझे ?"

"अवश्य है। नहीं तो कम्पनी तो दयादाक्षिण्य करे तो उसका प्रचार ही चाहती है," पीताम्बर ने कहा।

हरिसाधन के मुँह पर चमक आ गई। बोले, "बात एकदम सीधी है, मैं समझ गया हूँ। गौतम को कम्पनी बहुत पसन्द करती थी। इसके लिये वह लोग जो कुछ करना चाहते हैं वह स्पेशल है। लोगों को पता लगने से वही कानून बन जायेगा और कम्पनी यह नहीं चाहती।"

पुत्रशोक भूलकर हरिसाधन अगर आफिस की इन बातों में डूबे रहें तो अच्छा ही है, पीताम्बर ने सोचा।

"तुम्हें क्या लगता है ? हमलोगों को कम्पनी को धन्यवाद का पत्र नहीं लिखना चाहिये ?" हरिसाधन ने प्रश्न किया।

"तुम्हारी बहू के पिता कहा करते थे कि दुनिया की समस्त कृतज्ञताओं का प्रकाश ही काम्य है। इसलिये ह्वाई नॉट ?"

"एक और मामला है।" फुसफुसाकर कहा हरिसाधन ने। "बहू को भी नौकरी देने के बारे में सोच रहे हैं वह लोग ! तुम तो जानते ही हो कि आजकल नौकरी क्या चीज है। इसे कम्पैशनेट अपाइंटमेंट कहते हैं—पोस्ट भले ही न हो, बड़े अफसर की एक लाइन से सब कुछ हो जाता है। दूसरी सुविधा यह है कि ऐसे मामलों में यूनियन कोई झगड़ा उठाने में संकोच-बोध करती है। जानते हो पीताम्बर, मृत्यु सभी को असंगत परिस्थिति में डाल देती है।"

इतना कहकर जरा रुक गये हरिसाधन। कुछ क्षण उपरान्त गले का स्वर नीचे रखते हुए ही कहने लगे, "इस मामले में स्वयं मिस्टर बसुमल्लिक ने जिम्मा लिया है। हालांकि इसी आदमी के साथ हमारे घर में कितना बुरा व्यवहार किया गया था।"

घटना याद आ गई पीताम्बर को। नर्सिंग होम से छुट्टी मिलते ही दीननाथ

वसुमल्लिक इस घर में आये थे। तब भी उनके शरीर पर कई जगह पट्टियाँ बँधी हुई थी। पीताम्बर ने पहले ही सुन लिया था कि दुर्घटना की रात को ही एक स्पेशल गाड़ी का इंतजाम करके मिस्टर वसुमल्लिक स्वयं ही हेल्थ सेन्टर से कलकत्ते के नर्सिंग होम में चले आये थे।

उस दिन पहली बार हरिसाधन और पीताम्बर ने दीननाथ वसुमल्लिक को देखा था। हरिसाधन को मालूम था कि लड़के के साथ वसुमल्लिक के संबंध बहुत अच्छे नहीं थे। बहुत कोशिश करके भी गौतम उनके साथ मेल नहीं बिठा पा रहा था। यद्यपि उन्होंने कई बार लड़के को सावधान किया था कि इमिडियेट बॉस के साथ जैसे भी हो मधुर संबंध रखने पड़ेंगे। जो आदमी अपने घर से ही प्यार न करता हो वह दुनिया को क्या प्यार करेगा? पर जितना भी हो, सम्पर्क तो भय का था। इमिडियेट बॉस से झगड़ा कर दुनिया में कभी कोई आदमी नहीं जीत पाया।

दीननाथ जब घर पर आये थे तब वह भी एक देखने वाला दृश्य था। सारा घर निष्प्राण पाषाणवत् हो गया था। बायें हाथ की बैंडेज ठीक करके दीननाथ ने अचानक झुककर हरिसाधन के पैर छू लिये थे। बस, बरफ गल गई थी। आँखों के कोनों से आँसुओं की धारा बह चली थी।

फिर हरिसाधन व्यस्त हो उठे थे। सामने खड़ी लड़की को चाय बनाने को कहा था।

उसके बाद ही सागरिका से साक्षात् हुआ था। वह भी एक पीड़ादायक दृश्य था। सागरिका शायद तभी नींद से जगकर चुपचाप लेटी हुई थी। बिस्तर पर लेटे-लेटे ही काफी देर तक वह दीननाथ को देखती रही थी। फिर बातचीत का और कोई सूत्र न पाकर अत्यन्त विनीत स्वर में अतिथि ने कहा था, "मैं दीननाथ वसुमल्लिक हूँ।"

साथ-साथ विस्फोट हुआ था। आहत बाघिनी की तरह उछल कर खड़ी हो गई थी कुमकुम और चिल्लाकर बोली थी, "निकल जाओ, निकल जाओ यहाँ से! मेरे कमरे में किसने घुसने दिया तुम्हें?"

एकदम से अचानक हुए हमले से ठगे से रह गये थे मिस्टर वसुमल्लिक और निःशब्द कमरे से निकल आये थे। हरिसाधन को भी सब कुछ सुनाई दिया था। बरान्डे में दीननाथ का हाथ पकड़कर उन्होंने दबे स्वर में कहा था, "बुरा मत मानियेगा। आप तो समझ सकते हैं।" दीननाथ का मुँह ज़रा तमतमा उठा था। हरिसाधन बोले थे, "यहाँ बैठिये। मैं बिल्कुल असहाय हो गया हूँ—दो क्वाँरी लड़कियाँ हैं घर में और यह विधवा बहू!"

फिर हरिसाधन ने रसोई की ओर मुँह घुमाकर जरा जोर से लड़की से कहा था, "अरी, चाय ले आ !" अजन्ता शायद चाय ला ही रही थी। लेकिन अचानक सारिका कमरे से निकल कर जल्दी-जल्दी आई और बोली, "आप अभी तक बैठे हैं ? निकल जाइये ! निकल जाइये ! और इस घर में फिर कभी पैर मत रखियेगा।" इतना कहकर कुमकुम पीछे की ओर भागी तो अजन्ता से टकराई थी। झनझन करते हुए कप-प्लेट जमीन पर गिरकर चूर-चूर हो गये थे।

बड़ा ही अप्रिय परिवेश हो गया था। अजन्ता भाभी को उठाकर किसी तरह अन्दर ले गई थी और असहाय, किंकर्त्तव्यविमूढ़ हरिसाधन दीननाथ के मुँह की ओर देखकर गिड़गिड़ा पड़े थे, "दया करके बुरा मत मानियेगा। आप ही बताइये मैं क्या करूँ !"

दीननाथ वसुमल्लिक जैसे सब समझकर कुछ देर बैठे रहे, फिर बोले थे, "ही वाज ए फाइन ब्वाय। घर के हर व्यक्ति के लिये चिन्तित रहता था वह।"

तदुपरान्त स्थिति सँभालने के लिये पीताम्बर मिस्टर वसुमल्लिक को लेकर घर से निकल गये थे। सड़क पर आकर काफी देर तक उनसे बातें करते रहे थे।

उन्होंने कहा था, "मिस्टर वसुमल्लिक, बुरा मत मानियेगा।"

सिगार मुँह में लगाकर दीननाथ ने कहा था, "ए० आर० सी० मुझे सच-मुच बहुत पसन्द था। ऑफ आल माई फील्ड ब्वायेज उसी से सबसे अधिक सँभावनाएँ थीं मुझे।"

बाँया हाथ बँधा होने के कारण सिगार पीताम्बर ने ही जला दिया था, जबकि साठ वर्षीय पीताम्बर दीननाथ से अन्ततः बीस वर्ष बड़े होंगे।

अंत में उस दिन की घटना का थोड़ा विवरण उसी समय सुना था पीताम्बर ने। गौतम को जब अस्पताल ले जाया गया था, उससे पहले ही मर चुका था वह। उसकी अन्तिम बात जो दीननाथ के कानों में गई थी, उससे पिता और पत्नी के सम्बन्ध में उसका उद्वेग फूटा पड़ रहा था।

दायित्व बोध सम्पन्न, गृहस्थी से संलग्न व्यक्ति ऐसे ही तो होते हैं। गौतम जैसे लड़के से और क्या प्रत्याशा की जा सकती है।

पर वह बीयर की बोतलें ? मादकता दुर्घटना का कारण होती है यह वह भी जानते हैं, जिनके पास गाड़ी नहीं होती। बीयर की बोतलें पीताम्बर की बेचैनी का कारण बन गई थीं। किन्तु बड़े-बड़े आफिसों में आजकल शायद यही नियम

है। ह्विस्की, जिन, बीयर के बिना कोई अफसर रह ही नहीं सकता। सामान्य बात है यह। फिर भाग्य भी तो कोई चीज़ है, नहीं तो जिसकी पत्नी ने काफी का फ्लास्क अपने हाथ से गाड़ी में रक्खा था, उसकी गाड़ी में दो-तीन सौ मील जाकर बीयर की खाली और भरी बोतलें कहाँ से आ गईं ?

परन्तु यह सब बातें दीननाथ वसुमल्लिक से पूछने में कोई लाभ नहीं था। बेचारे और इम्बैरेस हो जाते।

यह सब कई सप्ताह पहले की बातें थीं। हरिसाधन डर गये थे कि दीननाथ वसुमल्लिक के साथ इस घर में जो व्यवहार हुआ है, उसे वह कभी नहीं भूलेंगे। कुछ न कुछ नुकसान अवश्य होगा।

बोले थे, "पीताम्बर, एकमात्र तुम्हीं कर सकते हो। बहू से कहो, जो होना था वह हो ही गया। अब और क्षति तो न हो।"

एक दिन मौका देखकर पीताम्बर ने सागरिका के सामने बात छेड़ी थी। कैसी व्यंगभरी मुस्कान उसके ओठों पर आ गई थी! "क्षति ? मेरी और क्या क्षति होगी, काकू ?"

इस उम्र में जिस लड़की की माँग का सिंदूर पुँछ गया हो, सचमुच उसका और क्या नुकसान हो सकता था ? अब उसे विनय का व्याकरण पढ़कर दुनिया में चलने की क्या जरूरत थी ? विशेषकर उस दीननाथ वसुमल्लिक की खातिर करने की क्या जरूरत थी ?

कुमकुम ने सीधे-सीधे कहा था, "अगर मैं दीननाथ वसुमल्लिक से भी हँस-हँस कर बात करूँ तो वह ऊपर से क्या समझेगा काका बाबू ? मेरे पति के जीवन में जहर घोल दिया था उसने। जानते हैं, मेरे प्रोग्राम के दिन उसके छुट्टी लेकर घर पर रहने की बात थी ? बिना बात क्यों घर से ले गया उसे वह ? वह तो जाना नहीं चाहता था।" और इतना कहते ही फूट-फूट कर रोने लगी थी कुमकुम।

घूम फिर कर बस वही एक बात आ जाती थी—"वह तो जाना नहीं चाहता था।" बड़े असमंजस में पड़ जाते थे पीताम्बर। कभी-कभी तो लगता था कि विधवा कुमकुम गौतम के केवल उस दिन सुबह ड्यूटी पर जाने की बात कह रही थी और कभी ऐसा प्रतीत होता था कि वह संसार का अनन्त सत्य उद्घाटित कर रही थी—कोई नहीं जाना चाहता। कोई प्रस्तुत नहीं होता छोड़ने के लिये। पर तब भी जाना पड़ता है। नहीं जाऊँगा और जाने नहीं दूँगा का अस्थिर आवेदन अग्राह्य करके ही मनुष्य को जाना पड़ता है।

इस घर में जब तक कदम नहीं रखते तब-तक जरा शांत रहते हैं पीताम्बर। पर अन्दर पैर रखते ही नाना विक्षिप्त छवियाँ मन के हर कोने से झाँकना शुरू कर देती हैं। पीताम्बर मन ही मन हरिसाधन की प्रशंसा करते हैं। वह इस तरह खड़े हो जायेंगे, अपने को सँभाल लेंगे, इसकी कल्पना भी नहीं थी उन्हें।

बहुत दिन पहले यहीं बैठ कर पीताम्बर ने अखबार में एक मृत्युपथ-गामी सैनिक के अंतिम शब्द पढ़े थे—"इफ एनीथिंग हैपेन्स स्टार्ट अ न्यू।" अगर कुछ हो जाये तो फिर से नये रूप से शुरू करने का आह्वान। पीताम्बर सोच रहे थे, पश्चिम के लोग ही अपनी असीम, अदम्य इच्छाशक्ति से पुरातन के ध्वंसावशेष पर नया महल खड़ा करने का दुर्जय संकल्प प्रकट कर सकते हैं। हम बंगाली, इस क्षीर्ण व दुर्बल शरीर से अपनी समस्त दुविधाओं और व्यर्थता का विसर्जन कर सकते हैं क्या?

आहा, होने को तो एक साधारण सैनिक था, परन्तु कैसी अपरूप वाणी थी! इस देश में तो एकमात्र संन्यासी विवेकानन्द अथवा सैनिक सुभाषचन्द्र के मुँह से ही निकल सकती है कि अगर कुछ हो जाये तो फिर से शुरू करो।

तब इस अभागी गृहस्थी में आँसू नहीं रह जायेंगे। जिनको आज ही से पुनः शुरू करना होगा, उन्हें आँसू बहाने का समय ही कहाँ मिलेगा?

"पीताम्बर", हरिसाधन पुकार रहे थे। "यह लो, आज चाय मैंने ही बनाई है। अजन्ता सुसराल चली गई और एलोरा गाना सीखने गई है। बहू तो रात-दिन कमरे में ही चुपचाप बैठी-लेटी रहती है।"

चाय का कप हाथ में लेकर पीताम्बर बोले, "यह क्या कह रहे हो?"

"कभी-कभी तो डर लगता है। इस तरह बन्दी बने रहने से शरीर तो घुलेगा ही—पर कहीं मन को भी कुछ न हो जाये।"

"तुम कुछ कहते नहीं?" चिंता प्रकट की पीताम्बर ने।

"क्या कहूँ, समझ में ही नहीं आता। मैंने तो अपनी तरफ से पूरी स्वाधीनता दे रखी है बहू को। रंगीन साड़ी पहनने, मांस-मछली, अंडा-प्याज सब कुछ खाने के लिये अपने सर की कसम भी दी।"

परन्तु यह साफ दिखाई देता है कि उसका कोई असर नहीं हुआ। पीताम्बर जानते हैं कि घर में अभी भी मछली नहीं आती।

आश्वासन देते हुए पीताम्बर बोले, "उस दिन गौतम अपनी इच्छा के विरुद्ध गाड़ी लेकर गया था, बस एक यही बात नहीं भूल पा रही कुमकुम।

चिंता मत करो हरिसाधन, सब ठीक हो जायेगा। समय की चिकित्सा से एक दिन सारे घाव भरेंगे ही !"

परन्तु पीताम्बर समझ पा रहे थे कि हरिसाधन बहुत परेशान थे। इकलौते लड़के का शोक हृदय में छुपाये रखकर भी तो वह उठ खड़े हुए थे। एक लड़की का विवाह भी किया था।

"पीताम्बर, तुम्हारा क्या ख्याल है ? मैंने सुना है कि गौतम के आफिस में एक नौकरी का चांस है। मिस्टर वसुमल्लिक के स्पेशल अनुरोध पर बड़े साहब राजी हो गये हैं। आदमी को महानुभाव कहा जा सकता है, उस दिन के दुर्व्यवहार का बुरा नहीं माना।"

"नौकरी ! यह तो बड़ी अच्छी बात है।" पीताम्बर सोच रहे थे इस परिस्थिति में कुमकुम आफिस ज्वायन कर ले तो अच्छा करेगी। बाह्य जगत् से नियमित योगायोग बहुत आवश्यक है उसके लिये। गाना तो उसने छोड़ ही दिया। आकाशवाणी के आफिस से एक प्रोग्राम की चिट्ठी आई थी, उसे टुकड़े-टुकड़े करके फाड़कर फेंक दिया था।

"बहू के सामने बात तुम ही उठाओगे ना ?" मित्र से सहायता की प्रार्थना की हरिसाधन ने।

"तुम फिक्र मत करो, किसी वक्त आऊँगा," पीताम्बर ने मित्र को आश्वासन दिया।



कुमकुम का दोपहर बाद का वक्त जैसे बीतना ही नहीं चाहता। ससुर दस बजे के थोड़ी देर बाद ही घर से जाते हैं। छाता उठा कर निकलने से पहले बहुत देर तक भगवान् की तस्वीर के सामने खड़े रह कर प्रणाम करते हैं, फिर कहते हैं, "अच्छा चलता हूँ बहू।"

पहले कुमकुम को भी भगवान् को नमस्कार करने में बहुत समय लगता था। लेकिन अब यह सब छोड़ दिया है। भगवान् से माँगने को अब कुछ रह ही नहीं गया। ससुर और गौतम को अजन्ता के विवाह के लिये पैसे की बहुत चिंता थी। वह समस्या भी कितनी आसानी से हल हो गई। माँग में सिन्दूर भर कर अजन्ता ससुराल चली गई। एलोरा सदा से ही कम बोलती है। उसी की चिंता है ससुर को। उसके विवाह में खर्च करने लायक रुपया ३ में नहीं है।

एलोरा लिखने-पढ़ने में भी उतनी अच्छी नहीं है, इसलिये ससुर ने अब उसे टेलरिंग स्कूल में भी भर्ती कर दिया है। तीन बजे के करीब घर से निकल जाती है वह। तब कुमकुम अकेली रह जाती है घर में। घड़ी की सुई तब जैसे अटक कर रह जाती है, समय बीतना ही नहीं चाहता। तब शादी के बाद खींची गई ड्रेसिंग टेबिल पर रखी गौतम की तस्वीर ही एकमात्र संबल रह जाती है। अपने में डूबी उस तस्वीर की ओर टकटकी लगाये रहती है वह। बहुत से प्रश्न पूछने की आवश्यकता आ पड़ती है, पर वह केवल देखती रहती है।

इस तरह देखते-देखते काफी देर बाद कुमकुम का सर घूमने लगता है। तब आँखों के सामने एक निर्दय ब्लैक एंड ह्वाइट चलचित्र शुरू हो जाता है।

लेटे-लेटे उसे मन के वीडियो पर अपना गाना सुनाई देने लगता है। वह देखती है, गौतम ने उस भोर वेला में उसे निविड़ आलिंगन में बाँध रक्खा है। बिस्तर छोड़ कर कहीं भी जाने की इच्छा नहीं है उसकी। उसी बिस्तर पर कुमकुम की बगल में लेटे-लेटे वह उसका आकाशवाणी प्रोग्राम सुनना चाहता है। लेकिन यह तो होने वाला नहीं है, नहीं तो दीननाथ बसुमल्लिक जैसे आदमी धरती पर जन्म क्यों लेते ?

एक मधुर चुम्बन अंकित कर रहा है गौतम। उस अंतिम चुम्बन की प्रत्येक अनुभूति शरीर में जाने कहाँ रिकार्ड हो गई है। इच्छा करते ही उसकी पुनरावृत्ति अनुभव कर सकती है कुमकुम। बस, कमरे में अँधेरा होना चाहिये और आँखें बंद करने की देर होती है, बस। फिर कुछ देर के लिये स्मृति सत्य हो जाती है—दो बलिष्ठ हाथ उसे पास खींचना शुरू कर देते हैं। उसके वक्ष की उपत्यकाओं के कानून का उल्लंघन करके एक हाथ अन्दर प्रवेश करता है और दूसरा हाथ पीछे से पास खींचता है। और फिर दो ओठों का वह अवश्यम्भावी संघर्ष, संघर्ष से ही समर्पण—

हृदय के टेपरिकार्डर ने इसके बाद और कुछ ग्रहण नहीं किया—निष्फल टेप घूमता रहता है, हालाँकि शरीर की सिहरन, आकांक्षा पूरी नहीं हुई। परन्तु शत चेष्टा करने पर भी कुमकुम परवर्ती अभिज्ञता पर नहीं पहुँच पा रही। इसके बाद वह कहाँ पहुँचना चाहती है वह किसी से छुपा नहीं है। शरीर की सारी इन्द्रियाँ उस मधुर परम क्षण के लिये उद्ग्रीव हो उठती हैं, पर हृदय का टेप निष्फल घूमता रहता है।

देह और मन की इस अटिल अवस्था में उठ बैठने का प्रयत्न करती है

कुमकुम। बैठते ही आँखों को बंगाल के गाँवों को पीछे छोड़ती तेजी से भागती आलिवग्रीन गाड़ी दिखाई देती है।

बैठे-बैठे पिक्चर देखती रहती है वह। मन के सफेद पर्दे पर एक काली तस्वीर एकमात्र दर्शक की इच्छा-अनिच्छा की परवाह न करके अनिवार्य की ओर लापरवाही से दौड़ती रहती है। गाड़ी का स्टीयरिंग गौतम के हाथों में है, पास ही मूर्तिमान अभिशाप वह दीननाथ वसुमल्लिक बैठे हैं।

सुबह से कितना ही रास्ता नाप आया है कुमकुम का पति। ड्राइवरी में उसकी तुलना नहीं है। गौतम के चरित्र में कहीं कोई कमी नहीं है—हर ओर उसकी पैनी नजर रहती है, जब वह गाड़ी चलाता है तो कैसे भी जरा भी अन्यमनस्क नहीं होता। कार ड्राइविंग इज कार ड्राइविंग—उस समय मन में दूसरे काम निपटाने की बात सोचने से तो नहीं चलेगा। वह जानता है कि सड़क के दोनों ओर विपदाएँ ताक लगाये बैठी रहती हैं, मौका देखकर जाने कब झपट पड़ें कोई नहीं जानता।

कुमकुम के कानों में साजों की आवाज आती है। आवाज पहचानी सी लगती है, रेडियो प्रोग्राम के समय रेडियो पर यही सुर तो बजे थे। तो क्या बारह चालीस हो गये? गौतम ने क्या गाड़ी में रक्खा टू इन वन ट्रांजिस्टर ऑन कर दिया?

गीत के बोल क्रमशः स्पष्ट हो गये। पर सीट के पीछे रक्खी वह बोतलें किस चीज की हैं? अचानक बियर की दुर्गंध से कमरा भर गया। नाक पर कपड़ा रखना पड़ेगा कुमकुम को। बीयर कहाँ से आई? उस दीननाथ के पल्ले पड़कर क्या गौतम ने बीयर पी थी? पर वह तो बीयर नहीं पीता!

'प्लीज, गौतम, तुम वह बोतलें खिड़की से बाहर फेंक दो—प्लीज! प्लीज यह सब तुम मत पियो।'

पर गाने की आवाज तेज हो रही थी। लगता है गौतम ने उस दीननाथ को बताया नहीं कि उसने रेडियो क्यों खोला है। दीननाथ वसुमल्लिक को क्या बेचैनी हो रही है? अचानक क्या कहा उन्होंने? स्टाप! यह रबिश रवीन्द्र संगीत सुनकर हमारी मार्केटिंग पर कोई लाभ नहीं होगा। इस स्टाप का आर्डर पाकर ही क्या गौतम का सिर घूम गया? पागल की तरह वह गाड़ी की स्पीड बढ़ाता जा रहा है? फिर सामने एक बकरी देखकर अचानक मुड़ाने के ओर गाड़ी लाते ही स्टीयरिंग से पकड़ छूट गई। अब गाड़ी तीर सामने के विराट् वृक्ष की ओर भागी जा रही थी। भीषण धमाका.

होने जा रहा है और वह चीख उठा—'बाबूजी ! कुमकुम ! मिस्टर मल्लिक, मेरे ऊपर अभी बहुत जिम्मेदारी है।"

गौतम ! ब्रेक लगाओ ! चीख पड़ी कुमकुम। ब्लैक-एंड-व्हाइट पिक्चर चरम नाटकीय विपादसिंधु में छलांग लगाने जा रही थी।

दुर्घटना के अनेकों विवरण, टुकड़े-टुकड़े दृश्य अब तक लोगों के मुंह से प्रचारित हो रहे थे। घूम-फिर कर उसका थोड़ा-सा अंश अठारह हलधर हालदार लेन में भी आ पहुँचा था—कुमकुम को यह सब न बताने का प्रयत्न करने पर भी जो कुछ कानों तक पहुँचा था उसी से यह तस्वीर बन गई थी।

गाड़ी जाकर उस विशाल वृक्ष से टकरा गई थी। ब्रेक लगाने पर भी उसे रोका नहीं जा सका। तकदीर अच्छी थी कि मिस्टर वसुमल्लिक को सांघातिक चोट नहीं आई थी।

दुर्घटना के बाद बहुत देर तक वहीं पड़े रहना पड़ा था। फिर उस निर्जन जगह से निकलकर काफी दूर पैदल चलकर गाँववालों को खबर दी थी। फिर बहुत देर बाद हाईवे से एक लारी तंग रास्ते पर लाकर गौतम को हेल्थ सेन्टर पहुँचाया जा सका था।

नहीं, इसके बाद का दृश्य नहीं देखना चाहती कुमकुम। किन्तु आँखें बंद करने पर भी पलकों के भीतर चलचित्र चलता रहता है।

गौतम का वह मुख, जिसे कुमकुम ने प्रातः स्वयं अपने हाथों की उपरय-काओं के बीच खींच लिया था, क्षत-विक्षत होकर बदशक्ल हो गया था। वह मुंह, वह आँखें, वह नाक, वह ओंठ इतने भयंकर कैसे हो गये थे ? सारा मुंह देखना पड़ता है उसे। विशेषकर बायाँ हिस्सा तो बहुत ही वीभत्स हो गया था—

अब पिक्चर खत्म हो जाये। बहुत हो गया, अब नहीं। जरूरत पड़ी तो कमरे से भाग जायेगी कुमकुम। बाँयी ओर का चेहरा तो जैसे फूल कर विकृत हो गया है। अंधेरे में बाहर निकलने का रास्ता ढूँढ़ती फिर रही है असहाय कुमकुम, पर बैंडेज बाँधे एक आदमी उसका रास्ते रोकने को भागा आ रहा है।

पास आने पर आदमी को पहचान गई है कुमकुम। अभागा, पाजी दीननाथ वसुमल्लिक था।

यही आदमी तो हुक्म देकर गौतम को घर से खींच ले गया था। आदमी हैंडसम था, पर अब जरा भी हैंडसम नहीं था ! इसके भी बायीं ओर ही प्लास्टर, बैंडेज और चोटें। आहा, बेचारा यह भी मौत के मुंह से लौटकर आया है। ड्राइवर गौतम के गलत जजमेंट के कारण इस आदमी का भी बायाँ हिस्सा क्षत-विक्षत हो गया है।

नहीं, इस आदमी के लिये जरा भी दया-माया की जरूरत नहीं है। गौतम के मन में इसके जोर-जोर से घूंसे लगाने की इच्छा तो थी ही। दो-चार इन्जरी हो भी गईं तो क्या हुआ ? सारा मुंह और भी सूज जाता तो कोई नुकसान नहीं होता। बल्कि बायीं ओर की तरह अगर दाहिना हिस्सा भी अगर थोड़ा फूल जाता तो बैलेंस हो जाता।

दरवाजे का कुंडा बज रहा था। 'बहू, बहू'—जाने कौन बाहर आवाज लगा रहा था। तो क्या आफिस का टाइम खत्म हो गया ? हड़बड़ा कर उठ बैठी कुमकुम।

"काका बाबू, आप !" कुमकुम ने देखा छाता बगल में दबाये पसीने में तर-बतर पीताम्बर काका दरवाजे पर खड़े थे।

पिता रहे नहीं थे। दुनिया में बस एक इसी व्यक्ति पर निर्भर कर सकती थी कुमकुम।

"आफिस से पैदल सीधा यहीं चला आया, बेटी। तुम्हारे पिता के दिये एक्सटेंशन ने ही इस बूढ़े को जिला रखा है," स्नेहसिक्त स्वर में पीताम्बर ने कहा।

"बहुत अच्छा किया। जब भी जी चाहे आ जाया करिये, यह भी तो आपका घर है।" यह कहकर कुमकुम पीताम्बर को अंदर ले आई।

"सैंतीस साल से हलधर हालदार लेन के इस घर में आ रहा हूं बेटी। कब इस घर से जुड़ गया खुद ही नहीं समझ पाता।" स्मृति के भार से पीताम्बर की आंखें छलछला आईं।

एक ग्लास ठंडा पानी ले आई कुमकुम। गौतम ने ही सिखाया था कि पथ-श्रान्त अतिथि के आने पर सबसे पहले पानी पिलाना चाहिये।

पानी पीकर पीताम्बर बोले, "रिक्शेवालों ने किराये इतने बढ़ा दिये हैं कि बिल्कुल ही मजबूर हुए बिना बैठने की तबियत ही नहीं होती। और इसके अलावा बुड्ढे शरीर से जितना परिश्रम करा लिया जाये उतना ही अच्छा है।"

इसके बाद बोले, "सुनो बेटी, तुम्हारे पिता नहीं हैं, अब मुझे ही अपने पीहर का आदमी समझना। कभी संकोच मत करना। तुम्हारे ससुर हरि-साधन ने भी बड़ी आशाओं से लड़के को पालपोस कर बड़ा किया था, काबिल बनाया था। बुढ़ापे में बैंक फेल हो जाने पर जो दशा होती है, वही उस बेचारे की हो गई है।"

"मैं तो जहां-जहां वह कहते हैं साइन कर देती हूं, पढ़ती भी

खराब पिक्चर से मुक्ति पाकर मुक्ति का आनन्द अनुभव कर रही थी कुमकुम।

पीताम्बर बोले, "सुनो बेटी, तुम्हें लेकर भी हरिसाधन दिन-रात चिन्तित रहते हैं। एक सुनहरा मौका आया है। गौतम के आफिस में एक छोटा-मोटा काम है, करोगी ?"

"दया की नौकरी !"

"दया क्यों ? दावी भी तो कह सकती हो। शुरू के कुछ महीने कोई रोक-टोक नहीं होगी, जब जी चाहे आना और जब चाहो चली आना। फिर दोनों पक्षों की इच्छानुसार काम होगा—तुम्हें अच्छा लगे तो करना और उन्हें अच्छा लगा तो रखेंगे।"

"आप कह क्या रहे हैं काका बाबू ?" अमिताभ रायचौधरी की पत्नी कम्पैशनेट ग्राउंड पर क्लर्क बनी है यह सोच ही नहीं पाती कुमकुम।

"मैं तो समझता हूँ कि एक बहुत अच्छा सुयोग है यह। अपना पावना लेने के लिये भी तो उत्तराधिकारी को जाने कितनी बार आफिस जाना पड़ता है।"

"लेकिन उस दीननाथ वसुमल्लिक के अंडर में मैं मरकर भी काम नहीं करूँगी।" फुफकार उठी कुमकुम।

"वह तो मार्केटिंग का आदमी है और तुम अकाउन्ट्स में रहोगी। तुम चिंता क्यों करती हो ?" अच्छा था कि पीताम्बर को पता था कि उसकी नियुक्ति कहाँ होगी।

शांत होती जा रही थी कुमकुम। पीताम्बर बोले, "जानती हो बेटी, यह मौका हमेशा नहीं मिलेगा। अभी तो उनके मन में दुख है, ऑफर दे रहे हैं, दो दिन बाद शायद कुछ न करना चाहें। तब ?"

कुमकुम का मनोभाव समझे बिना ही पीताम्बर बोले, "तुम्हें भी कोई तक-लीफ नहीं पहुँचायेगा। तुम अपनी इच्छानुसार काम करना।"

● ●

एक दिन आफिस चली ही गई सागरिका। लीव वैकेन्सी की पोस्ट थी। पर इसी प्रकार दो-चार कैजुअल काम करते-करते कम्पनी के सदाशय मालिकों ने रास्ता निकाल ही लिया।

उफ, सोचा भी नहीं जा सकता ! मृत्यु का हनीमून पीरियड इसे ही कहते हैं। ससुर को नौकरी मिल गई, इन्श्योरेंस का डबल रुपया मिल गया। अभी कुछ महीनों तक गौतम की तनख्वाह भी पूरी आयेगी, अजन्ता का विवाह हो

गया, आफिस में पूरी ताकत से मुआवजे की रकम के कागज तैयार हो रहे हैं, जो बम्बई चले जायेंगे। एकमुश्त रकम तो मिलेगी ही, साथ ही वैधव्य की पेन्शन भी मिल सकती है। और यह जानते हुए भी कि अमिताभ राय चौधरी ने दिन-दहाड़े स्वयं साठ किलोमीटर की स्पीड से एक वटवृक्ष से कार भिड़ा दी, यह सब मिल रहा है।""एंड गाड़ी में कई बीयर की बोतलें थीं यह खबर मिलने के बाद भी आफिस में किसी को कहते हुए सुना गया था।

आफिस में पहले दिन तो हाथ पर हाथ रखे बैठी रही थी कुमकुम। सारे सहकर्मी बड़े दयालु हैं—किसी ने काम करने को नहीं कहा। बस, अमिताभ राय चौधरी की पत्नी को दूर से देखते रहे थे।

पीताम्बर ने सोचा था, आफिस की भीड़-भाड़ में सागरिका अपना दुख भूल जायेगी। दिन भर वह बुरा सपना नही देखेगी। और शायद मिस्टर वसु-मल्लिक के ऊपर उसके मन में जो गुस्सा है वह क्रमशः कम हो जायेगा। हरिसाधन और पीताम्बर दोनों ने जानबूझकर ही नही कहा था कि नौकरी मिस्टर वसुमल्लिक के प्रयत्नों से ही मिली थी। जीवित रह जाने पर वह भी केवल खुद को लेकर व्यस्त रह सकते थे, पर ऐसा किया नहीं।

दो दिन आफिस जाने के बाद ही अचानक कुमकुम को न जाने क्या हो गया कि मुँह गम्भीर बनाये घर लौटी।

दूसरे दिन हरिसाधन ने देखा कि बहू की आफिस जाने की कोई तैयारी नही थी।

"आफिस नहीं जाओगी, बहू ?" उन्होंने पूछा।

"उनका अगर खून किया गया है, तो मैं आफिस नहीं जाऊँगी," यह कह कर कुमकुम फूट-फूट कर रोने लगी।

क्या कह रही थी बहू ? जो लोग इतने दयालु हैं, इस तरह परम आत्मीयों की तरह पास खड़े रहे, जो करीब एक लाख रुपये दिलाने की चेष्टा कर रहे हैं, उन्हें खूनी कह रही है !

कोई नया प्रश्न करने की हिम्मत नही पड़ी हरिसाधन की। तन और मन दोनों पर ही जैसे उनका वश नही रह गया है। वह सोच रहे थे किसी तरह एलोरा भी पार लग जाये तो फिर इतनी चिंता नही रहेगी। दो आदमियों के लिये दो पेन्शन और दो नौकरियों का वेतन पूरा हो जायेगा। और क्षतिपूर्ति के मिले रुपयों में से एलोरा का विवाह करके जो बचेंगे वह देखभाल कर पोस्ट आफिस में बहू के नाम से जमा कर देंगे। नही होगा तो कुछ रुपया

बहू के नाम से एक फ्लैट खरीद लेंगे, और किराये पर चढ़ा देंगे। कितने ही लोग तो किराये पर गुजारा करते हैं।

अब उनकी समझ में आ रहा था कि बहू स्वाभाविक नहीं थी, कहीं कोई मानसिक गड़बड़ थी।

लेकिन सब कुछ सुनकर पीताम्बर ज्यादा चिन्तित नहीं हुए। बोले, "इस परिस्थिति में किसी का पूर्णतया स्वाभाविक रहना ही तो आश्चर्य की बात है, हरिसाधन।"

बड़ी सावधानी से पीताम्बर कुमकुम से मिलने गये। "कैसा कामकाज हो रहा है बहू ?"

बहू पिछले कुछ दिनों में जाने कैसी तो हो गई थी। चेहरे की स्निग्धता खोकर आँखें अग्निशिखा की तरह जल रही थी। बोली, "काम है ही कहाँ ? बस बिठा छोड़ा है, जिससे बिगड़ न जाऊँ !"

"काम देंगे बेटी। एक वक्त आयेगा जब देखोगी कि काम का इतना दबाव है कि साँस लेने की फुर्सत नहीं मिल रही। शुरू में तो काम-काज समझने में ही देर लगती है ना ?" पीताम्बर ने अपने कर्मजीवन की दीर्घ अभिज्ञता से कहा।

"उन लोगों ने उसका खून किया है, काकाबाबू।" यह कहकर फिर से रोने लगी कुमकुम। पीताम्बर ने सोचा, वह जो अमिताभ को अपनी इच्छा के विरुद्ध जाना पड़ा था, उसी बात ने कुमकुम के मन में और पक्की जड़ें जमा ली हैं।

उस बात को और न छेड़कर पीताम्बर ने कहा—"आज आफिस न जाकर ठीक ही किया। अगर जा सको तो कल चली जाना थोड़ी देर के लिये।"

अगले दिन पीताम्बर बाबू पोस्टआफिस में सर झुकाये काम कर रहे थे, इतने में कुमकुम को सामने देखकर अवाक् हो गये।

उद्विग्न होकर उन्होंने पूछा, "बहू ! तुम यहाँ ?"

हाँफ रही थी कुमकुम। बोली, "मैं किसी को बताये बिना ही आफिस से चली आई। जब सुना कि उस आदमी का आज से प्रमोशन हो गया है तो बैठा नहीं गया। खून करके भी कभी प्रमोशन होता है ?"

आफिस से छुट्टी लेकर उसके साथ निकल पड़े पीताम्बर। सोचा, इस लड़की को इस समय अकेला नहीं छोड़ा जा सकता।

जन बहुल कलकत्ते की सड़क पर चल रहे थे दोनों ? पीताम्बर ने पूछा,

"कुछ खाओगी बेटी ? चाय टोस्ट ?" सदाशिव मित्र मजूमदार की लड़की को लेकर इस तरह असहाय भाव से सड़क पर चलना पड़ेगा यह उन्होंने कभी सोचा था क्या ? कितने लाड़-प्यार में पली थी वह । हे ईश्वर, पृथ्वी की किसी भी लड़की को वैधव्य नहीं शोभता शायद ।

"आज मेरी एकादशी है काकाबाबू !" बड़े शान्तभाव से कहा सागरिका ने । औरतें कितनी सहजता से सब कुछ मान लेती हैं । पर क्यों मान लेती हैं ? पीताम्बर का मन विद्रोह कर उठा ।

"किसी के खून कर देने पर भी उसका प्रमोशन हो सकता है क्या काका-बाबू ? सोचते-सोचते भी जब उत्तर नहीं मिला तो सब छोड़छाड़कर आपके पास चली आई ।"

खून कह कर वह क्या समझाना चाहती है, उसका स्वयं ही अनुमान लगा लिया पीताम्बर ने । वही, इच्छा के विरुद्ध पति को घर से ले जाना ।

ऐसे समय चुप रहना ही ठीक होता है ।

"किसी के खून करने पर उसको सजा देना उचित नहीं है काकाबाबू ?" बड़ी अधीर हो उठी थी कुमकुम ।

"अवश्य !" इसके अलावा कह भी क्या सकते थे पीताम्बर ?

"गौतम ड्राइविंग बहुत अच्छी करता था । उसके लिए इस तरह·····", सागरिका ने जैसे स्वयं ही जुबान पर ब्रेक लगा लिया ।

"दुर्घटना·····भवितव्य" यह कब कैसे आते हैं कोई नहीं जानता । हमारे बचपन के मित्र श्रीपति, रेडियो आफिस से निकलते ही एकदम से गाड़ी पलट जाने से चला गया । हमारे आफिस के रमेशबाबू का साला ड्राइव करके आ रहा था कि अचानक एक लारी·····"

"काकाबाबू, आपने उसकी गाड़ी देखी थी ?" पीताम्बर की बात बीच में ही काटकर सागरिका ने पूछा ।

"देखी थी बेटी !"

"मुझे क्यों नहीं दिखाई ?" कातरोक्ति की कुमकुम ने ।

"वह सब देखकर क्या लाभ होता बेटी ? जो होना था वह तो एक दिन हठात्·····"

"काकाबाबू, उसे अगर मार डाला गया हो तो····?"

पीताम्बर समझ गये कि कुमकुम प्रकृतिस्थ नहीं थी । उसका मन किसी कारणवश संदेह की अंधेरी गलियों में विचरण कर रहा था ।

"आफिस का एक आदमी कभी दूसरे को मारता है?" वह जानते थे कि उनके उत्तर की प्रत्याशा कर रही थी कुमकुम।

"आपने गाड़ी किस हालत में देखी थी, काकाबाबू?"

"सामने का हिस्सा बिल्कुल अन्दर धँस गया था।" न चाहते हुए भी कहना पड़ा पीताम्बर को।

"सामने की कौन-सी साइड?" आज कुमकुम को हो क्या गया था?

"शायद बायीं ओर का ज्यादा चकनाचूर हुआ था", सड़क पर चलते-चलते पीताम्बर ने कहा।

फिर पूछा, "तुम अभी आफिस जाओगी या घर?"

"मैंने खुसफुस सुनी है। मेरे पति को मार डाला गया है। मैं बल्कि आफिस ही लौट जाती हूँ। मेरे हाथ में अभी बहुत काम है।" पीताम्बर भयभीत हो गये कि लड़की कहीं पागल न हो जाये।

कुमकुम के आफिस जाकर पीताम्बर ने उसे उसके डिपार्टमेन्ट में छोड़ दिया। वह अपनी कुर्सी पर बैठ गई। पूरा आफिस एयरकंडीशन्ड था। सोचा कि यहाँ की ठंडक से मिजाज ठंडा हो जायेगा।

तीन मंजिल के अकाउन्ट्स डिपार्टमेंट से पीताम्बर पहली मंजिल पर मार्केटिंग विभाग में आ तो गये पर उस तरह कुमकुम को अकेली छोड़ आने में डर भी लग रहा था।

जाने क्या सोचकर पीताम्बर दीननाथ बसुमल्लिक के कमरे में चले गये। दीननाथ तुरत पहचान गये उनको। उनकी पट्टियाँ उतर गई थीं। गाल का घाव भी पहले से अच्छा था, धीरे-धीरे भर रहा था।

इसी आदमी ने आँखों के सामने मौत देखी थी। दुर्घटना ने इसे भी शॉक पहुँचाया था। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो किसी भी तरह के आघात से उबर कर फिर से सीधे खड़े हो जाते हैं।

दीननाथ बसुमल्लिक फिर से कम्पनी के बिजनेस में तनमन से लग गये थे।

कैसे हैं इस प्रश्न के उत्तर में दीननाथ ने कहा, "इन कुछ सप्ताहों में वर्धमान-आसनसोल मार्केट में हमारी बिक्री थोड़ी कम हो गई थी। पर विगत तीन दिन फिर घूमकर कोशिश करने से लाभ हुआ है। आप तो जानते ही हैं कि हमारी कम्पनी के प्रोडक्ट, कर्मचारी, प्राइसिंग सब कुछ टॉप पर हैं, किसी की भी तुलना में हम सेकेंड नहीं हैं।"

"आप यहाँ कैसे?" बसुमल्लिक ने पूछा। "पूरी खबर रखता हूँ मैं।

रायचौधरी की फाइल विथ वेरी गुड रिकमेन्डेशन के साथ बम्बई जा रही है। जब तक मैं हूँ, कोई काम मेरी नजरों की आड़ में नहीं होगा।"

चुप बैठे रहे पीताम्बर। वसुमल्लिक सिगार जलाकर बोले, "यह क्षतिपूर्ति और विधवा पेन्शन—इसका हिसाब जरा जटिल है। यद्यपि काम के समय दुर्घटना हुई है, लेकिन कम्पनी का कोई नैतिक दायित्व नहीं है। आफ्टर आल, सैकड़ों कामों से बहुत से लोगों को बाहर भेजा जाता है—अगर रास्ते में कुछ हो जाये तो कम्पनी क्या कर सकती है? अगर कम्पनी की कोई गलती न हो तो।"

विस्मय के साथ सुन रहे थे पीताम्बर। उनकी कैंटीन के मैनेजर उस बार चिकेन खरीदने गये थे तो गाड़ी के नीचे आकर मर गये थे। कुछ भी नहीं हुआ था—बस, उस महीने की तनख्वाह उनके घर भेज दी गई थी। पीताम्बर जानते थे कि जो लोग भी काम के लिये घर से बाहर निकलते थे, वह अपनी जिम्मेदारी पर ही निकलते थे। शरीर ही तो परिश्रम करके खाने वाले का कैपीटल होता है। शरीर का रिस्क लेने के लिये ही तो वेतन मिलता है।

अनजाने में बाँयें गाल के क्षतस्थान को हाथ से सहलाते हुए दीननाथ बोले, "वह जो क्षतिपूर्ति के हिसाब के बारे में कह रहा था। अमिताभ की उम्र छब्बीस साल थी, हिसाब लगा कर देखा गया कि साठ साल की उम्र तक वह कितना कमाता। उससे साधारणतः तो आधा ले लिया जाता है—क्योंकि कमाई का फिफ्टी परसेंट ही अपने ऊपर खर्च करने का नियम है। पर मैंने नोट लिखा है कि अमिताभ का केस स्पेशल है। वह कभी भी आधा वेतन अपने ऊपर खर्च नहीं करता था। घर पर पत्नी के अलावा पिता और दो अनूढ़ा बहनें हैं। कलकत्ते के लड़के कभी भी अपने ऊपर वेतन के चतुर्थ भाग से ज्यादा खर्च नहीं करते। जानते हैं, यहाँ के अकाउन्टेन्ट मिस्टर रामभद्रन वह फिफ्टी परसेन्ट वाला फारमूला कैसे भी नहीं छोड़ेंगे, अभी भी झगड़ा चल रहा है। पर हमारे मिस्टर कैलि साहिड़ी बहुत सिम्पेथेटिक हैं, मुझसे एक सर्वे रिपोर्ट माँगी है, मैंने आज ही दी है।"

पीताम्बर बोले, "बड़ी मुश्किल में पड़ गये हैं हम लोग। अमिताभ के पिता, अर्थात् मेरे मित्र हरिसाधन, वह तो शोक से उबर गये हैं, उन्होंने तो भवितव्य को मान लिया है।"

आगे की बात सुनने के लिये वसुमल्लिक पीताम्बर के चेहरे पर दृष्टि गड़ाये हुए थे।

"आपकी पदोन्नति की खबर भी मिली है—हम सबको बहुत ही खुशी हुई है।"

"आप पहले जो कह रहे थे''''", छिन्न सूत्र पकड़ाया वसुमल्लिक ने।

पीताम्बर बोले, "मुश्किल हो रही है मिस्टर वसुमल्लिक, उस सारिका को लेकर। जाने कैसे उसकी धारणा बन गई है कि उसके पति का खून हुआ है। अभिराम की मृत्यु के जिम्मेदार आप ही हैं।"

अचानक पीताम्बर ने देखा कि मिस्टर वसुमल्लिक के मुँह पर जैसे किसी ने कालिख पोत दी हो। मुँह से सिगार निकाल कर राखदानी पर रख दिया उन्होंने।

"बुरा मत मानियेगा। सद्यविधवा की बेवकूफी समझ कर माफ कर दीजियेगा। आपके कोशिश किये बिना उनकी आर्थिक हालत बहुत ही बिगड़ जायेगी।" करुण आवेदन किया पीताम्बर ने।

"क्या कह रही हैं वह ?" पीताम्बर के मुँह की ओर देखा मिस्टर वसुमल्लिक ने।

"कुछ दिन आफिस आने के बाद ही मामला बढ़ गया। बस, यही कहती है कि मेरा पति ऐसा एक्सीडेन्ट नहीं कर सकता।"

"और कुछ ?"

"वह बीयर की बोतलें। उस बिचारी की धारणा है कि पति बीयर नहीं पी सकता।"

"बहुत से सेल्स रिप्रेजेन्टेटिव्स की पत्नियों की यही धारणा होती है मिस्टर मजूमदार।"

"यह बात क्या हम लोग नहीं जानते," पीताम्बर ने कहा। "जो हो, आप कुछ ख्याल मत करियेगा। हम लोग उसे समझाने की कोशिश कर रहे हैं। भाग्य, भवितव्य ये सब प्रबोधवाक्य तो हैं नहीं। नियति को रोक कौन कर सकता है ? एक ही यात्रा में आप सामान्य चोटें खाकर निकल आये और दूसरा इस तरह समाप्त हो गया।"

"अगर जरूरत समझें तो उनको कुछ दिन आफिस न आने को कह दीजिये। मैं रामभद्रन से कह दूँगा। उनको केवल आप लोग ही शान्त कर सकते हैं।"

सिगार उठा कर फिर से ओठों से लगा लिया मिस्टर वसुमल्लिक ने और फिर दाहिने हाथ का ड्राअर खोल कर बोले, "डेथ सर्टिफिकेट ही मिला है आपको। पुलिस रिपोर्ट तो देखी नहीं आप लोगों ने। मुझे लगता है, शोक की प्रथम अवस्था से निकल आने पर मनुष्य की दुर्घटना के बारे में और अधिक जानने की इच्छा होती है। यह मानसिक स्वास्थ्य का लक्षण है। एक कापी ले जाइये आप भी।"

"आप बुरा मत मानियेगा, मिस्टर वसुमल्लिक। सद्य विधवा……"

"सद्यविधवा की साइकोलॉजी मैं समझता हूँ, एक दो अकाल-विधवा के साथ परिचय है मेरा। यह लोग यूँ तो बहुत डिफिकल्ट होती हैं, लेकिन अगर ठीक से हैंडिल किया जाये तो एकदम सहज हो जाती हैं।" यह कह कर गौतम के प्राक्तन मालिक दीननाथ हो-हो करके जोर से हँसने लगे।

● ●

पीताम्बर कुमकुम की साइकोलॉजी कैसे भी समझ नहीं पा रहे थे।

दीननाथ के प्रति उसकी घृणा दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही थी। उसके पति का खून किया है, यह बात उसके मन से निकलने के बजाय ज्यादा मजबूती से जड़ें जमाती जा रही थी। और वह परम यत्न से अपने इस मानस शिशु का लालन-पालन कर रही थी।

हरिसाधन भी सशंकित हो उठे थे—"यह बातें फैलाने से कम्पनी क्या सोचेगी? और मिस्टर वसुमल्लिक ही इस घर का स्वार्थ अपना समझकर उसके लिये प्रयत्न करेंगे? वह रामभद्रन जाने कहाँ कौन सा नुक्ता निकालकर सामने रख देगा और एक मुश्त मिलने वाले रुपये का परिमाण घट जायेगा। जो होना था, वह तो हो ही गया है।"

लेकिन जो नहीं होना था वह क्यों हुआ, कैसे हुआ, जानने के कौतूहल ने अब पुत्रवधू के हृदय में घर बना लिया था। पिता होकर, छब्बीस वर्ष का सम्पर्क होते हुए भी हरिसाधन जो मान लेने को प्रस्तुत थे, यह मात्र चौदह मास के सम्पर्क वाली पत्नी किसी भी तरह नहीं मानेगी।

"यही होता है, हरिसाधन", पीताम्बर ने मित्र को समझाने का प्रयत्न किया। "उस जरा सी लड़की के अन्तर की ज्वाला हम लोग कैसे समझ सकते हैं, हरिसाधन?"

और कुमकुम जब-तब आफिस जाती अवश्य है, लेकिन कभी-कभी घर पर बैठी घन्टों पुलिस की वह रिपोर्ट पढ़ती रहती है। एक दिन निकलकर कहीं से कानून की कुछ किताबों का भी जुगाड़ कर लाई।

"मेरी बहू शायद वकील बनना चाहती है।" हरिसाधन ने एक दिन दुख प्रकट करते हुए कहा। "आफिस से मिस्टर वसुमल्लिक ने एक कागज भेजा था, उस पर दस्तखत नहीं किये।"

"आफिस जाती है?"

"जब मर्जी होती है जाती है, नहीं होती तो नहीं जाती।" हरिसाधन के स्वर में चिन्ता झलक रही थी। उनकी इस चिन्ता का कारण था, उपस्थिति ज्यादा कम होगी तो नौकरी कैसे रहेगी।

आगे हरिसाधन ने यह भी बताया कि बिना किसी से पूछे अपनी मर्जी से कुमकुम ने ड्राईविंग स्कूल में नाम लिखा लिया था और चौदह पाठ में से ग्यारह पाठ डेढ़ हफ्ते में ही खत्म कर लिये थे। शायद इसी हफ्ते लाइसेन्स मिल जायेगा। जब कि इसी के पति ने ड्राईविंग सीखने का बार-बार अनुरोध किया था तो जरा भी उत्साह नहीं दिखाया था।

गाड़ी तो थी नहीं और इस जन्म में फिर से गाड़ी मिलने की संभावना भी हरिसाधन को दिखाई नहीं दे रही थी। फिर भी भगवान् जानें वह गाड़ी चलाना क्यों सीख रही थी।

"मन की इस अवस्था में लड़कियाँ एकदम बच्चा बन जाती हैं हरिसाधन। वह जो भी करना चाहे करने दो। बस शरीर की ओर ध्यान रखो।" पीताम्बर परिस्थिति सहज करने का प्रयत्न करते हैं।

कुमकुम का शरीर तो इन कुछ महीनों में लालित्यहीन, कठोर व शुष्क हो गया था—जैसे किसी पेड़ की जड़ें काट देने पर धरती में गाड़े रखने से भी ठूंठ हो जाता है।

और यह ड्राईविंग लाइसेंस क्यों? कहीं किसी की गाड़ी माँग कर आत्महत्या करने का विचार तो नहीं था कुमकुम का? मन ही मन भयभीत हो उठे पीताम्बर। परन्तु मन का सन्देह हरिसाधन के सामने प्रकट करने का साहस नहीं हुआ।

इधर असहाय हरिसाधन अपनी दूसरी लड़की के विवाह की तैयारी करना चाहते थे। पर उसके लिये धन की आवश्यकता थी। गौतम के आफिस में शुरू में जो उत्साह दिखाई दिया था; वह अब जरा कम हो गया था। उन्होंने कागज बम्बई भेजे कि नहीं, यह भी पता नहीं था।

हरिसाधन ने एक दिन किसी के यहाँ से मिस्टर वसुमल्लिक को फोन किया।

"वसुमल्लिक हियर," साहबी स्टाइल से कहा, दीननाथ ने।

बड़े कोमल व करुण स्वर में हरिसाधन ने कहा, "मेरे लड़के के लिये आपने बहुत कुछ किया है।"

"पर इससे क्या हुआ बताइये? इट इज सैड, आपकी बहू जहाँ-तहाँ कहती

फिर रही हैं कि अमिताभ का खून हुआ है। इसका क्या मतलब निकलता है, मिस्टर रायचौधरी ?"

"विवाह के कुछ ही महीनों बाद विधवा हो गई एक लड़की की बात का ख्याल मत कीजिये, मिस्टर वसुमल्लिक," कातर आवेदन किया हरिसाधन ने। "आप दूसरी ओर देखिये—इकसठ साल का बुड्ढा पुत्रविहीन बाप, निःसंबल अविवाहित बहन, और यह विधवा जिसे इस बाइस साल की उम्र से लेकर जीवन का लम्बा सफर अकेले तय करना होगा। इनके पास न अर्थ है और न घर। एकमात्र कमानेवाला पुरुष आफिस के काम से जाकर फिर वापस नहीं लौटा।"

वसुमल्लिक बोले, "किसने क्या कहा इससे अवश्य मेरा कुछ नहीं बिगड़ता। पर आप समझ सकते हैं कि ऐसी बातों के खिलाफ मुकदमा किया जा सकता है। कई लाख क्षतिपूर्ति का केस हो सकता है अगर किसी का चरित्र हनन हो।"

"मेरा दिल जल रहा है मिस्टर वसुमल्लिक।" असहाय भाव से उत्तर दिया हरिसाधन ने। "जिन्होंने आहत अवस्था में मेरे पुत्र के मुंह में पानी डाला हो, स्वयं आहत होते हुए भी मेरे लड़के को स्वयं उठाकर डाक्टर के यहाँ ले गये हों, जिन्होने इस परिवार के उद्धार के लिये नीरव चेष्टा की हो और अभी भी कर रहे हों उनका किसी भी तरह का नुकसान अच्छा नहीं लगता। उपकारी का अपकार करना कृतघ्नता होती है। यह क्षतिपूरण के मामले से भी बड़ा अपराध है।"

मिस्टर वसुमल्लिक के मन में हरिसाधन के प्रति कोई आक्रोश नहीं था। बोले, "बिना बात केस को जटिल नहीं बनाने दिया मैंने। आफ्टर आल एक ही गाड़ी में बैठे होने के कारण मेरी भी जान पर आ बनी थी। मेरी बाईं आँख की रोशनी कम हो गई है, बॉयें हाथ में अभी भी ग्रिप नहीं है। कुछ लोग मुझे भी कम्पनी से क्षतिपूर्ति माँगने की सलाह दे रहे थे। आफ्टर आल कम्पनी का ही एक कर्मचारी मुझे ड्राइव कर रहा था। पर मैंने चाहा था कि जितना भी हो सके आपके परिवार में जाये—वहाँ मेरा हिस्सा बंटाना ठीक नहीं होगा।"

"आपकी अशेष दया है मिस्टर वसुमल्लिक।"

"पुत्रवधु को संयत करिये, मिस्टर रायचौधरी। शोक का अंधकार एक दिन तो छँटना ही चाहिये।"

"मेरी लड़की होती तो उसे बहुत डाँटता, मिस्टर वसुमल्लिक।" यह कह फोन पर ही सिसक-सिसक कर रोने लगे हरिसाधन। सुबकते हुए बोले, "आप समझ सकते हैं, पराई लड़की है। उस पर, इस रुपये पर मेरा तो कोई जोर है

नहीं। अपना सब कुछ जिस पर निर्भर था, वह तो चला गया। कानून की दृष्टि में सन्तान के किसी भी रुपये पर मेरा अधिकार नहीं है—चौदह महीने पहले ब्याही एक बहू की करुणा का प्रार्थी हूँ मैं", यह कहकर फिर से रो पड़े हरिसाधन।

"तब भी जरा देखिये। अज्ञान अवस्था में भी मनुष्य अपना नुकसान नहीं करता। जो हाथ खाने को देता है उसे न काटने का उपदेश तो आप लोग ही देंगे।" यह कहकर दीननाथ वसुमल्लिक ने फोन रख दिया।

● ●

उस दिन हरिसाधन घर लौटे तो देखा कुमकुम तब तक नहीं लौटी थी। आफिस से पता करते तो भी उसका पता नहीं चलता। क्योंकि वह काफी देर पहले आफिस से निकलकर न जाने कहाँ चली गई थी।

वह इस समय डलहौजी बस स्टैंड पर खड़ी थी। वहाँ खड़े-खड़े फिर से चारुशीला से साक्षात् हो गया।

चारुशीला ने पहले की तरह ही कुमकुम को गाड़ी में अपनी बगल में बिठा लिया।

रास्ते में फिर से कैसे दोनों का आमना-सामना हो गया? होगा नहीं! चारुशीला कलकत्ते के कुछ अंचल तो प्रतिदिन ही रौंदती फिरती थी। बोली, "कलकत्ते के इस अंचल से मैं रोज कई बार आती-जाती हूँ, सुतराम् यहाँ खड़े होने पर सामना होना आश्चर्य की बात नहीं है। इसके अलावा तू मुझे क्लैरियन, ओ०बी-एम, लिन्टास, एच-टी में भी देख सकती है। जहाँ भी विज्ञापन का आर्टवर्क है, स्पेस बुकिंग है, वह चारुशीला भी है। कलकत्ता शहर में जितने मैगजीन-विज्ञापन तैयार होते हैं, वह सारे न मिलने तक मेरे अखबार के मालिक का मन खुश नहीं होता!"

चारुशीला इस समय क्लैरियन जा रही थी। वहाँ वरुणचन्द्र और आनन्द मुखर्जी से काम की कुछ बातें करके फिर उसकी छुट्टी थी।

"पता है, मेरे पति को किसी ने मार डाला है," यह कहकर रोने लगी कुमकुम। "मैंने सपने में देखा है।"

"उफ! कुमकुम, रोने से क्या होगा? अगर ऐसा है तो प्रतिशोध ले। औरतें रोने के अलावा और कुछ नहीं कर सकतीं इसीलिये किसी कार्य में सफल नहीं

होतीं। तूने तो हिस्ट्री पढ़ी है। विगत पाँच हजार वर्षों में क्या कभी रोकर किसी अन्याय को रोका जा सका है?"

"तू मेरी तरह एक सिगरेट पी। मन को बल मिलेगा," चारुशीला बोली, "तमाखू की केमिस्ट्री क्या करती है, यह तो नहीं जानती, परन्तु सिगरेट मुझे हजारों गुड़ि-गुड़ि लड़कियों से अलग कर देती है, पुरुष भी मुझे सीरियसली लेते हैं। अपने पाँवों पर खड़ी लड़कियों को इमेज में सिगरेट की एक चमत्कृत भूमिका है।"

आगे कहती रही चारुशीला, "चुप क्यों बैठी है? सोच रही है, एक बार लक्ष्मणरेखा लाँघने के बाद दुखों का अंत नहीं है? पहले सिगरेट, फिर शराब। शराब के साथ····पुरुषों के क्षेत्र में औरत प्रायः अवश्यम्भावी होती है। उस चीज पर मेरी घृणा अभी भी बनी हुई है। हालांकि वासना पति के साथ बाहर निकलने पर शराब पीती थी।"

विज्ञापन एजेन्सी का काम खत्म करके चारुशीला बोली, "बोल, कहाँ जायेगी? ओबेराय ग्रांड? वहाँ स्वीमिंग पुल के किनारे बैठकर कम्पनी के खर्चे पर चाय पिला सकती हूँ।"

होटल का नाम सुनते ही कुमकुम के बदन में सिहरन दौड़ गई। उसने गौतम से सुना था कि औरतों को अकेले होटल में नहीं जाना चाहिये।

हँस दी चारुशीला। बोली, "फिर मेरी तो नौकरी चली जायेगी।"

जाने क्या सोचकर चारुशीला ने नदी के किनारे जाने का प्रस्ताव रक्खा। पहले तो कुमकुम की समझ में नहीं आया, फिर रेस्टोरां देखकर पहचान गई। बोली, "वहीं तो गौतम के साथ आखिरी बार आई थी—वहाँ नहीं, कैसे भी नहीं," कातर स्वर में कहा उसने।

"तो फिर मेरे घर चल।" यह कहकर चारुशीला ने अपनी प्रीमियर पद्मिनी उस ओर मोड़ दी।

"जानती है कुमकुम, कलकत्ता शहर क्रमशः न्यूयार्क होता जा रहा है। लड़कियाँ स्वाधीन रूप से अलग अपार्टमेंट में रहती हैं। जब कालेज में पढ़ती थी उस समय अगर कोई मुझसे कहता कि अलग अपार्टमेंट में रहना पड़ेगा तो सोचती कि वे सिर पैर की बक रहा है।"

गाड़ी आगे बढ़ती जा रही थी। चारुशीला बोली, "मालूम है सारिका, पत्र-पत्रिकाओं में आजकल बहुत चीख-पुकार हो रही है। सती सावित्री, राम लक्ष्मण के देश के हिसाब से भी अपनी रजिस्ट्री करा कर छोड़ी है हमने। लेकिन भीतर-ही-भीतर कलकत्ता न्यूयार्क बनता जा रहा है। पति-पत्नी के सम्पर्क की

कोई कीमत नहीं रही, अबाधगति से विलासिता चल रही है। अब देख, कल रवीन्द्र सदन में टिकिट लेकर ब्रह्मसंगीत सुनने गई पर बीच में ही उठ आना पड़ा। मेरे सामने वाली लाइन में मेरा ही प्राक्तन हज़बैंड विथ ए गर्ल बैठा हुआ था। मुझे पता है कि उन लोगों ने अभी तक विवाह नहीं किया, पर मेरे ही सजाये फ्लैट में लिविंग टुगेदर। और उस पर भी दोनों एक साथ रवि ठाकुर का संगीत सुनने आये थे, जो घिना गया—उठकर चली आई।"

चारुशीला के छोटे से फ्लैट में प्रविष्ट हुई सागरिका। चारुशीला जानबूझ कर अमिताभ की कोई बात नहीं उठा रही थी। वह तो बस यह चाहती थी कि उसे देख कर कुमकुम का मनोबल बढ़े और वह अकेले चलना सीखे।

पर सागरिका बोली, "पता है आज मैं कहाँ गई थी? आफिस में मैं किसी की परवाह नहीं करती। मेरे पति को मार डालें और मेरी चौकीदारी करें, यह नहीं हो सकता। अचानक मन किया और निकल गई। वहाँ से सीधे तेरे बहनोई के आफिस चली गई।"

"मृत्युञ्जयदा के पास? लाल बाजार? दीदी से कहा था, जीजा जी को इतने दिन बाद पुलिस की नौकरी मिली है! ओ-सी-रंटल। मृत्युञ्जय जब मृत्यु का कारोबार करते हैं तो कहने को कुछ नहीं रह जाता।" चारुशीला ने अभी तक अपनी विनोदप्रियता नहीं खोई थी।

"तेरी दीदी और जीजा जी कई महीने पहले एक शादी में मिले थे। तब उनकी पोस्टिंग की बात सुनी थी।"

"क्या कहा मृत्युञ्जयदा ने?" चारुशीला ने उत्सुकता से पूछा।

"हड़बड़ा गये मुझे देख कर। पूछने लगे, उनके घर चलूंगी क्या। मेरे बारे में उन्हें कुछ नहीं मालूम था।"

चारुशीला—"कलकत्ते के पुलिस वाले वेस्ट बंगाल की खबर नहीं रखते। दोनों पुलिस का जेठ-बहू का रिश्ता है।"

सागरिका ने कहा, "मेरा तो बस एक ही रत्न था। अगर कोई किसी को अन्याय भाव से मोटर एक्सीडेंट में मार डाले तो क्या होता है?"

मृत्युञ्जयदा ने बताया, "गाड़ी तो हर क्षेत्र में इन्श्योर होती है। गाड़ी के मालिक ने गाड़ी किस हालत में रखी थी, इस बात पर बहुत कुछ निर्भर करता है। इसके अलावा जो गाड़ी चला रहा था उसके असावधान होकर लापरवाही से गाड़ी चलाने की बात साबित हो जाये तो जेल हो सकती है, मुआवजा तो मिलता ही है।" पर मैं जेल होने में इन्टरेस्टेड हूँ। मैं मृत्युञ्जयदा की टेबिल

से कानून की किताब उठा कर ले आई। सभी देशों में कार-दुर्घटना के हजारों मुकदमें चलते हैं, करोड़ों रुपये के दावे को लेकर लोग परेशान होते हैं।

"लापरवाही से गाड़ी चलाने पर कितने साल की जेल होती है, जानती है? सालों की। उस पर जुर्माना अलग। ऐसे केस में कई बार जज फाईन का रुपया जिसका नुकसान होता है, उसे देने का हुक्म देते हैं। असावधानी और उसके साथ लापरवाही किसको कहते हैं, इसकी व्याख्या में सैकड़ों प्रमाण हैं।"

"गाड़ी में भी तो खराबी हो सकती है?" ड्राइवर होने के नाते चारुशीला ने चिंता प्रकट की।

ओठ बिचका कर सागरिका बोली, "गाड़ी की खराबी दो तरह की होती है, जो यथा समय चेक की जा सकती है—जैसे ब्रेक, स्टीयरिंग। इसके अलावा बहुत सी खराबियां मशीन में हो सकती हैं। अन्दर की खराबी का पहले से पता नहीं चलता, अचानक सामने आ जाती है। उस हाल में गाड़ी के मालिक को दोष नहीं दिया जा सकता।"

"अरे बाप रे, जीजा जी से मिल कर तू तो एक दिन में ही वकील बन गई, जबकि उनके साथ इतने साल गृहस्थी चलाने के बाद भी मेरी बड़ी दीदी कानून का 'अ-आ' भी नहीं जानती।"

"मैं भी नहीं जानती थी। समय आने पर ही सब सीखना पड़ता है।" दुःख भरे स्वर में कुमकुम ने कहा।

फिर वह कानून की एक मोटी किताब खोल कर बैठ गई। चारुशीला ने डाँट लगाई, "अरी, सारा एक ही दिन में मत जान लेना। अब ठंडा पियेगी या गरम? बोल।"

"अब तक तो ठंडी ही थी, अब गरम होने का रास्ता ढूंढ रही हूं चारुशीला। जो शराब पीकर गाड़ी चलाते हैं, वह लोग निश्चित रूप से लापरवाह और असावधान हैं। उन्हें जेल भेजने की जरूरत है।"

फिर से कानून की किताब में डूब गई सागरिका। "क्या पियेगी, चारु? अब तेरी गरम होने की इच्छा है तो चाय बनाऊं?"

किताब से नजरें उठाये बिना सागरिका ने पूछा, "बताओ, मद्यप किसे कहते हैं?"

"जो शराब पीता है। कहावत है, शराब पीता हो और मग्न न हो, आदमी दुनिया में नहीं है।"

सागरिका बोली, "साहित्य की व्युत्पत्ति अदालत में काम नहीं आ[illegible] मुंह से मंत्र निकलते ही शराब के नशे में गाड़ी चलाने [illegible] गई

जा सकता। महामान्य उच्च अदालत का यही कहना है। उस हालत में ड्राइवर को डाक्टरी जाँच करानी पड़ती है।"

"रुक क्यों गई? क्या सोच रही है?" चारुशीला ने पूछा।

"सोच रही हूँ, कोई अगर जाँच कराये बिना भाग जाये तो?" कुमकुम बहुत उद्विग्न हो उठी थी।

"कितने ही लोग शराब पीते हैं, नशे में होते हैं, गाड़ी चलाते हैं। भागना ही भागते हैं, तुझे क्या लेना-देना? तू चाय पी अब।"

"शराब पीकर मेरा सर्वनाश करके भाग जाये, यह नहीं चलेगा। तेरी क्या राय है, चारुशीला?" इतना कहते ही सागरिका की रुलाई फूट पड़ी।

लज्जित होकर चारुशीला ने चाय का कप सहेली की ओर बढ़ाकर पूछा, "जीजाजी ने और क्या कहा?"

"मृत्युंजयदा बोले, उस दिन रेडियो पर मेरा प्रोग्राम उन्होंने भी सुना था लेकिन उसी समय बारह चालीस पर मेरी तकदीर फूट रही थी; यह नहीं जानते थे। उनकी धारणा है कि गाड़ी में रेडियो या टेप चलाने से बहुत बार ड्राइवर का ध्यान एकाग्र हो जाता है। हाइवे पर लगातार उबाऊ ड्राइविंग में झपकी न लग जाये इसलिये बहुत सी गाड़ियों में गानों के कैसेट लगा देते हैं लोग। गाना सुनते हुए किसी ड्राइवर के एक्सीडेंट करने की बात उन्होंने कभी नहीं सुनी।"

जरा रुककर कुमकुम बोली, "तेरे जीजाजी बड़े अद्भुत व्यक्ति हैं। हम लोग चाय पी रहे थे, उसी समय कहीं से एक्सीडेंट की खबर आई। वहाँ भागने से पहले उन्होंने मुझे बसस्टैंड पर छोड़ा। इससे पहले मैं पुलिस की गाड़ी में कभी नहीं बैठी थी।"

चाय का पर्व समाप्त हो गया। चारुशीला बोली, "हमारी क्लास की लड़कियों की तकदीर अच्छी नहीं है, सागरिका। तेरे साथ यह हुआ, मेरा पति जीवित रहते हुए भी नहीं रहा, वासना की भी यही हालत है।"

बहुत दिन से वासना की खोज-खबर नहीं ली गई थी। वासना शायद कुमकुम की इस हालत के बारे में जानती भी नहीं। बहुत दिनों से चारुशीला उधर जा नहीं पाई थी और अब 'वह खाकर नहीं गया' यह सुनने की इच्छा भी नहीं करती थी। जो फिर से नये रूप से शुरू करने को राजी नहीं हैं, उन लड़कियों से चारुशीला को आजकल नफरत सी होने लगी है।

इधर कुमकुम का मुँह और गम्भीर हो गया था। बोली, "आजकल किसी

और के बारे में मैं जरा भी नहीं सोच पाती भाई। मुझे तो तू यह बता कि उन्होंने मेरे पति को क्यों मार डाला ?"

चारुशीला को डर लगने लगा था—सागरिका उन्मादिनी-जैसा व्यवहार कर रही थी। सागरिका समझ नहीं रही थी कि औरतों के मन का सम्पर्क शरीर के साथ होता है—मन घड़ी की बड़ी सुई है और शरीर छोटी।

"तेरे तो ससुर हैं, ननदें हैं, पीताम्बर काकू हैं। मेरा तो कोई नहीं है। मेरा पति मेरी आँखों के सामने दूसरी औरत के साथ रह रहा है। मेरी बात जरा सोच, सागरिका।"

सागरिका गुमसुम बैठी जाने क्या सोच रही थी। बोली, "तू सो जा, चारुशीला। मैं हिसाब लगा लूँ और कानून की व्याख्या पढ़ लूँ।"

"यही ठीक है।"

चारुशीला को आँखें बंद किये कुछ ही देर हुई थी कि तभी सागरिका ने उसे झिंझोड़कर उठा दिया।

"अरी सुन", हाँफते हुए कहा सागरिका ने। "मेरे पति के बायें हिस्से में इतनी चोटें क्यों थीं ? उस आदमी के भी बाईं ओर इतनी बैंडेज क्यों थी ? गौतम ने मुझसे कहा है, उसे मार डाला गया है। मैं चलती हूँ, आज पकड़ूँगी उसे।"

कोई बात नहीं सुनी कुमकुम ने। उसी क्षण चारुशीला के घर से निकल गई। सामने ही टैक्सी दिखाई दे गई, झट से उसमें बैठकर बोली, "जरा जल्दी चलिये। जिन्होंने मेरे पति को मार डाला है, वह लोग भाग जायेंगे।"

आफिस में उस दिन अजीब कांड हो गया था। दीननाथ वसुमल्लिक किसी जरूरी मार्केटिंग मीटिंग के लिये प्रस्तुत हो रहे थे कि सागरिका धड़धड़ाती हुई उनके कांच के केबिन में जा पहुँची।

उसकी आँखों से आग की लपटें निकल रही थीं। "पहचान रहे हैं ?"

"मिसेस रायचौधरी ! इस समय ? विदाउट अपाइन्टमेन्ट ?" दीननाथ ने जरा गुस्से से कहा।

"यह सब बेकार की बातें छोड़िये। लोग आपको पसन्द नहीं करते, इसीलिये उन्होंने आपका नाम डिएनबिएम रख दिया है।"

"यह सब क्या कह रही हैं आप ?" दीननाथ वसुमल्लिक पहले कभी ऐसी परिस्थिति में नहीं पड़े थे।

"जो कह रही हूँ ठीक कह रही हूँ। अब सच-सच बताइये कि उस दिन रास्ते में क्या हुआ था ?"

बहुत चिढ़ गये वसुमल्लिक। "याद रखिये, यह आफिस है। कोई और होता तो अब तक बाहर चले जाने को कह चुका होता। उस दिन जो हुआ था वह पुलिस के रजिस्टर में लिखा जा चुका है। रेडियो पर बारह चालीस पर कोई गाना शुरू हुआ था। अमिताभ ने झुककर वह गाना सुनने की कोशिश की। गाड़ी उस समय तीन सौ छियत्तर किलोमीटर का पत्थर पीछे छोड़कर आगे निकल आई थी। गाड़ी की स्पीड बढ़ती ही जा रही थी। मुझे भी अच्छा लग रहा था—खुली सड़क पर गाड़ी की तेज स्पीड सभी को अच्छी लगती है। फिर सामने अचानक जाने कहाँ से एक बकरी आ गई। उसको बचाते हुए गाड़ी पक्की सड़क से नीचे आ गई। फिर उसके बाद मुझे कुछ याद नहीं है। जरा देर बाद जब होश आया तो देखा गौतम यन्त्रणा से तड़प रहा था। मैंने उसे गाड़ी से बाहर निकाला। तभी उसने कहा, मेरे पिता, मेरी दो बहनें, मेरी कुमकुम····"

इसके बाद का दृश्य—वसुमल्लिक की कमीज का कालर पकड़ने की चेष्टा कर रही थी कुमकुम। आफिस के कई लोग भागे हुए कमरे में आये। कुमकुम तब छोटे बच्चे की तरह रोते हुए कहने लगी, "देखिये ना, सारी बातें झूठी हैं। मेरे पति को मार डाला है।"

इसके बाद वसुमल्लिक ने लोगों से कुमकुम को कमरे से बाहर निकलवा दिया।

● ●

आफिस की अप्रीतिकर खबर यथा समय हरिसाधन के कानों में पहुँच गई। लज्जा, दुख व अपमान से बेचारे जड़ पत्थर हो गये।

"सुना, पीताम्बर ? मेरा धाड़ मारकर रोने का जी चाहता है। मिस्टर वसुमल्लिक की असीम दया है कि सद्य विधवा की सामयिक उत्तेजना समझकर घटना पर कोई बुरी रिपोर्ट नहीं दी। पर अगर यह बात मस्तिष्क विकृति कहकर फैल जाये, तो नौकरी चली जायेगी।"

और आगे नहीं सोच पाते हरिसाधन। रोते हुए बोले, "इससे तो मैं क्यों नहीं मरा गया ?"

"ईश्वर ने जिस प्रदीप में जितना तेल डाला है, वह उतना ही जलेगा। दुखी मत होओ, हरिसाधन," कहकर मित्र की पीठ सहलाने लगे पीताम्बर।

"तेल रहते हुए भी प्रदीप बुझता है, पीताम्बर। गौतम की जन्मपत्री में तो उसकी आयु बहुत थी", हरिसाधन का स्वर अभी भी रुँधा हुआ था।

इसके बाद पीताम्बर ने कुमकुम से अकेले में बात की कि उसकी यह धारणा कैसे बन गई थी कि उसके पति को मार डाला गया है।

घायल विषाक्त सर्पिणी की तरह फुफकारने लगी सागरिका—"इन सबको जेल भिजवाऊँगी मैं। उन लोगों ने सोचा है कि मेरे पति के दाह का खर्च भेज-कर और मुझे एक नौकरी देकर मुँह बन्द कर देंगे।"

शोक से घिर जाने पर एक-एक धारणा बन जाती है आदमी की और वही शायद मन में घर बना लेती है, हरिसाधन ने अनुमान लगाया। बहू के अंत में पागल हो जाने पर इस घर का क्या होगा, इसकी वह कल्पना ही नहीं कर पा रहे थे।

परिस्थिति और बिगड़ गई थी। दीननाथ वसुमल्लिक ने हरिसाधन को बुलवा भेजा।

"यह देखिये अपनी बहू का कांड! आफिस में रजिस्ट्री चिट्ठी भेजी है। लिखा है, 'आप लोग बताइये कि असल में क्या हुआ था? मेरे पति इस तरह एक्सीडेन्ट नहीं कर सकते। उन्हें पहले मार डाला गया और अब बदनामी की जा रही है'।"

उत्तेजना से दीननाथ का गला काँप रहा था। "इस चिट्ठी की प्रतिलिपि मुझे भेजी गई है। सोचिये, मामला कहाँ पहुँच रहा है।"

यह चिट्ठी वाली बात हरिसाधन को मालूम नहीं थी। सागरिका स्वयं कब पोस्टआफिस जाकर डाल आई थी, उन्हें पता ही नहीं चला।

"आफिस में इतने साल काम किया है। समझूँगा नहीं? पेन्शन, क्षतिपूर्ति सबमें देर हो जायेगी—फाइल हिलेगी ही नहीं।" दीर्घश्वास छोड़ा हरि-साधन ने।

हँड़िया सा मुँह बनाकर दीननाथ ने इशारा किया, "यह भी हो सकता है कि दया करके जो दिया जा रहा था वह न दिया जाये। कम्पनी के साथ आप के लड़के के एग्रीमेंट में कहीं भी नहीं लिखा है कि पथ-दुर्घटना में मर जाने पर उसकी पत्नी को नौकरी दी जायेगी, एक साल तक उसका पूरा वेतन दिया जायेगा, मुआवजा दिया जायेगा और विडो पेन्शन भी दी जायेगी।"

अब हरिसाधन ने दीननाथ के दोनों हाथ पकड़ लिये। करुण स्वर में बोले, "मुझे बहुत सजा मिल गई, मिस्टर वसुमल्लिक। छोटी-सी गलती पर और भारी सजा मत दीजिये।"

"मामला छोटा कहाँ है, हरिसाधन बाबू? आपको मालूम है, कि इस चिट्ठी को लेकर मानहानि का दावा किया जा सकता है? ब्लून इज ए वेरी-वेरी डर्टि वर्ड।" दीननाथ वसुमल्लिक ने चेतावनी दी।

थोड़ा वक्त और देने की भिक्षा माँगकर असहाय हरिसाधन धीरे कदमों से बाहर निकल आये। 'हे ईश्वर, भवितव्य को इन्सान स्वीकार क्यों नहीं कर लेता? मेरे छब्बीस वर्षीय लड़के को मुझसे ज्यादा कौन प्यार करता था?' एक असहाय शिशु की तरह रोते-रोते हरिसाधन बस में चढ़ गये।

पीताम्बर के माध्यम से सारी बात बहू तक पहुँचाई हरिसाधन ने। लेकिन काम नहीं बना।

पीताम्बर ने बताया, "तुम्हारी बहू के मगज में कुछ भी नहीं घुसा, हरिसाधन। भवितव्य के बारे में सारी बातें सुनकर उसने पूछा, उस आदमी के केवल बाईं तरफ चोटें क्यों थी?"

चारुशीला ने कुमकुम की खोज-खबर ली थी। सखी को उसने दबी जुबान में परामर्श दिया था, "बेवकूफी में नौकरी मत खो बैठना।"

पर सागरिका अटल थी। बोली थी, "कम्पनी के साथ तो मेरा कोई झगड़ा नहीं है। झगड़ा है उस डिएनबिएम के साथ। उसने सोचा था उसे मारकर चुपचाप सब चिन्ह साफ कर देगा और साफ निकल जायेगा। पर पाजी की समझ में यह नहीं आया कि गौतम चुपके से रात को मेरे पास आयेगा और स्वप्न में मुझे रास्ता दिखायेगा। एक दिन हठात् जो सड़क पर पटा था, वह मुझे रोज सपने में दिखाई देता है। मैं डिएनबिएम को छोड़ूँगी नहीं। अब मैं गुडि-गुडि युवती विधवा नहीं हूँ। अब मैं ड्राइविंग जानती हूँ, गाड़ी का मेकेनिज्म समझती हूँ, पेनलकोड मैंने मुखस्थ कर लिया है, मोटर वेहिकल्स कानून मेरे नखाग्र पर है।"

उसको मृदु डाँट लगाने पर भी मन ही मन उसकी इज्जत करती है चारुशीला। पति को गँवाने का एक दृढ़ कारण खोजती फिर रही है सागरिका। उसकी इस दशा का जो जिम्मेदार है वह उससे बच नहीं सकेगा। बेचारी वासना के लिये कोई उपाय नहीं है। कैन्सर के विरुद्ध मुकदमा दायर नहीं किया जा सकता, उसे जेल नहीं भिजवाया जा सकता। और चारुशीला के पति

को जिसने छीन लिया उसकी भी कोई सजा नहीं है। विवाह किये बिना ही वह दूसरे के पति का भोग कर रही है। सारी दुनिया देख रही है, तब भी कोई कुछ नहीं कहता। चारुशीला स्वयं भी कुछ नहीं कर पाई।

औरतों पर दया करने के नाम पर कानून ही यहाँ सर्वनाश कर रहा है। जान-बूझकर पति-पत्नी का घर तोड़ने के लिये दूसरे पुरुष पर क्षतिपूर्ति का मुकदमा किया जा सकता है—पर दुष्ट नारी के खिलाफ कोई मामला नहीं चलता।

वासना का चेहरा भी चारुशीला के सामने सिर उठा रहा है। वासना उस वक्त जो अज्ञातवास में गई, तब से उसका पता ही नहीं। पर वासना से इसी कुमकुम ने ही तो कहा था—जीवन कांच का बर्तन नहीं है। जरा-सा चटकते ही फेंक देने के लिये औरतों का जन्म नहीं हुआ। कुछ हो जाये तो फिर से जीवन शुरू करना चाहिए। हैव ए गुड लाइफ!

अंत में चारुशीला ने कुमकुम से कहा, "नहीं भाई, तुमसे कुछ नहीं कहूँगी। नहीं तो तू भी मुझसे बचने के लिये अज्ञातवास में चली जायेगी। प्लीज ऐसा मत करना। दो एक गर्लफ्रेन्ड न हों तो डाइवोर्स्ड सिंगल औरतों का काम कैसे चलेगा? तेरा जब जो कुछ कहने का जी चाहे, मेरे पास चली आना। मैं रोकूँगी नहीं तुझे।"

कुमकुम एक दो बार और लाल बाजार थाने में मृत्युञ्जयदा के पास गई थी। कानून की पुरानी किताबें जो लाई थी उन्हें वापस देकर बदले में नई लाकर पढ़नी शुरू कर दी थीं उसने।

तरह-तरह के प्रश्न पूछकर उलझन में डाल दिया था उसने ओ सी फौंटस को।

मृत्युञ्जयदा ने कहा था, "कानून पास करके तुम इसी लाइन में स्पेशलाइज करो, सागरिका। बहुत मुकदमें मिलेंगे। हर साल हजारों लोग सड़कों पर मरते हैं और अगर घायलों की संख्या गिनो तो बस पूछो मत। तुम्हें नहाने-खाने का भी वक्त नहीं मिलेगा। ग्रहों के षड्यन्त्र से रिक्शा के साथ टेम्पो की, टेम्पो के साथ स्कूटर की, स्कूटर के साथ बस की, बस के साथ ट्रक की, ट्रक के साथ कार की और कार के साथ मोटे-मोटे वृक्षों की भिड़न्त इस देश में होती ही रहेगी। हजारों लोग सुबह अच्छे-खासे घर से निकलकर फिर घर नहीं लौटेंगे, हजारों मुकदमें सैकड़ों अदालतों में जमा होंगे और वकीलों का भाग्य चमक उठेगा।"

इसके बाद बहुत धीमी आवाज में दोनों में बातचीत हुई थी। कुमकुम के अनुरोध पर मृत्युञ्जयदा ने आसनसोल पुलिस के परिचित आदमी के नाम व्यक्तिगत चिट्ठी लिख दी थी।

● ●

वह चिट्ठी बैग में डालकर आफिस जाने के नाम पर घर से निकली कुमकुम, लेकिन आफिस न जाकर हावड़ा स्टेशन से एक ट्रेन में बैठ गई।

वह जानती थी कि गौतम के पिता इस बात से नाराज होंगे। उनकी धारणा थी कि कम्पनी से जितनी जल्दी हो सके रुपया निकलवा लेना चाहिये। जितनी देर हो रही है, रोज के सूद का नुकसान हो रहा है। इसके अलावा दिक्कत भी है—वह यह कि कम्पेंसनेट पेमेन्ट के नाम पर जो मासिक रुपया आ रहा है, कभी भी बन्द हो सकता था। कुमकुम की नौकरी पूर्णतया मालिकों के अनुग्रह पर निर्भर है। कम्पनी को अर्थबल और लोकबल से जीता नहीं जा सकता। कोई भी मुकदमा वह सालों तक खींच सकती है। उस हालत में क्या होगा? उनकी सामान्य सी नौकरी पर कैसे निर्वाह होगा? उस वेतन से वह कब तक और कैसे गृहस्थी की गाड़ी खींच पायेंगे?

उस दिन उन्होंने यह भी कहा था—"बहू, इसके अलावा तुम्हारे लिये कोआपरेटिव का जो फ्लैट देख रखा है—उसकी पहली किश्त का पेमेन्ट बहुत दिनों तक न देने से वह भी हाथ से निकल जायेगा। तुम अगर स्वयं मिस्टर वसुमल्लिक को एक दिन पकड़ लो तो आनन-फानन काम हो जायेगा।"

यह मानती है वह कि बहुत सा रुपया मिलेगा। उस रुपये के सूद से ही उसका सारा जीवन चल सकता है। पर पति को खोकर सूद का रुपया! सोने के बदले कोयले कौन औरत चाहती है?

एक आदिम आक्रोश से सागरिका की समस्त चेतना उस वसुमल्लिक के विरुद्ध विद्रोह करना चाहती है। अन्याय करने वाला और अन्याय सहनेवाला दोनों ही समान अपराधी होते हैं।

आसनसोल उतर कर फिर बस। बड़ी कोशिश के बाद मृत्युञ्जयदा के परिचित का पता मिला।

गौतम की दुर्घटना नरपति बाबू के थाने में नहीं हुई थी, तब भी उनसे ही सम्बन्ध स्थापित किया कुमकुम ने।

मृत्युञ्जयदा की चिट्ठी पढ़कर नरपति बाबू ने आदर के साथ कुमकुम को

बिठाया और बोले, "मनुष्यों की भीड़ जहाँ कम होती है और बड़े अफसरों की दृष्टि आसानी से नहीं पहुँचती, वहाँ पुलिस को अबाध स्वाधीनता होती है। इसीलिये तो हम लोग मेट्रोपोलिटन कलकत्ते के पास नहीं जाना चाहते—वहाँ कदम-कदम पर बाधा है, उपदेश है और जवाबदेही है।"

नरपति बाबू विश्वास नहीं कर पाये कि कुमकुम अपने पति की मृत्यु का अनुसंधान करने के लिये भागी आई थी।

नरपति बाबू बोले, "एक बार कुछ हो जाने पर पुलिस उस पर अगर स्याही पोत दे तो सत्य को खोज निकालना बहुत कठिन हो जाता है। यह पुलिस के लोग जानते हैं—चरम क्षण पर पुलिस वाले मनुष्य को यही उपदेश भी देते हैं।"

"क्यों ?" कुमकुम जानना चाहती है।

"अब हँसाइये मत, मिसेस राय चौधरी। अगर आप मृत्युञ्जयदा की साली नहीं होतीं तो आपसे मीटिंग की बात कह देता। पर आप घर की हो हैं। आपके लिये जानना उचित है—'पान खाना' एक बात है। पर हाँ, पान खाने से ही काम नहीं बनता, पान के साथ कितना तमाखू हजम होगा यह देखना होगा! तमाखू जितना तेज होता है, पान का साइज उतना ही बड़ा। अगर तकदीर अच्छी हो तो इस हाईवे पर आर्डिनरी कान्सटेबल भी दो चार हजार रुपयों से जेब भर लेता है।"

"जैसे ?" प्रश्न किया कुमकुम ने।

"अखबार में तो काम नहीं करतीं आप? ऐज मृत्युञ्जयदा की साली सुनिये। ऐसी जगहों पर कितने लोग शराब पिये बिना गाड़ी चलाते हैं? तकदीर खोटी होने से अगर कोई दुर्घटना हो गई, तो उस नशे की हालत में डाक्टरी परीक्षा करा लेने से काम बन जाता है। उस समय विपदा से बचने के लिये पाँच सौ रुपये कुछ भी मायने नहीं रखते। जैसे ही रुपये सामने रखे अथवा कोई चीज गिरवो रख्खी या किसी भाई-वाई के नाम बैंक डेट में हैंड नोट लिखा, वैसे ही खारा पानी पिला कर क़ै करा दी गई और दो-चार घूँसे पेट में लगा दिये गये। अगर उससे भी काम नहीं बना तो अस्पताल के कर्मचारी से मिल कर किसी और के पेट का पानी उसके सैम्पल के नाम से डाक्टरी जाँच के लिये भेज दिया गया। क्लीन रिपोर्ट आ जायेगी—फिर किसकी हिम्मत है जो हाथ लगा ले ?"

आगे बोले नरपति बाबू, "ट्रक, बस व मोटरों का यातायात अधिक होगा, तभी तो कुछ पुलिस वाले जरा सुख-चैन से रह सकेंगे। आजकल पुलिस

१०

वालों को चोर-डकैतों को हैंडिल करके इतना सुख नहीं मिलता, समझी मिसेस रायचौधरी। यह सब तो आपको मृत्युञ्जयदा को ही बता देना चाहिये था, केवल इसके लिये इतनी दूर आने की क्या जरूरत थी? कैलकटा पुलिस और बेंगाल पुलिस मे कोई पार्थक्य नही है—एक ही सिक्के की दो साइड हैं। बुद्धिमान् व्यक्ति शोर-शराबा नही करते, क्योंकि वह जानते हैं कि ज्यादा खोदने से दुर्गन्ध ही निकलती है।"

"एक्सीडेन्ट केस में आपलोग क्या करते हैं?" कुशल संवाद-संग्राही की तरह कुमकुम ने प्रश्न किया।

"सुधामुखी थाने में मैं भी था। सभी जगह एक ही नियम है। दुर्घटना की खबर थाने में पहुँचती है और तभी दरोगा घटनास्थल पर पहुँचता है।"

"अखबार मे तो हमेशा पुलिस के घटनास्थल पर दौड़े जाने की बात लिखी होती है।"

"यही कहा जाता है। मृत्युञ्जयदा की साली होने के नाते आपके लिये जानना उचित है कि भाग-दौड़ करना हमारी धातुओं में नही है। हाँ, अगर कोई वी० आइ० पी० हो तो बात अलग है। एमर्जेन्सी ही हमारे लिये नार्मल केस होता है, इसलिये कैसी भी खबर आये, हम पहले हाथ का काम निपटाते हैं, दाढ़ी बनाते हैं, चाय पीते हैं, कमीज का टूटा बटन टाँकते हैं, गाड़ी की खोज-खबर लेते हैं और फोर्स को रेडी होने को कहते हैं। हम अगर रेडी हो भी जायें तो फोर्स रेडी नही होती—उनकी भी तो घर-गृहस्थी होती है, उन्हें भी तो बाजार-हाट करना होता है।"

जरा शंकित हो उठी कुमकुम। नरपति बाबू बोले, "और अगर गाड़ी न हो तो कहने को कुछ रह ही नहीं जाता। साइकिल पर कौन हाइये जायेगा? पुलिस वाला होने से क्या शराबी ट्रक ड्राइवर श्रद्धा-भक्ति करेगा? पुलिस वाले की ही अगर जान चली गई तो उसकी विडो को कोई नही देखेगा। पुलिस कर्मचारी के प्राणों का जो मुआवजा सरकार देती है उससे एक बैल भी नहीं खरीदा जा सकता।"

दिल धक से रह गया कुमकुम का। नरपति बोले, "इसलिये आप समझ ही गई होंगी कि हम घटनास्थल पर कब पहुँचें इसकी कोई गारंटी नही होती। बहुत बार तो स्थानीय लोग ही हमारा काम कर रखते हैं। बिलकुल ही निर्जन जगह हो तो ट्रक ड्राइवर प्रारम्भिक जिम्मेदारियाँ निपटा देते हैं। इस मामले में इंडिया के ट्रक ड्राइवरों की तुलना नहीं है। सड़क पर आकर उनसे मदद माँगते ही मिल जाती है।"

"अब फर्स्ट थिंग फर्स्ट। पुलिस हो या मनुष्य, पहला काम होता है आहतों की खोज-खबर लेना, इनकी चिकित्सा की व्यवस्था करना। इंक्वायरी तो साल भर भी प्रतीक्षा कर सकती है, पर जख्मी आदमी तो अधिक देर जिन्दा नहीं रह सकता।"

"इसके बाद?"

"थोड़ी फुर्सत मिलते ही हम घटना के प्रमुख चरित्रों के संबंध में एक अनुमान लगा लेते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि नायक ही आहत या हत हो गये हों। अथवा कोई गाड़ी के नीचे दबा पड़ा हो। उद्धार का काम यद्यपि स्थानीय लोग ही करते हैं, परन्तु अखबार में क्रेडिट हमें ही लेना पड़ता है।"

क्रेडिट जो चाहे ले, इससे उसका कुछ आता-जाता नहीं था। उसे तो एक्सीडेंट के संबंध में एक स्पष्ट तस्वीर चाहिये थी।

नरपति बाबू बोले, "हम लोगों के ट्रेनिंग कालेज में बहुत कुछ सिखाया जाता है। घटनास्थल पर जाँच-पड़ताल के समय खड़िया से चारों ओर लकीर खींचना, गाड़ी की पोजीशन देखना। अब इन दूर-दराज के इलाकों में अगर यह सब करने लगें तो एक ही केस में पूरा दिन निकल जाये। हम लोगों के पास इतना समय कहाँ और फिर·····।"

"और फिर क्या नरपति बाबू?"

"रोज मृत्युञ्जयदा की साली एंड एज ए पयूचर वकील आप देखेंगी कि जब हम घटनास्थल पर पहुँचते हैं, उस समय गाड़ी की पोजीशन-वोजीशन ठीक नहीं रहती, स्थानीय लोग खींचतान कर चुके होते हैं। आप पूछेंगी क्यों? तो मुझे इसके दो कारण दिखाई देते हैं—अशेष करुणा और अशेष लोभ। कोई इन अभागों को अपना समझता है और कोई सुयोग समझकर जो हाथ लगता है लूट लेता है। इसके लिये कोई कानून नहीं है मिसेस रायचौधरी। नेक्स्ट जमाई षष्ठी के दिन मृत्युञ्जयदा को पकड़कर बैठ जाइयेगा, वह सब बात बता देंगे।"

फिर नरपति बाबू ने दुर्घटना की जाँच कैसे करते हैं यह बताना शुरू किया, "प्रधान चरित्र अगर बहुत ज्यादा आहत न हों तो पहले हम उनका स्टेटमेंट लेते हैं। बहुत दफा यह स्टेटमेंट थाने पहुँचकर ही लिया जाता है, पार्टी साइन कर देती है। दो-चार स्थानीय लोगों की बातें भी लिखी जाती हैं। अगर कोई आहत हुआ हो और ड्राइवर हमारे हाथ आ जाता है तो उसे गिरफ्तार करना पड़ता है। देखते हैं कि उसका लाइसेंस ठीक है या नहीं। लाइसेंस नहीं होता तो पेनल्टी किक लगती है।"

"लाइसेंस बिना ड्राइविंग का मतलब ही है लापरवाही एवं असावधानी।

और अदालत में आपको जुर्म साबित करने में आसानी,"—सागरिका बोल पड़ी।

"पहले तो ऐसा ही था। पर अब सुप्रीमकोर्ट के फैसले से यह सुख चला गया। यहीं के एक केस में उन्होंने कहा है, 'लाइसेन्स न होने से ही आदमी गाड़ी चलाना नहीं जानता, यह मान लेना अदालत के लिये संभव नहीं है।' इसलिये अब हमें मछली के जाल में आ जाने पर भी हर ओर से बचाव की व्यवस्था करनी पड़ती है।"

"समझ लीजिये ड्राइवर के पास लाइसेंस है। लेकिन उस समय ड्राइवर यूँ तो अक्षत नहीं होता और होता भी है तो उसकी हालत डेमेड होती है। बड़ी मुश्किल से प्राण बचे होते हैं, तभी एक बड़ी मूछों वाला कान्स्टेबल उसका मुँह सूँघना शुरू कर देता है। अगर शराब की गंध मिल गई तो बस पौ बारह। उसके बाद के स्टैप तो आप जानती ही हैं।

"मामले को आसान बनाने के लिये समझ लीजिये कि ड्राइवर ही मर जाता है। तो जो जीवित रह जाते हैं, उनके बयान ले लिये जाते हैं—दुर्घटना कब हुई, कैसे हुई, उस समय कौन कहाँ था। फिर बॉडी को लेकर खींचतान शुरू होती है। बॉडी के पूरे पोस्टमार्टम का आर्डर भी दिया जा सकता है और कई बार सिम्पल ट्रेजेडी के केस में नमो-नमो करके डाक्टरी रिपोर्ट करवाकर लाश छोड़ देते हैं। जो चीज जितनी ही सुन्दर होती है, सड़ जाने पर उतनी ही भयंकर हो जाती है। केला सड़ता है तो अलग तरह का होता है और मछली सड़े तो दूसरी तरह की—पर मनुष्य अगर सड़ जाये तो बहुत वीभत्स हो जाता है मिसेस रायचौधरी, अपने जीजाजी से पूछ लीजियेगा। मृत्युञ्जयदा ने तो एक बार बुद्ध का कोटेशन दिया था—'जिस नरम स्तन के उपभोग की इतनी लालसा होती है, वही जब गलकर कीड़े-मकोड़ों का वासस्थान बन जाता है, तब एक बार उसे देखो'।"

बड़ी मुश्किल से कुमकुम ने अपने मनोभावों को रोका।

नरपतिबाबू बोले, "लम्बी घटना को काट-छाँट कर छोटी करना हो तो कहूँगा, ड्राइवर अगर जीवित हो तो पुलिस के हाथों उसे नाना यन्त्रणाएँ सहनी पड़ती हैं और ड्राइवर न हो तो हमलोग मामले को हल्का कर देते हैं। डाक्टरी रिपोर्ट, प्रत्यक्षदर्शियों की रिपोर्ट, गाड़ी की मेकेनिकल जाँच की रिपोर्ट, यह सब इंश्योरेंश कम्पनी की खातिर अवश्य करना पड़ता है। फिर सुविधानुसार फोटोग्राफर मिल जाये तो गाड़ी की फोटो भी ली जाती है। इसके बाद हम सब छोड़-छाड़ देते हैं।

"हम लोग एक अन्दाजा लगा लेते हैं कि दुर्घटना कैसे हुई ? गाड़ी की खराबी से ? या ड्राइवर की गलती से ? अथवा किसी विशेष घटना के कारण ? सड़क की खराबी से हुई होती है तो सड़क बनाने वाले पी० डब्लू० डी० तो हमारे ही मौसेरे भाई होते हैं। जैसे कई जगह सड़क के बीचों बीच थोड़ा साटार बिछा होता है और दोनों तरफ ऊबड़-खाबड़ होती है—ऐसा न हो तो आज भी बहुत से लोग जिन्दा होते, सैकड़ों लड़कियों की मांग का सिंदूर अक्षत रहता।"

सिंदूर शब्द ने क्षण भर को तो कुमकुम को चेतनाहीन बना दिया, पर सँभाल लिया उसने स्वयं को। पहले की अपेक्षा वह बहुत सख्त हो गई थी। समय का मरहम वास्तव में हरेक पर आश्चर्यजनक रूप से काम करता है।

"इसका मतलब है, पुलिसवालों को भी सिंदूर का ख्याल आता है ?"

"वह लोग भी तो रोज घर पर पत्नी के कपाल पर सिंदूर का दाग देखते हैं—उससे जितना ख्याल आता है बस वही।

"चलिये छोड़िये इन बातों को, बस केस पर चला जाये। गुरुतर आघात, अथवा मृत्यु या अन्य कोई नुकसान होते ही पुलिस की फाइल बन गई। अब पुलिस को निर्दिष्ट समय मजिस्ट्रेट को एक रिपोर्ट भेजनी पड़ती है।" और फिर नरपति बाबू जल्दी-जल्दी क्रिमिनल प्रोसिडिओ के कोड की कुछ धारा-उपधाराओं का उल्लेख कर गये।

"अदालत में मुकदमा चलेगा ?" सायरिका ने जानना चाहा।

"यह सब रूटीन बातें हैं। रिपोर्ट अदालत गई, खबर नत्थी हुई, धर्मावतार ने देखी, साइन किये और फाइल हो गया। बहुत दिन बाद हो सकता है इंश्योरेंस कम्पनी के आदमी खोज-खबर लें—बस निपट गया।"

"अगर कभी ड्राइवर के नाते कोई मछली जाल में फँस भी गई तो ख्याति बनाये रखते हुए भी दो-चार पुलिसवालों की तकदीर खुल जाती है। बाद को इन सब बातों को लेकर बड़े-बड़े मुकदमे भी चलते हैं—परन्तु दुर्घटना के प्रथम कुछ घंटे ही वाइटल होते हैं। यह कोई कलकत्ता शहर तो है नहीं कि दुर्घटना होते ही दो मिनिट के अन्दर दो हजार लोग इकट्ठा हो जायें। घटना के परिवर्तन, परिवर्धन व सम्पादना संभव न हो। इस जंगल में पड़े रहने का यही तो लाभ है। एक्सीडेंट होने पर भी रुपया खर्च करके घटना को साज-सँवार लिया जाता है। उस समय मिसेस रायचौधरी पुलिस ही प्रहरी और वही मुजरिम की वकील होती है। बड़े-बड़े वकील बैरिस्टर तो कानून की एमर्जेन्सी सँभाल नहीं रहे हैं। दूरदर्शी पुलिस सब जानती है—परिस्थिति समझकर चुपचाप वह सारी

व्यवस्था कर सकती है और याद रखियेगा, जो शुरू में लिखा जाता है, कानून की निगाह में उसका बहुत मूल्य होता है।"

कुमकुम बोली, "इसका मतलब है कि वह प्रथम रिपोर्ट कहानी लेखकों के हाथ में चली जाती है।"

"जब आप जानती हो हैं तो शर्मिन्दा क्यों कर रही हैं ? कहानी की पत्रिकाओं में कितनी कहानियां छपती हैं ? उनसे कहीं अधिक कहानियां थाने की प्राथमिक रिपोर्ट में लिखी होती हैं, जिसका नाम एफ० आई० आर० अर्थात् फर्स्ट इन्फरमेशन रिपोर्ट।"

"एफ० आई० आर० गलत लिखने पर उसका प्रतिविधान नहीं है ?' कुमकुम ने प्रश्न किया।

"विधान न हो ऐसी कोई सिच्युएशन आपको किसी भी अंग्रेज कोलोनी में नहीं मिलेगी, मिसेस राय चौधरी। यह देखिये, झूठी गवाही देने की कितनी कठोर सजा मिल सकती है, यह इंडियन पेनेल कोड सेक्शन....रेड विथ....."

"यह रेडविथ क्या है नरपति बाबू ?"

"यह नहीं बता पाऊँगा मैडम। नजर डालने पर पता लग सकता है कि सभी रेड विदाउट है, किसी के साथ किसी की संगति नहीं है। परन्तु जो लोग यह सब समझकर उच्च अदालत में मामले की छीछालेदर करते हैं, उनकी फीस प्रतिघंटा सात सौ रुपये है और मैं सात सौ रुपये महीने का दरोगा हूँ।"

"आपकी बातें सुनने मे बहुत अच्छी लग रही हैं नरपति बाबू। आप नहीं होते तो मामला इतना आसान नहीं होता।"

"मामला बहुत जटिल है", कहकर हँस पड़े दरोगा नरपति। "लेकिन मृत्युञ्जयदा की साली होने के कारण, जहाँ तक हो सका आसान कर दिया। आप तो घर की हैं। भीतरी बात अच्छी तरह जान लीजिये। पुलिस व थाना कैसे काम करते हैं यह मुखस्थ हुए बिना मोटर वेहिकिल्स के मुकदमों में नाम नहीं कमा पायेंगी।"

यह काम किस तरह होता है यह जानने के लिये व्याकुल हो उठी कुमकुम।

नरपति बाबू बोले, "सारे पाइंटों में क्या उदाहरण दिया जाता है ? आपने तो मुश्किल में डाल दिया मिसेस राय चौधरी। थोड़े ज्यादा खर्चे से दुर्घटना के बाद ड्राइवर बदल जाता है। कुछ हजार खर्च करने पर ऐसा ड्राइवर मिल जायेगा जो कहेगा कि वही गाड़ी चला रहा था, जरूरत पड़ने पर जेल भी चला जायेगा। मुश्किल बस होती है दुर्घटना के कुछ ही देर के अन्दर मन-माफिक ड्राइवर का जुगाड़ करना।"

कुमकुम की आँखें विस्फारित हो गईं। नरपति बाबू बोले, "पार्टी का विश्वास जीतने के लिये दो-चार उदाहरण देने आवश्यक हैं। मेरे मित्र डीआर चौबे आजकल सुधामुखी थाने में हैं। माँ-बाप ने नाम रक्खा था देवरत्न, लेकिन बन्धु-बान्धवों ने बदलकर धनरत्न चौबे नाम रख दिया। चाहे कैसी भी सिच्यु-एशन हो, चार पैसे बना लेने में वह तुलनाहीन हैं। मोटर केस में प्राइवेट परा-मर्श देकर सास के नाम से अच्छा बड़ा मकान बना लिया है।

"मन में सोचिये दो आदमी एक ही गाड़ी में अगल-बगल बैठे जा रहे हैं। उसी समय गाड़ी सड़क से स्लिप होकर किसी से टकरा गई। बगल वाला आदमी स्पॉट पर ही मर गया। ड्राइवर को भी चोट आई, पर उतनी नहीं। धनरत्न बाबू ने घटनास्थल पर जाकर सब देखा सुना। देखा दोनों के पास ड्राइविंग लाइसेंस है। बस, चान्स समझकर हेवी मनी के बदले एडजाइज दी—कहिये, गाड़ी मृत व्यक्ति चला रहा था। लॉग ड्राइव में दोनों का गाड़ी चलाना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। चुपके-चुपके सारा मामला निपट गया, आप एरेस्ट होने के हंगामे से बच गये। इस समय कलकत्ता जाकर चिकित्सा कराने के लिये आपका शरीर व्याकुल है। और जो मर गया उसके एरेस्ट होने का तो सवाल ही नहीं उठता। जटिल मामला कितना आसान हो गया, समझीं? और किसी का कोई नुकसान भी नहीं हुआ।"

"क्या कहा? नुकसान नहीं हुआ? जो आदमी मरा उसकी बदनामी?" कुमकुम बहुत गम्भीर हो गई थी।

"जब मर ही गया तो थोड़ा बदनाम होने से क्या नुकसान हुआ? टोटल सुविधाएँ देखिये "'असली ड्राइवर जेल जाने से बचगया, जिस कारण कहानी का ड्राइवर मरा उसी कारण तत्क्षण करने वाली जाँच-पड़ताल से पुलिस की झंझट कम हो गई और साथ-साथ चार पैसों की कमाई हो गई। धनरत्न चौबे बहुत फ्रैंक आदमी हैं, चार पैसों की इन्कम होने पर साथ के बन्धु-बान्धवों को मिठाई खिला देते हैं। उनकी धारणा है कि यह ऊँचे किस्म का सोशलिज्म है—ग्रेटेस्ट गुड फार द ग्रेटेस्ट नम्बर आफ पीपुल।"

बहुत ही उत्तेजित अवस्था में नागरिका नरपति बाबू के यहाँ से निकल आई। एक पल में सारा रहस्य खुल गया—वह रहस्य जिसके समाधान में वह इतने दिन अव्यक्त यन्त्रणा से छटपटाती रही थी, अन्दर-ही-अन्दर जलती रही थी।

अब उसकी आँखों के सामने उस दिन का दृश्य स्पष्ट हो गया था।

पीकर उस समय कौन आनिसुद्दीन गाड़ी चला रहा था, यह समझने में जरा भी असुविधा नहीं हो रही थी उसे। तो क्या गौतम ने उस समय जान-बूझकर झूठ से लिया था ? वह क्या उस समय उसका बारह चालीस का रेडियो प्रोग्राम भूल रहा था ? या वह दीननाथ बसुमल्लिक कोई और मतलब गाँठ रहे थे ?

नरपति बाबू के थाने से सुधामुखी का थाना थोड़ी दूर पड़ता था। स्टेशन से दूसरी ट्रेन बदलनी पड़ती थी।

ट्रेन से उतरते ही धनरत्न बाबू का राज्य शुरू हो जाता है। पैदल चल कर थाना पहुँचा जा सकता था। एक के बाद एक धान के खेतों और थोड़े से जंगलों के अलावा इस थाने के इख्तियार में और कुछ नहीं था। जंगल के जन्तु जानवर इंडियन पेनेल कोड में नहीं आते थे, इस बात का दुख था धनरत्न बाबू को।

इस थाने के धनरत्न के नाम पर लेक के किनारे के कुछ विश्राम भवन थे, जहाँ कलकत्ते के इक्के-दुक्के आदमी गाड़ी से आ जाते थे और कामकाज छोड़ आमोद-प्रमोद के लिये कलकत्तावासियों के यहाँ निवास करने में धनरत्न बाबू को आमदनी की संभावना दिखाई देती थी। कानून और शृंखला की जरा भी अवनति न होते हुए अगर कुछ हथेली गरम हो जाये तो यही आदर्श प्रशासनिक स्थिति मानी जाती है।

उस दिन शाम को धनरत्न बाबू का मिजाज थोड़ा खराब था। दो दिन से जरा भी अर्थ समागम नहीं हुआ था। अतः जैसे ही थाने में एक अल्पवयसी सुन्दरी को विमर्षवदन घुसते देखा, उत्फुल्ल हो गये। इस तरह की रमणियाँ हँसते-हँसते साथियों के साथ कलकत्ते से गाड़ी में आती हैं। स्थानीय लेक विश्रामभवन में किसी-किसी का समय अच्छा गुजर जाता है : परन्तु दो-चार का गोलमाल बढ़ जाता है तो थाने में हाजिर हो जाती हैं।

कोई कहती है, देखिये मां झूठमूठ पति-पत्नी लिखाकर अब मुझे तंग कर रहा है। ऐसे मामलों में जाँच-पड़ताल का भार धनरत्न बाबू स्वयं अपने कंधों पर लेते हैं, जल्दी से असामी के साथ सम्बन्ध स्थापित करते हैं और बदनामी बचाने के लिये यथोचित धनरत्न के विनियोग की सुयोग सुविधा कर देते हैं।

इस महिला के चेहरे पर भी ऐसी ही सम्भावना की प्रत्याशा की थी उन्होंने, परन्तु दूरदर्शियों की दृष्टि भी कभी-कभी धोखा खा जाती है।

बड़ा गुस्सा आया धनरत्न बाबू को। जाने कब का कौन सा केस, जिसकी रिपोर्ट मजिस्ट्रेट के पास फाइल हो गई थी, उसे लेकर फिर से खींच-तान। यहाँ की पब्लिक सोचती क्या है? जाने कब एक सामान्य दुर्घटना हुई थी, केवल एक डेथ, उसे भी याद रखना होगा पुलिस को! इन लोगों को क्या पता नहीं है हर वर्ष इस देश की पुलिस को लाखों एक्सीडेंट रिपोर्ट लिखनी पड़ती हैं? जहाँ केवल एक मौत हुई हो उसकी फेहरिस्त मुखस्थ करके याद रखने लगी तो पुलिस पागल हो जायेगी।

लड़की नरपति बाबू की चिट्ठी लाई थी। बाहर के लोगों को तो धनरत्न बाबू संभाल लेते हैं, पर मुश्किल तो तब होती है जब कोई सहकर्मी के माध्यम से यहाँ उपस्थित होता है। धनरत्न बाबू कोई सहयोग नहीं देंगे। जो होना था हो गया। गड़े मुर्दे उखाड़ने का इंतजाम नहीं है यहाँ। पर फाइल तो दिखानी ही पड़ेगी। नरपति बाबू की चिट्ठी का यही बुरा पक्ष था। बिल्कुल खाली हाथ तो लौटाया नहीं जा सकता।

मुँह बंद करके लड़की घंटों जाने क्या पढ़ती रही, फिर लौट गई।

दूसरे दिन वह फिर आई थी। पर दाद देनी पड़ती है—कहाँ कलकत्ता और कहाँ यह सुपामुखी थाना!

लड़की की स्पर्धा विस्मित कर रही थी धनरत्न बाबू को। वह बोली, "झूठ। सब बनाया हुआ। आपलोगों का केस इस तरह फाइल करना ठीक नहीं हुआ।"

कैसी मुश्किल है! किस केस में क्या जाँच-पड़ताल होगी, यह भी क्या बाहर के आदमी तय करेंगे? मान्यवर मजिस्ट्रेट ने जिस मामले में कोई मन्तव्य प्रकट नहीं किया, उसी में इस तरह क्यों फाइल किया गया, इसे यह जवाब देना पड़ेगा?

नरपति बाबू की चिट्ठी नहीं होती तो इस महिला को धनरत्न बाबू पहले ही बिदा कर देते। पर अब जरा सख्त होने का समय आ गया है।

सागरिका की ओर मुँह फिराये बिना ही धनरत्न बाबू बोले, "कानून अपनी पटरी पर ही चलता है मिसेस रायचौधरी। आपके पति का नश्वर शरीर तीन-चार दिन रख कर काट-पीट किये बिना जो छोड़ दिया था, वह आपकी बात सोच कर छोड़ा था, जिसका पुरस्कार पुलिस की इस कुर्सी पर बैठने के लिये मिल रहा है मुझे। आज के बाद मोटर एक्सीडेंट के कोई डेड बॉडी तीन दिन

रखते बिना नहीं छोड़ूँगा मैं। इसका मतलब जानती हैं न ?" मुँहामुँही थाने के दुर्दण्ड-प्रतापी दरोगा डी० आर० चौबे ने तीखा प्रश्न किया।

"क्या होता है दो-तीन दिन में ?" कुमकुम भी अब सख्त हो गई थी।

"मेरे उस लिटरेट कान्सटेबल से पूछ लीजिये।" बाहर स्टूल पर बैठे संतरी की ओर इशारा करके कहा घनश्याम बाबू ने।

कुमकुम पीछे नहीं लौटना चाहती, उत्तर जानना चाहती थी वह।

महिला देखकर संतरी संकोच में पड़ गया। उसे बोलते न देखकर घनश्याम बाबू ने उकसाया—"बोल-बोल, अब कानून की नजर में औरत मर्द समान हो गये हैं।"

संतरी बोला, "चीर-फाड़ करने वाला डाक्टर हमेशा नहीं मिलता। फोर्टी एट आवर्स बॉडी को चार्ज में रखना पड़ता है। लेकिन हम लोग तो बाहर बैठे रहते हैं—तब तक आधी बॉडी चूहों के पेट में चली जाती है। चूहे सिपाही तो नहीं होते।"

हा-हा करके हँसने लगे घनश्याम बाबू और कुमकुम का पूरा बदन काँप कर अवश होने लगा। परन्तु वह लोग नहीं जानते कि कोमल-कोमल औरतें भी कितनी जिद्दी हो सकती हैं।

वह मन ही मन सोच रही थी, "मिस्टर दीननाथ वसुमल्लिक, थाने के दरोगा आपके चाहे कितने शुभाकांक्षी हों, पर आपके दिन कम होते जा रहे हैं। आप सोचते होंगे बात पुरानी हो गई! सब साक्ष्य-प्रमाण मिट गये, पर अमिताभ राय चौधरी की विधवा पत्नी का तीसरा नेत्र खुल गया है, उस दिन का पूरा दृश्य अब उसकी आँखों के सामने दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट हो गया है।"

"अदालत यहाँ से कितनी दूर है ?" थाने से निकल कर कुमकुम ने एक राहगीर से पूछा।

● ●

"बहू, तुम क्या आफिस का नाम लेकर छिप कर आसनसोल गई थी ?" उत्तेजना से वृद्ध हरिसाधन का गला काँप रहा था। "इन दो दिनों का वेतन नहीं देंगे वह लोग तुम्हें।"

वेतन मिले या न मिले उससे कुमकुम को क्या फर्क पड़ता था। जिसके

अंतिम क्षणों की खोज-खबर लेने के लिये वह निकली थी उसका वेतन तो इस महीने भी आया था।

"बहू, मिस्टर वसुमल्लिक बहुत नाराज हैं। क्षतिपूर्ति के रुपये मिलने में अगर देर हो गई तो ? बहू, एलोरा की बात क्यों नही सोचतीं तुम ? वह रुपया मिले बिना विवाह की बात की हो नहीं जा सकती। इसके अलावा सूद। जो चला गया वह क्या लौट आयेगा, बहू ? मैं दरिद्र हूँ, मेरे मुँह से यह बातें निकली हैं, इसलिये अच्छी नही लगतीं।" हरिसाधन की रुलाई फूट पड़ी।

"हम दरिद्र हैं यह कह कर वह झूठी बदनामी करेंगे ? जो ड्राइव कर ही नहीं रहा था उसे ड्राइवर लिखा देंगे ?" सागरिका स्वयं भी कुछ समझ नही पा रही थी।

हरिसाधन थर-थर काँपने लगे। "जिस हेतु मेरे पास रुपया नहीं है उसी हेतु मेरे मुँह से कुछ कहना अच्छा नही लगता, बहू। पर उन लोगों ने कहा है कि जो चला गया है, उसे लेकर ज्यादा मगजपच्ची करने से अच्छा फल नही होगा।"

मुँह पर कोई जवाब नही दिया कुमकुम ने। परन्तु अगर दीननाथ वसु-मल्लिक सामने होते तो पूछती, जो हो गया उसके प्रति अगर आपलोगों की इतनी निस्पृहता है तो मैं सुधामुखी थाने में गई थी यह खबर आपके पास आई कैसे ?

"बहू, मैंने सुना है कि तुमने कम्पनी के हेड ऑफिस चिट्ठी लिखी है ? मिस्टर वसुमल्लिक अब फ्यूरियस हैं।"

"मैंने तो चिट्ठी लिख कर सिर्फ यह जानना चाहा है, उस दिन बारह चालीस पर सुधामुखी थाने के इलाके में आलिवग्रीन गाड़ी कौन चला रहा था ?"

"फिर किसी विपत्ति में न पड़ जाऊं ?" दीर्घश्वास छोड़ कर कहा हरिसाधन ने। "मिस्टर वसुमल्लिक की मानहानि होने पर वह मुकदमा कर सकते हैं। ऐसे लोगों के मान की कीमत कई लाख रुपये होती है।"

"और जो चला गया उसका कोई मान नहीं था ?" फूट-फूट कर रोने लगी कुमकुम।

हरिसाधन को पता नही था कि चिट्ठी पाकर पर्सनल आफीसर ने कुमकुम को बुलवा कर पूछा था, "मिसेस राय चौधरी, आप क्या भापर एडवाइस लेकर काम कर रही हैं ?"

"मुझे भापर एडवाइस देने वाला तो चला गया। अब मैं अपनी स्वयं एडवाइस के अलावा किसी की बात नहीं मानूँगी।"

"मिसेस राय चौधरी, हम लोग आपको कम्पनी की पोजीशन स्पष्ट रूप से समझा देना चाहते हैं। जिस समय सुधामुखी थाने में एरिया के कम्पनी की गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हुई थी, उस समय कम्पनी तो वहाँ उपस्थित नहीं थी। हमलोग रिपोर्ट के अनुसार चलते हैं। पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार आपके पति गाड़ी चला रहे थे। इन्सानियत के नाते हमने यह नहीं देखा कि गाड़ी में बियर की बोतलें थीं या नहीं। हमलोग तो ऐज ए कम्पनी पुलिस रिपोर्ट के मुताबिक चलेंगे। गाड़ी की जिम्मेदारी आपके पति की थी, उसके बाद क्या हुआ कम्पनी को क्या पता? कम्पनी आपको क्यों बतायेगी कि उस समय गाड़ी कौन चला रहा था?"

"पर उनका जो अफसर गाड़ी में बैठा था, उसकी मर्तबा? बीयर की बोतलों की बात आपलोग नजरों में क्यों नहीं लाये? मैं क्या आपसे दया की भीख माँग रही हूँ?"

पर्सनल आफीसर ने उत्तर दिया था, "हमारे लिये गाड़ी का दूसरा आरोही पैसेंजर था जिनका काम के सिलसिले में उस गाड़ी में जाने का अधिकार है, बस इतना ही। इन मामलों में पुलिस की बात ही अंतिम बात होती है। कागज पर वह जो लिख देते हैं, हम वही मान लेते हैं। नथिंग लेस, नथिंग मोर।"



"चारुशीला, मैं तेरे पास ही चली आई।" अन्दर आकर हाँफने लगी सागरिका।

अचानक इस तरह उसे देखकर खुश ही हुई सागरिका। बोली, "इस समय तुझे देखकर ऐसी खुशी हो रही है जैसे ऐट कैजुअल रेट पर एक फुलकवर बेक-कवर विज्ञापन का रिलीज आर्डर मिल गया हो।"

"आजकल मैं बहुत अवाध्य हो गई हूँ, फुफकार रही हूँ। चारुशीला, दुनिया की कोई ताकत मुझे नहीं रोक सकती। आवेदन-निवेदन, जासूसी, मामला-मुकदमा, हर चीज का सामना, करने को तैयार है तुम्हारी सागरिका। वही सागरिका जिसे कभी तुमलोग गुड़िया समझती थी।"

"सागरिका, तू इस समय सचमुच नशे में है। रुपये का नशा, शराब का नशा, रेस का नशा, इन सबसे डेन्जरस नशा है—मुकदमे का नशा।"

"तू जो कहना चाहे कह ले चारुशीला। पर बहुत साध्य साधना के बाद अंत में मुझे प्रकाश की किरण दिखाई दी है। किसी को नहीं छोड़ूँगी मैं।"

"तू इतना गुस्सा क्यों हो रही है, सागरिका ?"

"गौतम को उन लोगों ने शराबी कहा है। उसे अगर वह दुर्घटना में बच जाता तो उस पर मुकदमा चलाया जाता।" फुफकार उठी सागरिका।

"वह देख, मेरे मिट्टी के गमले में फूल खिल रहा है। चटक पक्षी उसके पास चक्कर काट रहा है। एक पतंगा कौन-सा काम पहले करे यह न समझ पाने के कारण परेशान है। पृथ्वी पर कितना कुछ उपभोग करने को है, सागरिका। और तू, मैं और वासना, हमलोग जो नहीं है उसी को लेकर हाय-हाय कर रहे हैं।"

जब वासना की बात उठ ही गई तो चारुशीला ने कहा, "एकदिन हम दोनों मिलकर वासना के यहाँ जायेंगे।"

सागरिका का मुँह गम्भीर हो गया। बोली, "किसी को उपदेश देना कितना आसान है ! उस बार जब तूने मुझे बेलतला वासना के घर के पास छोड़ा था, मेरी माँग में सिन्दूर दिप रहा था। उस समय वैधव्य एवं मृत्यु के सम्बन्ध में कितना उपदेश दिया था मैंने उसे। वासना तब भी पति के सम्बन्ध में बस एक बात की रटना लगाये थी—'वह खाकर क्यों नहीं गया'। हालांकि मैं उसे अंडा खिला आई थी।"

कॉफी बना ली चारुशीला ने। बोली, "तुमसे मुलाकात होने के अगले दिन ही मैं वासना के यहाँ गई थी। लगा था, तेरी बात का अच्छा असर हुआ था।"

"मेरी क्या बात थी ? बात तो तेरी थी। तूने ही उस विदेशी सैनिक की खबर दिखाई थी जिसने मरने से पहले हाल ही में ब्याही पत्नी को लिखा था 'अगर मुझे कुछ हो जाये तो फिर से जीवन शुरू करो। हैव ए गुड लाइफ'।"

चारुशीला बोली, "वासना उसदिन मुझे एक नई औरत लगी थी। उसका कोई सहपाठी कई बार उससे मिलने आया था, पहले तो उसने उसे छूट नहीं दी थी। लेकिन लगता है उस सैनिक की बात उसने कई बार पढ़ी थी, जिससे उसके मन को बहुत बल मिला था।"

"मैंने उससे कहा, सारे दिन इस तरह अकेले बन्द कमरे में न बैठकर कुछ देर के लिये बाहर निकला कर। तेरे मन को ऑक्सीजन मिलेगी। तू तो अपने पति के साथ दूर प्रांतर में निकल जाती थी, बीयर पीती थी, खुद ड्राइव करके घर लौटती थी।"

"जानती है सागरिका, शायद उसी फ्रेंड ने सहानुभूतिवश वासना से बाहर निकलने को कहा था। परन्तु वासना को डर लगता है—युवती विधवा का किसी के साथ अकेले जाना, तू समझ ही सकती है। मैंने देखा कि वह क्रमशः डूबती जा रही है, उसके मन में अंधकार भर गया है—शोक का हनीमून समाप्त होने पर असहाय इन्सान की जो हालत होती है, वैसी ही उसकी हो गई थी।"

"तूने क्या कहा?" सागरिका ने जानना चाहा।

"जो तूने कहा था, उसके मुँह से सुनकर वही रिपीट कर दिया—'कम से कम एक बार निकल लो। जीवन चीनी मिट्टी के बर्तन जैसा नाजुक नहीं है। जीवन है चाँदी जैसा—जिसे जरूरत पड़ने पर गलाकर नई चीज बना ली जाती है।' तब उसकी समझ में आ गया था कि एकबार किसी के साथ घर से बाहर निकली होती तो अच्छा होता—पर किसी आदमी के साथ अकेली जाना! वह शायद तुमसे सलाह लेना चाहती थी। मैंने तो कह दिया था कि उसकी कोई जरूरत नहीं है। सागरिका भी मुझसे यही कहेगी। और जहाँ तक अकेले निकलने का सवाल है—इस विषय में तू स्वयं सोच। कोई रास्ता अवश्य निकलेगा। तू चुपचाप जा, सारी दुनिया को सर्कुलर बाँटकर निकलने की क्या जरूरत है? इसके अलावा तू कहीं किसी के साथ रात तो बिता नहीं रही जो बदनामी होगी। जिस दिन जायेगी उसी दिन लौट आयेगी।"

उस समय सागरिका ने वासना से बहुत-सी बातें कहीं थी, परन्तु अब वही बातें अपने मन में अशांति पैदा कर रही थी। मनुष्य की परिस्थिति कितनी अजीब होती है—अपनी परिस्थिति बदल जाने पर दूसरे को दिये अपने परामर्श भी बदलना चाहता है। दूसरे को दिये उपदेश जब पलट कर स्वयं को प्रताड़ित करते हैं तो विपत्ति की सीमा नहीं रहती।

"क्या हुआ सागरिका, तुझे? इतनी अनमनी क्यों हो गई?" चारुशीला ने पूछा।

मन की दुविधा को प्रकट करते हुए सागरिका बोली, "वासना को मैंने परामर्श दिया यह सच है, लेकिन उसका इस तरह निकलना क्या ठीक होगा?"

चारुशीला बोली, "तू यह मत भूल कि मौका मिलते ही वासना पति के साथ गाड़ी में निकल पड़ती थी। वर्धमान, राँची, कोलाघाट, डायमंड हार्बर, शान्तिनिकेतन कहाँ नहीं गये थे वह लोग?"

"लेकिन औरत के अकेले निकलने में बहुत मुसीबतें हैं चारुशीला।"

"वासना के मानसिक स्वास्थ्य के लिये उसका बीच-बीच में घर से निकलना बहुत आवश्यक है। और फिर तू ही अब कह रही है कि औरत चीनी

निष्ठा का दर्शन है। मैं यह बात नहीं मानती सागरिका।" ओठ बिचका कर कहा पारमीता ने।

"तेरी बात और है," जरा दुर्बल हो गई थी सागरिका।

"क्यों? इसलिये कि मेरा पति जीवित रहते हुए मुझे छोड़कर दूसरी औरत के साथ रह रहा है? और वासना का पति बिना खाये हवा के लिये दुनिया से चला गया इसलिये! अब तू मेरा जी और मत जला सागरिका, नहीं तो शायद मैं भी रोने लगूंगी। लेकिन मैं यह भी नहीं कर सकती। मैं डाइ-वोर्स्ड वर्किंग वुमन हूं, मुझे गालों पर रूज, ओठों पर लिपस्टिक और नाखूनों पर नेलपालिश लगाकर विज्ञापन जुटाने पड़ते हैं—आंसू बहाने की विलासिता मेरे लिये नहीं है।"

"पारमीता, तू मेरा मगज अब और खराब मत कर। वासना जिसके साथ चाहे वहां मर्जी हो घूमे। उसने अपनी आंखों के सामने पति की मृत्यु देखी है। उसे कुछ करने को नहीं है। परन्तु मैं इस समय सुभानुखी थाने के इक्यठ नम्बर केस के अलावा और कुछ नहीं सोच सकती। मैं सोते, बैठे, चलते बस यही देखती हूं कि गौतम के शरीर में बाँयें हिस्से पर सांघातिक चोटें लगी हैं और उस पाजी बूढ़े आदमी की सारी इन्जरी भी बाँयीं तरफ ही है। ठहर, मैं सुभानुखी हेल्थ सेंटर की रिपोर्ट एक बार और पढ़ लूं।"

यह कहकर सागरिका फाइल में डूब गई।

"क्या हुआ तुझे? कॉफी ठंडी हुई जा रही है," डांट लगाई पारमीता ने। "कन्सन्ट्रेशन की जरूरत पड़ने पर मैं कॉफी ठंडी नहीं करती। मैं पुरुषों की तरह सिगरेट सुलगाती हूं।"

सागरिका बोली, "हेल्थ सेन्टर की रिपोर्ट कहती है कि माथे के बायें ओर, बाईं आंख के कोने में, बाईं ओर के चेहरे पर, गर्दन की बाईं तरफ, बायें हाथ में—सब मिलाकर तेरह माइनर एवं मीडियम इन्जरी हैं।"

"अजब की पैटर्न!"

"इसीलिये तो दाहिनी ओर कम से कम खरोंच ढूंढ़ रही हूं। लेकिन दीननाथ वसुमल्लिक की मेडीकल रिपोर्ट मुझे ओब्लाइज नहीं कर रही।" ओठ बिचकाये सागरिका ने।

"जो होना था हो गया सागरिका।" फिर अनुरोध किया पारमीता ने।

"तू भी यही कह रही है कि जो हो गया सो मानकर बिना किनारी सफेद धोती पहनकर हजारों विधवाओं की भीड़ में मैं भी शामिल हो जाऊं? तो।

बाबूजी क्यों कहते थे, ऐज ए फाइटर लड़के और लड़की में कोई अंतर नहीं है ? इंदिरा गांधी का इतने दिनों का इतिहास क्या जलकर भस्म हो गया ?"

"इंदिरा गांधी से और क्या सीखा ?" यह महिला चारुशीला को बहुत पसन्द नहीं थी ।

"लड़कियाँ चीनी मिट्टी का बर्तन नहीं हैं। किसी भी विपत्ति में टूटना नहीं चाहिये; मौत से पहले सुबह शाम मरने का एकाधिकार औरतों का ही नहीं है।"

सागरिका बोलती जा रही थी, "पिछली बार रेडियो आफिस में प्रोग्राम रिकार्ड कराने के बाद जब वासना से कहा था तो बेवकूफों की तरह वासना बुदबुदाई थी, 'कालेज में लड़कियों को यह बात क्यों नहीं सिखाई ?' उसका ख्याल है कि समय रहते प्रत्येक लड़की को विधवा होने की ट्रेनिंग, डाइवोर्सी होने की ट्रेनिंग और अकेले जीने की ट्रेनिंग देना बहुत जरूरी है। लड़कियों को चाहिये इस अधिकार के दावे के तीस करोड़ टेलीग्राम प्रधानमंत्री को भेजें।"

ठीक ही तो कहती है वासना। चरम दुख के समय साधारण आदमी के मुँह से भी असाधारण बात निकल आती है। जैसे, दुःख सहसा तीसरा नेत्र खोल देता है। पुलिस, बड़े लोग एवं धुरंधर कानून विशेषज्ञ जिस खूबसूरती से घटना को सजाते हैं, अभागिनी विधवा के सामने उसका भांडा फूट जाता है—सागरिका ने सोचा।

सोचते-सोचते सागरिका का मुँह चमक उठा।

"क्यों री ? साधना का सिद्धिलाभ हो रहा है क्या ? तेरे चेहरे पर दिव्य-ज्योति फूट रही है।" मधुर ताना मारा चारुशीला ने।

क्रोध नहीं दिखाया सागरिका ने। बोली, "मान ले, एक आदमी ने पुलिस के सामने सफेद झूठ बोला हो और वह प्रमाणित हो जाये, तो फिर उसके आफिस में क्या होगा; बता सकती है ?"

"वह आफिस में भी मुसीबत में फँस जायेगा। ऐसा हो तो उसे आफिस में भी सजा मिलनी चाहिये।"

"आफिस जा-जाकर मैं यह जान गई हूँ कि इस तरह के मामले में क्या होता है। पहले सस्पेंशन होता है, अखबार में जिसे सामयिक बर्खास्तगी कहते हैं। फिर बर्खास्त और जेल।"

"जेल क्यों ?" चारुशीला ने जानना चाहा।

"जेल नहीं तो क्या होगा ? पुलिस को झूठा बयान देकर सारी बात पर लीपापोती करने की सजा यही तो है।"

"कहीं पढ़ा था मैंने—कहाँ यह याद नहीं आ रहा कि झूठ बोलने के लिये

कानून में कोई सजा नहीं है—जो चाहे झूठ बोल सकता है ?" कानून के संबंध में कौतूहल दिखाया चारुशीला ने ।

कुमकुम बोली, "हाँ, सजा नहीं भी नहीं है, पर वह केवल अपने आत्मीयस्वजनों से झूठ बोलने पर, बंधु-बांधवों से झूठ बोलने पर, पास-पड़ोसियों से झूठ बोलने पर, पत्नी से झूठ बोलने पर नहीं है—उसके लिये थानेदार तुम्हें गिरफ्तार नहीं करेगा, वरन् ऐसा करने के लिये उत्साहित करता रहेगा । लेकिन अंग्रेजों ने थाने की डायरी में भारतीयों को झूठ लिखवाने की स्वाधीनता नहीं दी । धर्मा-वतार के सामने झूठ नहीं बोल सकती तुम । सिनेमा में नहीं देखती ? गवाही शुरू होने के पहले शपथ दिला कर झूठ बोलने वालों की शुद्धि कर ली जाती है ।"

"पर संस्कृत की अध्यापिका सुनेभादि ने कहा था कि प्राणरक्षा के लिये झूठ बोला जा सकता है", चारुशीला ने याद दिलाया ।

"शास्त्र में चल जाता है यह सब, परन्तु थाने और अदालत में यह सुविधा नहीं है । विश्वास नहीं है तो कानून की किताबें पढ़ ध्यान से ।"

"अब तू वकील बन जा ! इन्जन्क्शन देकर मेरे पति का दूसरा विवाह रोक देना, पर फीस एक पैसा भी नहीं मिलेगी ।" चारुशीला ने अपना अपमानित शरीर सिंगल बेड पर ढीला छोड़ते हुए कहा ।

कुमकुम बोली, "छोटे से झूठ से कई बार बड़ी-बड़ी विपत्तियों का सूत्रपात होता है, चारुशीला ।"

"प्रेसीडेन्ट निक्सन की जीवनी पढ़ने को कह रही है क्या मुझे ? वाटरगेट का एक छोटा-सा झूठ ढकने के लिये झूठ का चेन-रिएक्शन शुरू हो गया ।"

"वाटरगेट तो बहुत दूर की बात है ! यहीं थोड़ी दूर सुधामुखी थाने में ही दीख जायेगा तुझे ! झूठ बोलने की सजा तो है ही—इस पर झूठ बोलकर जाँच-पड़ताल करने में विभ्रान्त करने का अपराध भी है ।"

"यह क्या है !" कुमकुम की सारी बातें अब चारुशीला की समझ में नहीं आतीं ।

सागरिका बोली, "मामला मैं तेरे ऊपर ट्राइ करती हूँ । मान ले, तू मजिस्ट्रेट है—धर्मावतार, एक आदमी गाड़ी चला रहा था, उसके पास एक दूसरा आदमी बैठा था । गाड़ी चलाने वाले ने गाड़ी एक पेड़ से टकरा दी । बगल में बैठा आदमी वहीं मर गया, कुछ कह कर जाने का भी सुयोग नहीं मिला उसे । फिर पुलिस आई—गाड़ी चलाने वाले ने मुसीबत से बचने के लिये कह दिया कि यह आदमी गाड़ी चला रहा था और मैं बगल में बैठा था···"

"यह तो किसी और की गलत सलाह और साजिश है।"

"पुलिस की साजिश तो प्रमाणित होती नहीं और गलत सलाह लेने का सारा दायित्व ग्रहीता का है। किसी के गलत सलाह देने के कारण मैंने अपराध किया है यह डिफेन्स तो रामायण के युग से ही अचल है।"

"रुक, मैं सीधी होकर बैठ जाऊं। धर्मावतार अधलेटे होकर केस सुनें, यह अच्छा नहीं लगता।" कुछ देर के लिये चारुशीला अपना दुख भूल गई थी।

"तो फिर धर्मावतार, उस क्रूड से विभ्रांत होकर पुलिस ने इस आदमी की शराब के लिये डाक्टरी जाँच नहीं कराई—पेट में क्या था, पता नहीं चल पाया। न प्रश्नोत्तर हुआ और न गाड़ी की ठीक से जाँच-पड़ताल हुई, क्योंकि स्वयं ड्राइवर बैठा था। रिपोर्ट लिखा कर आदमी झटपट वहाँ से दूर अपनी पसन्द के नर्सिंग होम चला गया। मामला दब गया। दुर्घटना क्यों हुई थी, लापरवाही और असावधानी थी कि नहीं, पता नहीं चला। इसका मतलब है कानून को धोखा देकर कड़ी सजा से बचना। फिर अचानक जब सत्य प्रकट हो गया है तो इस आदमी को अरेस्ट करना अनिवार्य हो जाता है। पुराने मामले के कंकाल ने जीवित होकर नाचना शुरू कर दिया है योर ऑनर।"

"ओह सागरिका! तू सचमुच अद्भुत है। तू अगर चाहे तो मेरे पति को भी गर्दन पकड़ कर वापस ला सकती है। कौन चाहता है भरण-पोषण के हजार रुपये? जूठे बर्तन की तरह पड़ी हूँ मैं इस दुनिया में, कानून-कचहरी ने कुछ नहीं किया मेरे लिये।" यह कह कर धर्मावतार ने स्वयं ही रोना शुरू कर दिया।



दीननाथ बसुमल्लिक आफिस में बैठे बिहार मार्केट का एक अंश प्रतियोगी कम्पनी के हाथ से छीन लेने की योजना बना रहे थे कि उसी समय अदालत का सम्मन आया।

त्योरियाँ चढ़ गईं उनकी और दाँत पीसते हुए अनजाने ही वह अपने बाँयें गाल के दागदार पर हाथ फेरने लगे। आज उन्होंने आफिस से जरा जल्दी निकल कर अपनी गर्ल फ्रेंड के पास जाने का प्रोग्राम बनाया था पर सब गड़-बड़ हो गया था।

मृत्यु दीननाथ को कष्ट पहुँचाती है, इसीलिये जहाँ दुख हो वहाँ जब तब चलकर मना आते हैं। परन्तु अब एक नई समस्या सामने आ खड़ी हुई थी।

महकमा मजिस्ट्रेट के कोर्ट में किसी ने पुलिस के विरुद्ध मुकदमा दायर किया था। अभियोग था, मामले की ठीक से जाँच-पड़ताल नहीं हुई। क्रिमिनल प्रोसिडिओर कोड की कई धारा-उपधाराओं का उल्लेख था। आवेदन किया गया था कि पुलिस की गफलत और दीननाथ वसुमल्लिक के असत्य वादन के कारण तहक़ीक़ात का स्रोत गलत रास्ते पर जाकर बंद हो गया था। उस दशा में थाने में आवेदन-निवेदन करने पर भी जब कोई फल नहीं हुआ तो बाध्य होकर अंडर सेक्शन""आफ द. सी आर पी सी अदालत में यह आवेदन करना पड़ा।

चौंक उठे मिस्टर वसुमल्लिक, मजिस्ट्रेट एक महिला थी। धर्मावतार का स्त्रीलिंग क्या होता है, जानने की इच्छा हुई उनकी। शास्त्रों में तो जितने भी अवतारों का उल्लेख हुआ है, सभी पुरुष हैं—महिलाएँ भी अवतार हो सकती हैं?

आफिस के पर्सनल आफीसर को फोन किया दीननाथ ने। "वसुमल्लिक हियर। उस रोड एक्सीडेंट केस के मुआवजे का क्या हुआ?"

"हम विधवा की मृत्यु अथवा रिमैरिज, व्हिच एवर इज अर्लियर, तक आठ सौ पचहत्तर रुपये पेन्शन दे सकते हैं, अगर विधवा इन फुल एंड फाइनल सेटेलमेंट के लिये तैयार हो। प्लस आर्थिक मुआवजा अड़तालीस हजार तीन सौ निन्यानवे रुपये दस पैसे।"

"यह फिगर कैसे निकाले?"

"कम्प्लीकेटेड फारमूला है—हेड आफिस ने कम्प्यूटर से निकाल कर भेजा है।" पर्सनल आफीसर ने बताया।

"चेक-वेक जो भी जाये मेरी मार्फत भिजवाइयेगा। भद्र महिला मेरे खिलाफ अभी भी प्रोपैगन्डा कर रही हैं। पुलिस की रिपोर्ट पर भी विश्वास नहीं कर रही। आबियसली लक्ष्य एक ही हो सकता है—मुआवजे और पेन्शन की रकम बढ़वाना और अपनी टेम्परेरी सर्विस परमानेन्ट कराना।"

"जमाना बड़ा खराब आ गया है मिस्टर वसुमल्लिक। रुपया लेकर भी आदमी मुँह बंद नहीं रखना चाहता।" दुख प्रकट किया पर्सनल आफीसर ने। "इन सब मामलों में पूरी तरह छुट्टी पाने के लिये ही हमलोग 'इन फुल एंड फाइनल सेटेलमेंट' की बात पर इतना जोर देते हैं।"

"अचानक कोई पारिवारिक दुर्योग घट जाने पर पहले तो आदमी ठीक रहता है। फिर बहुत से सीख देने वाले जुट जाते हैं। वही लोग तरह-तरह की सलाह देते हैं। मुझे लगता है कि वह पीताम्बर मजूमदार जो मिसेज रायचौधरी

के ससुर के मित्र हैं, सारे झगड़े की जड़ हैं। मुझे खबर मिली है कि वह सज्जन मिसेस रायचौधरी के साथ सुधामुखी थाने भी गये थे।''

''लालच गुण घर विनाश'', टेलीफोन रख कर दीननाथ वसुमल्लिक ने मन्तव्य प्रकट किया।

''मजिस्ट्रेटों की भी बलिहारी है।'' वसुमल्लिक ने मन ही मन कहा। किसी ने भी झूठा सन्देह दिखा दिया और उन्होंने नोटिस इशू कर दिया कि कारण बताओ, यह पिटीशन केस क्यों नहीं लिया जाये।

अतः पर मिस्टर वसुमल्लिक ने कम्पनी के लॉ आफीसर अर्जुन सेन को फोन किया—''हैलो, इस झूठे हंगामे के लिये मैं मानहानि का दावा कर सकता हूँ ना?''

''अवश्य कर सकते हैं। लेकिन यह मामला निपट जाने के बाद। अगर मैलाफाइड अर्थात् दुरभिसंधि प्रमाणित हो जाये तो अदालत पार्टी को क्षतिपूरण दे सकती है 'कॉमनस्युरेट' विथ हिज मान-सम्मान!''

''दुरभिसंधि तो पद-पद पर है। मुझे और कम्पनी को तंग करने व मुसीबत में डालने के लिये·····बल्कि आप कम्पनी की तरफ से कोई अच्छा मशहूर वकील भेज दीजिये वहां।'' हुंकार कर कहा दीननाथ ने। परन्तु उधर से जो जवाब आया उसके लिये तैयार नहीं थे वह।

''ऐसा नहीं हो सकता, मिस्टर वसुमल्लिक। आपने थाने में जो बयान दिया था, मुकदमा उसके लिये है। वकील बैरिस्टर सब आपको अपने खर्चे पर अपाइंट करने पड़ेंगे।''

लॉ आफीसर की बात सुन कर हताश हो गये दीननाथ।

''क्यों? इस केस में मैं और कम्पनी एक नहीं हैं क्या?'' जरा गुस्से से पूछा उन्होंने और सुन कर आश्चर्यचकित रह गये कि हेड आफिस का निर्देश है, दुर्घटना-स्थल पर आपने जो कुछ भी किया था वह अपनी व्यक्तिगत भूमिका में किया था, कम्पनी उसकी भागीदार नहीं है। पुलिस को लिखाई गई एफ-आई-आर आपकी व्यक्तिगत एफ-आई-आर है, कम्पनी की नहीं।

मिस्टर वसुमल्लिक हर दाम मार्केट को एक विशाल केक के रूप में देखते थे और उस लोभनीय केक का कितना अंश उनकी कम्पनी के हिस्से में आयेगा इसी चिन्ता में मशगूल रहते थे। उस दिन पहली बार उन्होंने अपने मानस पट से केक को हटाकर अदालत से भेजे गये कागज देखने शुरू किये।

कानून की तंग गलियों में अबाध विचरण की अभिज्ञता दीननाथ की भी थी। कितने ही प्रतिद्वन्द्वी डीलरों को अदालत में घसीटकर समुचित शिक्षा

दी थी उन्होंने। उनकी धारणा थी कि दीवानी अदालत में वक्त बहुत लगता है, शीघ्र शिक्षा देने के लिये उन्हें दुष्ट दुकानदारों को फौजदारी अदालत में घसीटना ही अच्छा लगता था। वह सोच ही नहीं पा रहे थे कि यह अननुकूल महिला किस प्रकार इतनी पुरानी घटना को, जिसके सारे प्रमाण नष्ट हो चुके थे, खींचेंगी। मानहानि का डर नहीं होता तो दीननाथ प्रकट में कहते कि कोई-कोई धर्मावतार नामी लोगों को अदालत के कटघरे में खींचकर बहुत खुश होते हैं। नहीं तो उनके नाम समन भेजने की बात ही नहीं उठती।

कागजों को जरा ध्यान से पढ़ने पर अचानक दीननाथ ने देखा, इस मामले में वकील नहीं था कोई, आवेदन करने वाले ने स्वयं ही अदालत में केस फाइल किया था। यह भी एक ढंग है। महिला धर्मावतार का हृदय शायद इसीलिये द्रवित हो गया है। इससे मनोबल बढ़ जाने पर भी जब यह ख्याल आया कि मुकदमें का खर्च कम्पनी वहन नहीं करेगी तो जनरल मार्केटिंग विशेषज्ञ दीननाथ वसु-मल्लिक जरा दुर्बल पड़ गये।

● ●

ट्रेन से आसनसोल जाते हुए रास्ते में सारे शरीर में एक विचित्र सिहरन का अनुभव कर रही थी कुमकुम।

घर से निकलते समय दरवाजे पर ससुर बड़ी गंभीर मुद्रा में खड़े थे। बहू से कुछ कहने को वह अधीर थे।

वही पुरानी बात। मुकदमा शुरू होने पर कब खत्म होगा, कोई नहीं जानता। इस देश में पैसे वाले ही मुकदमा जीतते हैं और इस मुकदमे की परिणति तो सर्वनाश ही है—वह लोग क्षतिपूर्ति के रुपये रोक लेंगे।

रोक लेने दो! यह सब डर अब कुमकुम को पीछे नहीं ले जा सकते। पर कुमकुम चुप ही रही कुछ बोली नहीं।

अंतिम प्रश्न किया हरिसाधन ने। "मुकदमें का जो भी नतीजा निकले, गौतम क्या लौट आयेगा?"

कुमकुम का शरीर फिर अवश होने लगा। जाने वाला लौट कर नहीं आता, यह तो वह भी जानती है। लेकिन गौतम की स्मृति अकलंक हो जायेगी, उस पर लगाया झूठा आरोप हट जायेगा। वह निष्ठुर आदमी, जिसने घर पर बैठकर पति को पत्नी का गाना नहीं सुनने दिया समझ जायेगा कि हर अन्याय का प्रतिविधान है।

इसके अलावा पीताम्बर काकू से उसने सुना है मिस्टर वसुमल्लिक ने इसी मुकदमे को चैलेंज की तरह लिया है। एक दुर्विनीत विधवा को उचित शिक्षा देने की ठानी है उन्होंने। 'गौतम, तुम होते तो अवश्य अपनी पत्नी की इस परिस्थिति में रक्षा करते। पर तुम नहीं हो यह सोचकर कोई मनमानी करे, यह सहन नहीं करूँगी मैं। दीननाथ को अदालत में ले जाना भी तो कम नहीं है।'

पहले दिन चारुशीला मिली थी। उसने पूछा था, "अदालत में क्या कहेगी, सोच लिया है ?"

"सोच तो बहुत कुछ रखा था, पर अब जैसे सब कुछ गड़बड़ हुआ जा रहा है।" सागरिका ने अपनी दुविधा प्रकट की थी।

चारुशीला बोली थी, "एक अच्छी बात तो तुझे बताई ही नहीं। कल वासना से मिलने गई थी। तेरे इस मुकदमे की बात सुनकर वह जाने कैसी हो गई। मैंने उससे कहा, 'हमलोगों में केवल सागरिका ही लड़ रही है।' परन्तु वासना शायद मानसिक जड़ता भोग रही है। मुँह पर जरा भी चमक नहीं रही। हर वक्त चुपचाप घर पर बैठी रहती है, उसकी धारणा बन गई है कि वह फूटी तकदीर लेकर जन्मी है। वह जो सिम्पैथेक सहपाठी था, जिसके साथ बाहर निकलने के लिये तूने प्रेरित किया था, उसके मामले में भी शायद कोई बात हो गई है। वासना बस यही कहती है कि अब इस घर की चौखट से बाहर पैर रखने को मत कहना मुझे। मैं अभागी हूँ—जहाँ मेरा पैर पड़ता है, दुख का पहाड़ टूट पड़ता है। तू भी मेरे पास ज्यादा मत आया कर। नहीं तो तू भी मुसीबत में पड़ जायेगी'।"

वासना के दुख की बात उसके दिल में और भी गहरे पैठती। लेकिन अगले दिन शुरू होने वाले मुकदमें के उद्वेग ने उसके दिलो दिमाग को जड़ित कर रखा था।

चारुशीला बोली, "तू वासना की चिंता मत कर। शायद उस सहपाठी के साथ निकलने के बाद कोई प्राब्लेम हुई है। मैंने उसे वार्न कर दिया था कि उसके साथ अकेले मत जाना, कम से कम एक तीसरे आदमी को साथ जरूर रखना।" सागरिका ने सोचा इस मुकदमे से निवृत्त हो लूँ तो एक दिन वासना के पास जाकर उसका दुखबाँट लूँगी।

हावड़ा स्टेशन बुकिंग काउन्टर के सामने पीताम्बर काकू को खड़े देखकर सागरिका अवाक् रह गई। "काकू, आप ?"

पीताम्बर बोले, "कल रात ही हरिसाधन से सारी खबर मिल गई थी बेटी। हरिसाधन नहीं चाहता कि तुम मुकदमें में फँसो, यह भी जानता हूँ मैं। लेकिन आये बिना भी नहीं रह सका। एक दो छुट्टियाँ खराब हो भी गईं तो मेरा क्या बिगड़ेगा ?"

मन ही मन सागरिका ने कहा, पीताम्बर काकू, प्रकृत बन्धु वही है जो राजद्वार और श्मशान दोनों जगह उपस्थित हो, साथ रहे।

"तुमने कुछ दिनों के लिये कानून की क्लास ज्वाइन की थी ना ?" पीताम्बर ने पूछा।

"की तो थी, पर परीक्षा में नहीं बैठी। इसके अलावा अब पता चल रहा है पास करने वाले कानून और अदालत में लड़ने वाले कानून में बहुत अन्तर है।"

अदालत की अभिज्ञता ने पीताम्बर को आश्चर्यचकित कर दिया। हरि-साधन की बातों से तो उन्होंने सोचा था कि एक दिन में ही मुकदमा खारिज हो जायेगा और तभी उनकी असली भूमिका शुरू होगी। दीननाथ वसुमल्लिक के हाथ-पाँव पकड़कर अभागी विधवा की तरफ से माफी माँगनी पड़ेगी। इसी-लिये अदालत में दीननाथ को देखकर उन्होंने हाथ जोड़ दिये थे।

किन्तु सागरिका के चेहरे पर बेपरवाही के भाव थे। जिस आदमी की याद आते ही अमिताभ बेचैन हो उठता था, जिस आदमी के चेहरे पर मुस्कुराहट न देखकर उसके पति ने दिन पर दिन असीम यन्त्रणा भोगी थी, आर्थिक मुश्किल न होने से जिसकी नौकरी से उसके पति ने बहुत पहले त्यागपत्र दे दिया होता, उसकी लेशमात्र परवाह नहीं करती सागरिका। गौतम जहाँ भी हो, अदृश्य लोक से यह दृश्य देखकर अवश्य खुश हो रहा होगा।

● ●

सारे अभियोगों को अवज्ञा से उड़ा देने का प्रयत्न किया दीननाथ वसु-मल्लिक ने। एक महत्त्वहीन मुकदमे में ऐसे प्रतिष्ठित एवं पदस्थ अफसर को इस तरह लपेटना अच्छा नहीं था तथा परिणाम अच्छा नहीं होगा, यह भी सुना दिया था उन्होंने अदालत को।

आवेदनकारी के पक्ष से कोई वकील नहीं था, यह सुनकर माननीया मजि-स्ट्रेट चकित हो गईं। "आप स्वयं कर सकेंगी ?" सागरिका से पूछा उन्होंने।

"वकील करने के लिये मैं रुपये कहाँ से लाऊँगी ? मेरे पक्ष में कोई नहीं है,

पर मेरे लिये और कोई चारा भी नहीं है, धर्मावतार," प्रारम्भ में ही हाँफना शुरू कर दिया सागरिका ने।

"आवेदनकारिणी के वक्तव्य में सुनने लायक कुछ है ही नहीं—आप मामला डिसमिस कर सकती हैं, धर्मावतार", दीननाथ के अभिज्ञ कानून विशेषज्ञ वकील ने कहा।

"इस देश की पुलिस को पकड़ लाने को कहते ही बाँध लाती है। इस दुर्घटना में अगर जरा-सा भी सन्देह होता तो पुलिस जरूर मेरे मुवक्किल दीननाथ बसुमल्लिक के विरुद्ध दावा दायर करती। फेटल ऐक्सीडेन्ट के केस में पुलिस ने किसी को स्वेच्छा से छोड़ दिया, ऐसा कभी सुना है आपने धर्मावतार? इस मामले में पुलिस निर्दय होती है—इस कारण अपने जीवन में मैंने जितने भी ऐक्सीडेन्ट के मुकदमे लड़े हैं, सब स्टेट वरसेस फर्मा थे। इसके अलावा यह सारे अभियोग लगाने की समयसीमा निकल गई है! दीननाथ बाबू को मुसीबत में डालने का यह षड्यन्त्र मूल घटना के बहुत बाद ठण्डे दिमाग से सोचकर किया गया है।"

परवर्ती विवरण भी अदालत को दिया गया। दीननाथ के वकील ने कहा, "एक दिन अचानक दीननाथ बसुमल्लिक ने तय किया कि वह अपने अधीन कर्मचारियों का कामकाज देखने मार्केट जायेंगे। इस तरह अचानक परीक्षा लेते रहते हैं मिस्टर बसुमल्लिक, जिसकी वजह से सेल्स कर्मचारी तटस्थ रहते हैं। इच्छा होते ही दीननाथ अपनी शोफर चालित कार में मार्केट जा सकते हैं, लेकिन उनकी पालिसी सेल्स कर्मचारी की गाड़ी में उसी की बगल में बैठकर मार्केट जाना है। उससे उन्हें तकलीफ होती है और जवाबदारी भी बढ़ जाती है, लेकिन वह इसी प्रकार मार्केट के बारे में जानकारी हासिल करते हैं।"

"इस मामले में भी इसी तरह यात्रा शुरू हुई थी। बिना बताये अचानक इन्स्पेक्शन नहीं, बल्कि पूर्व संध्या को उन्होंने अमिताभ राय चौधरी को उनको साथ ले लेने की खबर भिजवाई थी। मोर ऑनर, फिर और सैकड़ों बार की तरह यात्रा शुरू हुई थी।"

"गाड़ी रोककर इन लोगों ने शक्तिगढ़ में ब्रेकफास्ट किया, फिर वर्धमान मार्केट में कामकाज देखा। आप समझ सकती हैं धर्मावतार कि परिदर्शक का कार्य बहुत अप्रिय होता है। जैसे आपका काम, दोनों पक्षों को आप एक साथ कैसे भी खुश नहीं कर सकतीं।"

इसके बाद अभियोगकारिणी की ओर देखकर दीननाथ के वकील बोले, "आज पहली बार आपके सामने प्रकट कर रहा हूँ कि वर्धमान मार्केट में मावे-

देन कर्त्ता के पति का काम देखकर दीननाथ वसुमल्लिक बहुत सन्तुष्ट नहीं हुए। विशिष्ट कम्पनियों में अच्छा वेतन दिया जाता है और वैसे ही अच्छे काम की प्रत्याशा की जाती है, विशेषकर जिस कम्पनी में दीननाथ जैसे विशिष्ट, व्यापार-विशेषज्ञ व्यक्ति हों।"

"योर ऑनर, साधारणतः मार्केट के तरुण प्रतिनिधि समालोचना से विचलित नहीं होते, आफिस के उच्चपदस्थ अफसर उनसे हमेशा अच्छे और अच्छे फल की आशा करते हैं और जरूरत पड़ने पर वह लोग कभी-कभी कठोर वचनों का इस्तेमाल भी करते हैं, यही है इस देश की मार्केट की व्यवस्था। हम लोग आपसे कुछ भी छुपाना नहीं चाहते।"

"योर ऑनर, वर्धमान मार्केट में मिस्टर राय चौधरी की सामयिक व्यर्थता मिस्टर वसुमल्लिक की नजरों से छुपी नहीं रही। इस व्यर्थता का भी कारण था—पत्नी के विभिन्न कामकाजों के बहाने से अमिताभ राय चौधरी कलकत्ता ही रहने लगे थे, पहले की तरह फील्ड में नहीं जाते थे। इसीलिये मिस्टर वसुमल्लिक ने उनकी आलोचना की थी।" दीननाथ के वकील एक साँस बोले जा रहे थे।

"योर ऑनर, कहने की बात नहीं है, यही आलोचना स्वर्गीय अमिताभ राय चौधरी के उद्वेग का कारण थी। क्योंकि तब तक वह नौकरी में कन्फर्म्ड नहीं हुए थे एवं प्रकृत परिस्थिति समझकर वह जरा उद्विग्न हो उठे थे। हालांकि मेरे मुवक्किल की पालिसी है कि वह मुंह से कर्मचारियों की चाहे जितनी तीव्र आलोचना कर लें, पर लिखित रूप से वह कभी उनका नुकसान नहीं करते।"

दीननाथ के वकील ने कहा, "वर्धमान से निकलकर दुर्गापुर मार्केट में भी कुछ समय बिताया था उन्होंने। वहाँ भी कम्पनी का मार्केट शेयर देखकर सन्तुष्ट नहीं हो पाये मिस्टर वसुमल्लिक। इसके बाद वह दोनों आसनसोल की तरफ चल दिये।"

"आसनसोल का मार्केट कहाँ है? और ऐक्सीडेन्ट कहाँ हुआ? ऐक्सीडेन्ट की जगह तो आसनसोल की सड़क पर नहीं लगती मुझे।" प्रश्न किया तरुणी मजिस्ट्रेट ने।

अब तक एक-एक शब्द ध्यान से सुन रही थी सार्थिका। उसका ख्याल था कि इस घटना की छोटी से छोटी बात उसने इकट्ठी कर ली है। पर विचारक के प्रश्न ने झकझोरा उसे। आसनसोल के बिजनेस अंचल की ओर,

न जाकर गाड़ी इस सड़क पर आई कैसे ? यह प्रश्न तो उसके दिमाग में आया ही नहीं।

वकील ने एक मिनिट के लिये अपने मुवक्किल से बात की। फिर जवाब में कहा, "योर ऑनर, आपने बहुत ही अच्छा प्रश्न किया। इस मामले में मेरे मुवक्किल की महानुभवता का परिचय मिलेगा।"

"धर्मावतार, आसनसोल का मार्केट बहुत बड़ा और जटिल है। वहाँ प्रतियोगिता भी बहुत अधिक है। बाजार के निकट पहुँचकर एवं अमिताभ की मानसिक अवस्था लक्ष्य करके अभिज्ञ मिस्टर बसुमल्लिक ने तुरन्त अनुमान लगा लिया कि इस मार्केट में भी अमिताभ के काम को आशानुरूप होने की संभावना कम थी। एक ही दिन किसी की बार-बार आलोचना करना उचित न समझकर, दया परवश होकर मिस्टर बसुमल्लिक ने तय किया कि आसनसोल के बाजार में वह कुछ देर के लिये अमिताभ को मौका देंगे। इसीलिये उन्होंने अमिताभ से उन्हें लेक विश्राम भवन में उतारकर अकेले बाजार जाने और वहाँ का काम निपटाकर वापसी में उन्हें ले लेने को कहा। लौटते हुए कुछ देर के लिये वह बाजार में स्वयं नेपाल के स्मगल होने से माल के बारे में जानकारी हासिल करेंगे।"

"योर ऑनर, यह सब मेरे मुवक्किल ने करुणा से द्रवित होकर किया था—जिसे कहते हैं ह्यूमैनिटेरियन ग्राउन्ड पर। हालाँकि आप जानती हैं कि जिनके काम की सफलता पर हजारों परिवारों की रोटी-रोजी निर्भर करती है, उनके लिये कोई गल्ती मान लेना संभव नहीं होता।"

सागरिका और पीताम्बर दोनों ने एक साथ दीननाथ के मुँह की ओर देखा। मुकदमे का नतीजा क्या निकलने वाला था, इसका स्पष्ट अन्दाज लगा कर पीताम्बर बहुत चिन्तित हो उठे—अभी भी कुनकुम इस झंझट से निकल सकती थी।

दीननाथ के वकील ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "इसके बाद ऊबड़-खाबड़ रास्ते से गाड़ी लेक विश्रामभवन की ओर चल दी। रास्ते में किसी समय अमिताभ ने रेडियो चला दिया। और फिर अचानक......" इतना कहकर जरा रुक गये वकील।

फिर बोले, "इसके बाद का सारा विवरण विस्तृत रूप से थाने के रजिस्टर में लिखा है, जिसे मैं पढ़ देता हूँ।....." सारा विवरण पढ़कर वकील साहब बोले।

"योर ऑनर, मृत्यु एक आदमी को लगभग ले गई और दूसरे को प्रायः

अंधकारित मृत्युपथ से किसी प्रकार मुक्ति मिल गई। इस अवस्था में मनुष्य की मानसिक दशा कैसी हो जाती है यह आप जैसी विदुषी महिला को अवश्य ही बताने की जरूरत नहीं है।

"वकील होने के नाते नहीं, पर एक नित्य पथयात्री के नाते यह अवश्य कहूँगा कि मेरे मुवक्किल दीननाथ वसुमल्लिक ने उस निर्जन पथ पर उस अवस्था में जो-जो किया था, अभूतपूर्व था। ख्याल रखियेगा, वह स्वयं आहत थे—सेरह कट, चूंड, इन्जरी की बात तो प्राथमिक स्वास्थ्य की रिपोर्ट में लिखी ही है। उसके बावजूद उन्होंने जो कुछ किया, उसकी प्रशंसा थाने की रिपोर्ट में भी की गई है। थाने के लोग लिखित रूप से आदमी की प्रशंसा कब करते हैं, इससे मजिस्ट्रेट होने के नाते आप अनजान नहीं हैं, योर ऑनर।"

इसके बाद विस्तृत रूप से दुर्घटना की व्याख्या करते हुए अभिज्ञ एडवोकेट बोले, "दीननाथ बाबू के व्यक्तिगत व्यवहार पर केवल पुलिस ही नहीं, सभी संश्लिष्ट व्यक्ति मुग्ध हैं। मृत अमिताभ के पिता ने दुर्घटना के कुछ दिन बाद एक चिट्ठी में क्या लिखा था, पढ़कर सुनाता हूँ। यद्यपि मृत्यु को केन्द्र बनाकर आत्मप्रचार जैसा दुःखकारी और कुछ नहीं है, तब भी इस कृतज्ञताहीन परिवेश में हरिसाधन रायचौधरी की इस चिट्ठी से उद्धृति देने को बाध्य हूँ मैं। उन्होंने लिखा है, 'हमारी चरम विपत्ति के समय आपने दयावश जो किया है, उसके लिये मैं चिरकृतज्ञ रहूँगा। मेरे पुत्र के अंतिम समय आप उपस्थित थे, यह सोच कर थोड़ी शांति का अनुभव कर रहा हूँ'।"

इस चिट्ठी की बात भी सागरिका को मालूम नहीं थी। कब लिखी थी पिताजी ने?

पीताम्बर काकू ने फुसफुसा कर कुमकुम के कान में कहा, "जिस समय लिखी थी, तुम्हारी हालत बताने लायक नहीं थी। मिस्टर वसुमल्लिक ने गौतम के पारलौकिक कार्यों के लिये पाँच हजार रुपये कैश भेजे थे।"

"इस तरह की और भी बातें लिख रखी हैं क्या उन्होंने!" सागरिका के मन का उद्वेग साफ झलक उठा था।

सागरिका लक्ष्य कर रही थी कि मैजिस्ट्रेट के मुख के भाव परिवर्तित हो रहे थे। यह जाँच फिर से शुरू करने का कोई तर्क नहीं ढूँढ़ पा रही थी वह।

सागरिका फिर से उठकर खड़ी हो गई। मन ही मन बोली, 'अमिताभ, तुम जहाँ भी हो, इस क्षण मेरी सहायता करो। रात्रि के अंधकार में गम्भीर स्वप्न में तुमने मुझसे कहा था कि उन लोगों ने मुझे मार डाला है।'

दीननाथ और उनके वकील के मुँह पर दिग्विजय की मुस्कान खेल

थी। पीताम्बर भी स्वयं को प्रस्तुत कर रहे थे कि सागरिका के केस हारते ही किस तरह दीननाथ से दया की भीख माँगेंगे। परन्तु विजयी दीननाथ आज क्या प्रतिशोध लेने वाली इस तरुणी विधवा की मर्मव्यथा समझ कर क्षमा करेंगे?

अपना वक्तव्य देने के लिये सागरिका ने अपने पैर कसकर धरती पर जमा लिये, पर बोल कुछ नहीं रही थी। ऐसी परिस्थिति में ही तो तीक्ष्ण बुद्धि कानूनज्ञ नये शब्दों की निपुण झंकार पैदा करते हैं।

"बोलिये। आपके पास कहने को क्या है?" महिला धर्मावतार के प्रश्न की प्रतिध्वनि दसों दिशाओं से एक साथ आक्रमण करने लगी सागरिका पर।

"मैं जाँच-पड़ताल चाहती हूँ। सत्य के सम्मान में आप ऐसा आदेश दीजिये धर्मावतार।"

"जाँच-पड़ताल तो हो गई है", स्निग्ध स्वर में विचारक ने समझाने की कोशिश की।

"मैं और कुछ नहीं चाहती, धर्मावतार—मेरे पति के अंतिम समय के संबंध में सत्य प्रकट हो।" सागरिका का स्वर बहुत ही करुण हो उठा था।

तभी दीननाथ के वकील ने न जाने क्या कहना चाहा परन्तु विचारक ने रोक दिया। वह इस अभागी युवती को सोचने-समझने का समय देना चाहती थीं।

"सत्य प्रकट करने के लिये ही तो पुलिस की जाँच होती है, मिसेस राय चौधरी।"

"अचानक एक दिन जो घटित होता है, वह जाँच-पड़ताल करने वाली पुलिस की आँखों के सामने तो घटता नहीं। वह कानून व अभिज्ञता के अनुसार प्रत्यक्षदर्शियों से तिल-तिल विवरण संग्रहीत करके उस समय की तस्वीर खींचने की कोशिश करती है। जो सहसा घटित हो जाता है उसी का खाका कानून की आवश्यकतानुसार बहुत देर तक थोड़ा-थोड़ा खींचा जाता है।"

"और अगर उस खाके में सफेद झूठ हो तो, धर्मावतार? सारा विवरण जानते हुए भी अगर प्रश्न-प्रसंग कोई न उठाये? सारे प्रमाणों की जलांजलि देने की चेष्टा हो तो, धर्मावतार?"

"उत्तेजित मत होइये, जो कहना चाहती हैं कहिये। आप जब कोई वकील नहीं कर पाईं तो आपको ही पूरी व्याख्या करनी पड़ेगी।"

सागरिका बोली, "धर्मावतार, उन लोगों का कहना है कि उस अंतिम क्षण में मेरे पति के पास एकमात्र मिस्टर समुपल्लिक ही थे।"

"येस योर ऑनर—प्रत्यक्षदर्शी के नाते एकमात्र मेरे मुवक्किल की बात पर विश्वास करने के अलावा और कोई चारा नहीं है आपके पास", वसुमल्लिक के वकील ने दहाड़कर कहा। "जब एक दिन अचानक घटना घटी थी, उसके बाद हजारों बार तो कहा गया है कि अभागे ड्राइवर अमिताभ रायचौधरी की बगल में ही गाड़ी के एकमात्र सहयात्री दीननाथ वसुमल्लिक बैठे थे, जिनको बेबात तंग करने के लिए इस अदालत में घसीटा गया है।"

अब जल गई सागरिका। बोली, "धर्मावतार, जो सत्य एक असहाय विधवा की नजरों में भी पड़ जाता है वह तहकीकात करने वाले विलक्षण अधिकारियों की आँखों को क्यों नहीं दिखाई देता?"

"आप क्या कहना चाहती हैं?" सागरिका की सहायता करने के ख्याल से झुककर पूछा मजिस्ट्रेट ने।

"मैं चोटों की बात कह रही हूँ—दुर्घटना में जो मारे गये, उन पर प्रचंड आघात बाईं ओर था और जो जिंदा बच गये उनको भी सारी चोटें बाईं ओर ही लगी थीं। इसका मतलब है गाड़ी की लेफ्ट साइड ही चकनाचूर हुई थी। हमारे देश में बनी सारी गाड़ियों में ड्राइवर की सीट दाहिनी ओर होती है। गाड़ी का अगर बाँया भाग टकराता है तो बगलवाला आदमी ही मारा जाता है; ड्राइवर ही शरीर के बाँयें हिस्से पर कुछ चोटें खाकर बच जाता है। इसका मतलब है, जो निहत हुए वह गाड़ी नहीं चला रहे थे, दुर्घटना के बाद किसी विशेष कारण से उन्हें ड्राइवर लिखा दिया गया।"

अदालत में खुस-फुस शुरू हो गई। विचारक का मुँह भी गंभीर हो उठा। वह बोलीं, "रुकिये, खाका खींचा जाये।"

सागरिका बोली, "खाका खिंचा हुआ है। लगातार दिन पर दिन और रात पर रात अनगिनत खाके खींचते रहने के बाद ही तो मेरे सामने सारी बात स्पष्ट हुई है। चलती गाड़ी सड़क की बाँई ओर के एक बड़े से पेड़ से टकराई। सामने बैठे दोनों आदमियों को बाँई तरफ ही चोट लगी—उनमें सबसे अधिक आघात लगने से जो निहत हुआ, वह निश्चित रूप से बाँयीं ओर बैठा हुआ था। इस देश में बनी गाड़ी में ड्राइवर निश्चय ही बाँई ओर नहीं बैठते।"

यह रहस्यमय मुकदमा मजिस्ट्रेट के लिये गणित का प्रश्न बन गया।

सागरिका बोली, "धर्मावतार, जिन्होंने इस दुर्घटना की जाँच की थी उनके लिये भी यह बात अवश्य गणित का साधारण प्रश्न रही होगी। परन्तु निर्जन गाँव में जब कोई प्रत्यक्षदर्शी नहीं था, उस समय सुविधानुसार ड्राइवर सहयात्री और सहयात्री को ड्राइवर बना देने पर कौन उँगली उठा सकता

दीननाथ के वकील ने कुछ कहना चाहा पर न्यायाधीश ने उन्हें रोक दिया और सारिका से पूछा, "ड्राइवर और सहयात्री को इस तरह बदलने से क्या लाभ हो सकता है?"

"कई तरह के लाभ हो सकते हैं धर्मावतार। सामयिक गिरफ्तारी और दूसरे झमेलों से वास्तविक ड्राइवर की मुक्ति। शायद कई बोतल बीयर के असर से वह प्रकृतिस्थ नहीं थे—उस हालत में कौन-कौन सी सजा मिलने की सम्भावना होती है, यह तो आप जानती ही हैं।"

अब उपनगर की उस अदालत में प्रबल चंचलता शुरू हो गई थी। न्यायाधीश ने कहा, "मतलब आपका प्रधान वक्तव्य है कि दोनों यात्रियों के आघातों की प्रकृति ही प्रमाणित करती है कि दुर्घटना के समय अमिताभ रायचौधरी दीननाथ वसुमल्लिक की दाहिनी ओर नहीं थे।"

"हां, धर्मावतार, इस मामले में गाड़ी की दाहिनी ओर यानी स्टीयरिंग पर मिस्टर वसुमल्लिक थे और मेरे पति बाईं ओर, जिन्हें इस गाड़ी का चालक बताकर झूठी कहानी गढ़ी गई है।"

कहने की आवश्यकता नहीं है कि मुकदमे ने एक अविश्वसनीय मोड़ ले लिया था और जांच अधिकारी धनरत्न चौबे एवं दीननाथ वसुमल्लिक अप्रत्याशित रूप से विपत्ति के सम्मुखीन हो गये थे।

दीननाथ के विरुद्ध मामला शुरू हो गया था। थाने में दिये प्रथम बयान में कहीं गोलमाल था, इस सन्देह की नींव पड़ गई थी।

धनरत्न चौबे पब्लिक से लेकर चाहे जितने पान खाते हों परन्तु विपत्ति के समय वह अपने ऊपर जरा भी आंच नहीं आने देते। सर्वनाश की संभावना दिखाई देते ही गुणी पंडित आदमी की तरह आधा त्याग देने में विश्वास करते थे। अन्दरूनी खबर थी कि उन्होंने तो दीननाथ को गिरफ्तार करने की पूर्व-कल्पना भी बना ली थी। किसी भी प्रकार का झमेला देखते ही पुलिस को झूठा वक्तव्य देकर भटकाने के आरोप में वसुमल्लिक के हाथों में हथकड़ियां पहनाने की योजना बना ली थी उन्होंने।

दीननाथ के पक्ष में अब एकमात्र आशा वकील की बहादुरी थी। बाईं एवं दाहिनी ओर की चोटों के तर्क अकाट्य थे—दो-चार चोटें देखकर पति के शोक से विह्वल कोई औरत अनुसंधान का ऐसा जाल बिछा देगी इसकी धनरत्न को जरा भी आशा नहीं थी। अगर होती तो उस दिन गुम पांच हजार रुपयों के लोभ में दीननाथ वसुमल्लिक को ऐसा बयान सिखाने की सलाह कभी नहीं देते।

परन्तु एकमात्र बाईं एवं दाहिनी ओर का हिसाब ध्यान से उतर जाने पर भी बहुत दिन पहले का गड़ा मामला जीवित नहीं हो जाता। सुतराम् दीननाथ के वकील अथवा धनरत्न अभी भी पूरी तरह हताश नहीं हुए थे। दो दिन के बाद मुकदमा फिर चलेगा।

ऐसी उत्तेजना पीताम्बर सहन नहीं कर पाते। रक्तचाप थोड़ा बढ़ जाने से उनकी रगों के भीतर का खून गरम होकर तेजी से दौड़ने लगा था। उन्होंने सागरिका से कहा, "धन्य हो तुम। तुम्हारे पिता क्या यों ही लड़की की बुद्धि की इतनी प्रशंसा करते थे। मैं तो एकदम शुरू से ही सब देख रहा था, पर मेरी बुद्धि में तो ये बातें कभी नहीं आईं। अब क्या होगा ?"

सागरिका बोली, "मुकदमा चलेगा। और थोड़ा आगे बढ़ते ही सुधामुखी थाने के दरोगा धनरत्न बाबू अपनी चमड़ी बचाने के लिये मिस्टर वसुमल्लिक को गिरफ्तार करेंगे।"

"फिर ?"

"साथ ही साथ मिस्टर वसुमल्लिक आफिस से सामयिक सस्पेंड होंगे और अंत में मिथ्याचार के अभियोग में जेल जायेंगे तथा नौकरी खोयेंगे। भविष्य में कोई अफसर कभी अपने अधीन कर्मचारी के नाम झूठा आरोप नहीं लगायेगा—यही समाज का लाभ होगा।"

स्टेशन पर हावड़ा की गाड़ी आने में अभी भी काफी देर थी। कहीं लाइन में गड़बड़ी हो गई थी। उधर पीताम्बर काकू की तबियत ठीक नहीं थी। ज्यादा भाग-दौड़ उनके लिये उचित नहीं होगी।

सेकेंड क्लास के वेटिंगरूम में पीताम्बर को बिठाकर सागरिका फिर निकल गई। पीताम्बर ने भी साथ चलना चाहा था परन्तु सागरिका राजी नहीं हुई—बोली, "आप मेरी मुसीबत मत बढ़ाइये काकू, अब मुझे आपकी सबसे अधिक आवश्यकता है।"

स्टेशन के बाहर आकर स्टैन्ड से एक साइकिल रिक्सा ले लिया उसने। आज सुबह उसे खोया आत्म-विश्वास पुनः मिल गया था। जिनका मनोबल अदम्य होता है, पृथ्वी उन्हीं की होती है—यह बात जब सागरिका ने कहीं पढ़ी थी तो विश्वास नहीं हुआ था। किन्तु आज वह अच्छी तरह समझ गई थी कि मन में साहस और हृदय में विश्वास नहीं होगा तो औरतें पिछड़ती ही जायेंगी, वह करने लायक कोई काम नहीं कर पायेंगी। सोचकर आश्चर्य होता है कि बाईं ओर के उन आघात-चिन्हों ने उसे जिस रहस्य को खोलने की चाबी

दी, उसके प्रति वह सतर्क क्यों नहीं हुए। वह सोच ही नहीं पाये कि हर झूठ प्रकृति के वक्ष पर वार्निंग सिग्नल छोड़ जाता है।

रिक्शा में बैठते ही सागरिका की दृष्टि दीननाथ बसुमल्लिक की दृष्टि से मिली। दुर्दम प्रतापी रावण जैसे जरा मुरझा से गये थे वह! स्टेशन आने वाली सड़क पर रिक्शे में आरूढ़ दीननाथ उसकी ओर देख रहे थे। परन्तु सागरिका ने मुँह फेर लिया और मन ही मन कहा—'ठहरो, अभी तो कलियुग शुरू ही हुआ है।'

रिक्शा लेक विश्रामगृह की ओर बढ़ चला। तीन सौ पैंतालीस किलोमीटर का स्टोन इतने दिन बाद सागरिका को बुला रहा था। उसी के सामने अचानक एक दिन चाँद-सूरज डूब गये थे। वह सड़क, वह परिवेश देखना सागरिका के लिये प्रयोजनीय हो उठा। वहाँ जाने में कष्ट होगा उसे, शरीर बाधा देगा, किन्तु जब अदालत तक चली आई है तो पीछे जाने से कैसे चलेगा?

रिक्शा आगे बढ़ता जा रहा था और सागरिका मानस पट पर आज की अदालत का चलचित्र देखती जा रही थी। क्यों दीननाथ ने इस तरह अपनी विपदा अपने आप बुलाई? अगर वह गाड़ी स्वयं चलाने की बात स्वीकार कर ही लेते तो कौन-सा ऐसा बड़ा नुकसान हो जाता? कुछ महीनों की जेल की सजा का डर? मृत्युञ्जयदा ने उसे बताया था कि जो लोग रोज शराब पीते हैं, वह लोग थाना, हाजत एवं जेल से बहुत डरते हैं—वहाँ शराब नहीं मिलती।

डियेमबियेम पराजित हो सकते हैं, यह सोचते ही मन में शांति का अनुभव करती है सागरिका। वह अन्दाजा लगाती है कि उसके आफिस के कितने लोगों को दिल का चैन मिलेगा। पृथ्वी पर किसी न किसी को तो महिषासुर-मर्दिनी की भूमिका में अवतीर्ण होना ही पड़ेगा।

काफी चलने के बाद सागरिका का साइकिल रिक्शा एक ट्यूबवेल के पास आकर रुका। वहाँ उतर कर खोज करने लगी सागरिका। हाथ के नल के पास एक वृद्धा खड़ी थी। वह प्रतिदिन यहाँ पानी लेने आती थी, उस अनचीन्ही लड़की को देखकर बड़ा आश्चर्य में पड़ गई वह। पूछा, "क्या ढूँढ़ रही हो बेटी?"

"कुछ दिन पहले यहाँ एक मोटर दुर्घटना हुई थी?" कैसे शुरू करे सागरिका समझ नहीं पा रही थी।

वृद्धा सब समझ गई। "तब समझ गई मैं बेटी, दुर्घटना होने के कोई एक घंटा बाद हम लोग ही सबसे पहले यहाँ दौड़े गये थे। आकर देखा बेटी, यहीं गड्ढा था!"

"कौन-सा लड़का ?"

"कहावत है न जग में कि दूसरे का उपकार करने में आदमी की आयु बढ़ती है, वह सब झूठी बातें हैं। उस लड़के ने अपने हाथ से नल चलाकर कलसी भरी थी, और वहीं मरा पड़ा था।"

उस लड़के के साथ आज की लड़की का क्या सम्पर्क था, यह जानकर बुढ़िया जोर-जोर से रोने लगी। जरा देर बाद बोली, "पति का मृत्युस्थान, यह तो सती का तीर्थ होता है। इतने दिन बाद तीर्थ करने आई हो बेटी ? अच्छा हुआ।"

रिक्शे में साथ बैठकर बुढ़िया सागरिका को उस पेड़ के पास ले गई। पेड़ नये पत्तों से हरा-भरा हो उठा था—कहीं भी मृत्यु के विच्छेद की विषण्णता का नाम-निशान नहीं था। मानों किसी अप्रिय घटना से यहाँ की शांति कभी भंग नहीं हुई थी।

"हम लोग जब पहुँचे थे बड़ा ही भयानक दृश्य था ! चारों तरफ रक्त ही रक्त। लड़का बहुत ही भला था।" बुढ़िया बोल पड़ी।

"आपको याद है गाड़ी कौन चला रहा था ?"

कुछ भी याद नहीं कर पाई बुढ़िया। कौन गाड़ी चला रहा था और उसमें एक ही आदमी था या दो, यह भी मालूम नहीं था उसे। और इसके अलावा उसकी आँखों की रोशनी भी खराब है, सब कुछ धुँधला दिखाई देता है।

बोली, "उस समय तो गाड़ी में कोई नहीं था। राजपुत्र को इस पेड़ के नीचे लिटा रखा था और एक आदमी पास बैठा उसे देख रहा था'''उसके शरीर से भी रक्त बह रहा था।"

"फिर ?"

"फिर बेटी, एक लारी आई। उसी में दोनों सरकारी अस्पताल की तरफ चले गये। तुम जाओगी अस्पताल ? पास ही तो है ?

"मुझे क्या पता था कि उस लड़के की ऐसी खूबसूरत बहू घर में थी ? बड़ा भला आदमी था तुम्हारा पति, मन में बहुत दया थी—नहीं तो आजकल कोई किसी बुड्ढे के लिये हाथ से पानी खींच दे और पूछे घर कहाँ है, कलसी पहुँचा दूँ।"

सागरिका की दृष्टि धुँधली होने लगी। कौन जानता था कि अचानक एक दिन यहाँ इस तरह उसका जीवन सदा के लिये नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा ? उसे याद आया, कई साल पहले कुछ अंग्रेज विधवाएँ कोहिमा देखने आई थीं—

वहीं उनके सैनिक पतियों ने अंतिम साँस ली थी। बहुत वर्ष बाद उनका इस तरह कोहिमा देखने आने का तात्पर्य उस समय नहीं समझ पाई थी वह। परन्तु आज उस वृद्धा के सामने खड़ी सागरिका उस दल की प्रत्येक अभागिनी की मर्मवेदना अपने शरीर में अनुभव कर रही थी।

बुढ़िया को रिक्शे में अपने पास बिठा कर नीरव रोते हुए सागरिका चल दी। बुढ़िया उसका रोना देखती रही। अपने घर के नजदीक आते ही वह बोली, "बहुत बड़ा अपराध हो गया है बेटी। तुम्हें क्षमा करना ही पड़ेगा।"

कैसा अपराध ? समझ नहीं पा रही थी सागरिका। फिर बुढ़िया की बातों से उसकी आँखें खुलीं। उन लोगों के स्वास्थ्य केन्द्र चले जाने पर उस दिन थोड़ी लूट-पाट हुई थी। गाड़ी की खिड़की से हाथ डाल कर स्थानीय बच्चों ने कुछ लोभनीय चीजें निकाल ली थीं। बुढ़िया की नातनी भी एक चीज ले आई थी, जिसके लिये उसने घर पर बहुत डाँट खाई थी। रिक्शे से उतर कर बुढ़िया वही चीज लेने चली गई।

कौन सी चीज ? याद नहीं कर पा रही थी सागरिका। गाड़ी से मिली कुछ चीजों का पैकेट बना कर आफिस वालों ने घर भेजा था। वह पैकेट अभी तक यों ही पड़ा था। जो खोने की चीज नहीं थी जब वही यहाँ हमेशा के लिये खो गई थी तो और चीजों का क्या करना था।

"यह लो बेटी। नातनी को मैंने बहुत डाँटा था।" बहुत शर्मिंदा होकर वृद्धा ने कहा।

लेकिन सागरिका के हाथ में वृद्धा यह क्या पकड़ा रही थी ? एक लाल रंग का वैनिटी बैग।

"औरतों का यह बैग आपको कौन सी गाड़ी में मिला ?" सागरिका जानने के लिये परेशान हो उठी थी।

"और कहाँ से मिलता बेटी ? उसी गाड़ी की पीछे की सीट से उठा लाई थी मेरी नातनी। यहाँ कोई हर हफ्ते दुर्घटना थोड़े ही होती है बेटी ?" बुढ़िया जरा चिढ़ सी गई।

हाँ। शायद बुढ़िया अजस्र धन्यवाद की आशा कर रही थी। परन्तु लाल रंग का बैग देख कर सागरिका का सर घूम रहा था। मन की उसी दशा में वह स्टेशन के वेटिंग रूम में लौट आई।

वहाँ प्रतीक्षा-रत पीताम्बर ने देखा कि रहस्य-संधानी सागरिका के चेहरे

पर विजय के भावों की जगह गंभीरता छा गई थी, किसी विशेष चिंता में डूब गई थी वह।

तभी हावड़ा की ट्रेन प्लेटफार्म पर आ गई।

• •

अदालत में पिटीशन का मामला चालू था। दो दिन के विराम के बाद अगले दिन फिर सुनवाई होनी थी।

सागरिका दोनों दिन आफिस गई थी और मुंह बंद करके काम करती रही थी, किसी से एक शब्द नहीं बोली थी। पर आफिस में रीतिमत अच्छी-खासी उत्तेजना थी।

औरतों के स्टाफ रूम में भी उसने किसी को कहते सुना था, मामले के थोड़ा आगे बढ़ते ही वसुमल्लिक की सामयिक बर्खास्तगी अनिवार्य थी। जिन्होंने इतने दिन इतने रोब से आफिस चलाया था उनकी ऐसी परिणति के लिये आफिस में कोई प्रस्तुत नहीं था।

पर्सनल आफीसर को वह अभी-अभी बता कर आई थी कि अगले दो दिन वह आफिस नहीं आयेगी। सब कुछ जानते हैं वह, इसलिये कोई आपत्ति नहीं की। और अगर कुछ कहते भी तो सुनता कौन?

फिर वह गेट के सामने आकर खड़ी हो गई। आज चारुशीला के उसे यहां से ले जाने की बात तय हो गई थी।

सागरिका के सामने से ही मंथर गति से चलकर दीननाथ वसुमल्लिक एक टरकॉइज ब्लू एम्बेसेडर में बैठ गये। ऐसा भी हो सकता है कि कम्पनी की गाड़ी में बैठने का आज उनका अंतिम दिन हो। अगले दिन की अदालत में मिलने वाली सजा का खड्ग उनके सर पर झूल रहा था। दीननाथ ने शायद उसकी ओर देखा पर उसने कोई नोटिस नहीं लिया।

करीब दस मिनिट बाद चारुशीला आई। "बहुत अफसोस है, सागरिका। आर्टवर्क लेने के लिये ओगिल्वि के आफिस में बहुत देर हो गई। आफिस के सब लोग डायरेक्टर मिस्टर अंशु बनर्जी के कमरे में मीटिंग में थे। बम्बई की फैशन मैगजीन की कैलकटा रिप्रेजेन्टेटिव के लिये किसके पास समय है भला?"

सागरिका के बगल में बैठते ही चारुशीला ने गाड़ी स्टार्ट कर दी।

क्षण बाद बोली, "सोच रही हूँ, तुझे लेकर एक नाटक लिख डालूँ। नाम सोच लिया है 'कलकत्ता की पोर्शिया'। मर्चेन्ट आफ वेनिस से भी कहीं अच्छा अदालत का दृश्य होगा इस नाटक में। तूने तो महकमें की अदालत में भूकम्प की सृष्टि कर दी है।

"चल, आज दोनों मिलकर बिना नोटिस वासना के घर धावा बोलें। तुझे देखकर थोड़ी शिक्षा ले वह। प्रचण्ड विरोध और बाधाओं के विरुद्ध लड़कर किस तरह अपना अधिकार लिया जाता है, यह सुने वासना। फिर जिस दिन मुकदमे का फैसला सुनाया जायेगा उस दिन स्पेशल सेलिब्रेशन मेरे घर होगा—वासना को भी निमन्त्रण दे जाऊँ आज ही। उस दिन तेरे सम्मान में मैं और वासना दोनों ड्रिंक करेंगे।"

"वासना से इस बीच मिली थी तू?" सागरिका ने पूछा।

"मिली थी। पर न जाने क्या हो गया है उसे। घर से निकलती ही नहीं वह।"

वासना के घर के पास चारुशीला के गाड़ी पार्क करते ही सागरिका की नजर जरा दूर सामने की ओर चली गई। उसके दरवाजे के ठीक सामने टरकॉइज ब्लू एम्बेसेडर खड़ी थी।

सागरिका बोली, "ना भाई, इस समय लौट चल। दीननाथ वसुमल्लिक की गाड़ी खड़ी है। वासना क्या जानती है इस आदमी को?"

चारुशीला बोली, "ठीक है, इस जगह उस निर्लज्ज बदमाश के सामने नहीं पड़ना चाहती मैं। फिर आयेंगे। ट्राइ-ट्राइ—मृत विदेशी सैनिक की तरह हमारे पूर्वज भी तो कह गये हैं कि एक बार संभव न होने पर करो दो बार।"

"दीननाथ वसुमल्लिक की गाड़ी यहाँ क्यों है री?" चारुशीला ने पूछा।

"अन्दाजा लगा ना? तेरे तीसरे नेत्र की तारीफ तो अदालत की धर्मावतार ने भी की है।"

कुछ भी नहीं कह पाई सागरिका। चलायमान गाड़ी के सामने के शीशे से वह मनुष्यों का अरण्य देखने लगी। करोड़ों लोग दुनिया में जीवित थे, पर गौतम ही नहीं था।

जरा देर बाद सागरिका बोली, "यह देख। मैं ड्राइवर की बाईं ओर बैठी हूँ। अगर गाड़ी की लेफ्ट साइड किसी पेड़ से टकरा जाये तो मुझे ही सांघातिक चोट लगेगी, ड्राइवर को नहीं। यदि देखा जाये मेरी लेफ्ट बॉडी में सामान्य

चोटें लगी हैं और दूसरा मर गया है तो समझ लेना चाहिये कि ड्राइवर की सीट पर मैं ही बैठी थी।"

"तूने क्या यही सब समझने के लिये ड्राइविंग सीखी थी ?"

चुप रही सागरिका। "बोल क्यों नहीं रही है री ?" चारुशीला को ऐसी नीरवता अच्छी नहीं लगती। उन लोगों का कालेज का जीवन कितना अच्छा था। परन्तु कुछ ही वर्षों में कैसे सब कुछ तहस-नहस हो गया। जबकि उसी कालेज में नई लड़कियां किस तरह पहले के समान निर्द्वन्द्व, जीवन से भरपूर, निश्चिन्त, काल व्यतीत कर रही हैं।

अचानक जाने क्या सोचकर सागरिका बोली, "तू कलकत्ता की पोसिया नाम का जो नाटक लिखने को कह रही है—अंत में वह बहुत जटिल हो जायेगा, चारुशीला।"

"अब क्या हुआ ? मैंने तो तय कर रक्खा है कि उसका अंत दीननाथ वसु-मल्लिक की कमर में रस्सी बांधने के दृश्य से होगा, सब हाउस में खूब जोर-जोर से तालियां बजेंगी। तू देख लेना।"

"तू अंग्रेजी नाटक की बात सोच रही है। परन्तु इस देश के नाटक अंत में जाल में फँस जाते हैं। तू रामायण महाभारत पढ़कर देख।"

चारुशीला बोली, "अब क्या हो गया री तुझे ?"

"मामला बहुत आसान था, पर अब एक उपसर्ग और आ जुटा है, जो जला रहा है मुझे, मैं कुछ भी नहीं समझ पा रही। अब तक तो केवल गौतम और दीननाथ वसुमल्लिक के बारे में सोचती आ रही थी। पर अचानक गाड़ी के पीछे की सीट से औरतों का एक लाल रंग का वैनिटी बैग निकल आये तो क्या होगा, तू ही बता ?"

"बैग अवश्य तेरा होगा। किसी दिन पति के साथ शॉपिंग करने गई होगी और लेना भूल गई होगी। आफिसर की बीबी है तू, बैगों की कमी थोड़े ही है तेरे पास।"

"ऐसा होता तो समस्या ही खत्म हो जाती !"

"अपने तीसरे नेत्र से बैग की परीक्षा की है तूने ?" बाध्य होकर पूछा चारुशीला ने।

"की है। लेकिन समझ नहीं पाई कुछ भी। औरतें तो नाम का कार्ड नहीं रखतीं। पाउडर, कंघा, रूमाल, शीशा आदि से पहचाना जा सकता।"

"तो तू कहना क्या चाहती है, सागरिका ? गाड़ी में कोई और भी था ?"

"गणित तो यही कहता है, चारुशीला। सारे सवाल फिर से जटिल हो उठे हैं।" सागरिका के स्वर में अनिर्णीत विषाद था।

"सागरिका, अँगरेजी नाटक होता तो मान लेती कि तेरे पति की किसी असाधारण गर्लफ्रेन्ड का है यह लाल हैंडबैग—तुम भले ही वहाँ नहीं हो, पर चिन्ह छूट गया है ! परन्तु हजार हो, यह इंडिया है और पति के मालिक मिस्टर दीननाथ वसुमल्लिक स्वयं साथ बैठकर इंस्पेक्शन के लिये जा रहे थे। गुप्त बांधवी के पीछे की सीट पर होने का उचित समय तो था ही !"

"इस प्रश्न ने मुझे चिंता में डाल दिया है—लेकिन उसके पहले की परीक्षा के लिये तो तैयार होना आवश्यक है।" सागरिका की सखी आज अगर पास न होती तो वह बहुत डिप्रेस हो जाती। कोई ऐसा भी तो होना चाहिये, जिसके सामने मन की बात कही जा सके।

"इस लाल बैग के बारे में मैं भी सोचूंगी। अगर दिमाग में कोई आइडिया आया तो अवश्य बताऊँगी। सागरिका, मैं शर्त लगाकर कह सकती हूँ कि कल अदालत का दृश्य देखने वाला होगा। कल तेरी रणरंगिनी मूर्ति अपनी आँखों से देखने का लोभ हो रहा है।" चारुशीला ने अपनी इच्छा प्रकट की।

"एक दिन में कितने विज्ञापनों का आर्टवर्क हाथ से निकल जायेगा ? कल्ले आफिस से किसी ने एक्सप्लेनेशन माँगा तो कह दूँगी विज्ञापन लेने दुर्गापुर गई थी।"

"पहले की बात होती तो मैं भी तुझे यही राय देती। पर अब बहुत डर गई हूँ। छोटे-छोटे झूठ ही मौका पाकर बस के बाहर चले जाते हैं, और फिर कैन्सर की तरह बढ़ते-बढ़ते एक दिन अचानक…जिसने झूठ बोला था, उसे ही खत्म कर देना चाहते हैं।" उदासीन सागरिका का कंठ दुर्बल होता जा रहा था।

"क्यों री ? तेरे गले की बैटरी तो डाउन होती चली जा रही है। मेरा पति होता तो इस वक्त जबर्दस्ती गले के नीचे ह्विस्की उतारती। सड़ा हुआ रस पेट में नहीं पहुँचता, तब तक मनुष्य की बुद्धि नहीं खुलती।"

"लाल बैग ने सचमुच मेरे दिमाग में उथल-पुथल मचा दी है। बैग का मामला इस स्टेज पर क्यों आया ! ऐक्सीडेंट की जगह देखने की दुर्बुद्धि क्यों हुई मेरी !"

"मामला थोड़ा रहस्यमय है। लेकिन तू बेकार गौतम पर सन्देह मत कर।

लाल बैग की बात दिमाग से निकालकर ठीक से केस खतम कर। फिर हमलोग विक्ट्री सेलिब्रेट करेंगे।" चारुशीला ने सखी के मन से सारी दुविधाएँ मिटाने की कोशिश की। . . .

कालीघाट के एक बसस्टैंड पर सागरिका को उतार कर चारुशीला दबे स्वर में बोली, "कल तेरी सफलता की कामना करती हूँ—नथिंग लेस दैन विक्ट्री।"

• •

तबियत खराब होते हुए भी पीताम्बर काकू हावड़ा स्टेशन पर सागरिका की प्रतीक्षा में खड़े थे। संसार में अभी भी इस तरह के लोग हैं, इसीलिये यह दुनिया चल रही है, चांद-सूरज उग रहे हैं। पीताम्बर काकू, ईश्वर आपको सुखी रखें।

पर कोरी प्रार्थना से क्या होगा? सुख किस चिड़िया का नाम है, यह पीताम्बर काकू ने कभी जाना ही नहीं। जिम्मेदारियों से कटकर हल्का होने के मौके का भी लाभ नहीं उठाया उन्होंने, जान-पहचान के लोगों के सुख-दुःख में शामिल होने के लिये उत्कंठित रहे जीवन भर।

"पीताम्बर काकू, आज आपकी तबियत कैसी है?" स्नेहसिक्त स्वर में सागरिका ने पूछा।

"ठीक तो है। इसी प्रकार स्वस्थ शरीर तुम लोगों से हँसते-बोलते चला जाऊँ, बस यही तमन्ना है बेटी। तुम्हारा केस ठीक से निपट जाये। उस दिन अदालत में तुम्हारी बातें सुनकर उस मिस्टर दीननाथ बसुमल्लिक के प्रति जो श्रद्धा-भक्ति मेरे मन में थी, वह भी खत्म हो गई। हरिसाधन को भी कल समझाया था मैंने। संसार में रुपया बहुत बड़ी चीज है, पर सब कुछ नहीं है। हरिसाधन और मैं—अब तो हम दोनों ही यह चाहते हैं कि उसे सजा मिले। पुरुष होकर जिस बात की हम कल्पना नहीं कर सके वह तुमने औरत होकर ढूँढ़ निकाली। तुम्हारी जय हो।"

बहुत अच्छी लग रही थीं पीताम्बर काकू की बातें। 'दीननाथ बसुमल्लिक के शासित होने पर जो आदमी सबसे अधिक खुश होता वह तो हमेशा के लिये चला गया। पर गौतम, आत्मा का तो क्षय नहीं होता—तुम जहाँ भी होगे, वहीं से सब कुछ देख सकोगे।'. .

मन ही मन कह तो रही थी सागरिका, किन्तु आँखों के सामने एक लाल हैंड बैग नाचने लगा।

एक बार दीनेनाथ वसुमल्लिक से उस लाल बैग के बारे में पूछने के लिये मन छटपटाने लगा सागरिका का। लेकिन पीताम्बर काकू क्या इस विषय में उसकी सहायता करेंगे ?

अदालत में पीताम्बर को देखकर विपक्ष के वकील कुछ कदम आगे आये और फुसफुसाकर बोले, "क्यों आप लोग गड़े मुर्दे उखाड़ रहे हैं ? जो होना था वह तो अचानक एक दिन हो ही गया। कुछ अधिक मुआवजा लेकर मामला रफ़ा-दफ़ा कर दीजिये। जो चला गया वह तो आयेगा नहीं।" वकील के पास दीननाथ भी खड़े थे।

"मैं तो उस लड़की का संगी मात्र हूँ। आप तो जानते ही हैं दीननाथ बाबू, कि उसके ससुर ने ऐसा करने से रोकने की कितनी कोशिश की, पर कोई फल नहीं निकला।"

दीननाथ को साथ लेकर पीताम्बर जरा एक ओर खिसक गये और उनके मुँह की ओर देखने लगे। दीननाथ के मुँह पर दुविधता के बादल घिर आये थे।

जरा देर बाद गम्भीरवदन अपनी चेयर पर लौट आये पीताम्बर और सागरिका से बोले, *"उस लाल बैग को लेकर बेकार दिमाग खराब मत करो बेटी।* बात उठाते ही मिस्टर वसुमल्लिक एकदम भड़क उठे, फिर बहुत दुखी भी हुए। उससे पहले लग रहा था कि वह मुआवजे की रकम बढ़ाकर मामला खत्म करने को तैयार थे।"

सागरिका से न कहने पर भी दीननाथ के चेहरे पर आते-जाते भावों को देखकर पीताम्बर समझ गये थे कि उस लाल बैग का रहस्य उन्हें मालूम था। वह बैग सागरिका के हाथ लग गया है यह सोच नहीं पा रहे थे [illegible]।

केस फिर शुरू हो गया। पुलिस के एक कोर्ट इंस्पेक्टर ने बहुत देर तक धर्मावतार को समझाया कि ऐक्सीडेन्ट के मामले में जाँच-अधिकारी की जरा भी गलती नहीं हुई। खबर आते ही स्वयं मिस्टर डी० आर० चौबे ने कानून के अनुसार सारा काम किया।

फिर दीननाथ के वकील ने भी बहुत सी मोटी-मोटी किताबों में से व्याख्या करते हुए अभियोग दायर करने के समय की सीमा खत्म हो जाने को लेकर

तर्क-वितर्क किया। उनका कहना था कि जितने काल के अन्दर सागरिका को आवेदन करना चाहिये था वह निकल गया है।

इन सब वक्तव्यों से मजिस्ट्रेट नरम नहीं पड़ी। एक सद्य विधवा के लिये दुर्घटना के अगले दिन से ही कानून की हर प्रकार की खोज-खबर निकालना संभव नहीं है। और मृत अमिताभ के पिता ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए दीननाथ को जो भी लिखा, वह उनकी व्यक्तिगत राय थी—उस राय से पुत्र-वधू के भी सहमत होने की आवश्यकता का इशारा कानून में कहीं नहीं है। इसलिये समय की सीमा के सम्बन्ध में कोई प्रश्न अब नहीं सुना जायेगा। अब माननीया विचारक मूल घटना में प्रवेश करना चाहती हैं।

बाईं ओर की चोटों का प्रश्न अवश्य ही सत्य पर नया प्रकाश डालता है। परन्तु इस मुकदमें में और भी कुछ साक्ष्य आवश्यक हैं।

इसके लिये तैयार होकर ही आई थी सागरिका। मृत्युञ्जयदा और नरपति बाबू ने यथासाध्य सहायता की थी। उनके परामर्श पर ही सजग होने का समय मिल गया था उसे।

वह बोली, "योर ऑनर, इस केस में पुलिस की तरफ से जिन्होंने गाड़ी के कल-पुर्जों की परीक्षा की थी, उन्होने अधिकृत रिपोर्ट दी है।"

"उन्होंने रिपोर्ट में लिखा है, उनकी राय में ब्रेक ठीक थे तथा किसी भी प्रकार की मैकेनिकल गड़बड़ होने का सन्देह नहीं है उन्हें।" इसी बीच मजिस्ट्रेट ने रिपोर्ट पर नजरें डाल ली थीं।

"योर आनर, इस रिपोर्ट में इस बात का विस्तृत विवरण नहीं है कि दुर्घटना के बाद इस परीक्षक ने गाड़ी में कहाँ और क्या टूटा-फूटा देखा था। लगता है, बहुत सावधानीपूर्वक एक दूरदृष्टि से लिखी गई है यह रिपोर्ट।"

"इस देश में किसी झमेले में पड़ने के बाद आदमी की दूरदृष्टि बढ़ जाती है, यह आपके लिये जान लेना उचित है। रिपोर्ट में जो नहीं है, उस पर दुख करने से क्या लाभ है मिसेस राय चौधरी?"

मजिस्ट्रेट के उस मन्तव्य से दीननाथ के वकील को बल मिल गया। बोले, "योर आनर, यह क्या यह कहना चाहती हैं कि हमने उस गाड़ी परीक्षक को भी मिला लिया था? अगर हिम्मत है तो अदालत से बाहर यह बात कहें, हम अभी इसी वक्त मानहानि का दावा दायर कर देंगे।"

जहाँ प्राणहानि हुई हो वहाँ मानहानि को लेकर परेशान न होने का परामर्श दिया धर्मावतार ने। फिर उन्होंने सागरिका को अपना वक्तव्य देने को कहा।

अब सागरिका ने तस्वीर की बात उठाई। पुलिस का वक्तव्य... टना के बाद फोटोग्राफर जुटाना संभव नहीं हो सका था और ... सड़क पर इस प्रकार गाड़ी भी नहीं छोड़ी जा सकती थी, इसलि... से हटा ली गई थी। जाँच अधिकारी ने इस जगह को ठीक ... किया।

इतना कहते-कहते सागरिका का स्वर काँप उठा था। बैग से ए... निकाला उसने और उसमें से कई काली सफेद फोटो निकाल कर ... कहा—"तो फिर यह क्या है, योर ऑनर ?"

"फोटो ! फोटो !" दबी जुबानें गूँजी अदालत में।

"योर ऑनर, गाड़ी का नम्बर मिलाकर देखिये, फिर एक नज़... तस्वीर ध्यान से देखिये। किस तरफ का हिस्सा चकनाचूर हुआ है ?—... ओर का। दाहिनी ओर की ड्राइवर की सीट, स्टीयरिंग बिल्कुल सही-सल... है। यह तस्वीर देखकर एक बच्चा भी कह देगा कि इस दुर्घटना में जो ... हुआ है वह ड्राइवर की बाईं ओर बैठा था। जब कि मिस्टर दीनानाथ ... मल्लिक ने थाने में बिना जाने बयान लिखवा दिया कि वही ड्राइवर की बग... में बैठे थे।"

दीनानाथ के वकील ने झपट कर धर्मावतार के हाथ से तस्वीर एक तरह से छीन ली और गौर से देखने लगे। उनके मुवक्किल के मुँह पर जैसे काली स्याही की पूरी दावात पोत दी हो किसी ने। इस तस्वीर की बात तो उन्हें याद ही नहीं आई।

लेकिन तब भी वकील ने हिम्मत नहीं छोड़ी—"योर ऑनर, यह तस्वीरें तो अदालत में पुलिस ने प्रोड्यूस नहीं की। कानून की दृष्टि से इनका क्या मूल्य है ? यह तस्वीरें तो किसी भी गाड़ी की तस्वीरें हो सकती हैं।"

"धीरे-धीरे, मिस्टर भादुड़ी। यह तस्वीरें पुलिस के न खिंचवाने पर भी किसी और प्रतिष्ठान ने खिंचवाई थीं। इस सरकारी प्रतिष्ठान में ही गाड़ी इंश्योर कराई हुई थी—नाम है नेशनल इन्श्योरेंस कम्पनी। यह तस्वीरें दुर्घटना के अगले दिन ही भुवाभुली थाने के मैदान में पुलिस की आँखों के सामने खींची गई थीं।"

उन तस्वीरों को अवैध प्रमाणित करने के लिये मिस्टर भादुड़ी और भी मोटी-मोटी किताबें खोलने जा रहे थे कि सागरिका ने बताया कि वह इसके लिये तैयार होकर आई है। जिस फोटोग्राफर ने यह तस्वीरें खींची थीं वह

एक बंधु को पाकर सागरिका बहुत खुश हो गई थी। उसका मनोबल और बढ़ गया था।

चारुशीला एकटक सागरिका के मुँह की ओर ताक रही थी और सागरिका बोलती जा रही थी, "यहाँ के नाटक का अब अंतिम दृश्य रह गया है। अदालत का फैसला शायद तू अपने कानों से सुन जायेगी और फिर मेरी खबर है कि साथ-साथ वह भद्रव्यक्ति गिरफ्तार हो जायेंगे।"

"तू ठीक कह रही है कि दीननाथ बाबू गिरफ्तार होंगे ?" बड़ी उद्विग्नता से चारुशीला ने पूछा।

"क्या हुआ तुझे ? तू क्या नहीं चाहती कि मेरी इतने दिनों की यन्त्रणा खत्म हो ?" सखी के एकदम पास खिसक कर सागरिका ने प्रश्न किया।

"तेरे उस लाल बैग का रहस्योद्घाटन हो गया है। इसीलिये भागी आई हूँ। वासना से भी आने को कहा था, लेकिन वह तो बस मुँह में पल्ला ठूँसे रो रही है।"

"क्यों, क्या हुआ ?" चिन्तित हो उठी सागरिका। "अब हम तीनों एक साथ किसी निर्जन डाक बँगले में जाकर साथ मिलकर खूब रोयेंगे। अपने-अपने दिल हल्के कर लेंगे।"

इसके बाद और नहीं रह सकी चारुशीला। एक साँस में सारी बात कह गई—"कुमकुम, उस दिन तेरे पति की गाड़ी में सचमुच एक व्यक्ति और था।"

"था ?" रोना आने लगा सागरिका को यह सुनकर।

चारुशीला ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये और कहने लगी, "उसे तेरे पति ने निमन्त्रित नहीं किया था। मिस्टर वसुमल्लिक के साथ ही उसका परिचय था। बेचारी बड़ी दुखी है। उसके दुख से दुखी होकर उसे थोड़ा आनन्द देने के लिये मिस्टर वसुमल्लिक ने इस आउटिंग की व्यवस्था की थी। लड़की स्कूल में मिस्टर वसुमल्लिक से दो-तीन साल जूनियर थी, थोड़ी जान-पहचान थी। पर तब भी उसने उनके साथ अकेले इतनी दूर जाने को मना कर दिया था। मिस्टर वसुमल्लिक आफिस में अपने को इन मामलों में चाहे जितना भी अनभिज्ञ दर्शाते रहे हों पर वह लड़की का दुख और समस्या दोनों के बारे में समझ गये थे। उसकी दुविधा और शर्म की बात सोचकर उन्होंने अपनी गाड़ी नहीं निकाली तेरे पति के शरणापन्न हुए। वसुमल्लिक को मन ही मन गौतम पर बहुत विश्वास था। गौतम तेरा पति है यह वह लड़की नहीं जानती थी।"

"फिर ?" सागरिका के दिल की धड़कन तेज हो गई थी। गम्भीर उत्तेजना से उसने चारुशीला का हाथ पकड़ लिया।

चारुशीला का स्वर भी काँप रहा था। "लड़की की बात सुन, सागरिका। हाईवे पर जाते-जाते काफी बीयर पी ली थी उसने। विधवा होने के बाद पहली बार सारे सुख-दुख भूलकर, मुक्ति का स्वाद लेने को बाहर निकली थी वह। दीननाथ उसे उस समय सारी मानसिक यन्त्रणाओं से मुक्ति दिलाना चाहते थे।"

"जाते-जाते रास्ते में उसने बताया था कि कभी वह पति के साथ गाड़ी में बैठकर किसी अनजान लक्ष्य की ओर निकल पड़ती थी। साथ में इसी प्रकार बीयर की बोतलें होती थीं और बीयर पीने के बाद उसकी गाड़ी चलाने की प्रबल इच्छा होती थी। पति कभी मना नहीं करते थे और गाड़ी रेस के घोड़े की तरह सरपट हवा से बातें करने लगती थी। बहुत दूरी तक गौतम ने ही उस दिन गाड़ी चलाई थी, क्योंकि उसने बीयर नहीं पी थी। दीननाथ बगल में बैठे सिगरेट और बीयर का श्राद्ध करते रहे थे और वह पीछे की सीट पर बैठी बीच-बीच में बीयर का अनुरोध नहीं टाल सकी थी। फिर बीयर की प्ररोचना ने उसे पुराने दिनों की तरह अपनी इच्छा पूरी करने को कहा दीननाथ ने। वह पीछे की सीट पर चले गये और लड़की ने स्टीयरिंग अपने हाथ में ले लिया। गौतम आगे ही बगल में बैठ गया। बीयर के नशे में उसका दिमाग ठीक नहीं था, गाड़ी की स्पीड बढ़ाकर स्मृति पथ से अतीत में लौट जाने को पागल हो उठी थी वह। पीछे की सीट पर बैठे मदमत्त दीननाथ उसे स्पीड बढ़ाने को निरन्तर उत्साहित करते जा रहे थे। ठीक उसी समय सामने एक बकरी आ गई। उसके बचाने के लिये स्टीयरिंग घुमाते ही गाड़ी बाईं ओर के विशाल वृक्ष से जा टकराई। फिर कुछ क्षणों के लिये एकदम अँधेरा छा गया। जरा देर बाद पता चला कि जो गाड़ी चला रहा था, उसे खरोंच तक नहीं लगी थी। उस समय डर के मारे लड़की का बदन काँपने लगा था। एक अनजान मर्द के साथ इस प्रकार शराब पीकर नशे की हालत में किसी के देख लेने पर बदनामी के डर से वह मूर्छित हो गई थी। और चेतना लौटने पर उसकी रुलाई फूट पड़ी थी। सब कुछ समझ कर इतनी मुसीबत के वक्त भी दीननाथ ने उसे अविलम्ब घटनास्थल से चले जाने का निर्देश देते हुए कहा था—'दक्षिण की ओर दस मिनिट चलने के बाद रिक्शा मिल जायेगा।' पुलिस वालों का तब तक कहीं पता नहीं था।"

"फिर?" सागरिका पसीने में नहा गई थी।

"फिर वह नीरव अदृश्य हो गई थी और थोड़ा चलने के बाद रिक्शे से स्टेशन पहुँच गई थी। विधवा लड़की थी, बहुत ही शर्मिन्दगी का डर था।

फिर मिस्टर वसुमल्लिक ने घर से निकलने से पहले वचन दिया था—'आप चलिये, डर की कोई बात नहीं है, रास्ते की सारी जिम्मेदारी मेरी है।'

"तेरा कहना है कि केवल एक लड़की का सम्मान बचाने की खातिर यह आदमी लगातार इतने दिनों तक इतनी यन्त्रणा भोगता रहा?"

"लड़की का नाम वासना है। तेरे पति से शायद दीननाथ ने कहा था, लड़की बहुत ही दुखी है। शोक भुलाने के लिये उसे बाहर के आनन्दमय परिवेश में ले जाने की जरूरत है।"

आज सुबह विज्ञापन एजेन्सी जाने से पहले चारुशीला वासना के घर गई थी।

चारुशीला के मुँह से लाल बैग का रहस्य सुनते ही सागरिका फूट-फूट कर रोने लगी। "वासना अब मुँह घुमाये रो रही है। तेरी और मेरी बात के अनुसार नये रूप से शुरू करने जाकर फिर से सर्वस्व लुट गया! उस क्षण नदी की हालत में साठ से सत्तर-अस्सी-नब्बे किलोमीटर की स्पीड से गाड़ी चलाने की दुर्मति कैसे हुई यह वह स्वयं नहीं जानती।"

वासना पूरी तरह टूट कर स्वयं ही यहाँ भागी आ रही थी, परन्तु उसी समय फिट पड़ गया उसे। उसे जरा शान्त करके अकेली छोड़ कर स्वयं चली आई थी चारुशीला।

सागरिका ने देखा, अदालत के बाहर वटवृक्ष के नीचे एक गंदी सी चाय की दुकान की टूटी बेंच पर अपने में खोये दोनों हाथों से सर पकड़े बैठे थे दीननाथ। टकटकी बाँध कर देखने लगी सागरिका। जो चेहरा अब तक नितान्त शुद्र लगता रहा था, वही चेहरा अब जैसे बदल गया था। इसका मतलब है यह आदमी केवल माल ही नहीं बेचता, उसके दिल में दूसरे के लिये माया-ममता भी है। सच विपन्ना सहभागिनी के सामाजिक सम्मान की रक्षा के लिये अपने ऊपर दुःख की चादर ओढ़ सकता है। सागरिका ने दूर से देखा तो वह पाजी, अभागा, निर्दयी डिपन-बिएम कहीं दिखाई नहीं दे रहा था, वहाँ वासना का एक मित्र था, जिसने दूसरे को विपदा से बचाने के लिये अपने लिये विपदाएँ मोल ले ली थीं।

उस समय सागरिका ने कुछ नहीं कहा। कोर्ट रूम के पास जाकर इंश्योरेंस कम्पनी के फोटोग्राफर को ढूँढा और उसे धन्यवाद देकर वापस लौट जाने को कह दिया।

इतने दिनों से हृदय में जो ज्वाला धधक रही थी, वह तेजी से बुझती जा

रही थी। बहुत कोशिश करने पर भी सागरिका अब डिएन-विएम से घृणा नहीं कर पा रही थी। बेचारा अभी भी असहाय भाव से पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। कुछ देर और सागरिका उसकी ओर देखती रही।

उसके बाद जो हुआ उसके लिये दोनों पक्षों का कोई भी आदमी तैयार नहीं था। स्वयं दीननाथ वसुमल्लिक ने ऐसी नाटकीय अवस्था की बात स्वप्न में भी नहीं सोची थी। अदालत शुरू होते ही सागरिका ने शान्त भाव से कहा, वह यह केस नहीं लड़ना चाहती। कोर्ट में ऐसी स्तब्धता छा गई कि सुई गिरने की भी आवाज सुनाई दे सकती थी। मजिस्ट्रेट सागरिका की बात पर विश्वास नहीं कर पा रही थी। "आप जो कह रही हैं, सोच-समझ कर कह रही हैं ?" असहाय स्वर में सागरिका बोली, "सोच-समझ कर ही कह रही हूँ, धर्मावतार। मुझसे गलती हो गई थी। यह केस चला सकने लायक गवाह मेरे पास नहीं हैं।" फिर सर झुका कर कमरे से निकल आई, किसी से भी, यहाँ तक कि पीताम्बर काकू से भी कुछ नहीं कहा।

चारुशीला जरा दूर खड़ी थी। उसे बुला कर किसी तरह उसने कहा, "मिस्टर वसुमल्लिक से वासना के पास जाने को कह दे।" और फिर वह फूट-फूट कर रो दी।

कुछ ही क्षणों में क्या अघटन घट गया, पीताम्बर समझ ही नहीं पाये। जो लड़की एक दिन प्रतिशोध लेने के लिए पागल हो गई थी, वह अचानक क्यों केस वापस लेने को व्याकुल हो उठी उनके दिमाग में नहीं आ सका। स्वस्थ, सबल पति को अचानक एक दिन खो देने पर अल्पवयसी लड़कियों के मन में अचानक कब कौन सा विचार आ जाये, यह वयस्क लोगों के लिये समझ पाना संभव नहीं है, यही सोच कर पीताम्बर सजल नेत्रों से घड़ी की ओर देख कर कुर्सी से उठ गये। अपनी लाड़ली सागरिका से कुछ नहीं पूछा।

□□□